सर प्रताप और उनकी देन

सर प्रताप और उनकी देन

लेखक
विक्रमसिंह गुन्दोज
शोध सहायक
राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी, जोधपुर

प्रकाशक
राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी, जोधपुर

उम्मेद भवन
जोधपुर
५-१०-८३

सर प्रताप का नाम मारवाड के इतिहास मे ही नही भारत की देशी रियासतो और समूचे देश मे विख्यात रहा है। जोधपुर राजघराने को उन्होंने लम्बे अरसे तक पूरी निष्ठा के साथ सेवा की थी परन्तु उनकी इस सेवा और कर्त्तव्य निष्ठा का बहुत बडा लाभ समस्त मारवाड निवासियों को भी मिला। वे सही मायने मे युगान्तरकारी पुरुष थे और उन्होने समय को पहचान कर न केवल जोधपुर राज्य के प्रशासनिक ढाचे को नया रूप प्रदान किया अपितु सामाजिक, धार्मिक और शैक्षणिक स्तर पर भी यहाँ के लोगो के लिए स्थाई महत्व का कार्य किया जिसका प्रभाव आज भी मारवाड मे दृष्टिगत होता है। महान् पुरुष अपने व्यक्तिगत गुणो और उद्देश्य की महानता के कारण ही महान् बनते है और वे ही समाज मे बडा काम कर सकते है। सर प्रताप वास्तव मे बहुत ही दूरदर्शी व समाज का हित सोचने वाले निस्वार्थ व्यक्ति थे। उनके गुणों से आज भी हमे प्रेरणा मिल सकती हैं और साथ ही हमारा यह कर्त्तव्य हो जाता है कि समाज की भलाई के लिए उनकी आकाक्षाओं को पूर्ति हेतु जो कुछ कर सक वह अवश्य करें। उनके द्वारा सस्थापित चौपासनी विद्यालय को उन्नति भी उनकी आकाक्षा का ही एक भाग है।

मुझे प्रसन्नता है कि सर प्रताप पर यह एक उपयोगी पुस्तक प्रकाशित की गई है जिसकी आवश्यकता महसूस की जा रही थी। चौपासनी शिक्षा समिति के सचिव व शोध सस्थान के निदेशक और पुस्तक के लेखक इस उपादेय प्रकाशन के लिए धन्यवाद के पात्र है।

गजसिंह
महाराजा, जोधपुर

प्रबन्ध समिति की ओर से

चौपासनी विद्यालय पश्चिमी राजस्थान का बहुत पुराना और आदर्श विद्यालय रहा है। इसकी अपनी विशेषताएँ हैं और अपना इतिहास है। यह एक आवासीय विद्यालय होने के साथ-साथ राष्ट्रीय चरित्र-निर्माण में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। यही कारण है कि यहाँ के भूतपूर्व विद्यार्थियों ने देश की उच्चतम सैनिक व असैनिक सेवाओं में पहुँचकर अपनी कर्त्तव्यनिष्ठा का असाधारण परिचय दिया है। मारवाड के नागरिक जीवन पर यहाँ के विद्यार्थियों ने अपनी छाप छोड़ी हैं, वहीं सामाजिक और राजनैतिक क्षेत्र में भी उन्होंने महत्ती भूमिका निभाई है। ऐसे आदर्श विद्यालय की स्थापना सर प्रताप जैसे महान् व्यक्ति की दूरदर्शिता के परिणाम स्वरूप फलीभूत हुई है। अतः ऐसे युगपुरुष का स्मरण करना और उनकी देन तथा चारित्रिक विशेषताओं को उजागर करना हमारा कर्त्तव्य हो जाता है। सर प्रताप इस विद्यालय के ही नहीं जोधपुर के अधिकांश विद्यालयों की स्थापना के प्रेरक रहे हैं और उनका व्यक्तित्व इतना विशाल और कृतित्व इतना बहु आयामी है कि उन पर एक पूरी पुस्तक लिखी जाने की अपेक्षा अनेक समाज प्रेमी लोग लम्बे अरसे से महसूस कर रहे थे। बहुत वर्षों पहले सर प्रताप पर उनकी स्वलिखित जीवनी और दूसरी आर० बी० वेनवर्ट द्वारा लिखी हुई पुस्तकें प्रकाशित हुई थी। परन्तु कई वर्ष हुए ये दुर्लभ हो गई हैं इसलिए एक नई पुस्तक की आवश्यकता विशेष तौर से महसूस की जा रही थी जिसके द्वारा इन दोनों पुस्तकों के अतिरिक्त भी सामग्री प्रकाश में आ सके और सर प्रताप की बहु आयामी देन को समुचित ढंग से आज के सन्दर्भ में प्रस्तुत किया जा सके।

गतवर्ष प्रताप जयन्ती के अवसर पर इस आवश्यकता की तरफ चौपासनी शिक्षा समिति के कई सहयोगी सदस्यों का ध्यान गया और मैंने भी यह महसूस किया कि ऐसी पुस्तक अब अविलम्ब लिखी जानी चाहिए अतः मैंने मेरी मंशा हमारी ही संस्था राजस्थानी शोध संस्थान चौपासनी के निदेशक डॉ० नारायणसिंह भाटी के सामने रखी और उन्होंने सहर्ष मेरी बात का अनुमोदन ही नहीं किया अपितु वर्ष भर में इस पुस्तक को तैयार करवा देने का वादा भी किया। उन्होंने तुरन्त यह कार्य आवश्यक निर्देश के साथ अपने शोध सहायक श्री विक्रमसिंह के सुपुर्द किया और लेखक ने बड़ी तत्परता के साथ अनेक साधनों को काम में लेते हुए यह पुस्तक तैयार की है तथा इसका प्रकाशन समिति के विशेष बजट प्रावधान के अन्तर्गत किया गया है।

इस पुस्तक में प्रकाशित चित्रों के लिये निदेशक महोदय को बड़ी दौड़धूप करनी पड़ी परन्तु इन चित्रों के पुस्तक में आ जाने से इसका महत्व और भी बढ़ गया है। जोधपुर महाराजा श्री गजसिंहजी साहिब, महाराज प्रेमसिंहजी साहिब और रावराजा महेन्द्रसिंहजी ने सर प्रताप और उनके समय के अनेक चित्र इस पुस्तक में प्रकाशनार्थ प्रदान किये हैं जिसके लिए मैं अपनी ओर से तथा चौपासनी शिक्षा समिति की ओर से इनका हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ।

यद्यपि यह पुस्तक सीमित समय में तैयार की गई है परन्तु मुझे आशा है कि पाठकों को यह उपयोगी और रुचिकर लगेगी खास तौर से नई पीढी के विद्यार्थियों को सर प्रताप की कर्मठता, सादगी, देशप्रेम और कर्त्तव्य-निष्ठा से प्रेरणा भी मिलेगी ऐसा मेरा विश्वास है।

मानवेन्द्रसिंह
सचिव
चौपासनी शिक्षा समिति, जोधपुर

निदेशकीय

पश्चिमी राजस्थान में सबसे बड़े मारवाड राज्य का आधुनिकीकरण करने वाले यदि किसी एक व्यक्ति का नाम लेने के लिए कहा जाय तो वह सर प्रताप का ही नाम सामने आता है। सर प्रताप जोधपुर राजघराने मे पैदा हुए थे और महाराजा जसवन्तसिंहजी द्वितीय के छोटे भाई थे। बचपन मे उन्हे विधिवत शिक्षा-दीक्षा बहुत कम मिल पाई थी परन्तु उनमे पर्यवेक्षण की बड़ी तीव्र बुद्धि थी और वे छोटी आयु में भी राजकार्य में दिलचस्पी लेते थे। उस समय कौन जानता था यही बालक आगे जाकर मरुधरा के मरुस्थल म नये फूल खिलायेगा। सर प्रताप को जवानी मे जयपुर के सवाई रार्मासिह जैसे कुशल प्रशासक का अभिभावकत्व सौभाग्य से प्राप्त हुआ और उन्होने कम समय मे ही राजकार्य में दक्षता हासिल कर ली तथा उस समय की रियासतो की राजनीति को भी भलीभाति समझ लिया। उन्होंने इस तथ्य को खूब गहराई के साथ जान लिया था कि कुछ मुह लगे लोग और स्वार्थी जागीरदार ही राज्य के विकास मे बाधक होते है और वे राजा की मजबूरियो का लाभ ही नही उठाते उन मजबूरियों को बढावा देकर शासक को निष्क्रिय बना देते हैं।

जब मारवाड का शासन बिल्कुल बिगड गया और राज्य की आर्थिक हालत बहुत खस्ता हो गई तो महाराजा को यह महसूस हुआ कि सारा कार्य देखने के लिए किसी एक योग्य व्यक्ति की आवश्यकता है और उन्होने अपने छोटे भाई प्रतापसिंहजी को यह अवसर प्रदान किया। उन्होने तब से लेकर महाराजा उम्मेदसिंहजी की नाबालगी तक मारवाड के शासन की बागडोर यहा के शासको की चार पीढी तक सभाली। आधुनिक भारत के इतिहास मे शायद ही ऐसा कोई व्यक्ति हुआ हो जिसने इतने लम्बे समय तक इतने महत्वपूर्ण पद पर इतनी दक्षता के साथ कार्य करके अपने राज्य और जनता का इतना हित किया हो।

सर प्रताप ने ऐसा विलक्षण कार्य इतने लम्बे समय तक कैसे किया और इतनी कठिनाइयो का सामना करते हुए अपन लक्ष्य की पूर्ति हेतु वे कैसे साधना रत रहे ये सब बातें एक बृहत् ग्रन्थ मे हा समझायी जा सकती हैं परन्तु इतना अवश्य कहा जा सकता है कि उनकी सफलता का मूल श्रेय उनकी कर्मठता, कर्त्तव्यनिष्ठा और ईमानदारी को ही जाता है। उन्होने कभी भी अपने निजी स्वार्थ को आगे रखकर कार्य नही किया यहा तक कि राजा के छोटे भाई होने के नाते वे मारवाड़ मे बडी जागीर पाने के अधिकारी थे परन्तु ऐसी जागीर लेना तो दूर रहा ईडर राज्य की स्वतत्र गद्दी को (जो उन्हे गोद के अधिकार से प्राप्त हुई थी) भी त्याग कर मारवाड की सेवा मे अपनी वृद्धा अवस्था मे भी पुन लग गये।

कई लोग उन पर अग्रेजो को खुश रखने का लाछन लगाते हैं तो कई उनके अक्खडपन और अहम् की ओर भी सकेत करत है। परन्तु समय सापेक्षता की दृष्टि मे देखने पर

ही सर प्रताप के व्यक्तित्व का सही मूल्कयान कर सकते हैं और किसी भी बडे व्यक्ति के अवगुण ढू ढ निकालना बहुत आसान होता है परन्तु उसके गुणो को सही तरह से परखकर उसके द्वारा प्रदत्त सामाजिक लाभ के प्रति उपकृत होना सज्जन व्यक्तियो के ही बूते की बात होती है।

इस पुस्तक के लेखक ने सर प्रताप के जीवन सम्बन्धी महत्वपूर्ण बिन्दुओ पर बडे परिश्रम के साथ प्रकाश डाला है वही सर प्रताप की बहुआयामी देन को भी उचित विस्तार के साथ प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। पुस्तक के अन्त मे दिये गये विशेष परिच्छेद के लेखक श्री ओकारसिहजी (I.A.S सेवा निवृत) ने जहाँ सर प्रताप सम्बन्धी कुछ महत्वपूर्ण तथ्य उजागर किये हैं वही अमरसिंह की डायरी मे सर प्रताप पर प्रकट कुछ आपत्तिजनक सूचनाओ का भी निराकरण प्रामाणित और सयमित ढग से किया है इससे पुस्तक नवीनतम विचारधारा से भी सपृक्त हो गई है। उन्होने पूरी पुस्तक को आद्योपान्त देखकर उपयोगी सुझाव देने का कष्ट भी उठाया है जिसके लिये मैं उनके प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

गत सर प्रताप जयन्ती के अवसर पर चौपासनी शिक्षा समिति के सचिव श्री मानवेन्द्रसिहजी ने सर प्रताप पर आयोजित गोष्ठी के समापन पर यह घोषणा की थी कि आगामी जयन्ती पर सर प्रताप पर एक पुस्तक प्रकाशित की जायेगी तदनुसार चौपासनी शिक्षा समिति की ओर से विशेष प्रकाशन योजना के अन्तर्गत सस्थान मे इस कार्य को लिया गया और सस्था के शोध सहायक श्री विक्रमसिंह ने बडी लगन और तत्परता के साथ इस कार्य को सीमित समय मे पूरा किया। यद्यपि इस पुस्तक मे सर प्रताप का स्वलिखित जीवन चरित्र और आर० बी० वेनवर्ट की पुस्तकें वडी सहायक सिद्ध हुई परन्तु इसके अलावा सस्थान मे सुरक्षित उस समय की प्रशासनिक रिपोर्टस व अन्य महत्वपूर्ण सामग्री भी इस पुस्तक को प्रामाणिक और उपयोगी बनाने के लिए प्रयोग मे ली गई है।

चौपासनी विद्यालय के नव नियुक्त प्रिंसीपल श्री रणवीरसिंह ने इस पुस्तक के प्रकाशन मे गहरी रुचि प्रकट की तथा सस्था के सभी कार्यकर्ताओ ने पुस्तक को शीघ्र प्रकाश मे लाने मे अपना योग दिया है। हिमालय प्रिंटिंग प्रेस के व्यवस्थापक श्री रणजीतमलजी ने बहुत कम समय मे इस पुस्तक की छपाई का कार्य अन्य आवश्यक कार्यों से प्राथमिकता देकर किया है जिसके लिए मैं इन सभी महानुभावो का आभारी हूँ।

अन्त मे चौपासनी शिक्षा समिति के विद्याप्रेमी अध्यक्ष महाराजा गजसिंहजी साहिब, समिति के सचिव श्री मानवेन्द्रसिहजी और समिति के अन्य सदस्यो का भी आभार प्रकट करता हूँ जिन्होने इस कार्य के महत्व को समझते हुए इस पुस्तक के प्रकाशन के लिए विशेष वित्तीय प्रावधान किया और इस कार्य को तत्परता पूर्वक सम्पन्न करने हेतु प्रोत्साहित किया।

नारायणसिंह भाटी
निदेशक

स्थापना : ७-१०-८३

अनुक्रमणिका

क्रमांक	विषय	पृष्ठांक
१	ऐतिहासिक पृष्ठभूमि	१
२	महाराजा सर प्रताप का जीवन-वृत्त	८
३	मारवाड का प्रशासन एव उसमे नवीन सुधार राजकोप की स्थापना-४१, भूमि-सुधार एव रेवेन्यू-४३, पुलिस विभाग-४५, चुंगी विभाग-४८, नमक उत्पादन-४६, आबकारी विभाग-४६, नगर-पालिका-५०, रेल्वे-५१, डाक विभाग-५५, पी डब्लू डी विभाग-५६, चिकित्सा सस्थाएं-५७, सैन्य विभाग-५८, न्याय व्यवस्था-६१	३३
४	शिक्षा के क्षेत्र मे देन	६५
५	समाज सुधार के क्षेत्र मे योगदान प्रशासन मे सुधार-७२, अपराध वृत्ति की रोकथाम-७३, डाकू उन्मूलन-७३, शिक्षा का प्रचार प्रसार-७४, स्त्री शिक्षा-७५, लगान व्यवस्था-७६ जनपयोगी कार्यों का विस्तार-७६, समानता की भावना-७६, गरीब राजपूतो के हितैषी-७८, अछूतोद्धार ७८, औसर-मौसर-७६, टीका प्रथा-७६ समाज को स्वदेशी वस्तुओ और सादगी के लिए प्रेरित करना-८०, मातृ भाषा को राज्य भाषा के रूप मे स्थापित करना-८०, सर प्रताप के धार्मिक विचार-८१	७२
६	सर प्रताप की सैनिक सेवाए १९१४ का महायुद्ध और सर प्रताप ९०	८५
७	सरप्रताप का व्यक्तित्व कुशल प्रशासक-९६, सफल राजनीतिज्ञ ९६, सफल सेना नायक-९७, अदम्य साहसी एव वीर ९७, शिकार प्रेमी-९७, श्रेष्ठ घुडसवार-९७, खेल प्रेमी-९८ दृढ सकल्पी-९८, मातृभूमि से प्रेम-९९, स्वदेशी वस्तुओ से लगाव-९९, मातृभाषा प्रेमी-९९, भारतीय सस्कृति मे गहरी आस्था ९९, नवीन सुधारो के समर्थक-१००, दूरदर्शी-१००, शिक्षा प्रेमी-१००, सादगी-१००, परिश्रमी १०१, त्यागी-१०१, गरीबो के सहायक-१०१, सच्चे मित्र-१०१	९६
८	सर प्रताप सम्बन्धी रोचक बाते एक शेर एक मार १०३, नसीहत का एक शेर-१०३, एक कहावत-१०४,	१०३

एक दोहे पर एक हजार का इनाम १०४, घोडा और घुड़सवारी-१०४, इन्सान की परख-१०५, स्वदेशी वस्तुओ से प्रेम-१०५, धुन के पक्के-१०६, शारीरिक दुर्बलता और हिन्दुओं की हीन दशा-१०६, सामाजिक दुर्दशा और उसका निराकरण-१०७, शादी विवाह मे सादगी-१०८, समानता की भावना-१०८, युक्ति और चातुर्य के धनी-१०८, अग्रेजी की दुविधा और हस्ताक्षर-१०६, प्रत्येक पग आगे की ओर-१०६, आदमी जैसा चाहे वैसा बन सकता है-११०, विष और अमृत-११०, नि शुल्क शिक्षा के प्रथम अधिष्ठाता-११०, शिक्षा प्राप्ति सबका अधिकार-१११, धर्म शुद्धि के क्राति कारी विचार-१११, शिक्षा का एक व्यवहारिक पक्ष-१११

६ *विशेष परिच्छेद—महाराजा सर प्रतापसिंहजी विषयक कुछ महत्वपूर्ण तथ्य* ११२

स्वामी दयानन्द सरस्वती को विष दिया जाना ?-११३, सर प्रताप बनाम अमरसिंह-१२२, सर प्रताप और हरजी-१२८ नगर का विकास तथा स्थापत्यकला को देन-१३०, सर प्रताप से सम्बन्धित कुछ उल्लेखनीय तथ्य तथा रोचक प्रसग १३१, सर प्रताप के अग्रेजो से सम्बन्ध-१३३, महाराणा फतहसिंह द्वारा सर प्रताप से मार्ग दर्शन-१३४, सर प्रताप सम्बन्धी कुछ कविताए-१४२

१० परिशिष्ट—कवियो की वाणी मे सर प्रताप १४५

कविराजा मुरारिदान-१४५, कवि जुक्तिदान-१४६, कवि फतहकरण उज्ज्वल-१४८, बणसूर महादान-१४६, कलिया नारायणसिंह-१५१, भाद्राजून राजा देवीसिंह-१५१, आसिया चारण पाबूदान-१५१, साद्रू राघोदान-१५२, बारठ किशोरदान-१५२, पुरोहित केसरीसिंह-१६०, बारहठ जैतदान-१६२, आसिया मोडजी-१६३, ऊमरदान-१६५

हेम उछाळत हाथ, वहै उजाडा वाणिया
सोहा वकरी साथ, पाया भूप प्रतापसी ।

तपै नूर परतापसी, सब कूकै ससार
आथमिया सूं ओळखै, उण बिन घोर अधार ।

सरप्रताप और उनकी देन

ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि

मारवाड में राठौड राज्य के संस्थापक राव सीहा केवल जोधपुर के ही नहीं अपितु बीकानेर, ईडर, किशनगढ, रतलाम, झाबूआ, अमझेरा, सैलाना और सीतामाऊ के राठौड शासकों के भी मूल पुरुष थे। सीहा के ही वंशजों द्वारा कालान्तर में ईडर (प्रथम संस्थापक राव सोनग)[1] बीकानेर (राव बीका) झाबुआ (केशवदास) रतलाम (रतनसिंह महेशदासोत)[2] किशनगढ (राजा कृष्णसिंह) और सीतामऊ (केशवदास) में राठौड राज्य की स्थापना हुई। इस प्रकार धीरे-धीरे राठौड कुल की यह विस्तृत बेल राजस्थान, गुजरात और मध्यप्रदेश के बहुत बडे भाग पर छा गई।

राव सीहा के प्रारम्भिक ज्ञान और पूर्व इतिहास के सम्बन्ध में विश्वस्त और ठोस सामग्री का अभाव है। पंडित विश्वेश्वरनाथ रेऊ और टॉड के अनुसार वि० सं० १२६८ (ई० सन् १२१२) में राव सीहा का मारवाड में आगमन हुआ। पाली से १४ मील उत्तर पश्चिम में बीठू गांव के पास वि० सं० १३३० कार्तिक वदि १२ (ई० सन् १२७३ ता० ९

---

१ महाराजा अजीतसिंह के पुत्र राव आनन्दसिंह द्वारा दूसरी बार ईडर में राठौड राज्य की स्थापना हुई।

२ छत्रसाल द्वारा रतलाम राज्य की दूसरी बार नये सिरे से स्थापना हुई। डा० रघुवीरसिंह रतलाम का प्रथम राज्य पृष्ठ ३२५।

अक्टूबर) सोमवार को उसकी मृत्यु हुई जैसाकि उसके देवली के लेख से प्रकट है।[१] वह देवली (स्मारक) जीर्णशीर्ण अवस्था में आज भी विद्यमान है।

राव सीहा एव तदन्तर उसके वशजो को एक लम्बे समय तक यहा अपना वर्चस्व स्थापित करने के लिए सघर्ष करना पडा। भीनमाल, पाली, खेड, सिवाणा, जालोर, आदि स्थलो पर अपनी प्रभुसत्ता स्थापित करन के लिए उनको भील मीणो, मेरो, यवनो के अतिरिक्त गुहिल, चौहान, भाटी, सोलकी, देवडा, सोढा तथा ईन्दा के साथ कई बार युद्ध करना पडा। राव सीहा से राव चूडा तक लगभग दो शताब्दी से भी अधिक की समयावधि तक राठौड यहा स्थाई रूप से अपना साम्राज्य स्थापित करने के लिए प्रयत्नशील रहे।

राव आसथान, धूहड, रायपाल, कान्हपाल, जालणसी, छाडा, टीडा, कान्हडदे, त्रिभुवनसी, सलखा, रावल मल्लीनाथ और राव वीरम के सघर्षपूर्ण इतिहास के फलस्वरूप कालान्तर मे विस्तृत राठौड साम्राज्य की स्थापना के लिए अनुकूल परिस्थितिया और अवसर सुलभ हुए। राव चूडा न सन् १४०६ मे मडोर पर अधिकार कर मारवाड मे राठौड साम्राज्य की नीव डाली और स्थायित्व प्रदान किया। राव चूडा के पश्चात् राव कान्हा, सत्ता व रणमल (रिडमल) क्रमश मडोर के शासक बने। राव रणमल बहुत पराक्रमी और वीर पुरुष था और उसके समय मारवाड ही नही मेवाड और उसके आसपास के क्षेत्रो मे राठौड शक्ति का वर्चस्व स्थापित हुआ। इस पराक्रमी (राव रणमल) पुरुष के पुत्रो से राठौड वश की कई उपशाखाएँ प्रारम्भ हुई जिनमे अखैराजोत, चापावत, काधल, मडलावत, पातावत, रूपावत, करणोत आदि मुख्य है।[२]

राव रणमल के पश्चात् राव जोधा ने वि स १५१६ ज्यष्ठ सुदि ११ (ई सन् १४५९ ता० १२ मई) शनिवार को चिडिया टूक पर नये गढ की नीव रखी। गढ के नीचे अपने नाम पर जोधा न नया नगर 'जोधपुर' बसाया और मडोवर के स्थान पर उसे अपनी राजधानी बनाया।[३] राव जोधा के समय मे जोधपुर राज्य को जो स्थायित्व व शक्तिशाली सगठनात्मक स्वरूप प्राप्त हुआ वह मुगल और अग्रेज साम्राज्य के उतार चढावो को

---

१ गौरीशकर हीराचन्द ओझा जोधपुर राज्य का इतिहास-भाग १ पृष्ठ-१५७

२ विशेष अध्ययन हेतु देखे—गौरीशकर हीराचन्द ओझा राजपूताने का इतिहास प्रथम भाग पृष्ठ २२५-२६ और प विश्वेश्वरनाथ रेऊकृत मारवाड का इतिहास प्रथम भाग पृष्ठ-८०

३ गौरीशकर हीराचन्द ओझा राजपूताने का इतिहास प्रथम भाग पृष्ठ २४१, प० रामकर्ण आसोपा मारवाड का मूल इतिहास पृष्ठ-१०७, प० विश्वेश्वरनाथ रेऊ मारवाड का इतिहास भाग-१ पृष्ठ-९२

मेन्ता हुआ भारत के आजाद होने तक अपनी निरन्तरता को बनाये रखने में समर्थ हुआ। मुगलकाल में यहां राव मालदेव, राव चन्द्रसेन, सवाई राजा शूरसिंह, राजा गजसिंह, महाराजा जसवन्तसिंह प्रथम, महाराजा अजीतसिंह एवं अभयसिंह आदि कुशल व प्रबल पराक्रमी नरेशों ने अपने सबल साथियों के सहयोग से बाह्य आक्रान्ताओं के प्रभाव से इस प्रदेश को सुरक्षित रखने का प्रयास किया। इस काल में यहां के वीरों की वीरोचित घटनाएँ राजस्थान ही नहीं भारतीय इतिहास तक में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। सचमुच मध्यकाल में यहां के वीरों ने जिस इतिहास और संस्कृति का निर्माण किया वह राजस्थान के लिए ही नहीं समूचे देश के लिए गौरव की वस्तु है।

महाराजा अभयसिंह के पश्चात् महाराजा रामसिंह, बख्तसिंह विजयसिंह, भीमसिंह और मानसिंह जोधपुर के नरेश बने। महाराजा मानसिंह के समय सर्वप्रथम अंग्रेजों का मारवाड़ में प्रवेश हुआ और वे यहां की राजनीति में भाग लेने लगे। 'जब प्रसिद्ध इतिहासवेत्ता कर्नल टॉड पश्चिमी राजपूताने का पोलीटिकल एजेंट नियुक्त हुआ तो उदयपुर, हाड़ौती, कोटा, बून्दी, सिरोही, जैसलमेर तथा जोधपुर आदि रियासतों का प्रबन्ध भी उसके सुपुर्द किया गया। ई० सन् १८१९ के अन्तिम दिनों में उसने जोधपुर का दौरा किया। ता० ११ अक्टूबर को उदयपुर से प्रस्थान कर पलाणा, नाथद्वारा, घेलवाड़ा, नाडोल, पाली, रावाणी, तथा झालामण्ड होता हुआ नवम्बर मास में वह जोधपुर पहुँचा। ता० ४ नवम्बर को महाराजा मानसिंह उससे मिला। महाराजा ने उसका बड़ी शान शौकत के साथ स्वागत किया।[1]

कालान्तर में यहां (मारवाड़) की राजनीति में अंग्रेजों का दखल और भी बढ़ जाता है। यहां के शासकों के राज्याधिकार और उत्तराधिकार जैसे मसलों पर भी अंग्रेजों द्वारा अत्यधिक हस्तक्षेप होने लगा। महाराजा मानसिंह के पश्चात् जोधपुर राज्य के उत्तराधिकारी के चयन[2] के एक उदाहरण मात्र से यह स्पष्ट हो जायेगा कि इस अवसर पर अंग्रेजों की भूमिका कितनी महत्वपूर्ण थी।

महाराजा मानसिंह अपने अन्तिम दिनों में राज-कार्य से विरक्त होकर विक्षिप्त हो गये, उन्होंने सन्यास (नाथ सम्प्रदाय) धारण कर लिया और जलंधर नाथजी के दर्शनार्थ जालोर जाकर वहां से गिरनार जाने का मनसूबा बना लिया। जिस समय महाराजा पाल गांव में ठहरे हुए थे उस समय तत्कालीन पोलिटिकल एजेंट लुडलो पास जाकर

---

१ गौरीशंकर हीराचन्द ओझा : जोधपुर राज्य का इतिहास-भाग-२ : पृष्ठ-८३०

२ क्योंकि महाराजा मानसिंह के जीवन काल में ही (ई० स० १८१८ दिनांक २६ मार्च को) महाराज कुमार छत्रसिंह का देहान्त हो गया था। अंग्रेजों के सहयोग से अहमदनगर के शासक तख्तसिंह को गोद लिया।

महाराजा से मिला और कहा कि यदि आप यहीं (जोधपुर) रहोगे तब तो आप जिसे चाहोगे वह आपकी मृत्यु के पश्चात् गद्दी नशीन होगा अन्यथा धौकलसिंह[1] आयेगा। एजेन्ट की राय से महाराजा मानसिंह फिर पाल से आगे नहीं गये।

महाराजा पाल गाव से जोधपुर आकर राइका बाग मे ठहरे। महाराजा की दशा दिन-दिन बिगडती जा रही थी। ऐसी अवस्था देखकर पोलिटिकल एजेन्ट ने उनसे अपना उत्तराधिकारी नियत करने को कहा। इस पर महाराजा ने उत्तर दिया कि ' अहमदनगर के राजा कर्णसिह के दो पुत्रों—पृथ्वीसिह एव तखतसिह मे से पृथ्वीसिह तो मर गया और तखतसिह अभी जीवित है मेरी मर्जी तखतसिह को अपना उत्तराधिकारी बनाने की है और मैं चाहता हूँ कि मेरे बाद वही जोधपुर का स्वामी हो।" पोलिटिकल एजेन्ट ने महाराजा को आश्वासन दिया कि आप जैसा चाहते है वैसा ही होगा।[2]

---

१ महाराजा भीमसिह की मृत्यु के बाद उनकी एक राणी से उत्पन्न तथाकथित पुत्र धौकलसिह को जोधपुर राज्य का वास्तविक हकदार मानकर पोकरण ठाकुर सवाईसिह चापावत इत्यादि कई प्रमुख सरदार उसके पक्ष म हुए और उन्होने महाराजा मानसिह से विरोध ही नही सघर्ष भी किया।

२ (अ) गौरीशकर हीराचन्द ओझा जोधपुर राज्य का इतिहास-भाग-२ पृष्ठ-८७०, रेऊ कृत मारवाड का इतिहास-भाग-२ पृष्ठ ४३८

(ब) 'समत १८९९ रा आसाढ सुद ४ नू पाल सू पाछा राईके बाग पधारिया। श्री हजूर साहबा री सरीर चेसटा देख अजट साहब पूरौ फिकर कियौ। नै अरज कीवी कै आपरै स्वरगवास होऐ के बाद राज का मालक किस कू करणे की आपकी मरजी है। तरै हजूर फुरमायौ—थे दोस्ती सू पूछौ हो मौ म्है फुरमावोगे ज्यू करण री हामळ भरौ तौ म्है फुरमावा। तरै साहब बहादुर कही–आप फुरमावोगे ज्यू ही होगा। तरै हजूर फुरमायौ कै म्हारा बद खाहा होगा सो तो कितूर कू लाया चावेगा सा ये तो बात हरगिज नही होई चाहीजे। और अेहमदनगर के राजा करणसिध तौ गुजर गया है नै छोटा बेटा तखतसिघ है जिस ऊपर हमारी मरजी है वो हमारा कवर है, ऊनकू गादी नसीन करणा। तरै अजट साहब बहादुर अरज करी—आप जभे खातर रखणा इसी तरै आपके हुकम मुजब होगा। इतरी बात इकात मे हुई।

महाराज कवार छतरसिघजी देवलोक हुवा तरै अठारा चाकरा री तजवीज सू ईडर रा महाराज छतरसिघजी रै खोळै आवण नू त्यार हुवा था। इण सबब सू ईडर वाळा सू बेमरजी थी नै मोडासे महाराज जाळोर रा घेरा मे जालमसिघजी मदत दीवी थी। जिण सबब सू महाराज तखतसिहजी नै खोळै लावण रो फरमायौ।"

—(डा० नारायणसिह भाटी द्वारा सपादित "महाराजा मानसिह री ख्यात" पृष्ठ २२४-२२५) पर उपर्युक्त वर्णन मिलता है।

महाराजा मानसिंह जो अपने सारे सिरदारों, दीवानों और मुसद्दियों आदि प्रमुख लोगों के बहुत आग्रह के बाद भी अपने हठ पर डटे रहे थे, पोलिटिकल एजेन्ट के आश्वासन मात्र से उन्होंने गिरनार जाने का विचार त्याग दिया। इसके बाद वे जोधपुर के राइका बाग में भी लौटे तत्पश्चात् मंडोर गये। वहां उन्हें एकांतरा ज्वर आने लगा और उसी बीमारी से वि० सं० १६०० की भाद्रपद सुदि ११ (ई० सन् १८४३ की ४ सितम्बर) सोमवार को रात्रि में महाराजा का स्वर्गवास हो जाता है। महाराजा के देहान्त के पश्चात् पोलिटिकल एजेन्ट गढ पर जाकर रानियों से गद्दी की हकदारी संबंधी स्वीकृति लेता है—

पछे अजट साहब बहादुर गढ ऊपर जनानी दौढी गया। नाजर साथै माजी साहबा नू खातर कैवाई नै पूछायों—गोद बैठाणे का हक किसका है तरै माजी साहबा कैवायो कै श्री जी साहबा री फुरमायोडी है कै माहरै पछाडी खोळै बैसण रो हक अजीतसिंघोता में अहमदनगर वाळा रो है। सो जाणा हा इण बात सु थेई वाकब हूसो। इण बात री निगै राखजौ तरै साहब पाछी कैवाई कै बहोत अच्छा।"[१]

वैसे माजी साहिबा और कितने ही मुसद्दिया और खवास पासवानों आदि की सलाह महाराज कंवार जसवंतसिंघ को गोद लेने की थी परन्तु अन्य उमरावों और दीवान मुहता लिखमीचन्द आदि ने माजी साहिबा को अरज की कि महाराज कंवार जसवन्तसिंघजी तो बालक है और महाराज तखतसिंघजी २४ वर्ष की अवस्था में है सो उनको गोद लेंगे तो आते ही राज्य का कार्य संभाल लेंगे। इस पर सभी ने एकमत होकर महाराजा तखतसिंह को महाराज कंवार जसवंतसिंह सहित गोद लेना तय किया।[२]

इस प्रकार महाराजा मानसिंह के पश्चात् उनके उत्तराधिकारी की नियुक्ति का यह प्रकरण समाप्त होता है तथा अहमदनगर के शासक महाराजा तखतसिंह को उनका उत्तराधिकारी घोषित किया जाता है।

आगे अहमदनगर वालों का वंशवृक्ष दिया जा रहा है, जिससे महाराजा मानसिंह का उनके साथ क्या सम्बन्ध था यह स्पष्ट हो जायेगा।[३]

---

१ सम्पादक डा० नारायणसिंह भाटी महाराजा मानसिंह री ख्यात पृष्ठ-२२८

२ वही—पृष्ठ २२८

३ डा० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा · राजपूताने का इतिहास . दूसरा भाग पृष्ठ ८७०-७१
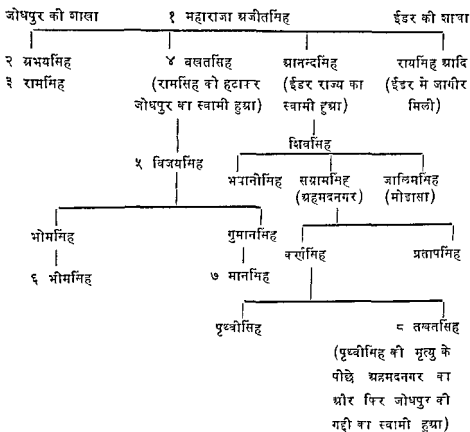
वि स १९०० की मगसर सुदि १० (१ दिसम्बर १८४३ ई०) को महाराजा तखतसिंह जोधपुर की गद्दी पर बैठे। महाराजा तखतसिंह जिन दिनो गद्दी-नशीन हुए उस समय मारवाड की हालत बहुत बिगड चुकी थी।[1] रियासत का प्रबन्ध गडबडा गया था। प्रबन्धकर्ता दरबारी लोग निजी स्वार्थ के कारण आपस मे झगडते रहते थे। रियासत

---

1 ' It was no bed of roses to which he came, the lax rule of the last three reigns had left the state in a deplorable plight The administration was in the hands of Sardars and officials whose family feuds and personal quarrels left them neither time nor inclination to further the interests of the state An inefficient police made no headway against the bands of thieves and dacoits, who harassed and oppressed the luckless roots on all sides "

(R B Vanwart : The Life of Lieut-General H H Sir Pratap Singh : Page–4)

की भलाई का उन्हे कोई ध्यान न था। लुटेरा और चोरो की सख्या बढ गयी थी। रियासत मे न पुलिस का प्रबन्ध था न ही न्याय की कद्र। महाराजा तखतसिंह ने अग्रेज अफसरो की मदद एव स्वय के बुद्धि कौशल से धीरे-धीरे सारी स्थिति को सभाल कर राज्य की व्यवस्था व प्रबन्ध मे यथेष्ट सुधार किया। महाराजा तखतसिंह के पश्चात् उनके बडे पुत्र जसवन्तसिह द्वितीय १ मार्च १८७३ मे जोधपुर की राज्य गद्दी पर बैठे। उनके समय मे मारवाड की काफी उन्नति हुई। इस काल की घटनाओ का सरप्रताप के जीवन के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है। अपने पिता महाराजा तखतसिंह और अग्रज महाराजा जसवन्तसिह द्वितीय के शासनकाल की अवधि के दौरान (राज्य के प्रशासन एव प्रबन्ध सम्बन्धी बातो एव जानकारियो मे उन्हे बचपन से ही रुचि थी) उन्होंने खास तौर से राज्य के प्रशासन एव प्रबन्ध मे अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस काल का अनुभव आगे चलकर उनके भावी जीवन मे बहुत ही महत्वपूर्ण सिद्ध होता है।

महाराजा सरप्रताप का जीवन-वृत्त

महाराजा श्री तखतसिंह की रानी राणावतजी की कोख से वि० स० १६०२ कार्तिक वदि ६ मंगलवार (ई० सन् १८४५ के २१ अक्टूबर) को सरप्रताप का जन्म हुआ।[1] ये अपने पिता के तीसरे पुत्र थे।[2] जसवन्तसिंह एवं जोरावरसिंह इनके बड़े भ्राता थे। श्री राधाकृष्ण द्वारा सम्पादित 'महाराजा सरप्रतापसिंहजी साहब का स्वलिखित जीवन चरित्र' में दूसरे अध्याय (बचपन) के प्रारम्भ में ही इस बात का उल्लेख मिलता है कि "महाराजा श्री तखतसिंहजी साहब के यहा पटरानी श्री बड़े राणावतजी से महाराज कुमार जसवन्तसिंहजी और श्री चादकवरजी बाईजी साहब का जन्म जोधपुर आने से पहले अहमदनगर में ही हो चुका था। जोधपुर की गद्दी पर बैठने के बाद उनके यहा सबसे पहले मेरा ही जन्म हुआ—जिसकी तारीख कार्तिक वदी ६ सवत् १६०१ विक्रमी है। इसी को अंग्रेजी तारीख २१ अक्टूबर १८४५ ई० होती है।"[3]

जन्म से लेकर दो तीन बरस की अवस्था तक की बातें बालकों को प्रायः याद नहीं रहा करती परन्तु सर प्रताप को अपनी इस उम्र के हाल उनकी माता की भरोसे वाली दासी और ड्योढी के दरोगा से मालूम होते रहे जिनका उल्लेख उन्होंने अपने स्वलिखित जीवन चरित्र में विस्तार से किया है तथा कई घटनाओं का तो पूरा का पूरा ब्यौरा दिया है। उन्ही के जीवन चरित्र से सकलित गद्याश देखिए— "अढाई साल की उमर हो जाने पर दूध पीने के बाद लगभग सारे समय तक मैं अपने पिताजी के पास ही रहा करता था। उन्हें मेरा बहुत अधिक ध्यान था और मुझे भी उन्ही के श्री चरणों

---

१ प० विश्वेश्वरनाथ रेऊ मारवाड का इतिहास द्वितीय भाग पृष्ठ ४६१

२ तवारीख जागीरदारान राजमारवाड पृ० १२ पर तखतसिंह के तृतीय पुत्र के रूप में रणजीतसिंह का नामोल्लेख किया गया है।

३ इसमें विक्रमी सवत् १६०१ दिया गया है वह गलत है अन्य पुस्तकों के विवरण में तथा कालगणना के हिसाब से वि स १६०२ ही सही बैठता है।

मे रहने का शौक था। मुझे याद है मेरा पेट बहुत बडा हुआ था और हाथ-पाव पतले-पतले थे। वैद्य लोग इसका कारण यह बताते थे कि मैं ११ मास गर्भ मे रहा हूँ, पिताजी पेट बडा होने के कारण मुझे हसी-हसी मे 'गणेशजी' कहकर पुकारा करते थे। इस रोग के इलाज के लिए उन्होने वैद्य जेठाजी को नियत किया, वह उनके साथ अहमदनगर से आये थे।"[1]

वैद्यजी के इलाज से उन्हे काफी लाभ हुआ। गणेशनुमा स्वरूप मे मुक्ति मिली तथा पेट जो बाहर बहुत निकल गया था बैठ गया और हाथ-पाव भी मोटे हो गये परन्तु दातो के निकलने पर वैद्यजी द्वारा दी गई दवाई 'पाराभस्म' का बुरा असर पडा और मसूडे बन्द हो गये। बनात के टुकडे पर नमक लगाकर एक मास तक रगडने की प्रक्रिया[2] अपनाने के बाद सरप्रताप के दात निकले। सामान्यतया बच्चों के दात दो-ढाई साल की अवस्था तक अवश्य निकल जाते है परन्तु सर प्रताप के दात साढे तीन साल की अवस्था हो जाने के बाद निकले।

बच्चे प्राय प्रारम्भ मे घुटनो के बल चलना-फिरना सीखते है किन्तु सरप्रताप घुटनो के बल कभी नही चले। पेट बडा होने के कारण प्रारम्भ मे वे बैठे-बैठे ही इधर-उधर खिसका करते थे। कुछ समय पश्चात् लकडी के घोडे और हाथी जिसके पाव तले पहिये लगे होते, उनके सहारे खडे होकर चलना-फिरना सीखा। प्रारम्भिक अवस्था मे उनके दोनो पाव चलते समय बाहर की ओर बहुत अधिक मुडे रहते थे, इस कारण उनके दोनो पावो के अगूठो को एक पक्के डोरे से बाध कर रखा जाता, ताकि चलते समय पाव सीधे पडे। ऐसा यह उपाय सरप्रताप के पिता महाराजा श्री तखतसिह के आदेशानुसार किया गया। कुछ समय पश्चात् आहिस्ता-आहिस्ता उनकी यह कमी दूर हो गयी और यह तरीका फलदायी सिद्ध हुआ। इस प्रकार सरप्रताप की शैशवकालीन घटनाओ से यह पता चलता है कि आम बच्चो की अपेक्षा उनका शैशव जीवन किस प्रकार से भिन्न एव जुदा था।

महाराजा तखतसिह को शिकार का बहुत शौक था। प्राय वे रानियो सहित शिकार के लिए जाया करते थे। उनकी सभी रानिया घोडे व ऊट की सवारी करना एव बदूक चलाना जानती थी। रानियो के लिए पर्दा की व्यवस्था का पूरा प्रबध होता था। जोधपुर के आसपास के पहाडी भागो मे कुछ तो शिकार के लिए पहले से स्थान बने हुए थे। कुछ स्वय महाराजा तखतसिह ने भी बनवाये जहा पर दो-तीन दिन के लिए वे शिकार हेतु वही ठहरा करते थे। शिकार के ऐसे अवसरो पर सरप्रताप भी किसी नौकर के कधो पर

---

१ सरप्रताप के स्वलिखित जीवन चरित्र मे—पृ० २७-२८

२. यह प्रक्रिया तब तक चालू रहती जब तक कि मसूडो से खून न निकलने लगे। यह कार्य सरप्रताप के मामा झालामण्ड के ठाकुर गभीरसिह को सौंपा गया था। (सरप्रताप का स्वलिखित जीवन चरित्र—पृ० २८)

चढे रहते। बचपन मे ही उन्हे शिकार के प्रति काफी रूचि हो गई थी जो बाद मे उनके जीवन का एक अविस्मरणीय अग बन गई। शिकार के लिए उन दिनो बालसमद, कायलाना और मडोर बहुत मशहूर स्थान थे। बालसमद और कायलाना दोनो तालाबो (Artificial Lakes) पर सुन्दर महल और बाग बने हुए थे। मण्डोर मारवाड की पुरानी राजधानी थी। इन तीन प्रसिद्ध स्थानो के अतिरिक्त भी शिकार के लिए तखतसागर, भीमभडक, गोरामणी, चोखा, लालसागर, छैलबाग बीजोलाई इत्यादि कई स्थान उपयुक्त थे।

बालसमद मे जुडी सरप्रताप के बचपन की एक घटना है—उन दिनो उनकी पाच-छ बरस की अवस्था होगी, जब वे बालसमद के बाग म एक बदर के साथ दगल मे उतर पडे। बाग मे पानी का ऊचा बना हुआ हौज था। हौज के पास पुराना पीपल और पीपल की खोह मे बदर रहता था। अपने साथियो महित बाग म खेलत वक्त उस बदर से मुठभेड के लिए सरप्रताप अकेले ही उद्यत हो गये। वे हौज की दीवार पर चलकर बदर तक बढने का प्रयास कर रहे थे इससे पूर्व ही बदर न उन पर हमला कर दिया। दोना लडते-लडते हौज के बाहर की ओर लगभग १५ फुट की ऊचाई स नीचे पत्थर के फर्श पर आ गिरे। बदर तो भाग गया और उनके सिर म सख्त चोट आई और खून बहने लगा। अत्यधिक खून बहने से वे बेहोश हो गये और कोई आधे घण्टे बाद होश आया। कालिन्म नामक डाक्टर द्वारा महीने भर इलाज कराने के उपरात उनका जख्म ठीक हुआ। इस घटना से यह ज्ञात होता है कि सरप्रताप बडे से बडे सकट के साथ सघर्ष करने को तत्पर रहते थे। बचपन मे ही ऐसे सस्कारो की नींव पड जाने के कारण वे निर्भय और निडर बने। उनका जीवन ऐसे सस्कारो मे ढला कि कालातर मे जाकर वे एक सफल प्रशासक, वीर योद्धा और कुशल समाज सुधारक के रूप मे प्रख्यात हुए। उन्होन जिस क्षेत्र मे भी पाव रखा उसमे सदा अग्रणी बने रहे। इसी महत्वकाक्षा और आत्मबल ने उनके जीवन को निखारने मे बहुत बडा योगदान दिया।

सरप्रताप अपने बचपन के साथियो के प्रति जो मित्रभाव और सद्भाव रखते थे वह भी एक अनुकरणीय प्रसग कहा जा सकता है। एक राजकुमार अपने मित्रो का विशेष ध्यान रखें, ऐसे उदाहरण कम ही मिलते हैं। सरप्रताप ने सदा अपने को एक साधारण जन के समान जीवन बिताने तथा बाह्य आडम्बर और कृत्रिमता से दूर अपने मन मे सरलता सहृदयता और स्वाभाविकता को अपनाने का प्रयास किया। इस दृष्टिकोण का उनके जीवन म बडा महत्व रहा तथा उनके पूरे जीवन मे यह स्वभाव हमे सर्वत्र दिखलाई पडेगा। यह लीक से हटकर एक नव परम्परा थी सह अस्तित्व की जिसमे समता का भाव प्रमुख लक्षित होता है। बचपन की यह घटना उनके इसी समता भाव का एक उदाहरण कही जा सकती है।

सरप्रताप की अवस्था लगभग सात वष के करीब हुई तो उनके पिता ने उनके लिए व उनके दो बडे भाई—जसवन्तसिंह, जो महाराजा तख्तसिंह के बाद जोधपुर की राज्यगद्दी पर बैठे तथा दूसरे जोरावरसिंह, तीना के लिए एक साथ रहने की अलग व्यवस्था

की। इनके लिए चार नौकर रखे गये और विभिन्न वश के पाच राजपूत अगरक्षक के रूप म नियत कर दिये। प्रत्येक राजकुमार के लिए भोजन की व्यवस्था अलग-अलग थी परन्तु सरप्रताप अक्सर पिताजी के साथ या अपने बडे भाई जसवन्तसिंह के साथ खाना खा लेते और अपना खाना तीन राजपूत लडको को जो उनके पास प्रतिदिन आते उन्ह दे दिया करते। इनम से दो तो चादावत मानसिंह के बेटे थे—(१) खुशालसिंह और (२) दौलत सिंह तथा तीसरा गुढा के ठाकुर कुशलसिंह खीची का बेटा लालसिंह था।

ये तीनो उनके प्रिय मित्र (लगोटिये यार) थे। इनके साथ सरप्रताप गुरु अमरचदजी के पास मारवाडी और हिन्दी पढा करते थे। महाराजकुमार जोरावरसिंह के साथ वे पडित अयोध्याप्रसादजी से उर्दू भी पढा करते थे। फारसी की भी कुछ किताबें—खालिकवारी, करीमा दस्तूरल अमल, अहमदनामा, गुलिस्ता आदि पढी थी किन्तु, कालान्तर मे इसका अध्ययन और अभ्यास जारी नही रख पाने के कारण वे फारसी भूल गये। मारवाडी ही उनके अध्ययन का प्रमुख और प्रिय विषय रही जो उन दिना रियासत की राज्यभाषा (Official Language) थी। इसी भाषा के माध्यम से प्रशासनिक कार्यों से सम्बन्ध रखने वाले पत्र और आफिस रिकार्ड देखने की प्रारम्भ मे उनकी रूचि जागृत हुई। उन्होने अग्रेजी भाषा का विधिवत् अध्ययन नही किया किन्तु छोटी आयु म ही उन्ह अग्रेजी अफसरो से बातचीत और भेंट करने का बहुत शौक था। अत अपने पिता की अनुमति से वे जोधपुर के रेजीडेंट कर्नल शेक्सपीयर (१८५१ ५६) के पास बातचीत करने जाते। कर्नल शेक्सपीयर स्वय सरप्रताप से बहुत खुश था और वह उन्हे अच्छी अच्छी बातें सिखान का प्रयास करता।

सरप्रताप की शिक्षा के बारे म R B Vanwart ने अपनी पुस्तक म लिखा है—

"With these boys he began the little literary education he ever received, the subjects of instruction being Marwari (the local interpretation of Hindi), Persian and Urdu, the last he learned to read and write well, but later, from lack of practice, lost the accomplishment. His favourite study was Marwari, which was in those days the official language of the State, and his taste for administrative work was shown thus early by his study of official papers and records for which he used to send to the Katcheri (Court-House) His father noticing this, wisely fostered a penchant so unusual in a mere boy by giving him, during the next few years, such small matters as were within his power to transact with the Resident, Colonel Shakespeare "[1]

---

1 R B Vanwart . The life of Lieut -General H H Sir Pratapsingh (Page No 8-9)

सात वर्ष की अवस्था मे ही सरप्रताप ने घुड़सवारी का अभ्यास प्रारम्भ कर दिया था। इसके लिए सर्वप्रथम घासी मिया (गाजी खान) को नियत किया गया। बडोदा निवासी गाजीखान एक मशहूर घुडसवार था, किन्तु उसका सीखान का ढग बहुत धीमा था जबकि करीमबख्श नामक एक अन्य घुडसवार बहुत कठोरता से काम लेकर सीखाता था। सर प्रताप को गाजीखान की अपेक्षा करीमबख्श का ढग पसद आया और अपने पिताजी से निवेदन किया कि मुझे लगडे चाबुक सवार (करीमबख्श) से घुडसवारी की शिक्षा दिलवाई जाय। तब तक सरप्रताप करीमबख्श का नाम नही जानते थे फिर भी लगडे चाबुक सवार के विशेषण से वही जाना जाता था। इस प्रकार उनकी स्वय की इच्छानुसार घुडसवारी के लिए करीमबख्श नियत किया गया। करीमबख्श ने सरप्रताप को घुडसवारी का प्रशिक्षण देने के पूर्व जब यह कहा कि—"आप मेरे मालिक है पालन करने वाले है लेकिन मेरे पास शिष्य के रूप मे सवारी सीखने आये हैं तो मैं आपका उस्ताद हू। जो कुछ आपसे कहूँ वह आपको करना पडेगा। बुरा न मानियेगा ऐसा न हो कि मेरे निर्वाह का वसीला ही जाता रहे। तब सरप्रताप ने प्रत्युत्तर मे यह कहा कि— मुझे आपकी कठोरता का ढग पसन्द आया है और इसीलिए मैंने खुद ही दरबार साहब से अनुरोध करके आपके पास आने की मजूरी ली है। मैं तो अच्छी सवारी सीखने की इच्छा रखता हू आप जैसा उचित समझे सलूक करें। नरमी या सख्ती किसी भी दशा मे मुझे शिकायत नही होगी। [1]

जब तक शिक्षक के प्रति ऐसी निष्ठा और समर्पण भाव जागृत नही होता तब तक शिष्य न तो गुरू से अच्छी शिक्षा ही प्राप्त करने मे सफल हो सकता है और न ही वह उस विद्या मे पारगत हो सकता है। इसी भावना से प्रेरित होकर सरप्रताप ने अपनी घुडसवारी की शिक्षा प्राप्त की जिसमे आगे चलकर उन्होने उल्लेखनीय दक्षता हासिल की। वे शैक्षिक कार्य मे औपचारिकता को एक बाधा मानते थे। जब तक गुरू और शिष्य के मध्य निभाई जाने वाली यह औपचारिकता दूर नही हो जाती तब तक विद्याभ्यास निरा ढोग ही प्रतीत होगा। शायद इसीलिए सरप्रताप शैक्षणिक क्षेत्र मे ऐसी औपचारिकता के विरोधी और स्वाभाविकता के हिमायती थे जिसमे गुरू और शिष्य के पावन रिश्ते मे रागात्मक सम्बन्ध स्थापित हो सके। इन दो इकाइयो के मध्य जानबूझ कर रखी जाने वाली दूरी से उस कृत्रिमता की उत्पत्ति होती है जो शिष्य और गुरू के मध्य आवश्यक समझी जाने वाली वास्तविकता सहजता स्वाभाविकता और सरलता को निगल जाती है। ऐसी स्थिति मे शिक्षक शिक्षा कैसे दे सकेगा ? जैसे शिक्षक कोई शिक्षक न होकर चाकर हो और अपने मालिक के मनसुहाती बात करे तथा जी हजूरी मे सारा समय बिताये। उनके स्वय के शब्दो मे भी स्पष्टत यही अभिमत लक्षित होता है–' मेरी राय मे राजाओ के बेटो की शिक्षा और पालन आम लोगो की तरह होना चाहिये। तभी यह ठीक-ठीक हो सकती है। योरोप मे

---

१ सरप्रताप के स्वलिखित जीवन चरित्र से—पृ० ६१

यही ढग है और भारत मे भी पुराना यही तरीका था।"[1] इस प्रकार भारतीय गुरुकुल प्रणाली को वे अच्छा समझते थे जिसमे समान भाव से गुरु सभी जाति या वर्ग के शिष्यो को शिक्षा देता तथा सभी शिष्यों के लिए आश्रम के नियम एक समान हुआ करते—चाहे यदुवशी युवराज कृष्ण हो या सुदामा जैसा गरीब ब्राह्मण।

सरप्रताप ने इस बात को अपनी कथनी तक ही सीमित नही रखा उसे व्यवहारिक रूप प्रदान करने का भी प्रयास किया तथा अपने स्वय के जीवन मे तो पूरी तरह उतरा। गुरु के प्रति उनका श्रद्धानत भाव इन पक्तियो मे द्रष्टव्य है—"उस्ताद करीमबख्श ने मुझे बहुत मेहनत और सावधानी से सवारी सिखाई। जो कुछ घोडे की सवारी के बाबत मुझे आता है वह अधिकतर उन्ही की कृपा का फल है। मैं अपने को उनका कृतज्ञ समझता हूँ और आज तक घोडे पर चढते समय उनका नाम लेकर रकाब मे पाव डालता हू।"[2]

बचपन से ही घुडसवारी के अतिरिक्त शिकार का शौक सरप्रताप को बहुत अधिक था। शिकार के लिए निशाना साधना आवश्यक होता है और सरप्रताप का यह अभ्यास उनके पिता की देखरेख मे ही प्रारम्भ होता है। स्वय उनके ही शब्दो मे—"मैं आठ साल की आयु मे अच्छे ढग की सवारी करने लग गया था। अब पिताजी ने बदूक चलवानी भी शुरू करा दी। मेरे लिए कोई खास हल्की बदूक न थी, इसलिए मैं अपने पिताजी की भारी और दोनाली बदूक से ही अभ्यास किया करता। मैं उसे कधे पर नही रख सकता था इसलिए किसी पेड की शाखाओ के मध्य मे रखकर किसी पत्थर अथवा अनार का या बुए पर लोटे का निशाना किया करता था। मेरे पिताजी निशाना लगाने के बाबत स्वय मुझे बताया करते।"[3]

इस प्रकार उन्होने अपने पिता के ही निर्देशन मे निशाना साधने का अभ्यास सम्पूर्ण किया। बचपन मे नये-नये करतब या कार्य करने की उत्सुकता चपल बालक मे जाग्रत होना एक स्वाभाविक बात है। इसी प्रकार की प्रबल उत्सुकता सरप्रताप के बाल्यकाल की इस घटना मे प्रकट होती है—

"प्राय मुझे शिकार मे बदूक चलाने की आज्ञा नही थी। एक बार हाका के द्वारा सूअरो का शिकार होना था। शिकार के लिए मेरे पिताजी और बडे भाई उचित स्थानो पर बैठे थे। मुझे पिताजी ने यह आज्ञा दी कि यदि कोई घायल सूअर मेरे पास से निकले तो मैं गोली चला सकता हूँ। अचानक ऐसा हुआ कि एक बहुत मोटा सूअर मेरे पास से गुजरा। मैं रह न सका और मैंने उस पर गोली दाग दी। फलत वह गिर गया। पिताजी

---

१ सरप्रताप के स्वलिखित जीवन चरित्र से—पृ० ३२
२ सरप्रताप के स्वलिखित जीवन चरित्र से—पृ० ३२
३ सरप्रताप के स्वलिखित जीवन चरित्र से—पृ० ३३

ने मुझे प्रोत्साहन दिया और भविष्य मे शिकार मे शामिल होन की स्वीकृति दे दी। उस समय मेरी आयु ९-१० बरस की थी। अपनी बदूक के अलावा मैं पिताजी के लिए गोलीदार बदूक तैयार रखता था। मुझे पिताजी ने समझाया था कि यदि अच्छा निशाना सीखना चाहू तो सदा गोलीदार बदूक काम मे लाया करू। अत उनके आदेश के अनुसार मैंने २० बरस की आयु तक छर्रेदार बदूक नही चलाई। छोटे जानवर उदाहरण के लिए खरगोश, तीतर, मुर्गाबी, तिलोर आदि पर भी गोलीदार बदूक से गोली दागा करता था।"[1]

धीरे-धीरे उनका निशाने का अभ्यास बहुत अच्छा हो गया। अपनी बाल्यावस्था मे ही उन्ह कई बार भयानक शिकारो मे भी भाग लने का अवसर मिला। निशाना साधने के अतिरिक्त शिकार के समय शिकारी के साहस और धैर्य की भी परीक्षा होती है तथा अचानक उत्पन्न होने वाली भयावह स्थितियो से निपटने के लिए अपने विवेक स शीघ्र ही उसे निर्णय लेना पडता है। शिकार सम्बन्धी नरप्रताप की ऐसी दो घटनाए यहा उद्धृत की जाती है जिससे यह ज्ञात होता है कि अपनी बाल्यावस्था मे ही उन्ह परीक्षा की ऐसी घडी से गुजरना पडा जिसम शिकारी की सफलता का रहस्य उसके अदम्य साहस, निर्भीक निर्णय और अचूक निशाने पर ही निर्भर करता है। नरप्रताप के ही शब्दा म वर्णित ये दो शिकार की घटनाए इस प्रकार है—

(१) एक बार का जिक्र है कि एक बाघ के लिए बकरा बाधा गया। जब रात के समय बाघ बकरा खाने आया तो पिताजी ने बदूक चलाई। गोली उसकी कमर पर लगी और उसकी हड्डी टूट गई। लेकिन बाघ वहा से उठकर ५० कदम की दूरी पर छिप गया। सुबह महाराजा साहब उसके पाव और खून के निशान देखते उसके पीछे गये। हमारे पास एक जगली कुत्ता था, जो बाघ की गध पाकर उसके पास जा पहुचा और भूकने लगा। महाराजा साहब ने सब रानियो को बुलाया और २५ कदम की दूरी स उन्ह बाघ दिखाने लगे। उनके पास दोनाली बदूक थी और महाराजकुमार जसवतसिहजी के पास एकनाली। मुझे आज्ञा दी कि बाघ पर पत्थर फेंको। मैंने बदूक रख दी और पत्थर फेंकने शुरू किये। बाघ एकाएक जोर से उठा, जिससे उसकी हड्डी फिर जुड गयी और लगडाता हुआ हमारी ओर लपका। पिताजी और भाई साहब ने गोलिया चलाई लेकिन टोपिया न चली। इतने मे बाघ ४५ कदम पर आ गया। मैंने अपनी बदूक उठाकर फायर किया, जो बाघ के सिर मे लगा और वह वही गिर पडा। यह देखकर पिताजी मुझ पर बहुत प्रसन्न हुए और कहा— कि मागो क्या मागते हो। मैंन निवेदन किया कि आपके पास जो दोनाली बदूक है, वह मुझे प्रदान की जाय। तदनुसार उसी समय पिताजी ने वह बदूक मुझे उपहार मे दे दी।"[2]

(२) लगभग उन्ही दिनो की एक और बात भी मुझे याद है। एक दिन पिताजी जोध-

---

१ नरप्रताप के स्वलिखित जीवन चरित्र से—पृ० ३४
२ नरप्रताप के स्वलिखित जीवन चरित्र से—पृ० ३४-३५

पुर से पश्चिम की ओर ५ कोस की दूरी पर बेरू नामक गांव में हरिणों के शिकार के लिए गये। लौटते समय गदाभाकर के निकट मार्ग में किसी वनचर द्वारा मारी हुई एक भेड देखी। इससे उन्हे शक हुआ कि जरूर किसी बाघ या जगली जानवर ने मारी है। ऊटो से उतरकर पिताजी एक ओर गये और मैं दूसरी ओर। पहाडी बिल्कुल साफ थी, उस पर कोई पेड आदि नही था और जानवर के छिपने की कोई जगह न थी इसलिए वह एक छोटी चट्टान के नीचे सिर छिपाये बैठा था। आधा शरीर छाया मे और आधा धूप मे था। मैं चट्टान पर दूसरी ओर से चढ गया, तो क्या देखता हूँ कि बाघ मेरे पाव के नीचे उसी चट्टान के नीचे दुबका बैठा है। मेरे पास दोनाली बदूक थी। मैंने घोडे चढाये, किन्तु एका-एक ख्याल हुआ कि जानवर इतना निकट है, सो क्यों न तलवार का वार किया जाय ऐसा अवसर फिर न मिलेगा। यह सोचकर मैंने तलवार का बीडा दाहिने हाथ से खोलना शुरू किया। अभी तलवार चार अगुल बाहर निकली ही थी कि दूसरी ओर से पिताजी को आते देख बाघ उठ खडा हुआ। उसने मेरी ओर आना चाहा। एकाएक उसकी और मेरी आखें चार हुई। मैंने तलवार छोड बदूक की नाली उधर की। मुझे बदूक उठाने और निशाना बाधने का समय ही न मिला। मैंने उसी समय घोडा दबा दिया और बाघ वही पीठ के बल जा गिरा। आवाज सुनकर पिताजी भी वहा पहुँच गये लेकिन मुझ पर बहुत नाराज हुए कि मैं अकेले क्यो इतनी दूर आ गया और क्यो अपने को ऐसे खतरे मे डाला। जब मैंने तलवार से मारने की कोशिश के बाबत बताया, तो और भी नाराज हुए कि इस उमर मे ऐसा भीषण काम करना केवल मूर्खता है। भविष्य मे ऐसा करोगे तो तलवार और बदूक दोनो छीन ली जायेगी। इधर तो मुझे इस प्रकार झिडका लेकिन मेरी अनुपस्थिति मे मेरी तारीफ किया करते और सब सरदारो को इस घटना की बाबत बतलाते हुए कहा कि यह छोकरा यदि जीवित रहा, तो बहुत वीर होगा। उस दिन के बाद मुझे वे 'बाकडा बहादुर' कहकर पुकारा करते।"[१]

इस अवस्था मे ही सरप्रताप सूअरी व उनके बच्चो से निहत्थे लडने का अभ्यास किया करते इससे सम्बन्धित उनके रोचक संस्मरण भी द्रष्टव्य है—

"उन्ही दिनो मे मैंने एक और कला सीखी जो केवल मनोरजक ही नही थी बल्कि बाद की आयु मे लाभदायक भी सिद्ध हुई। बायलाना और छैलबाग मे सूअरो को दाना डाला जाता था, जिससे उनकी संख्या बहुत हो गई। वे ऐसे हिल गये थे (अभ्यस्त हो गये थे) कि हम उन्हे धान दिखाते-दिखाते कुछ दूरी पर ले जाया करते थे। कई बार सूअरी को बच्चो सहित एक कोठे में ले जाते। सूअरी को तो धकेल बाहर कर देते और बच्चों के साथ खेला करते। कभी किसी का सिर और कभी किसी की टाग या कान पकड लेते। इस तरह हम उनसे छेड-छाड किया करते। जब वह हम पर हमला करते तो उस समय उनकी आखो पर दाया हाथ रखकर जोर कम करने के लिए कुछ दूर पीछे हट जाते

---

१ सरप्रताप के स्वलिखित जीवन चरित्र से—पृ० ३५

और फिर बायें हाथ से जोर के साथ उसका बाया कान पकड कर उसे दूसरी ओर भटका देते। फिर दाहिने हाथ से टांगें पकड कर गिरा देते। वह भी हम काटने की कोशिश करते। अभ्यास करते करते हम बड बड सूअरो को इसी तरीके से चारो खाने चित्त गिरा कर उनके ऊपर चढ बैठते थे। सूअर अपनी कमर घुमा फिरा नही सकता। इसलिए जब उसका मुह एक ओर मुडा हो तो उसे दूसरी ओर गिरा लेना कठिन नही होता। यह खेल हम एक साल के सूअरों और सूअरियो के साथ किया करते थे। क्योकि उनके काटने वाले दात नही होते थे–अभ्यास करने के बाद भारी डील डौल वाले सूअर को भी गिराया जा सकता था। इस खेल का हम इतना शौक था कि हम चिट्ठिया डाला करते और जिसका नाम निकलता वह कुश्ती करने के लिए आगे बढता था। इस अभ्यास के कारण मैं बाद के दिनो मे एक बार अपनी जान बचाने मे सफल हुआ।[1]

इसी बीच सरप्रताप ने तैरना भी सीख लिया। तैरने का अभ्यास प्राय कायलाना नदी मे किया करते। जहा अपने मित्रो के साथ मछलिया पकडने तथा उनको तलवार या छडी की नोक से बीधने के काय म उनको गहरे पानी मे भी जाना पडता था अत धीरे धीरे तैरने का अच्छा अभ्यास हो गया।

जीवन की कुछ घटनाओ के वर्णन के पश्चात् उनके बचपन मे घटित होने वाली कुछ समसामयिक ऐसी प्रमुख घटनाओ से परिचित होना भी उचित ही होगा जिनका प्रभाव सर प्रताप पर पडा तथा वे घटनाए उनके मन और मस्तिष्क मे सदा के लिए बस गयी। सन् १८५७ की ऐसी ही चार घटनाएँ है जो उनकी १२ वर्ष की अवस्था मे घटित हुई किन्तु उनका स्मरण उन्हे जीवन भर तक रहा। इन घटनाओ मे पहली घटना थी दिल्ली का गदर (भारत का प्रथम स्वतन्त्रता सग्राम)। दूसरी घटना मारवाड के कुछ सरदारो द्वारा (सिपाही विद्रोह) स्वतन्त्रता सग्राम मे सक्रिय सहयोग देना। तीसरी घटना जोधपुर के किले के बारूदखाने पर बिजली का गिरना तथा चौथी घटना थी भीषण भूकम्प की।

सन् १८५७ के स्वतन्त्रता समर की हलचल से सम्पूर्ण भारत देश मे एक क्रांतिकारी लहर का सूत्रपात हुआ तथा सर्वत्र अग्रेजी शासन के विरुद्ध विद्रोह की आग भडक उठी। कई कारण ऐसे रहे जिसके फलस्वरूप बगावत करने वालो को सफलता नही मिली और अग्रेजो ने देशी राजाओ के सहयोग से इस विद्रोह को कुचल दिया तथा उनके इन प्रयास को गदर की सज्ञा दी गई। इस विद्रोह का तत्कालीन प्रभाव सीमित ही हुआ यह कहा जा सकता है लेकिन इस बगावत के परिणामस्वरूप कालान्तर मे देश ने एक करवट ली जिससे देश की आजादी की अहमियत को समझने का लोगो को मौका मिला और यहा के निवासियो मे स्वतन्त्रता प्राप्ति की इच्छा जाग्रत हुई। देश की आजादी के लिए इस काल मे कुर्बान हुए शहीदो का बलिदान व्यर्थ नही गया वरन् एक ऐसे वातावरण का निर्माण हुआ कि

---

१ सर प्रताप के स्वलिखित जीवन चरित्र से—पृ० ३६

आगे आने वाले ८-६ दशकों में यह भावना और जोर पकड़ती गयी तथा अन्ततोगत्वा सन् १९४७ में देश स्वाधीन होकर रहा।

सन् १८५७ के इस (सिपाही विद्रोह) स्वतन्त्रता संग्राम से तत्कालीन मारवाड़ राज्य भी अछूता कैसे रहता। उन दिनों मारवाड़ में यातायात व दूरसंचार के साधनों की कमी थी। न रेल थी न डाक-तार आदि की व्यवस्था। डाक का प्रबन्ध भी देशी ढग से ही होता था यानि कागज पत्र हरकारों या पत्रवाहकों द्वारा ही एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाये जाते थे। ऐसी दशा में राज्य के बाहर देश की क्या स्थिति है उसका यहाँ के लोगों को शीघ्र ही पता नहीं लगता था। अतः पत्र द्वारा प्राप्त सूचना या सुने-सुनाये समाचारों पर ही निर्भर रहना पड़ता था। ऐसे ही माध्यम से (अजमेर और ऐरनपुरा छावनी से आये पत्रों के आधार पर) यहाँ यह [जानकारी प्राप्त हुई कि "देशी फौजों ने ब्रिटिश गवर्नमेंट के खिलाफ बगावत करके अंग्रेजों के बंगले आदि जला दिये हैं तथा कुछेक अंग्रेज अफसरों को भी मार डाला है। गदर की बाबत प्रतिदिन कोई न कोई नया समाचार फैल जाता जिससे लोगों के दिलों में बेचैनी बढ़ जाती। एक दिन यहाँ समाचार मिला कि दिल्ली में मुगल बादशाह तख्त पर बैठ गया है और बहुत से अंग्रेज, बच्चे स्त्रियां सहित मार डाले गये हैं। पूर्बी, हिन्दू और मुसलमान सभी विद्रोही हो गये हैं। इसी प्रकार एक दिन यह खबर मिली कि अजमेर और नसीराबाद में भी फौज बागी हो गई है और कुछ अंग्रेज अपने बच्चों और बीबियों को लेकर बनों में जान बचाने के लिए छिपते फिर रहे हैं। यह सुनकर महाराजा तखतसिंहजी ने जोधपुर से बहुत ही सहज गाड़ियाँ और रथ उन्हें लाने को भेज दिए और कुछ ऐसे प्रतिष्ठित तथा विश्वस्त व्यक्ति नियत किये जो उन्हें बिना कष्ट जोधपुर ले आयें। जब वह सब लोग जोधपुर आये तो उनकी दशा अत्यधिक बिगड़ी हुई थी। उन्हें सबको किले में ठहराया और उनकी देखभाल का सन्तोषजनक प्रबन्ध किया गया।"[1] इस घटना से यह स्पष्ट लक्षित होता है कि महाराजा तखतसिंह की अंग्रेजों से घनिष्ट मित्रता थी तथा वे हर सम्भव अंग्रेजों की सहायता व मदद करने को उद्यत रहते थे।

दूसरी घटना पहली घटना से ही जुड़ी है। जब सन् १८५७ में यहाँ की छावनियों में अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह का सूत्रपात हुआ और यह सिलसिला एक के बाद दूसरी छावनी के सैनिक विद्रोह के रूप में जारी था उस समय मारवाड़ और सिरोही राज्य की सीमा पर स्थित ऐरनपुरा छावनी की फौज बागी हो गई और लूट-पाट मचाती अजमेर की ओर अग्रसर हुई। मारवाड़ के कुछेक सिरायती सरदार एवं छोटे-मोटे जागीरदार भी इनके साथ हो गये जिसमें आऊवा, आसोप, गूलर और आलणियावास के ठाकुर प्रमुख रूप से उल्लेखनीय थे। इस विद्रोह अभियान को दबाने के लिए महाराजा तखतसिंह ने किलेदार अनाड़सिंह के सेनापतित्व में राज्य की सेना भेजी। उनकी सहायता के लिए सिंघवी कुशलराज और राव रिद्धमल लोढा को रियासत की पैदल फौज व रिसाले के साथ भेजा। बागी फौज

---

१ नरप्रताप के स्वलिखित जीवन चरित्र से—पृ० ३९-४०

व रियासत की फौज के बीच युद्ध हुआ जिसमे रियासत की फौज को पराजय का मुख देखना पडा।

अपने पिता के व्यवहार के प्रभाव के कारण एव इन दो घटनाओ के वृतात को देख सुनकर सरप्रताप की अग्रेजो के प्रति मित्रता की धारणा और दृढ हुई तथा अपने बाल्यकाल मे अपनायी इस धारणा को आजीवन उन्होने निभाने का प्रयास किया।

तीसरी घटना थी किले के बारूदखाने पर बिजली गिरने से उनमे आग लगने की। इस घटनाक्रम के बारे मे सरप्रताप ने अपने जीवन चरित्र मे लिखा है कि—"मुझे भली प्रकार याद है कि दिल्ली के गदर का समाचार आने के ठीक १५ दिन बाद किले के बारूद-खाने पर बिजली गिरी। यह बारूदखाना पहाडी मे चट्टान को काटकर बनाया गया था। उसमे चार कमरे थे। तीन मे बारूद था और चौथे मे सन। ऊपर पत्थर की छत्त थी, जो बहुत मजबूत थी। बारूद के जलने से इतने जोर का धमाका हुआ कि एक पत्थर, जो चार मन का था, वहाँ से उठकर छ मील की दूरी पर चौपासनी नदी म जा पडा। फतहपोल के निकट बहुत से घर गिर गये। चामुण्डाजी का मन्दिर भी पूर्णतया नष्ट हो गया। शहर के मकानो के लगभग सभी किवाड चौखटो से निकल गये और सब बन्द ताले खुल गये। इसके अतिरिक्त ५०० आदमी मारे गये।

जिस समय वह बिजली गिरी तो उससे थोडी ही देर बाद दो धमाके इतने जोर के हुए कि जो न कभी सुने थे और न देखे थे। आवाजें सुनते ही पिताजी को यह सन्देह हुआ कि शायद बागी फौज सूरसागर आकर रेजीडेन्सी पर हमला करने लगी है और यह आवाजें उनकी तोपो की है। दूसरी आवाज से महल का किवाड टूट गया और शीशे का एक टुकडा महाराजा तखतसिंह की नाक के पास गाल पर लगा जिससे तीन इच लम्बा और एक इच गहरा घाव हो गया। उन्होने सबको आज्ञा दी कि घोडो पर सवार हो और बन्दूकें तथा तलवारें लेकर सूरसागर की ओर बढो। फलत वे स्वय और हम सब वहाँ पर उपस्थित लोगो के साथ कमर कस कर तैयार हो गये और सूरसागर की राह ली। जब आधे रास्ते तक गये, तो रेजीडेन्ट साहब का पत्रवाहक मिला। उसने बताया कि वहाँ तो कोई हमला नही हुआ लेकिन रेजीडेन्ट को सदेह हुआ कि कही कायलाना पर धावा न बोला गया हो। इतने म जोधपुर से एक सवार ने आकर सूचना दी कि वास्तव म बारूदखाने पर बिजली गिरी है और उसके उडने से ये धमाके हुए है।

जब जोधपुर पहुँचे तो अभी सन की कोठडी जल रही थी। महाराजा साहब ने इस भय से कि कही फिर धमाका न हो और किले म रखे हुए बारूद को हानि नही पहुँचे बारूद के तीसरे कोठे को बचाने की उन्होने कोशिश की। फलत कई स्थानो पर छेद करके और पास ही के तालाबो से पानी के घडे और कलश मगा-मगा कर उनसे आग बुझवा दी। इस प्रकार तीसरा कोठा बचा लिया। उनकी जान खतरे म थी और उस समह कई सर-दारो और अहलकारो ने प्रार्थना की कि आप किसी सुरक्षित स्थान पर पधार जाँय, लेकिन

उन्होंने अपना कर्त्तव्य समझकर वहीं डटे रहना उचित समझा। नगर में इतनी अधिक संख्या में मकान गिरे कि उन्हें खोदने में आठ दिन लगे। दरबार ने यह कोशिश की थी कि कोई आदमी वहीं दबा हुआ हो तो उसे बचाया जाय किन्तु कोई भी दबा हुआ आदमी जीवित न मिला। कारण यह था कि सब इमारतें पत्थर की थी और उनके गिर पड़ने से किसी के बचे रहने की आशा नहीं हो सकती थी। जिस पर उन्होंने अपनी ओर से पूरा प्रयत्न किया।"[1]

इसी क्रम में चौथी घटना का उल्लेख करते हुए वे आगे लिखते हैं कि—"इस घटना के ठीक १५ दिन बाद एक ऐसा भयानक भूचाल आया जो कई मिनट तक रहा। यदि १५ दिन पहले बारूदखाना के उड़ जाने से मकान न गिरते तो वह जरूर इस भूचाल में गिर जाते। जो उस आघात से बच गये थे, उन पर इस भूचाल का कोई असर न हुआ। ये तीनों घटनाएँ पखवियों पर हुई जो निरन्तर एक के बाद दूसरी बारी-बारी से पड़ी।"[2]

प्राकृतिक प्रकोप की ये दो हृदय विदारक घटनाएँ प्रतापसिंह की बाल्यावस्था में घटित हुई तथा इस अवसर पर किये गये बचाव कार्य आदि का उनके ऊपर गहरा असर पड़ा। प्रजा के सुख-दुःख का एक शासक को कितना ध्यान रखना होता है तथा प्राकृतिक समस्या और जनसमस्या के निवारण का शासक पर कितना गुरुतर भार होता है, उसके इस नैतिक कर्त्तव्य को समझने का प्रतापसिंह को अपनी बाल्यावस्था में ही अच्छा अवसर प्राप्त हुआ तथा उपर्युक्त चार घटनाएँ भी इसी प्रसंग पर प्रकाश डालती हैं।

१२ वर्ष की अवस्था में प्रतापसिंह की अपने दोनों भाइयों के साथ रहने की व्यवस्था फतहमहल में की गयी। इस काल में शिकार का क्रम तो जारी रहा ही परन्तु साथ ही इस अवस्था में राज्य का कामकाज देखने और सीखने का प्रतापसिंह को अत्यधिक चाव था। फलस्वरूप अधिकांश समय दफ्तरों और अहलकारों से सम्बन्धित कागजात, नई राजाज्ञाएँ आदि पढ़ने व समझने में व्यतीत होने लगा। इस कारण धीरे धीरे वे राज्यकार्य से परिचित हो गये। इस बीच महाराजकुमार जसवन्तसिंह का पहला विवाह जामनगर की राजकुमारी जाडेची से तथा दूसरा विवाह ईडर रियासत के मुडेटी ठिकाने के सरदार चौहान सूर्यमल की बेटी से सम्पन्न हुआ। दूसरी शादी का कारण यह था कि उस समय महाराजकुमार जसवतसिंह की आयु २० वर्ष की थी तथा उनकी पहली पत्नी की अवस्था केवल ८-९ वर्ष की ही थी। वैसे राजपरिवार में बहुविवाह की प्रथा प्रचलित थी और यह उनका एक रिवाज सा बन गया था। महाराजकुमार जसवतसिंह के पश्चात् जोरावरसिंह का विवाह झालामण्ड के ठाकुर गंभीरसिंह की लड़की के साथ हुआ। उन्हीं दिनों की एक घटना है जो प्रतापसिंह के जीवन में घटित स्मरणीय घटनाओं में से एक है। उसका वर्णन उन्हीं के

---

१ नरप्रताप के स्वलिखित जीवन चरित्र से—पृ० ४०-४१

२ नरप्रताप के स्वलिखित जीवन चरित्र से—पृ० ४१

शब्दो मे—"उन्ही दिनो की मुझे एक और बात याद है और वह यह है कि महाराजा साहब एक बार गौडवाड के इलाके मे शेर की शिकार के लिए गये। लौटते समय बाली मे ठहरे। यहाँ सूअर बहुत होते है। मैंने बल्लम से सूअर मारने की आज्ञा चाही लेकिन उन्होंने इन्कार कर दिया और कहा कि तू अभी बहुत छोटा है, जगल और भूमि भी खराब है। फिर महाराजकुमार जसवतसिंहजी ने आज्ञा मागी लेकिन नेजे स सूअर मारने की आज्ञा नही मिली। हाँ हाथी पर से गोली चलाकर सूअर के शिकार की स्वीकृति मिल गई। मेरे लिए आज्ञा थी कि मैं तमाशा देखने के सिवा और कुछ न करू और हाथी पर बैठा रहूँ।

जब हमारा दल रवाना हुआ, तो भाईसाहब और उनके साथ कुछेक आदमी बन्दूकें लेकर रवाना हुए। वह स्वय तो हाथी पर बैठे और मैं घोडे पर सवार हुआ। रास्ते म उन्होंने कई बार हाथी पर आ जाने के लिए कहा, लेकिन मुझे हाथी की सवारी बिल्कुल नापसद थी, घोडे को अधिक पसन्द करता था, मै घोडे से न उतरा। जब जगल म पहुँचे तो अचानक एक सूअर मेरे पास से निकल गया। ऐसा मौका देखकर मुझसे रहा न गया और मैंने अपना घोडा उसके पीछे छोड दिया। मेरे दाहिने हाथ म चारनाली बन्दूक थी। मैंने बायें हाथ पर बन्दूक को सहारा देकर एक फायर किया जो उसके पेट म लगा। दूसरा फायर करने के लिए हाथ लबलबी पर रखा हुआ था और ख्याल सूअर की ओर था। इतन मे सामने एक खाई आ गई, जिसम ठोकर खा कर घोडा नीचे जा गिरा और मै भी बायें हाथ गिर गया। दाहिन हाथ मे जो बन्दूक थी, उसका मु ह जमीन मे धस गया और उधर आप से आप लबलबी पर जोर पडा, जिससे बन्दूक चल गई। ऐसी दशा मे गोली को बाहर निकालने के लिए रास्ता न था इसलिए मु ह क पास नाली को तोडकर मेरे बाये बाजू मे जा लगी और चू कि नाली तोडने म उसका जोर खत्म हो चुका था, इसलिए बाहर न निकल सकी और बाहु म ही रह गई। घोडा उठकर भाग गया। मैंने बन्दूक और पगडी वही छोड दी और घोडे के पीछे भागा। मैं उस समय गरम था। गोली लगने का मुझे पता न था। घोडा तो न पकडा जा सका, लेकिन लौटकर मैंने पगडी जो उठाई और सिर पर बाधने लगा तो देखा कि बाहु स खून बह रहा है और छाती लहू से तर है। जब आस्तीन ऊपर चढाई तो देखा कि गोली अटकी हुई है। पहले तो मैंने स्वय ही दाँतो और हाथ से गोली निकालनी चाही, इतने मे कुछेक आदमी भी आ गये लेकिन उनसे भी न निकली। अन्त मे नूर मुहम्मद मकरानी ने दात स पकडकर एक ओर झटका दिया, जिसस बेचारे का दात ही टूट गया। फिर उसन दूसरी तरफ के दातो स पकडकर इस तरीके से जोर लगाया कि गोली निकल गई। मेरे भाई साहब डर के मारे उदासीन हो गये कि दरबार साहब उन पर बहुत नाराज होगे। लेकिन मैंने उन्हे तसल्ली दी कि वह चिंता न करें। मैंने पगडी बाध ली और साहस करके दूसरे घोडे पर सवार हो गया। लेकिन प्यास के मारे मेरा दम निकला जाता था। आस-पास कही पानी न था। भाई साहब न चोब चीनी के दाने मु ह मे रखन को दिए, लेकिन उनसे मु ह और भी सूख गया। बहुत प्रयत्न के बाद थोडा सा पानी मिला। आश्चर्य है कि इतनी अधिक प्यास थी, लेकिन एक घू ट पीते ही शाति हो गई।

जब हम डेरे पहुँचे तो पिताजी सोये हुए थे। सब डरते थे। महाराजकुमार जसवतसिंहजी ने सारा हाल कह सुनाया। किन्तु इस बात से सभी को आश्चर्य हुआ कि दरबार साहब ने किसी को कुछ न कहा और मुझे आकर भी यही कहा कि मैं बहुत प्रसन्न हूँ कि तुम घायल हुए हो, क्योंकि राजपूत के लिए घायल होना विवाह से कम नहीं। लेकिन इस बात का दु ख अवश्य है कि अपने हाथ से घायल हुए हो, दुश्मन के हाथों से नहीं। फिर जोधा भैंरोंसिहजी को हिदायत दी कि बबूल की दाँतुन बनाकर और शराब मे भिगोकर मेरा घाव साफ करें।"[1]

महाराजकुमार जसवतसिंह और जोरावरसिंह के विवाह के पश्चात् प्रतापसिंह का प्रथम विवाह सन् १८६० मे जाखन के ठाकुर लक्ष्मणसिंह भाटी की पुत्री के साथ सपन्न हुआ। ठाकुर लक्ष्मणसिंह भाटी की एक बहिन जो महाराजा मानसिंह की महारानी थी, का इस विवाह म महत्वपूर्ण हाथ था। रिश्ते म वह प्रतापसिंह के दादी लगती थी। उनके कोई सतान तो थी नहीं। प्रतापसिंह पर विशेष प्रेम था और एक तरह से उन्हे गोद ले रखा था। माजी भटियानीजी की यह हार्दिक इच्छा थी कि उनके आखो के सामने प्रतापसिंह का विवाह हो जाय इसलिए अपनी भतीजी (ठा० लक्ष्मणसिंह भाटी की पुत्री) से विवाह करा दिया। दुल्हन ८ वर्ष की थी और दूल्हे की अवस्था केवल १५ वर्ष की थी। इस प्रकार छोटी अवस्था मे ही यह विवाह सम्पन्न हुआ। राजकुमार प्रतापसिंह का दूसरा विवाह जैसलमेर हुआ। उनके दूसरे विवाह के कुछ समय पूर्व एक बहुत ही मनोरजक घटना घटी।

घटना सन् १८६३ की है। बरसात के दिन थे। उस दिन बरसात होकर थम गई थी। ऐसे मौसम मे महाराजकुमार जसवतसिंह और प्रतापसिंह कुछ साथियो के साथ हरिण की शिकार के लिए झालामण्ड की ओर गये। शिकार मे अभी दो-तीन हरिण ही हाथ लगे थे कि एकाएक मूसलाधार वर्षा होने लगी। ऐसी स्थिति मे उन्होंने झालामण्ड जाना उचित समझा। झालामण्ड पहुँचकर भोजन किया। बारिश इतनी जोर की थी कि झालामण्ड की नदी म पानी का स्तर बढने लगा। गाव के चारो ओर पानी होन से झालामण्ड एक द्वीप सा बन गया। पानी के बढते हुए स्तर को देखकर दोनो भाइयों ने यह विचार किया कि वर्षा के कारण हमे कुछ दिन के लिए झालामण्ड न रुकना पड जाय इसलिए शीघ्र ही अपने साथियो के साथ जोधपुर के लिए रवाना हो गये। झालामण्ड ठाकुर गभीरसिंह के रोकने पर भी नहीं रुके। झालामण्ड की नदी से पार होने लगे तो पानी सिर से ऊपर तक की ऊंचाई से बह रहा था। महाराजकुमार जसवतसिंह को तैरना नही आता था। अत प्रतापसिंह ने अपनी देशी नस्ल की घोडी (मारवाडी घोडी) जो बहुत अच्छी तैरा करती थी, उन्हें दी और स्वय उसकी लगाम पकड कर तैरते हुए नदी पार की। नदी से पार तो हो गये लेकिन उसके बाद भी चारो ओर पानी ही पानी फैला हुआ नजर आ रहा था। उन्हें ऐसा लगा कि प्रलय होने वाला है। वर्षा भी निरन्तर हो रही थी। ऐसी दशा मे 'गोगयला'

---

१ सरप्रताप के स्वलिखित जीवन चरित्र—पृ० ४७-४८

शब्दों मे—"उन्ही दिनो की मुझे एक और बात याद है और वह यह है कि महाराजा साहब एक बार गौडवाड के इलाके म शेर की शिकार के लिए गये। लौटते समय वाली मे ठहरे। यहाँ सूअर बहुत होते है। मैंने वल्लम से सूअर मारने की आज्ञा चाही लेकिन उन्हाने इन्कार कर दिया और कहा कि तू अभी बहुत छोटा है जगल और भूमि भी खराब है। फिर महाराजकुमार जसवतसिहजी ने आज्ञा मागी लेकिन नेजे स सूअर मारने की आज्ञा नहीं मिली। हाँ हाथी पर से गोली चलाकर सूअर के शिकार की स्वीकृति मिल गई। मरे लिए आज्ञा थी कि मै तमाशा देखने के सिवा और कुछ न करू और हाथी पर बैठा रहूँ।

जब हमारा दल रवाना हुआ, ता भाईसाहब और उनके साथ कुछेक आदमी बन्दूकें लेकर रवाना हुए। वह स्वय ता हाथी पर बैठे और मैं घोडे पर सवार हुआ। रास्ते मे उन्हाने कई बार हाथी पर आ जाने के लिए कहा, लेकिन मुझे हाथी की सवारी बिल्कुल नापसद थी, घोडे को अधिक पसन्द करता था मै घोडे से न उतरा। जब जगल म पहुँचे तो अचानक एक सूअर मेरे पास से निकल गया। ऐसा मौका देखकर मुझस रहा न गया और मैंने अपना घोडा उसके पीछे छोड दिया। मेरे दाहिने हाथ म चारनाली बन्दूक थी। मैंने बायें हाथ पर बन्दूक को सहारा देकर एक फायर किया जा उसके पेट म लगा। दूसरा फायर करन के लिए हाथ लबलबी पर रखा हुआ था और ख्याल सूअर की ओर था। इतन म सामन एक खाई आ गई जिसमे ठाकर खा कर घोडा नीचे जा गिरा और मै भी बायें हाथ गिर गया। दाहिन हाथ मे जो बन्दूक थी उसका मु ह जमीन मे घस गया और उधर आप स आप लबलबी पर जोर पडा जिससे बन्दूक चल गई। ऐसी दशा मे गोली को बाहर निकालने के लिए रास्ता न था इसलिए मु ह के पास नाली को तोडकर मरे बायें बाजू म जा लगी और चू कि नाली तोडन म उसका जार खत्म हो चुका था, इसलिए बाहर न निकल सकी और बाह म ही रह गई। घाडा उठकर भाग गया। मैंन बन्दूक और पगडी वही छाड दी और घोडे के पीछे भागा। मै उस समय गरम था। गोली लगने का मुझे पता न था। घोडा तो न पकडा जा सका लेकिन लौटकर मैंन पगडी जो उठाई और सिर पर बाधने लगा तो देखा कि बाह स खून बह रहा है और छाती लहू से तर है। जब आस्तीन ऊपर चढाई तो देखा कि गाली अटकी हुई है। पहले तो मैंन स्वय ही दाँता और हाथ से गोली निकालनी चाही इतने म कुछेक आदमी भी आ गये लेकिन उनस भी न निकली। अन्त मे नूर मुहम्मद मकरानी ने दात स पकडकर एक ओर झटका दिया जिमस बेचारे का दात ही टूट गया। फिर उसन दूसरी तरफ के दाता स पकडकर इस तरीके से जोर लगाया कि गोली निकल गई। मेरे भाई साहब डर के मारे उदासीन हो गये कि दरबार साहब उन पर बहुत नाराज हागे। लेकिन मैंने उन्ह तसल्ली दी कि वह चिंता न करें। मैंने पगडी बाध ली और साहस करके दूसरे घोडे पर सवार हो गया। लेकिन प्यास के मारे मेरा दम निकला जाता था। ग्राम-पास कही पानी न था। भाई साहब न चोब चीनी के दान मु ह म रखन को दिए, लेकिन उनसे मु ह और भी सूख गया। बहुत प्रयत्न के बाद थोडा सा पानी मिला। आश्चर्य है कि इतनी अधिक प्यास थी, लेकिन एक घू ट पीते ही शाति हो गई।

जब हम डेरे पहुँचे तो पिताजी सोये हुए थे। सब डरते थे। महाराजकुमार जसवतसिंहजी ने सारा हाल कह सुनाया। किन्तु इस बात से सभी को आश्चर्य हुआ कि दरबार साहब ने किसी को कुछ न कहा और मुझे बाहर भी यही कहा कि मैं बहुत प्रसन्न हूँ कि तुम घायल हुए हो, क्योंकि राजपूत के लिए घायल होना विवाह से कम नही। लेकिन इस बात का दु ख अवश्य है कि अपने हाथ से घायल हुए हो, दुश्मन के हाथों से नही। फिर जोधा भैरोंसिंहजी को हिदायत दी कि बबूल की दाँतुन बनाकर और शराब म भिगोकर मेरा घाव साफ करें।"[1]

महाराजकुमार जसवतसिंह और जोरावरसिंह के विवाह के पश्चात् प्रतापसिंह का प्रथम विवाह सन् १८६० मे जाखन के ठाकुर लक्ष्मणसिंह भाटी की पुत्री के साथ सपन्न हुआ। ठाकुर लक्ष्मणसिंह भाटी की एक बहिन जो महाराजा मानसिंह की महारानी थी, का इस विवाह म महत्वपूर्ण हाथ था। रिश्ते मे वह प्रतापसिंह के दादी लगती थी। उनके कोई सतान तो थी नही। प्रतापसिंह पर विशेष प्रेम था और एक तरह से उन्हे गोद ले रखा था। माजी भटियानीजी की यह हार्दिक इच्छा थी कि उनके आखो के सामने प्रतापसिंह का विवाह हो जाय इसलिए अपनी भतीजी (ठा० लक्ष्मणसिंह भाटी की पुत्री) से विवाह करा दिया। दुल्हन ८ वर्ष की थी और दूल्हे की अवस्था केवल १५ वर्ष की थी। इस प्रकार छोटी अवस्था मे ही यह विवाह सम्पन्न हुआ। राजकुमार प्रतापसिंह का दूसरा विवाह जैसलमेर हुआ। उनके दूसरे विवाह के कुछ समय पूर्व एक बहुत ही मनोरजक घटना घटी।

घटना सन् १८६३ की है। बरसात के दिन थे। उस दिन बरसात होकर थम गई थी। ऐसे मौसम मे महाराजकुमार जसवतसिह और प्रतापसिह कुछ साथियो के साथ हरिण की शिकार के लिए भालामण्ड की ओर गये। शिकार मे अभी दो-तीन हरिण ही हाथ लगे थे कि एकाएक मूसलाधार वर्षा होने लगी। ऐसी स्थिति मे उन्होंने भालामण्ड जाना उचित समझा। भालामण्ड पहुँचकर भोजन किया। बारिश इतनी जोर की थी कि भालामण्ड की नदी मे पानी का स्तर बढने लगा। गाव के चारो ओर पानी होने से भालामण्ड एक द्वीप सा बन गया। पानी के बढते हुए स्तर को देखकर दोनो भाइयो ने यह विचार किया कि वर्षा के कारण हमे कुछ दिन के लिए भालामण्ड न रुकना पड जाय इसलिए शीघ्र ही अपने साथियो के साथ जोधपुर के लिए रवाना हो गये। भालामण्ड ठाकुर [illegible] के रोकने पर भी नही रुके। भालामण्ड की नदी से पार होने लगे तो पानी सिर से ऊपर तक की ऊचाई मे बह रहा था। महाराजकुमार जसवतसिह को तैरना नहीं आता था। [illegible] सिह ने अपनी देशी नस्ल की घोडी (मारवाड़ी घोड़ी) आ [illegible] लगाम पकड कर तैरते हुए नदी पार की। [illegible] लेकिन उसके बाद भी चारो ओर पानी ही पानी [illegible] लगा कि प्रलय होने वाला है। वर्षा भी निरन्तर हो रही थी। [illegible]

---

१ सरप्रताप के स्वलिखित जीवन चरित्र—पृ० [illegible]

नामक एक ऊंचे टीले की ओर सब रवाना हुए। उस अवस्था मे उन्हे वही एक मात्र सहारा दीख पडा। कुछ समय तक उसी टीले पर टिके रहे परन्तु जब देखा कि पानी यहा भी पहुँच जायेगा और हम यहा सुरक्षित नही रह सकते तब विवश होकर उनको वह टीला छोडना पडा तथा एक पहाडी की ओर प्रस्थान किया। अर्द्धरात्रि मे वहाँ सब पहुँचे जैसे-तैसे कर रात बिताई। प्रात होने पर देखा तो पहाडी के चारो ओर दूर तक पानी ही पानी दिखलाई पड रहा था। यह देखकर सभी निराश हो गये। उनके कपडे पानी से तर थे, न सिर छुपाकर बैठने की कोई जगह थी न खाने-पीने की पास म कोई सामग्री थी। ऐसी स्थिति मे सबका निराश होना स्वाभाविक ही था। यात्रा की थकान, जाडे की ठिठुरन और पेट की जठराग्नि के कारण सब के प्राण व्याकुल हो रहे थे।

ऐसी दशा मे प्रतापसिंह एक मुसलमान सवार के साथ इधर-उधर घूमने लगे और घूमने के दौरान दो हिरणो का शिकार किया। बन्दूक के तोडो से आग जलाई और पत्थरो तथा चट्टानो के नीचे से प्राप्त घास फूस और लकडी के टुकडो पर उनको अधपका करके पेट की भूख को शान्त करने का प्रयास किया। जिस पहाडी पर उन्होने रात बिताई उससे माइल भर की दूरी पर 'फिटकामणी' नाम का एक छोटा सा गाव था वहाँ जाकर कुछ खाने पीने का सामान लाने की तजवीज की। बहुत मुश्किल से वहाँ पहुँचा गया और वहाँ से कुछ नमक मिर्च तथा बाजरे का आटा प्राप्त हुआ। गाव के निवासी स्वय अतिवृष्टि से सकट की स्थिति मे थे। उनके मकान ही नही सारा मान असबाब और पशु आदि भी नष्ट हो रहे थे। कुछ बोरियाँ व चारपाइयाँ लेकर पहाडी पर गये और छाडो की छत के रूप म काम मे जाने वाली बोरियो का एक तम्बू बनाया। तम्बू मे चारपाइयाँ डाल उनके नीचे घोडो का सामान रख कर ऊपर लेट जाते। उनके पास न तो पैसे थे न उस गाव मे सामान मिल सकता था। एक सप्ताह तक बरसात की झड लगी रही और विवश होकर उन्हे वही एक सप्ताह बिताना पडा। गाव से जो कुछ भोजन प्राप्त होता उसी पर निर्भर रहना पडता। सकट की घडी मे ही व्यक्ति के धैर्य की परीक्षा हुआ करती है। ऐसी परिस्थिति म भी प्रतापसिंह हर सकट को धैर्य से झेलते रहे तथा अपने प्रयास से स्थिति को अनुकूल बनाने का श्रम करते रहे। व्यक्ति म सबसे बडी आवश्यकता होती है हर स्थिति मे अपने आप को आनन्दित अनुभव करने की उस व्यक्ति मे कमी नहीं थी। सप्ताह भर की उस विकट प्राकृतिक आपदा मे फसे रहने पर भी उस तरूण की तरूणाई मे सब लोग खुशगवार होकर वक्त गुजारते। आनन्द की अनुभूति तो व्यक्ति के विचार पर निर्भर करती है साधन पर नही। और फिर जब तक कोई व्यक्ति आपदाओ से परिचित नही होता तब तक उसे सुख और आनन्द की महत्ता कैसे ज्ञात होगी। स्वय प्रतापसिंह के शब्दो म—"प्रत्येक घर से बाजरे की एक-एक रोटी आया करती और उन्ही पर हमारा निर्वाह होता। उन दिना जो आनन्द रूखी सूखी रोटियो मे था वह लाख बढिया भोजन होने पर भी कभी नहीं मिला। हम उन गरीब भाइयो के कृतज्ञ थे कि वे मुसीबत म होते हुए भी हमें रोटी भेजते थे। सच तो है—जब तक मनुष्य आपत्ति को नही देखता तब तक उसे सुख और आनन्द की कद्र नही होती।"[1]

---

१ नरप्रताप के स्वलिखित जीवन चरित्र से—पृ० ५१

इधर तो वे इस आपत्ति मे भी ग्रामवासियो के सहयोग से आनन्द की अनुभूति कर रहे थे किन्तु जोधपुर के राजमहल म हालात कुछ और ही थे। वहाँ यह बात घर कर गई कि वे सब मर गये है या पानी मे बह गये हैं क्योंकि सात दिन तक कोई सूचना या समाचार भी प्राप्त नहीं हुआ और रोना धोना तथा शोक भी शुरु कर दिया। सातवें दिन महाराजकुमार जसवन्तसिंह का धनिया नामक सईस खोज मे निकला तथा एक टीबे पर खडा होकर इधर उधर नजर दौडाने लगा। गुडा के बनजी खीची तैरकर उसके पास गये और समाचार दिया कि सभी सकुशल है। धनिया सईस ने जब यह खबर महाराजा साहब को दी तो राजमहल म खुशी की लहर छा गई। धनिया को इनाम के रूप मे ५०० रु तथा एक जोडी सोन के कडे मिले। पाच हाथी भेजकर बाढ म फसे उन सब लोगो को जोधपुर लाया गया। इस सात दिवसीय गुमशुदा शिकारी दल के जोधपुर पहुँचने पर खुशिया मनाई गयी। शहर के लोग भी उनको देखने के लिए उमड पडे। राजमहल मे सभी प्रकार की सुख-सुविधाओं मे पले राजकुमारो को इस घटना से अवश्य ही कुछ नवीन अनुभूतिया हुई होंगी। हरिण की शिकार की बदौलत उस सात दिवसीय यातना शिविर का अनुभव प्रत्येक शिविरार्थी को जीवन भर याद रहना स्वाभाविक है।

इस प्रसिद्ध यादगार घटना के पश्चात् सम्वत् १९१९ के भादों के महीने मे राजकुमार प्रतापसिंह का दूसरा विवाह जैसलमेर के छत्रसिंह की पुत्री से हुआ। ठाकुर छत्रसिंह जैसलमेर रावलजी के चाचा थे। इसी अवसर पर महाराजा तखतसिंह का विवाह भी जैसलमेर के रावलजी की बहन के साथ सम्पन्न हुआ।

महाराजा तखतसिंह और महाराजकुमार जसवंतसिंह के मध्य मनमुटाव पैदा हो गया। महाराजकुमार जसवंतसिंह का ऐसा सोचना था कि उनकी आवश्यकताओं और अपेक्षाओं की पूर्ति के लिए महाराजा तखतसिंह विशेष ध्यान न देकर उपेक्षापूर्ण व्यवहार कर रहे है। रीवा से आये शगुन (सम्बन्ध) को महाराजा ने तो स्वीकार कर लिया किन्तु महाराजकुमार ने वहाँ विवाह करने म साफ इन्कार कर दिया इससे स्थिति और तनावपूर्ण बन गई अत महाराजकुमार किशोरसिंह का विवाह रीवा किया गया परतु इसके पश्चात् भी पिता-पुत्र (महाराज तखतसिंह और महाराजकुमार जसवन्तसिंह) के मध्य स्थिति म सुधार होने की बजाय आपसी मतभेद और अधिक ऊभर कर सामने आये। वस्तुत इसका कारण यह था कि दोनो के सलाहकार और सरदार उस मनमुटाव को कम करने की बजाय बढाने का प्रयास करने लगे। प्रतापसिंह ने इस आपसी मतभेद को दूर करने की कोशिश की और कुछ हद तक अपने प्रयास में सफल भी हुए किन्तु पुन वही स्थिति पैदा हो गयी। इस अवसर पर तत्कालीन एजेन्ट टू दी गवर्नर जनरल कीटिंग ने रियासत म उत्पन्न इस स्थिति को समाप्त करने का निश्चय किया तथा यह उपाय ढूढा कि बाप और बेटे दोनो को एक स्थान पर न रखा जाय जिससे कुछ वैमनस्य कम हो सकता है इसलिए महाराज कुमार जसवन्तसिंह को बुलाकर यह समझाया कि तुम युवराज हो और इस समय राज्य का कार्य सीखने और समझने का प्रयास कीजिए तथा एक परगने का प्रबन्ध करने मे अपनी कुशलता और योग्यता प्रमाणित कीजिए। महाराजा तखतसिंह को यह सलाह दी गई कि

महाराजकुमार अब युवा हो गये हैं उन्हें काम में प्रवीण करने का अवसर देना चाहिये ताकि वे अपनी शक्ति का सही दिशा में प्रयोग कर सकें। यह उचित रहेगा कि उन्हें गोडवाड का परगना सौंप दिया जाय तथा वहां की सारी व्यवस्था का उत्तरदायित्व युवराज जसवन्त सिंह पर छोड दिया जाय।[1]

इस उपाय से दोनों को कोई एतराज न था। दोनों ने कीटिंग की बात मान ली फिर भी कुछ असामाजिक स्वार्थी तत्वों ने अपनी दिमागी खुरापात में एक बार और कोशिश की, पुत्र को पिता के विरुद्ध भडकाने की और महाराजकुमार जसवंतसिंह के गोडवाड जाने को 'देश निकाले' की सज्ञा दी। इस अफवाह में महाराजकुमार को सशय होना स्वाभाविक ही था, अन्त में जब प्रतापसिंह ने उनके सारे सशय दूर किये तब कहीं वो गोडवाड जाने को राजी हुए। गोडवाड में 'बाली' को अपनी राजधानी बनाकर उस परगने का जसवतसिंह ने ५ साल तक सारा प्रबन्ध किया। महाराजकुमार के कुशल प्रशासन और योग्य नेतृत्व से पूरे परगने में अमन चैन हुआ। परगने की व्यवस्था व प्रजा की भलाई तथा उन्नति के लिए हर सभव प्रयास किये गये। अपने बडे भाई के इस कार्य में प्रतापसिंह ने भी सच्चे मन से पूर्ण सहयोग प्रदान किया।

रियासत में इस प्रकार के आतरिक झगडे होना आम बात थी और यह परम्परा तत्कालीन समय में और उससे पूर्व में भी हर कहीं देखने को मिलती है। यह प्रयत्न राज्य

---

1 Matters were, however, going from bad to wrose when the Agent to the Governor General for Rajputana, Mr Keating hit upon a solution, he suggested that one district of Marwar be handed over to Jaswant Singh, so that he might, by administering it now, be better fitted for his greater responsibility when he should be called upon to govern the whole state

The Maharaja agreed to this, and handed over the management of the Godwar pargana to Jaswant Singh but before the latter departed to take over his new duties some of the mischief makers put it in to his head that he was being sent into exile, and would not be allowed to return to Jodhpur without leave from his father Fortunately, Partap Singh became aware of this, and speedily convinced his brother of the real reason for his appointment, and they started for Godwar without further ado Pratap Singh actually was refused permission to go, but, in view of the previous orders to remain with his brother and the fact that his services would be needed even more than before, he decided to disregard the order

(From—R B Vanwart The life of Lieut General H H Sir Pratap Singh Page No 37-38)

की उन्नति मे बाधक ही नही बहुत घातक ही सिद्ध होते हैं। इस बात को प्रतापसिंह ने बहुत ही अच्छी तरह समझ और परख लिया था। इसीलिए अपने पिता और बडे भाई के मध्य पैदा हुए मतभेद को बहुत बुरी बात मानते हुए इसके निराकरण हेतु अपने स्तर पर प्रयास ही नही किये अपितु उसके मूल कारणों की खोज बीन भी की। उन्होने उन कारणों का पता लगाया जिन कारणो से यह स्थिति उत्पन्न होकर एक विकट समस्या के रूप मे परिवर्तित हो जाती है। उन्होंने इन कारणो का उल्लेख अपने जीवन-चरित्र मे करते हुए इस बात से भी आगाह किया है कि रियासत का शासक जब दूरदर्शी नही होता है तो उसका बुरा परिणाम निकलता है—

"' कुछ समय से पिताजी और भाई साहब के बीच मतभेद हो चुका था। मैंने उसे दूर करने की बहुत कोशिश की और एक सीमा तक सफल भी हुआ—लेकिन कुछ समय बाद फिर खीचातानी आरम्भ हो गई। दोनो के सलाहकार, अहलकार और सरदार उस सुलगती आग को बुझाने के बजाय यह कोशिश करते थे कि यह और भडक उठे, ताकि उन्हें अपना काम बनाने का मौका मिल सके। अपनी ओर से भी कई प्रकार की छोटी-छोटी बातें बनाकर पारस्परिक भेद को और बढा देते थे। ऐसी दशा प्राय रियासतो मे हो जाया करती है। यदि रईस स्वय दूरदर्शी और प्रभाव वाला न हो, तो अधीन अधिकारी सिर उठाना शुरु कर देते हैं। इस प्रकार राजवश मे फूट का बीज बो कर दिन दिन नये हथकडो के आश्रय से पारस्परिक भेदभाव को बहुत बढा देते हैं। बाप को बेटे और भाई को भाई के विरुद्ध करने मे कोई कसर बाकी नही रखते। गम्भीरता से देखा जाय, तो प्राय रियासतो का सर्वनाश ऐसे ही लोगों के हाथो से होता है। जब तक ऐसी अवस्था रहती है, कोई भी रियासत उन्नत नही हो सकती, बल्कि दिन प्रतिदिन अवनति की ओर ही वह बढती जाती है। विभिन्न दल बनाकर एक-दूसरे से विरोध जारी हो जाता है और राजवश मे से किसी न किसी को अपनी ओर करके उसकी आड कर लेते हैं। हिन्दुस्तान के इतिहास मे इस प्रकार के असख्य उदाहरण है। जोधपुर की रियासत मे भी यही अवस्था कई बार हुई।"[1]

आन्तरिक गृह-कलह की ऐसी स्थिति म प्रतापसिंह का मन स्थिर नही रह सकता था और उन्होंने इस समस्या की जटिलता को आकते हुए यह निश्चय किया कि उनका जोधपुर मे अधिक दिन तक रहना उचित नही होगा क्योकि पिता और बडे भाई के बीच उत्पन्न हुए मतभेद से एक न एक दिन किसी न किसी की नाराजगी का पात्र बनना पडेगा। महाराजकुमार जसवन्तसिंह के इर्दगिर्द अब भी ऐसे ही लोगों का जमघट था जो उन्हें प्रतापसिंह के विरुद्ध भडकाये रहते थे। ऐसी स्थिति म दोनो भाइयो के मध्य भी मनमुटाव गहरा रूप ल रहे था इस कारण वे अपने जीजाजी, जयपुर के महाराजा रामसिंह के पास चले गये। जयपुर प्रस्थान के सम्बन्ध मे स्वय प्रतापसिंह की उक्ति इस प्रकार है—

---

१ नरप्रताप के स्वलिखित जीवन चरित्र से—पृ० ६२

"पिताजी और भाईसाहब के बीच मैं ऐसी स्थिति मे था कि किसी बात के कारण दोनों मे से किसी एक की नाराजगी का पात्र बन सकता था। महाराजकुमार जसवंतसिंह के चारों ओर ऐसे आदमी थे, जो दिल से मुझे पसन्द नही करते थे और मैं भी उनके रग-ढग को पसद नही करता था। इसके अतिरिक्त मुझे भी शौक था कि मैं दुनिया देखू और अनेक प्रकार के अनुभव प्राप्त करू। महाराजा रामसिंह ने मुझे २ ३ बार लिखा था कि कुछ समय के लिए मेरे पास रहो। फलत मैंने निश्चय कर लिया कि कुछ वर्ष उन्ही के पास जयपुर रहकर एक दूसरी रियासत की स्थिति को जान सकू। मैंने भाई साहब से जयपुर जाने की आज्ञा चाही, लेकिन उन्होंने ना कर दी। इस पर मैंने चुपचाप चले जाने का निश्चय कर लिया। मैंने परिवार को किले मे अपनी दादीजी के पास पहुँचा दिया और एक दिन आधी रात को घोडे पर सवार हो गया। एक दूसरा फालतू घोडा और साधारण सा सामान लेकर जोधपुर से निकल पडा। रास्ते मे तीन दिन कटे। तीसरे दिन रात के समय जयपुर पहुँचा।"[१]

सवत् १६०६ मे प्रतापसिंह की बडी बहन चादकवर का विवाह जयपुर के महाराजा रामसिंह के साथ हुआ था तथा सवत् १६४० म उनकी दूसरी बहन इन्द्रकवर और चाचा महाराजा पृथ्वीसिंह की बेटी केसरकवर का विवाह भी जयपुर के महाराजा रामसिंह के साथ सम्पन्न हुआ। महाराजा रामसिंह का प्रतापसिंह के व्यक्तित्व निर्माण म महत्वपूर्ण योगदान रहा। आर० बी० वेनवर्ट के शब्दो म—

"In A D 1852, when Pratap Singh was in his seventh year, there came into his life one who was destined to play a leading part in the moulding of his character and to instilin him that predominant devotion to duty which was so marked a characteristic of his career, this was Maharaja Ram Singh of Jaipur, who came in the year under notice to marry Pratap Singh's eldest sister Shri Chand Kunwar Baiji "[२]

प्रतापसिंह के जोधपुर से जयपुर प्रस्थान करने के सम्बन्ध मे वेनवर्ट लिखता है—
"Pratap Singh's questing spirit led him at this stage to seek experience under new conditions He decided that his position as intermediary between his father and brother would sooner or later lead him into difficulties and cause him to fall out with one of them atleast further, he was not on good terms with most of the men whom Jaswant Singh chiefly favoured, foremost among them being Faizulla Khan, always an uncompromising opponent of his He decided therefore to accept the repeatedly

---

१ सरप्रताप के स्वलिखित जीवन चरित्र से—पृ० ६७

1 R B Vanwart . The Life of Lieut-General H H Sir Pratap Singh ; Page 11

given invitation of Maharaja Ram Singh and attach himself to him for a few years, so that he might benefit by constant association with such a wise ruler "[1]

जयपुर पहुँचने पर महाराजा रामसिंह ने प्रतापसिंह का हार्दिक स्वागत किया तथा बहुत प्रेम से उनके लिए सारी व्यवस्था कर दी। जयपुर निवास के दौरान प्रतापसिंह की हर सुख सुविधा का ध्यान तो रखा ही जा रहा था। साथ ही महाराजा रामसिंह ने उन्हे राजकार्य मे सलग्न करने का प्रयास किया। अपनी कौंसिल का सदस्य बनाने का प्रस्ताव भी रखा किन्तु प्रतापसिंह ने इसे यह कहकर टाल दिया कि मुझे वापिस जोधपुर जाना है तथा आपकी रियासत के मामलो म मेरा हस्तक्षेप करना उचित नही होगा। बाद मे महाराजा रामसिंह ने एक लाख की जागीर और लाल्सोट का किला देकर जयपुर का जागीरदार बनाने की तजवीज की किन्तु प्रतापसिंह ने इससे भी इन्कार कर दिया क्योंकि उन्हे यह उचित प्रतीत नही हुआ।

जब उक्त दोनो प्रस्तावो मे से किसी भी प्रस्ताव पर प्रतापसिंह सहमत नही हुए तो महाराजा रामसिंह ने उन्हें अपना मुसाहिब बना दिया। प्रतापसिंह जब महाराजा राम सिंह के मुसाहिब नियत हुए उस समय भी वे कोई वेतन नही लेते थे। उनके सारे व्यय महाराजा रामसिंह अपने हाथ खर्च की रकम मे से दिया करते। अंग्रेजो से सम्बन्धित जो भी कार्य होता वह प्रतापसिंह को सौंपा जाता।

जयपुर निवास की अवधि के दौरान प्रतापसिंह ने रियासत के कार्य को समझने तथा उनकी क्रियान्विति के सम्बन्ध मे बहुत से अनुभव प्राप्त किये। यही पर बड़े-बड़े अंग्रेज अफसरो से मुलाकात व मित्रता के सुनहरे अवसर प्राप्त हुए। उनके मित्रो मे जयपुर के प्रसिद्ध इजीनियर कर्नल जेकब, राजपूताना मालवा रेल्वे के सबसे बड़े पुलिस ऑफिसर मि० ह्वाईट तथा ठगी विभाग के विभागाध्यक्ष सर एडवर्ड ब्रेडफोर्ड थे। महत्वपूर्ण अंग्रेज पदाधिकारियो से सम्पर्क मे आने से प्रतापसिंह को बहुत कुछ नई बातें सीखने को मिली। विशेषकर सर एडवर्ड ब्रेडफोर्ड से उनके विशेष सम्बन्ध स्थापित हुए तथा वे उसकी योग्यता, कार्यकुशलता और सद्व्यवहार से काफी प्रभावित हुए। कालान्तर मे जब प्रतापसिंह ने जोधपुर का शासन प्रबन्ध सभाला उस समय सर एडवर्ड ब्रेडफोर्ड 'एजेन्ट टू दी गवर्नर जनरल फॉर राजपूताना' बने तब भी प्रतापसिंह को उससे योग्य सलाह व प्रेरणा प्राप्त होती रही।

जयपुर आने के बाद जहाँ प्रतापसिंह को शासन प्रबंध सबन्धी कार्यों को भली भांति समझने का अवसर प्राप्त हुआ वहीं देशाटन और भ्रमण द्वारा दुनिया देखने का मौका भी

---

1. R B Vanwart : The Life of Lieut-General—H H Sir Pratapsingh : Page 41.

मिला। महाराजा रामसिंह के साथ शिमला का भ्रमण किया। शिमला जहाँ राजस्थान की प्रकृति और जलवायु से बिल्कुल भिन्न दशाएँ हैं। प्रकृति के प्रभाव एव विविध स्वरूपों को, विभिन्न सामाजिक सगठनों के सास्कृतिक जीवन तथा विविध विषमताओं से देशाटन द्वारा ही भली भाति परिचित हुआ जा सकता है।

जिन दिनो प्रतापसिंह शिमला में ही थे उस समय यह ज्ञात हुआ कि महाराजा तखतसिंह और महाराजकुमार जसवतसिंह के बीच झगडा पुन बढ गया और स्थिति यहाँ तक पहुँच गई कि महाराजा ने यह निश्चय कर लिया कि सारे कार्य गवर्नमेंट को सौंप दिये जाय। "इसका वास्तविक कारण यह था कि भाई साहब (महाराजकुमार जसवतसिंह) रियासत के मामलों में सुधार के दृष्टिकोण से कुछ कठोरता से काम लेते थे, किन्तु अहलकार लोग छोटी-छोटी बातो को रग चढाकर महाराजा साहब को भडका देते। भाई साहब का पत्र आया कि परिस्थिति भीषण हो गई है। मै शीघ्र ही जोधपुर पहुँचू और तदनुसार हम एकाएक चल दिये।"[1]

जब ऐसा समाचार प्राप्त हुआ तो प्रतापसिंह शिमला से तुरन्त रवाना हो गये और आगरा होते हुए जयपुर पहुँचे। जयपुर से अजमेर होकर जोधपुर पहुँचने का मार्ग २५० मील है। इस दूरी को ऊँट और घोडे की सवारी से २१ घण्टा म तय कर प्रतापसिंह जोधपुर पहुँचे। जोधपुर पहुँचने पर सारी स्थिति ज्ञात हुई। फिर अपने पिता (महाराजा तखतसिंह) को जाकर निवेदन किया कि—"हम सब लोगो के होते हुए रियासत को गर्वनमट को सौपना ठीक नही। हम सब लोग सदैव के लिए निकम्मे समझे जायेंगे। अगर आप महाराज कुमार से सतुष्ट नही है तो आपके और कई बेटे हैं उनम से किसी को रियासत का शासन प्रवन्ध सौपा जा सकता है। मैंने शनै शनै उन्हे सतुष्ट कर दिया कि महाराजकुमार साहब की तजवीजें रियासत की उन्नति के हेतु हैं और उनके दिल में स्वार्थी लोगो के कारण सदेह हुआ। इस तरह समझा बुझाकर दोनो का मतभेद दूर कर दिया और पिताजी न अपना विचार बदल लिया।"[2]

प्रतापसिंह न महाराजा तखतसिंह को जैसे-तैसे मनाकर रियासत गर्वनमट को न सौपी जाय इसके लिए राजी किया। वे जलवायु परिवर्तन के विचार से आबू पर्वत पर गये। ठीक इसी समय "महाराजकुमार जोरावरसिंह को उनके मामा मानजी भाटी ने यह सिखलाया कि महाराजा साहब महाराजकुमार साहब से नाराज है और रियासत का गवर्नमट को सौपने आबू गये है। तुम्हारे लिए यह अवसर है कि कोई इलाका दबा लो। फलत. उनकी सीख पर वह नागौर के किले म जा घुसे। खाटू आगोता और कसारी के ठाकुर भी जो विद्रोही थे उनके साथ जा मिले।"[3] "वि० स० १९२९ के आषाढ

१ सरप्रताप के स्वलिखित जीवन चरित्र से—पृ० ७१
२ सरप्रताप के स्वलिखित जीवन चरित्र से—पृ० ७१-७२
३ सरप्रताप के स्वलिखित जीवन चरित्र से—पृ० ७२

(ई० सन् १८७२ की जुलाई) में जिस समय महाराजा आबू पर थे उस समय कुछ जागीरदारों की मिलावट से द्वितीय महाराजकुमार जोरावरसिंह ने नागौर के किले पर अधिकार कर लिया। यद्यपि ये महाराजा के द्वितीय पुत्र थे तथापि उनके जोधपुर गोद आने के बाद पहले इन्हीं का जन्म हुआ था इसी से यह राज्य में अन्य भाइयों से अपना हक विशेष समझते थे। इस मामले में खादू, आगोता और हरसोलाव के ठाकुर भी शरीक थे।"[1]

जब यह समाचार महाराजा तखतसिंह को प्राप्त हुआ तो वे शीघ्र जोधपुर लौट आये तथा जोरावरसिंह के नाम नागौर खाली करके शीघ्र जोधपुर उपस्थित होने का एक सख्त हुक्मनामा भेजा किन्तु उसकी अनुपालना न हुई। बाद में पण्डित शिवनारायण और मेहता विजयसिंह दोनों को जोरावरसिंह को समझाने भेजा कि यह अनुचित कार्य न करें परन्तु जोरावरसिंह ने उनकी एक न मानी। जोरावरसिंह को उनके मामा ने इस कदर भड़का दिया था कि अपने पिता और भाइयों से भी युद्ध करने को वह उतारू हो गये। यह देख महाराजा तखतसिंह बहुत क्रोधित हो गये और सारी फौज एकत्र करने का आदेश दिया। प्रतापसिंह को यह कार्य सौंपा कि जितना जल्दी हो सके किले पर हमला कर उस पर कब्जा किया जाय।

विभिन्न टुकड़ियों में विभक्त भिन्न-भिन्न प्रकार की वर्दियां पहने सैनिकों की, समस्त दरबारी फौज का कमान अफसर जब प्रतापसिंह को बनाया गया तो सर्वप्रथम उन्होंने सब सरदारों को बुलाकर हालात मालूम किये। उस समय उन्हें पता चला कि दरबारी फौज के सैनिकों को पिछले कई महीनों से वेतन नहीं मिला है जिससे वे अप्रसन्न है। ऐसी दशा में उन सैनिकों से क्या कार्य लिया जा सकता था। अत प्रतापसिंह तुरन्त अपने पिताजी के पास गये और एक लाख रुपया लाकर उनके वेतन का भुगतान किया। पूरी फौज की इतनी जल्दी एक सी वर्दी तो नहीं बन सकती थी। अत पहचान चिन्ह के रूप में सभी के कमरपट्टे हल्दी मगाकर पीले रग से रग दिये क्योंकि उस समय शीघ्र ही कोई रग उपलब्ध नहीं हो सकता था। जोरावरसिंह ने जब किले से देखा कि केसरिया बाना पहने सैनिक युद्ध करने को तैयार है तो वह घबरा गये तथा समझौता करने के लिए स्वय अपनी ओर से सदेश भिजवाया।

नागौर किले को हस्तगत करने एव इस अभियान में जिस तीव्र बुद्धि और कुशल नेतृत्व का परिचय प्रतापसिंह ने दिया वह प्रशसनीय है। बिना युद्ध के ही जोरावरसिंह को समझौते के लिए पहल करने पर बाध्य कर देना यह प्रतापसिंह के बुद्धिचातुर्य का ही कार्य था। उनके सही, शीघ्र और विवेकपूर्ण निर्णय के फलस्वरूप ही इस अशांति का बिना रक्तपात किये निपटारा हो गया।

---

१ विश्वेश्वरनाथ रेऊ : मारवाड का इतिहास—द्वितीय भाग पृ० ४५६

इस घटना के कुछ दिन पश्चात् १२ फरवरी सन् १८७३ को महाराजा तख्तसिंह का राज्यक्षमा की बीमारी से स्वर्गवास हो गया।[1] उनका दाहकर्म रीत्यानुसार मंडोर मे किया गया जहाँ एक देवल (छतरी) बनाया गया। महाराजा रामसिंह कुछ दिनो बाद शोक प्रकट करने जोधपुर आये तथा वे एक माह तक जोधपुर रहे। जयपुर जाने के पूर्व महाराजा तखतसिंह की एक पुत्री लालकवरबाई और थी उसका विवाह भी उनके साथ कर दिया गया। इस अवसर पर कोई धूमधाम न की गई। महाराजा रामसिंह जयपुर लौटे तब प्रतापसिंह भी उनके साथ पुन जयपुर आ गये। सन १८७५ मे प्रिंस एलबर्ट एडवर्ड (Prince Albert Adward) प्रिंस आफ वेल्स, जो बाद मे सप्तम् एडवर्ड के नाम स प्रसिद्ध हुए, हिन्दुस्तान भ्रमण हेतु आये। जहाज द्वारा सर्वप्रथम कलकत्ता उतरे। यहा उनकी अगवानी एव स्वागतार्थ भारत के कई राजा-महाराजा नवाब और रईस वहा पहुँचे। इस अवसर पर प्रतापसिंह भी वहाँ गये। प्रिंस ऑफ वेल्स का कलकत्ता से दिल्ली और दिल्ली से जयपुर आने का कार्यक्रम बना। उनके जयपुर आगमन पर 'शेर की शिकार' का प्रबन्ध करन के लिए महाराजा रामसिंह ने प्रतापसिंह को नियुक्त किया। प्रिंस ऑफ वेल्स के साथ शेर की शिकार भी प्रतापसिंह के जीवन की एक दिलचस्प और यादगार घटना कही जा सकती है। इस शिकार का पूरा ब्यौरा उन्ही के शब्दो मे—

"शेर के शिकार के लिए महाराजा रामसिहजी ने मुझे आज्ञा दे रखी थी। मुझे मालूम न था कि अंग्रेज रविवार को शिकार नही खेला करते। सो मैं उसी रात को गया और एक जगह पर चार शेर आया करते थे, उन्हें आडें बधवाकर घेर लिया जिससे शिकार का बहुत ही अच्छा मौका बन गया। मैंने जयपुर समाचार भेजा किन्तु वहाँ से उत्तर मिला कि रविवार के कारण शिकार नही हो सकता। इसस मैं बहुत निराश हुआ। मैं स्वय जयपुर गया और कर्नल बैल्डन साहब रेजीडेण्ट और सर अल्फ्रेड लायल साहब एजेंट गवर्नर जनरल से मैंने निवेदन किया कि ऐसा मौका फिर हाथ न आयेगा किन्तु वे भी न माने। मैं लाचार लौट आया। शेर चौक गये और रात को निकल गये। दूसरे दिन के लिए मैंने बहुत कोशिश की और बहुत कठिनता स एक शेर को घेर लिया। समाचार देने पर प्रिंस ऑफ वेल्स अन्य अफसरो के साथ आये। महाराजा रामसिहजी भी साथ थे। जब शेर उठा तो प्रिंस ऑफ वेल्स ने दूर से उस पर फायर किया। गोली उसके पेट मे लगी। थोडी दूर जाकर वह सूखी घास मे घुस गया और वही झाडियो मे छिप रहा। मैंने ताड लिया इसलिए मैंने बताया घायल शेर झाडियो म छिपा बैठा है। क्या आप स्वय उस पर फायर करेंगे या आपके साथी ? मैंने प्रिंस से पूछा। उन्होंने सकेत से बताया कि मैं स्वय फायर करूगा। फलत वह हाथी पर सवार हो गये और मैं उनके पीछे खवासी मे बैठ गया। जब झाडी की ओर गये तो मैंने हाथ के इशारे से उन्हे बताया कि शेर अमुक जगह है, लेकिन उन्हे शेर नजर नही आ रहा था। मुझे अंग्रेजी नही आती थी और न उन्हे हिन्दुस्तानी।

---

१ प० विश्वेश्वरनाथ रेऊ मारवाड का इतिहास—द्वितीय भाग पृ० ४६०

इसलिए परस्पर बातचीत भी ठीक नहीं हो पाती थी। मैंने हाथी को थोडा आगे बढाया तो शेर उठा। प्रिंस ऑफ वेल्स ने फायर किया जो खाली गया, लेकिन दूसरी गोली तो उस पर बुरी तरह बैठी और वह कूदकर एक झाडी मे घुस गया और वही मर गया। उसी झाडी म से एक जर्ख निकलकर बाई ओर भागा। प्रिंस ऑफ वेल्स ने समझा शेर निकल गया है। उनके साथी अंग्रेजो ने यही आवाज दी कि हाथी बाई ओर बढाओ। लेकिन मेरा कहना था कि हाथी दाई ओर झाडी के पास ले जाओ। मैंने महावत से कहा कि दाई ओर हाथी ले चल। प्रिंस ऑफ वल्स को यह बात अनुचित प्रतीत हुई और उन्होंने रेजीडेण्ट से कहा कि प्रतापसिंह मेरी आज्ञा नही मानता। इसलिए उन्होंने दूर से आवाज दी कि जैसा प्रिंस आफ वेल्स कहे वैसा करो। मैंने सोचा कि यह शिकार की जगह है, आज्ञा मानने या न मानने की यहाँ कोई बात नही। मैंने शेर को स्वय उस झाडी मे घुसते देखा था, किन्तु निकलते नही देखा और ऐसी अवस्था मे मुझे भी यह बात अनुचित प्रतीत हुई। युवावस्था थी, जो कारतूस मेरे हाथ म थे, वे मैंने प्रिंस ऑफ वेल्स की झोली म डाल दिये और स्वय रस्से से लटककर नीचे उतर आया। मेरे पास केवल कटारी थी वही निकालकर झाडी की ओर बढा, देखा तो शेर वहाँ मरा पडा था। मैंने आवाज दी तो आखिर सब वही आ गये और शेर को देखकर मेरी ओर इशारा किया तथा हसते हुए शाबासी दी।"[1]

जयपुर म सरप्रताप ने जो कार्य सीखा व नये अनुभव प्राप्त किये, वे उनके भविष्य के जीवन म बहुत उपयोगी सिद्ध हुए। जयपुर प्रवास एक तरह से उनका 'ट्रेनिंग पीरीयड' कहा जा सकता है जहाँ महाराजा रामसिंह के कुशल नेतृत्व म उन्होंने जो प्रशिक्षण प्राप्त किया उसने उनके व्यक्तित्व निर्माण म महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। इस प्रकार महाराजा रामसिंह का सानिध्य उनके लिए बहुत ही लाभप्रद और सहायक सिद्ध हुआ। इस बात को स्वय प्रतापसिंह ने स्वीकारते हुए अपने जीवन चरित्र म लिखा है कि—"दो-तीन साल तक मैं जयपुर म हर तरह के रियासती कारोबार से परिचय बढाता रहा और महाराजा रामसिंह के सहवास से तरह-तरह की अच्छी बातें सीखता रहा, जो बाद मे मेरे लिए बहुत लाभदायक सिद्ध हुई।" R B Vanwart ने भी लिखा है कि—

"Pratap Singh learned much from the wise administration and fine character of his brother-in-law, and so fited himself for the larger spheres which the near future held for him "[2]

सन् १८७८ मे दिल्ली मे एक बडा दरबार लगा जिसमे हिंदुस्तान भर के राजा-महाराजाओ को आमन्त्रित किया गया। महारानी विक्टोरिया को हिंदुस्तान की साम्राज्ञी की

---

१ सरप्रताप के स्वलिखित जीवन चरित्र से—पृ० ७६-७७

2. R B Vanwart : The Life of Lieut-General H H Sir Pratap Singh : Page 52

उपाधि प्रदान किये जाने के उपलक्ष्य मे यह सम्मेलन या समारोह आयोजित हुआ था। इस समारोह मे प्रतापसिंह भी सम्मिलित हुए तथा इस अवसर पर प्रतापसिंह सहित बहुत से रईसो को सोने के तमगे प्रदान किये गये। प्रतापसिंह के जीवन का यह प्रथम स्वर्ण पदक था।[1]

---

1 "In 1878 he (Pratap Singh) attended the great Darbar at Delhi, when Queen Victoria formally assumed the title of Kaiser-i-Hind Empress of India At this Darbar Pratap Singh received his first medal, a gold one showing the Queen Empress" —R B Vanwart

मारवाड़ का प्रशासन एवं उसमें नवीन सुधार

दिल्ली दरबार के कुछ ही दिनो पश्चात् महाराजा जसवन्तसिंह (जोधपुर) ने पत्र लिखकर एक सदेशवाहक प्रतापसिंह को जयपुर से जोधपुर बुला लाने को भेजा। जोधपुर के शासन-प्रबध एव राज्य की व्यवस्था म सुधार लाने के लिए यहा उनकी आवश्यकता महसूस हुई क्योकि महाराजा जसवतसिंह का प्रधानमत्री फैजउल्ला खाँ प्रशासन का कार्यभार सभालने मे पूरी तरह असफल रहा। शासन की सारी व्यवस्था दिन ब दिन बदत्तर होती जा रही थी। राज्य की आर्थिक स्थिति डाँवाडोल हो गई। अग्रेज सरकार से ३० लाख रुपये का ऋण लिया गया वह भी खर्च हो गया। रियासत की ऐसी बिगडती हुई हालत देखकर महाराजा जसवतसिंह को गभीर चिंता हुई कि इस प्रकार की अस्थिरता से प्रशासन मे ही नही पूरे राज्य म अव्यवस्था फैल जाने की आशका है। अत उन्होने रेजीडेंट कर्नल वाल्टर से सलाह मशविरा करके जयपुर से प्रतापसिंह को बुलाना आवश्यक समझा। जयपुर के महाराजा रामसिंह को जब इस बात का पता चला तो उन्होने प्रतापसिंह के जोधपुर जाने के प्रस्ताव को मुश्किल से स्वीकार किया। जाने के पूर्व महाराजा रामसिंह ने इस बात से भी प्रतापसिंह को आगाह कर दिया था कि जोधपुर की स्थिति अच्छी नही है और फैजउल्लाखा (भूतपूर्व प्रधानमत्री) अपने प्रभाव एव साथियो के सहयोग से व्यवस्था म कई तरह की बाधाएँ उत्पन्न कर सकता है। अत उसकी गतिविधियो से पूरी तरह चौकन्ना व सतर्क रहना निहायत जरूरी होगा क्योकि वह तुम्हारा विरोध करके तुम्हारी व्यवस्था को ठप्प करने की कोशिश करेगा।

प्रतापसिंह ने स्थिति की गभीरता को स्वीकारते हुए अपने जीजाजी को यह निवेदन किया कि ऐसी दशा म मेरा जोधपुर न जाना अपने कर्तव्य से मुह मोडना होगा। अत मेरा नैतिक कर्तव्य हो जाता है कि मैं जोधपुर जाऊ। साथ ही यह भी कहा कि पहले फैजउल्ला खा का प्रभाव और दबदबा महाराजा साहब और अग्रेज अफसरो के पक्ष के परिणाम स्वरूप बहुत अधिक था। परन्तु अब स्थिति दूसरी है। वह दोनो की आखो से गिर चुका है।

सरप्रताप न जब यह कहा कि सकट की स्थिति म मेरा जोधपुर न जाना उचित नही रहेगा तब महाराजा रामसिंह ने देखा कि प्रतापसिंह बहुत ज्यादा इच्छुक है अत उन्होने उसको रोकने क लिए और अधिक प्रयास नहीं किया। प्रतापसिंह का जोधपुर जाना महाराजा जसवतसिंह और मारवाड राज्य दोनो के लिए हितकारी था। अनेक वर्षों तक प्रताप-

सिंह के जयपुर रहने से महाराजा रामसिंह के साथ स्नेहपूरित आदर के सम्बन्ध स्थापित हो गये थे। अत प्रतापसिंह के जयपुर से प्रस्थान करते समय उनको हार्दिक दु ख अवश्य हुआ किन्तु कार्य की महत्ता और स्थिति की नाजुकता को आकते हुए महाराजा रामसिंह न प्रतापसिंह को शीघ्र जोधपुर भेजना ही श्रेयस्कर समझा।

प्रतापसिंह जयपुर से जोधपुर पहुँचे। जोधपुर आते ही उनका यहा का प्रधानमत्री नियुक्त किया गया। दूसरे ही दिन सर अल्फ्रेड लायल जो अब भारत सरकार के विदेश सचिव के रूप मे कार्य कर रहे थे का टेलिग्राम प्राप्त हुआ, जिसम यह सूचित किया गया कि वे (प्रतापसिंह) काबुल मिशन मे भाग लेने को नियुक्त किय गये है। अत शीघ्र ही प्रत्युत्तर और अपनी स्वीकृति भेजे। महाराजा जसवन्तसिंह ने इस पर कोई आपत्ति प्रकट नही की परन्तु प्रतापसिंह ने अपन विचार म कोई परिवर्तन नही आने दिया और जोधपुर के शासन-प्रबन्ध को सुधारने के लिए जो सकल्प किया उस निश्चय पर अटल रहे।

सर अल्फ्रेड लायल का आदेश प्राप्त होने के बाद जनरल चेम्बरलिन के साथ पेशावर मे सम्मिलित होने के लिए प्रतापसिंह के पास बहुत कम समय रह गया था। अत प्रत्युत्तर भेजने की बजाय उन्होने स्वय अपना जाना ही उचित समझा। दूसरे दिन ही पेशावर के लिए सारी तैयारी पूर्ण कर दी परन्तु उनको एक दिन के लिए और रुकना पड गया। इसका कारण यह था कि फैजउल्लाखा के भाई किफायतउल्ला ने रात्रि मे एक औरत और एक फकीर का कत्ल कर दिया। अत अपनी अनुपस्थिति म इस हत्याकाण्ड के जाँच के आदेश देकर तथ्यो के खोज-बीन की व्यवस्था की तथा महाराजा जसवतसिंह को कहा कि मेरे वापिस आने तक इस केस का फैसला मत सुनाना। इसक पश्चात् वे पेशावर के लिए अगले दिन रवाना हुए। पेशावर जाकर जनरल चेम्बरलिन स मिले और उनके साथ शिमला गये।

काबुल आक्रमण की चढाई म भाग लेन की प्रतापसिंह की बहुत इच्छा थी। उनके निवेदन पर लार्ड राबर्ट्स तो सहमत हो गये किन्तु वायसराय ने स्वीकृति नही दी। वायसराय ने कहा कि राज्य की स्थिति बहुत बिगडी हुई है और हालात देखते हुए तुम्हारा जोधपुर लौटना अति आवश्यक है।[1]

"His Excellency told Pratap Singh that he would gladly have

---

1 A —R B Vanwart The Life of Lieut-General H H Sir Pratap Singh Page 59

B —"कहा कि मै नया-नया जोधपुर का प्रधानमत्री नियत हुआ हूँ। इस दशा म मेरा कर्तव्य है कि मै जोधपुर जाऊ। यदि कोई आवश्यकता आ पडी तो वह स्वय ही मुझे बुला लेंगे।" —सरप्रताप के स्वलिखित जीवन चरित्र से—पृ० ८०

consented, and fully sympathized with his anxiety to take part in the expedition but that he was now the chief officer of the Jodhpur State, and the Maharaja had pressing need of his services, it was therefore advisable for him to return there as soon as possible "

इस प्रकार शिमला से वायसराय के आग्रह के पश्चात् शीघ्र जोधपुर लौट आये। जोधपुर लौटते ही उन्होंने देखा कि फैजउल्ला खा ने उनकी अनुपस्थिति में अपने प्रभाव का उपयोग कर झूठी गवाहियाँ दिलवाकर अपने भाई को इस हत्या के आरोप से बचाना चाहा परन्तु प्रतापसिंह के सामने उसकी यह चाल कामयाब नहीं हुई। गवाहो ने जब सही-सही बयान दे दिये और सारा मामला स्पष्ट हो गया तब फैजउल्ला खाँ ने एक प्रयास और किया—अपने घर पर शहर के सारे मुसलमानो को एकत्र किया तथा अस्त्र-शस्त्र का सग्रह करके अपने भाई की गिरफ्तारी का विरोध करने की मन म ठानी।

प्रतापसिंह ने सारी स्थिति का जायजा लेकर यह आदेश प्रसारित किया कि किफायतउल्लाखा शीघ्र ही न्यायालय में हाजिर हो जाय। साथ ही फैजउल्लाखा को चेतावनी दी कि उसने यदि इस केस म किसी तरह की बाधा या रुकावट पैदा की तो उसके साथ भी सरकार वही सलूक करेगी जो उसके भाई के साथ किया जा रहा है।

महाराज किशोरसिंह उस समय राज्य की सेना के "कमाण्डर इन चीफ" थे। उन्होंने सेना के ट्रूप्स को तैयार कर दिया तथा कोर्ट के गेट पर गार्ड तैनात कर दिये। अपने साथियो और सहयोगियो से विचार विमर्श करने के पश्चात् फैजउल्ला को विवश होकर अपने भाई किफायतउल्लाखाँ को कोर्ट को सौंपना पडा। किफायतउल्ला ने अपना अपराध स्वीकार किया। उसके द्वारा किये गये इस हत्याकाण्ड की सजा फासी से कम नही हो सकती थी परन्तु उसको १४ वर्ष की कैद की सजा सुनाई गई। राज्य का सरदार होने के कारण उसके साथ कुछ नरमी बरती गयी और किफायतउल्ला को जेल म न रखकर महल मे जहाँ राज्य के सेवको को कैद करके रखा जाता था वहा रखा गया।

इस घटना से राज्य के लोगों मे न्याय के प्रति पुन निष्ठा पैदा हुई तथा प्रतापसिंह जैसे कुशल और नीतिज्ञ प्रधानमत्री ने यह साबित कर दिया कि राज्य म न्याय और कानून जिन्दा है, मर नही गया। राज्य के प्रभावशाली और प्रतिष्ठित व्यक्ति भी अपराध करने पर सजा के हकदार होगे—जुर्म और अत्याचार करने वाला चाहे वह कितने ही ऊचे पद पर आसीन उच्च अधिकारी क्यो न हो बख्शा नहीं जायेगा। इस बात का यहाँ की जनता पर बहुत प्रभाव पडा और छोटे मोटे अपराधियो की तो अब कोई हिम्मत न थी कि वे राज्य की व्यवस्था मे व्यवधान पैदा करें अत राज्य की जनता तथा लोक-जीवन मे व्याप्त भय एव घोर निराशा की भावना समाप्त हो गयी।

प्रतापसिंह ने न्याय और कानून को पुन प्रतिष्ठापित करने की दिशा म जो प्रारम्भिक कदम उठाया वह बहुत साहसिक था। राज्य की न्याय, कानून और शासन

व्यवस्था पर उसका अनुकूल प्रभाव पडा तथा जनसाधारण का न्याय, प्रशासन और कानून मे पुन विश्वास जागृत हुआ।[1] लोग निर्भय होकर अपना जीवन-यापन करने लगे।

न्याय और कानून की राज्य मे पुन सुव्यवस्था स्थापित करने के पश्चात् प्रतापसिंह का ध्यान राज्य मे उत्पात और आतक उत्पन्न करने वाले लुटेरो तथा डाकुओ के प्रति केन्द्रित हुआ। राज्य के दो परगनो म डाकुओ के शक्तिशाली गिरोहो का आतक पिछले कई वर्षो से व्याप्त था। बहुत लम्बे समय से उनकी गतिविधियो को रोकने के प्रयास जारी थे फिर भी उनका दमन पूर्ण रूप से नही किया जा सका तथा वे अपनी गतिविधियो मे पूर्व की भाति यथावत सक्रिय थे। राज्य के सीमावर्ती भाग मे बहुत से सरदार भी इसी कार्य म जुटे थे जिनका मुखिया लोयाना का राणा था। समीप के भाग मे वह लूटपाट कर अत्याचार करता था। इस गिरोह के आतक से उस क्षेत्र के किसान और जनसाधारण सभी भयभीत रहते थे।

अत प्रतापसिंह ने डाकुओ के इस अत्याचार को समाप्त करने का निश्चय किया तथा उनके गिरोहो का दमन करने का बीडा स्वय ने ही उठाया। यह कोई आसान कार्य नही था। प्रतापसिंह ने इस दल के नेता को गिरफ्तार करने मे सफलता प्राप्त की। उस कैद कर जोधपुर लाया गया। दशहरे के त्यौहार के अवसर पर जब सभी लोग मेले का आनन्द उठा रहे थे उस समय उस कैदी को जेल से बचाकर ले जाने की व्यवस्था की गई और वह जेल से भाग निकलने मे सफल हुआ। प्रतापसिंह को ज्योही इसका पता चला उन्होने हर जगह उसका पीछा किया उसे कही भी आराम से बैठने नही दिया। अन्त म जब उसने देखा कि मेरी सुरक्षा कही भी सभव नही है तो दूसरे राज्य मे (महीकाटा की रियासत दाता मे) शरण लेने को बाध्य हुआ, जहाँ कुछ समय पश्चात् उसका देहान्त हो हुआ।

उसकी मृत्यु से प्रतापसिंह का एक लक्ष्य तो पूरा हुआ, उसके बाद उन्होने दूसरे गिरोह की ओर ध्यान दिया जो मारवाड के पूर्व म बरडवा (Bararwa) गाँव मे सक्रिय था। इस गिरोह की लूट का तरीका यह था कि वे अक्सर राह चलते राहगीरो एव दूरस्थ स्थानो पर डाका डालकर धन माल लूट कर अपने घोडो व ऊटो की सहायता से अपने निवास स्थान पर पहुँच जाते थे। कई बार इस गिरोह के डाकुओ ने राज्य की सैनिक टुकडियो के साथ मुकाबला करने का दुस्साहस भी किया तथा राज्य की फौजी टुकडियो को

---

1 This assertion of Pratap Singh's authority, and the proof it gave that law and justice were no longer to be dead letter, had an excellent effect on the people, while it was a severe blow to the prestige of Faizulla Khan and his Chief adherents "
R B Vanwart : The Life of Lieut-General H H Sir Pratap Singh : Page 57

पराजित करने में भी सफल रहे। इनके दमन हेतु मेहता विजयसिंह फौज लेकर गये किन्तु असफल लौटना पड़ा। इसलिए इस गिरोह की धाक बहुत जम चुकी थी। महाराजा जसवन्तसिंह ने भी इस शक्तिशाली गिरोह का सामना करने के जोखिम भरे कार्य के लिए प्रतापसिंह को अनिच्छा से स्वीकृति प्रदान की। उनका ऐसा अनुमान था कि इस कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए बहुत बड़ी फौज की भी आवश्यकता पड़ेगी परन्तु प्रतापसिंह ने उनका आश्वस्त किया कि केवल १०० घुड़सवार काफी है। इस आक्रमण की योजना को बिल्कुल गुप्त रखा गया।

प्रतापसिंह ने अपने चुने हुए १०० घुड़सवारों के साथ एक दिन बरसते पानी मे, अचानक इस कार्य के लिए प्रस्थान किया। जोधपुर से रवाना होकर वे मेड़ता होते हुए कुचामन तक पहुँचे। कुचामन ठाकुर केसरीसिंह ने जब यह पूछा कि कहाँ जा रहे हो तो कह दिया मैं जयपुर जा रहा हूँ। इस गुप्त आक्रमण की योजना का किसी को सकेत मात्र भी न मिले इसके लिए वे बहुत सतर्क थे। दूसरा को कहना तो दूर अपन दल के सदस्यो को भी यह न बताया गया, क्योंकि उन्हें सन्देह था कि कहीं उनके साथी ही डाकुओं के इस गिरोह को सजग होने की सूचना न दे दें। अत जब ठीक बरड़वा गाव के पास पहुँचे तब उन्होंने अपने साथियो के सामने भेद प्रकट किया और गाँव का घेर कर वहाँ के ठाकुर बाघ-सिंह के घर पर शीघ्र हमला करके उसे गिरफ्तार करने की आज्ञा दी। बाघसिंह के मकान पर १०-१५ व्यक्ति उसकी सुरक्षा के लिए तैनात थे वे मुकाबला करने को तैयार हुए उस समय प्रतापसिंह न कहा कि अब तुम्हारे सारे प्रयास व्यर्थ और निरर्थक होंगे। गाव चारों ओर से घेर लिया गया है तथा तुम्हारे बचकर भाग निकलने की भी सभावना शेष नहीं है अत उचित यही है कि तुम आत्मसमर्पण कर दो। सुरक्षा के लिए तैनात उन सैनिकों को तो प्रतापसिह न इस प्रकार की बातो मे उलझाय रखा और इस दौरान उनके (प्रतापसिंह के) दल के चार व्यक्ति ठाकुर के घर मे पिछवाड़े से घुस कर उसे पकड़ कर बाहर ले आये। दल के नेता को पकड़ने के पश्चात् गिरोह के शेष लोग भी बिना किसी प्रतिरोध और सघर्ष के पकड़ लिये गये।

इस घटना का वर्णन करते हुए आर बी वैनवर्ट ने अपनी पुस्तक म लिखा है—

'Pratap Singh called to the Thakur to surrender, pointing out that he was *hopelessly outnumbered* and resistance would be futile While the attention of the dacoits was centred on *him*, his men had crept into close quarters and rushed the defence : four men seized the Thakur and used him as a shield, *so that his followers* were afraid to fire, and in a few minutes the entire gang had been secured *without any casualty* "[1]

---

1 R. B Vanwart The Life of Lieut-General H H. Sir Pratap Singh Page 59

प्रतापसिंह द्वारा इन दो दस्युदलो एव फैजउल्लाखा और उनके समर्थकों के प्रभाव को कम करने के लिए किए गए सफल प्रयासो का जोधपुर राज्य के जनसाधारण पर गहरा प्रभाव पडा। राज्य की जनता मे जहाँ कानून, न्याय और प्रशासन के प्रति निष्ठा जागृत हुई वही राज्य की सुदृढ व्यवस्था से प्रशासन का स्वरूप भी निखरा। इस प्रकार एक योग्य प्रशासक की भाति उन्होने मारवाड के बिगडे हुए प्रशासन को सुधारा तथा सर्वप्रथम डाकू उन्मूलन को प्राथमिकता दी। यह उनका प्रारम्भिक साहसिक कदम था जिसमे उन्हे पूर्ण सफलता प्राप्त हुई।

डाकुओ के उपर्युक्त दो गिरोहो का सफाया करने मे तो उनको सफलता मिल गयी परन्तु इसका स्थायी प्रभाव बना रहे इसके लिए उन्होने प्रशासन को और अधिक सुदृढ किया तथा जो जागीरदार, डाकू और लुटेरा को अपने यहा शरण दिया करते थे उनके नाम आवश्यक आज्ञा जारी कर दी कि—"ज्योही उनके इलाके मे कोई डाकू या लुटेरा आये तो वह उसे गिरफ्तार करके रियासत के हवाले कर दे और यह भी कहा कि इस आज्ञा का कठोरता से पालन किया जाय।"[1]

इससे पूर्व होता यह था कि अन्य रियासतो मे डाका डालकर और लूटपाट करके लुटेरे मारवाड के जागीरदारा की शरण म आ जाते। अत अधिकाश लूट खसोट एव डाके की घटनाआ म इन जागीरदारो का हाथ होता एव उनके सहयोग मे ही ये घटनाएँ हुआ करती। अपनी शरण मे आये अपराधी को ये जागीरदार रियासत को नही सौंपते थे। इस प्रकार लुटेरो को आश्रय व प्रोत्साहन प्राप्त होता। इसलिए प्रतापसिंह ने प्रशासन म स्थाई शान्ति स्थापित करने के लिए तथा इस अपराधवृत्ति को सरक्षण देने की नीति को रोकने के लिए उपयुक्त और सही समय पर यह अध्यादेश जारी किया जिससे कानूनन ऐसे लोगों को शरण देने स रोका जा सके—

"Pratap Singh therefore issued an order that all Sardars & Jagirdars should hand over to the state authorities all criminals who might seek shelter in their Jagirs"[2]

प्रतापसिंह द्वारा किये गये प्रशासनिक सुधारो एव उनकी बढती हुई लोकप्रियता से फैजउल्लाखा (भूतपूर्व प्रधानमत्री, जोधपुर राज्य) जल-भुन गया था। उसे किसी अवसर की ही तलाश थी। उसने रियासत के २०-२५ बडे जागीरदारो को इस अध्यादेश के विरुद्ध भडकाया। उन सब जागीरदारो ने फैजउल्लाखा की प्रेरणा से कर्नल ब्रेडफोर्ड (ए जी जी) को एक शिकायती पत्र लिखा कि प्रतापसिंह मनचाहे अध्यादेश जारी कर हमारी बेइज्जती

---

१ सरप्रताप के स्वलिखित जीवन चरित्र से—पृ० ८४

2 R B Vanwart · The Life of Lieut-General H H Sir Pratap Singh : Page 60.

करना चाहते है। एजीजी ने सारी स्थिति को समझे बिना ही जोधपुर महाराजा को यह कहते हुए पत्र लिख दिया कि—

"as Pratap Singh was still inexperienced, His Highness would do well to examine all his orders personally before they were issued "[1]

अर्थात् प्रतापसिंह अभी अनुभवहीन है इसलिए महाराजा को चाहिये कि वे स्वय उसकी आज्ञाओ की पहले अच्छी तरह जाच करे फिर उन्हें जारी करे।

प्रतापसिंह को जब यह ज्ञात हुआ तो वे जाकर एजीजी कर्नल ब्रेडफोर्ड से मिले और उनको सारी स्थिति समझायी और कहा कि यदि वास्तव मे डाकुओ का दमन करना है तो मेरी (प्रतापसिंह की)आज्ञा के अतिरिक्त और कोई तरीका नही है।[२] एजीजी. को जब सारी स्थिति का मालूम हुआ तो उसे सन्तोष हो गया और उसने जोधपुर महाराजा को एक दूसरा पत्र लिखा जिसमे यह कहा गया कि प्रतापसिंह की आज्ञा अनुकूल और पूर्णतया न्याय सगत है।

फैजउल्लाखा की यह चाल तो सफल नही हुई पर वह अपनी हरकत से बाज नही आया और उसने महाराजा जोधपुर स एजीजी के नाम यह पत्र लिखवाने मे सफलता प्राप्त कर ली कि प्रतापसिंह के कठोर व्यवहार के कारण सभी लोग परेशान है अत उसकी जगह किसी दूसरे व्यक्ति को नियुक्त किया जाय। फैजउल्लाखा इस पत्र को लेकर तुरन्त एजीजी कर्नल ब्रेडफोर्ड के पास गया। जब एजीजी ने कहा कि महाराजा प्रतापसिंह की जगह किसे नियुक्त करना चाहते है ? तो फैजउल्लाखा ने शीघ्र ही अपना नाम बताया। कर्नल ब्रेडफोर्ड को यह बात सुनकर बहुत हसी आयी और उसने कहा कि महाराजा यदि प्रतापसिंह से असतुष्ट है तो वे उसे पदच्युत कर दें और बहुत अधिक नाराज हैं तो उसे फासी पर लटका दें किन्तु मैं प्रतापसिंह के विरुद्ध एक शब्द भी नही लिखु गा। यह सुनकर फैजउल्लाखा अपना सा मु ह लेकर रह गया।

इस प्रकार डाकू उन्मूलन की अपनी योजना को सफल बनाने मे प्रतापसिंह को दस्युदल के अतिरिक्त यहाँ के आन्तरिक विद्रोह का सामना भी करना पडा। एजीजी ब्रेडफोर्ड त्याग पत्र देकर इग्लैण्ड लौट गया और उसकी जगह कर्नल माल्ट नियुक्त हुआ वह मुसलमानों का समर्थक था। फैजउल्लाखा ने उससे सम्पर्क बढाया। न्यूरी ठाकुर के हत्याकाण्ड से जागीरदारो मे भी भय और आतक छा गया इस समय फैजउल्लाखा ने प्रतापसिंह के विरुद्ध अपना अभियान तेज कर दिया एव झूठे आरोप लगा कर तथा अफवाहे फैलाकर उनको बदनाम करने का प्रयास किया। एक समय तो ऐसा भी आया कि

---

1. R B Vanwart : The Life of Lieut-General H H Sir Pratap Singh : Page 61

२ सरप्रताप के स्वलिखित जीवन चरित्र से—पृ० ८४

प्रतापसिंह ने अपने पद से त्याग पत्र देकर जोधपुर मे बाहर रहना उचित समझा और कुछ समय के लिए बाहर रहे भी।

इन सब वारदातो से प्रतापसिंह द्वारा किये गये कार्यों एव उनकी प्रतिष्ठा मे कोई कमी नही आयी। कर्नल पावलेट जब मारवाड का रेजीडेन्ट बना तो उसने इस बात को महसूस किया कि प्रतापसिंह के द्वारा किये गये कार्य प्रशासन के लिए आवश्यक एव हित मे थे। प्रतापसिंह की अनुपस्थिति मे राज्य की सारी व्यवस्था पुन गडबडाने लगी तब एजेण्ट टू दी गवर्नर जनरल से विचार विमर्श करके जोधपुर महाराजा को लिखा कि प्रतापसिंह को हटाना सर्वथा नीति विरुद्ध था। राज्य के हित मे उचित यही है कि उसे शीघ्र वापिस बुला लिया जाय। जोधपुर महाराजा की आज्ञा प्राप्त होने पर प्रतापसिंह पुन जोधपुर लौटे और प्रधानमन्त्री के कार्य को पूर्ववत् करने लगे।

सरप्रताप की अनुपस्थिति म गोडवाड मे भील और मीणा का पुन आतक फैला तथा फिर से व लूट खसोट करने लगे। इसलिए जोधपुर महाराजा स दो माह तक उसी इलाके मे रहने की स्वीकृति लेकर सरप्रताप गोडवाड चले गये। वहाँ जाकर सारी स्थिति को समझा-परखा और देखा कि ५ ६ बडे-बडे सरदार हैं जिन्होने पूरे क्षेत्र मे अव्यवस्था और अशान्ति उत्पन्न कर रखी है। अत उनको कैद करने के पश्चात् ही उस क्षेत्र म पुन शांति और व्यवस्था कायम की जा सकती है। सरप्रताप ने गोडवाड के मीणो और भीलो के उपद्रव को शात करने मे पूर्व लूनी नदी के किनारे बसे काकाणी गाव पर अचानक छापा मारकर घटिया नामक डाकुओ के मुखिया को भी पकडा।

गोडवाड मे भीलो और मीणा के उत्पात को समाप्त करने और गिरोह के प्रमुख लोगो को पकडने के लिए भी प्रतापसिंह ने युक्ति से काम लिया। सर्वप्रथम स्थिति का जायजा लेकर सारे हालात मालूम किये। इसके पश्चात् डाकू और बदमाश लोगो की पूरी सूची (लिस्ट) तैयार करवायी। उनके नाम पते और ठिकाना का पता लगाया। इतना सब कुछ करने के पश्चात् मुखबिरो की मदद स उनकी सारी गतिविधियो और क्रियाकलापा की जानकारी हासिल कर ली। इसके पश्चात् उन लोगो का पकड कर कैद किया। कैद करने का कार्य भी बहुत तरकीब से किया। पदिया नामक एक डाकू जो वहाँ नही था इसका पहले से ही उनको मालूम था पर वहाँ यही बात कही गयी कि मैं (प्रतापसिंह) तो केवल पदिया की ही तलाश मे हूँ और केवल उसे ही गिरफ्तार करना चाहता हू। पदिया की गिरफ्तारी के बहाने सभी भील और मीणो को एकत्र कर जाच पडताल करने का नाटक किया। प्रताप सिंह को जब यह ज्ञात हुआ कि जिन सात लोगो को पकडना है उनम से पाच वहाँ मौजूद है, दो हाजिर नही तब सबको यह कहकर छोड दिया कि मुझे तो पदिया को कैद करना है आप लोग जाइये। इसस दो शेष बचे प्रमुख बदमाशा को भी तसल्ली हो गयी और वे भी वहा आ गये। कुछ देर बाद दोबारा जाच करने के बहाने से सब भील और मीणो को एकत्र किया तब वे सातो लोग मौजूद थे, उन्हे तुरन्त गिरफ्तार कर लिया गया। उन्हाने गिरफ्तारी का कारण पूछा तो कहा कि रेल्वे कुलिया को लूटने का तुम पर आरोप है।

उन्होने इस आरोप को नकारते हुए कहा कि यह बिल्कुल झूठ बात है। सरप्रताप उन्हे बंद कर अपने स्थान पर ले आये और वहा उन्हे बताया कि तुम्हें कोटडा गाव की लूट के कारण बंद किया गया है। इस बात को सुनकर वे हैरान रह गये। यह सही बात थी अत उन अपराधियो के सिर झुक गये। उन्होने अपना अपराध स्वीकार किया।

गोडवाड के मीणो और भीलो के इस उपद्रवकारी गिरोह को समाप्त करने के लिए सरप्रताप ने युक्ति और बुद्धिचातुर्य से कार्य लिया एव सदैव सजग रहे उसी के फलस्वरूप नियत समय (दो माह) के भीतर अपने उद्देश्य की प्राप्ति कर वे जोधपुर लौट आये।

इस प्रकार लोयाणा, बरडवा और गोडवाड के प्रसिद्ध एव शक्तिशाली डाकुओं और लुटेरो के गिरोहो का सफाया कर उनके आतंक से जनता को छुटकारा दिलाया तथा सर्व-प्रथम राज्य मे शाति और व्यवस्था स्थापित की। सरप्रताप के उपर्युक्त अभियानो से यह ज्ञात होता है कि इनमे शक्ति की अपेक्षा युक्ति का विशेष रूप से सहारा लेकर वे अपने उद्देश्य को प्राप्त करने म सफल रहे। प्रतापसिंह मे कुशल नेतृत्व की शक्ति एव प्रशासकीय निपुणता कितनी थी उसका अनुमान इन अभियानो के अध्ययन से सहज ही लगाया जा सकता है। आतरिक विरोध होते हुए भी अपने लक्ष्य की प्राप्ति म सफलता हासिल करना उनकी लक्ष्य के प्रति निष्ठा, धैर्य और लग्न से कार्य करने की प्रवृत्ति को स्पष्ट करती है तथा सघर्ष के लिए सदैव तत्पर रहने की भावना भी इससे उजागर होती है।

एक कुशल प्रशासक की भाति पहल उन्होने प्रशासन को स्थायित्व प्रदान करने के लिए राज्य मे शाति और सुरक्षा व्यवस्था स्थापित कर प्रशासन मे नव सुधार के लिए एक आधार बनाया एव उपयुक्त वातावरण तैयार किया। जब यह हो चुका तो उन्होंने प्रशासन का ढाचा जो चरमरा गया था उसकी ओर अपना ध्यान केन्द्रित किया तथा धीरे-धीरे हर क्षेत्र मे सुधार करने का उनका प्रयास जारी रहा। इन सुधारो पर दृष्टिपात करने से यह स्पष्ट हो जायेगा कि मारवाड के प्रशासन म प्रतापसिंह का योगदान कितना महत्वपूर्ण रहा है।

राजकोष (Treasury) की स्थापना

सर्वप्रथम प्रतापसिंह ने सन् १८८१ मे राजकोष की स्थापना की।[1] राजकोष की अलग से स्थापना करने के पूर्व सेठ सुमेरमल उम्मेदमल नामक मशहूर फर्म राजकोष के रूप मे कार्य करती थी। राज्य की सारी आमदनी इस फर्म मे जमा होती एव खर्च के लिए धन की आवश्यकता होती जो इस फर्म से ही लिया जाता। जो रुपया राज्यखर्च के लिए

---

1 रेऊ ने मारवाड का इतिहास भाग-२, पृ० ४७९ पर राज्य के खजाने की स्थापना की तिथि १ अप्रेल सन् १८८५ लिखी है परन्तु यह तिथि सभवत राजकोष के नियम बनाने की होगी।

दिया जाता उस पर १% प्रतिशत मासिक ब्याज तो लिया जाता ही साथ ही रकम का काटा (Discount) भी लिया जाता। इसके अतिरिक्त रकम निकलवाकर चाहे उसी दिन जमा करवा दी जाती उस पर भी काटा (Discount) लिया जाता। इस प्रकार राज्य को दुहरी हानि उठानी पडती। इस फर्म एव सेठ का तो केवल दिखावे के लिए नाम आगे रखा गया था। वास्तव मे स्थिति यह थी कि इसमें राज्य के कई बड़े-बड़े अधिकारियो का हिस्सा था। राज्य को जो लाभ मिलता उसमे से भी इनको हिस्सा दिया जाता था। अत प्रतापसिंह ने जब इस कुप्रबन्ध को समाप्त कर राज्य के लिए अलग से नये राजकोष की स्थापना की तो प्रभावित अधिकारियो ने इसका बहुत विरोध किया किन्तु प्रतापसिंह उनके विरोध की कुछ भी परवाह किय बगैर अपने निश्चय पर दृढ रहे। उन्होंने उपर्युक्त फर्म स ही ५ लाख रुपये का ऋण लेकर राजकोष (खजाना) की स्थापना कर कार्य प्रारम्भ करवा दिया। अब राज्य का सारा लेन देन इस खजाने से ही होने लगा।

इस कोष की स्थापना से रियासत की आर्थिक स्थिति मे सुधार हुआ। प्रतापसिंह के जोधपुर आने से पहले राज्य पर ६० लाख रुपये का ऋण था जिसमें मे ३० लाख रुपय ब्रिटिश सरकार के और १२ लाख रुपय ब्याज के शामिल थे। कोष की अलग स्थापना होने के सात वर्ष के अल्पकाल के भीतर ही राज्य का यह सारा कर्ज चुकता कर दिया गया। रियासत की आय से करोडों रुपय बचाकर राज्य की उन्नति के लिए खर्च किये गये। सन १९२५ तक राज्य की आमदनी पौने दो करोड (१¾) तक हो गई एव सभी तरह के व्यय करने के पश्चात् प्रतिवर्ष ३१ लाख रुपये स भी अधिक धनराशि राजकोष के बचत खाते म जमा होने लगी।

इस कार्य की प्रगति म मुशी हरदयालसिंह का महत्वपूर्ण योगदान रहा। मुशी हरदयालसिंह को विशेष रूप से इस दिशा मे कार्य करने के लिए ही पजाब से बुलवाया गया और उसे कोर्ट ऑफ सरदार का सदस्य भी बनाया गया। इसको प्रतापसिंह ने अपना सेक्रेट्री नियुक्त किया। प्रतापसिंह के हर कार्य मे यह सहायता दिया करता परन्तु राज्य की आर्थिक स्थिति (बैंक व्यवस्था) मे सुधार लाने के लिए मुशी हरदयालसिंह ने विशेष लगन एव निष्ठा से जो कार्य किया वह उल्लेखनीय है। सन् १८८४-८५ की जोधपुर स्टेट की रिपोर्ट मे इस विभाग की पूर्व दशा का विवरण इस प्रकार मिलता है—

Treasury Department

The business connected with this important Department for years past has been carried on very irregularly and the accounts have not been kept in a systematic way. The practice has been to make over the revenues of the state from all sources to Seth Samirmal, a native banker, and to keep a floating account with him The Dewan draws upon him by means of Parwanas from time to time, and sends the amounts to the Treasury for current expenses There amounts were treated by the Banker as loans, and as there were no cash balances and the revenue was spent

in advance, the banker was always owed money on which the Darbar paid both discount and high interest When Maharaj Pratap Singh Sahib took charge of the administration, the State debt amounted to nearly fifty lacs

Though the State is still labouring under many disadvantages, resulting from the past financial mismanagement, and consequently the administrative reform of the state is rendered very difficult, the present Musahib Ala has succeeded in paying off upwards of forty-eight lacs during the last six years, and the state in now out of debt "[1]

भूमिसुधार एवं रेवेन्यू (Land settlement & Revenue)

मारवाड राज्य म यह विभाग 'हवाला' के नाम से जाना जाता था। उस समय राज्य की सारी भूमि छोटे-बडे जागीरदारो म बट चुकी थी। खालसा भूमि (जिस पर राज्य का स्वामित्व हो) बहुत कम रह गयी थी। सरप्रताप से पूर्व जोधपुर के प्रधानमंत्री फैजउल्लाखा की अदूरदर्शिता एव राज्य की अपेक्षा अपने हितैषियो के स्वार्थ को प्रमुखता देने की नीति के फलस्वरूप यह स्थिति और भी बदत्तर हो गयी। जोधपुर के महाराजा जसवत सिह द्वितीय जब सन् १८७८ के दिल्ली दरबार म भाग लेने हेतु जाने लगे उस मौके उसने (फैजउल्लाखा ने) लगभग १०० गांव विभिन्न लोगो को जागीर के रूप म दिलवा दिये। दूसरा उसने यह किया कि राज्य की भूमि और खालसा गाव भी ठेको पर (इजारे पर) देने प्रारम्भ किये। इजारेदार या ठेकेदार गाव के लोगो की सुख सुविधा का कोई ध्यान नही रखत थे। वे तो ज्यादा से ज्यादा अपने लाभ के लिए उनसे रकम ऐंठने मे रहते थे और वसूली करते समय भी कोई सहानुभूति नही बरती जाती थी। इन ठेकेदारो के शोषण से किसानो की हालत बहुत खराब हो गई थी और इजारे के गावो के लोग (किसान) अपने खेत और गाव छोडकर दूसरी जगह बसने लगे। खेती के प्रति किसानो की इस प्रवृत्ति के कारण पैदावार तो कम हुई ही साथ ही इससे राज्य की आमदनी भी कम हुई। गलत नीति एव अव्यवस्था के कारण राज्य की आमदनी पाच लाख ही रह गई थी जिसम से भी बहुत सी राशि बकाया रह जाती और उस बकाया रकम को वसूल करन का भी कोई उचित प्रबन्ध नही था। आर बी वेनवर्ट ने इसकी ओर सकेत करते हुए लिखा है—

"Thus the total income from land revenue was no more than five lakhs in all, and much of this even was in arrears, nor was there any system of collection, so Pratap Singh applied to the Government for the loans of two officers, Captaion Loack and Mr. Hewson "[2]

---

1 Jodhpur State Report for 1884-85 Page 43

2 R B Vanwart The Life of Lieut-General H H Sir Pratap Singh Page 67

दिया जाता उस पर १% प्रतिशत मासिक ब्याज तो लिया जाता ही साथ ही रकम का काटा (Discount) भी लिया जाता। इसके अतिरिक्त रकम निकलवाकर चाहे उसी दिन जमा करवा दी जाती उस पर भी काटा (Discount) लिया जाता। इस प्रकार राज्य को दुहरी हानि उठानी पडती। इस फर्म एव सेठ का तो केवल दिखावे के लिए नाम आगे रखा गया था। वास्तव मे स्थिति यह थी कि इसमे राज्य के कई बडे-बडे अधिकारियो का हिस्सा था। राज्य को जो लाभ मिलता उसमे से भी इनको हिस्सा दिया जाता था। अत प्रतापसिंह ने जब इस कुप्रबन्ध को समाप्त कर राज्य के लिए अलग से नये राजकोष की स्थापना की तो प्रभावित अधिकारियो ने इसका बहुत विरोध किया किन्तु प्रतापसिंह उनके विरोध की कुछ भी परवाह किये बगैर अपने निश्चय पर दृढ रहे। उन्होंने उपर्युक्त फर्म से ही ५ लाख रुपये का ऋण लेकर राजकोष (खजाना) की स्थापना कर कार्य प्रारम्भ करवा दिया। अब राज्य का सारा लेन देन इस खजाने से ही होने लगा।

इस कोष की स्थापना से रियासत की आर्थिक स्थिति मे सुधार हुआ। प्रतापसिंह के जोधपुर आने से पहले राज्य पर ६० लाख रुपये का ऋण था जिसमे से ३० लाख रुपये ब्रिटिश सरकार के और १२ लाख रुपये ब्याज के शामिल थे। कोष की अलग स्थापना होने के सात वर्ष के अल्पकाल के भीतर ही राज्य का यह सारा कर्ज चुकता कर दिया गया। रियासत की आय से करोडो रुपये बचाकर राज्य की उन्नति के लिए खर्च किये गये। सन् १८९५ तक राज्य की आमदनी पौने दो करोड (१¾) तक हो गई एव सभी तरह के व्यय करने के पश्चात् प्रतिवर्ष ३१ लाख रुपये से भी अधिक धनराशि राजकोष के बचत खाते मे जमा होने लगी।

इस कार्य की प्रगति मे मुशी हरदयालसिंह का महत्वपूर्ण योगदान रहा। मुशी हरदयालसिंह को विशेष रूप से इस दिशा मे कार्य करने के लिए ही पजाब से बुलवाया गया और उसे कोर्ट ऑफ सरदार का सदस्य भी बनाया गया। इसको प्रतापसिंह ने अपना सेक्रेट्री नियुक्त किया। प्रतापसिंह के हर कार्य मे यह सहायता दिया करता परन्तु राज्य की आर्थिक स्थिति (बैंक व्यवस्था) मे सुधार लाने के लिए मुशी हरदयालसिंह ने विशेष लग्न एव निष्ठा से जो कार्य किया वह उल्लेखनीय है। सन् १८८४-८५ की जोधपुर स्टेट की रिपोर्ट मे इस विभाग की पूर्व दशा का विवरण इस प्रकार मिलता है—

Treasury Department

The business connected with this important Department for years past has been carried on very irregularly and the accounts have not been kept in a systematic way. The practice has been to make over the revenues of the state from all sources to Seth Samirmal, a native banker, and to keep a floating account with him The Dewan draws upon him by means of Parwanas from time to time, and sends the amounts to the Treasury for current expenses There amounts were treated by the Banker as loans, and as there were no cash balances and the revenue was spent

in advance, the banker was always owed money on which the Darbar paid both discount and high interest When Maharaj Pratap Singh Sahib took charge of the administration, the State debt amounted to nearly fifty lacs

Though the State is still labouring under many disadvantages, resulting from the past financial mismanagement, and consequently the administrative reform of the state is rendered very difficult, the present Musahib Ala has succeeded in paying off upwards of forty-eight lacs during the last six years, and the state in now out of debt "[1]

भूमिसुधार एवं रेवेन्यू (Land settlement & Revenue)

मारवाड राज्य म यह विभाग 'हवाला' के नाम से जाना जाता था। उस समय राज्य की मारी भूमि छोटे बडे जागीरदारो म बट चुकी थी। खालसा भूमि (जिस पर राज्य का स्वामित्व हो) बहुत कम रह गयी थी। सरप्रताप से पूर्व जोधपुर के प्रधानमन्त्री फैज-उल्लाखां की अदूरदर्शिता एव राज्य की अपेक्षा अपने हितैषियो के स्वार्थ को प्रमुखता देने की नीति के फलस्वरूप यह स्थिति और भी बदतर हो गयी। जोधपुर के महाराजा जसवत सिंह द्वितीय जब सन् १८७८ मे दिल्ली दरबार मे भाग लेने हेतु जाने लगे उस मौके उसने (फैजउल्लाखा ने) लगभग १०० गाव विभिन्न लोगो को जागीर के रूप म दिलवा दिये। दूसरा उसने यह किया कि राज्य की भूमि और खालसा गाव भी ठेको पर (इजारे पर) देने प्रारम्भ किये। इजारेदार या ठेकेदार गाव के लोगो की सुख सुविधा का कोई ध्यान नही रखते थे। वे तो ज्यादा से ज्यादा अपने लाभ के लिए उनसे रकम ऐंठने मे रहते थे और वसूली करते समय भी कोई महानुभूति नही बरती जाती थी। इन ठेकेदारा के शोषण स किसानो की हालत बहुत खराब हो गई थी और इजारे के गावा के लोग (किसान) अपने खेत और गाव छोडकर दूसरी जगह बसने लगे। खेती के प्रति किसानो की इस प्रवृत्ति के कारण पैदावार तो कम हुई ही साथ ही इससे राज्य की आमदनी भी कम हुई। गलत नीति एव अव्यवस्था के कारण राज्य की आमदनी पाच लाख ही रह गई थी जिसमे से भी बहुत सी राशि बकाया रह जाती और उस बकाया रकम को वसूल करने का भी कोई उचित प्रबन्ध नही था। आर बी वेनवर्ट ने इसकी ओर सकेत करते हुए लिखा है—

"Thus the total income from land *revenue* was no more than five lakhs in all, and much of this even was in arrears, nor was there any system of collection, so Pratap Singh applied to the Government for the loans of two officers, Captaion Loack and Mr Hewson "[2]

---

1 Jodhpur State Report for 1884 85 Page 43

2 R B Vanwart The Life of Lieut-General H H Sir Pratap Singh : Page 67

इस अव्यवस्था को दूर करने के लिए प्रतापसिंह न ब्रिटिश सरकार से क्प्तान लॉक एव मिस्टर ह्यूसन की सेवाएँ प्राप्त की। इन दोनों के सहयोग से राज्य के सारे खालसा गावों का उचित प्रबन्ध किया गया। राज्य की भूमि की पैमाइश करवाकर नकद लगान नियत किया।[1] छोटे जागीरदार जिनके एक या दो गाव जागीर मे थे उनको वार्षिक नकद मुआवजा देने की व्यवस्था की तथा उनके गावों को भी खालसा घोषित किया। राज्य को उन गावों से सीधी आय प्राप्त होने लगी तथा जनता को भी छोटे-छोटे जागीरदारो (जो नाम के ठाकुर थे) के अत्याचारो एव दमन से छुटकारा मिला।

जुलाई सन् १८८४ कल्ला चतुर्भुज को, खालसा गावा का भूमिसुधार और रेवेन्यू सुपरिन्टेन्डेन्ट नियुक्त किया गया। बाद मे १ अक्टूबर १८८४ को पजाब के पण्डित भादवाराम (Bhadwa Ram) को सेटलमट सर्वे का सुपरिन्टेन्डेन्ट नियुक्त किया जा कि रेवेन्यू सर्वे का अनुभवी अधिकारी था। इसके नेतृत्व मे रेवेन्यू सर्वे, जागीर और खालसा गावो की सीमा (बाउण्ड्री) की सर्वे का कार्य सुचारु रूप से हुआ।[2]

सेटलमट के लिए १ सुपरिन्टेन्डेन्ट, ५ दारोगा, १ अग्रेजी लेखक (Writer) ५१ थानेदार, १३ हिन्दी लेखक (Writer), १ वकील, २ चपरासी, १५ घुडसवार, १ भिश्ती १५ ऊटसवार आदि कुल १०५ लोगा का स्टाफ नियुक्त था।[3]

इसके अतिरिक्त राजमहल की रानिया एव माजिया, पडदायता आदि को भी जागीर के रूप म गाव मिले हुये थे, जिनका प्रबन्ध उनके कामदार किया करते। इस प्रथा को बिल्कुल समाप्त कर दिया क्योकि जनाना सरदार स्वय तो जागीर का प्रबन्ध कर नही सकते थे उन्ह कामदारो और नौकरो पर निर्भर रहना पडता था तथा बहुत सी रकम उन्ही की जेबो मे चली जाती। अत सभी रानियो और माजियो आदि के लिए हाथखर्च की रकम तय कर दी और यह राशि नकद रूप म दी जाने लगी।

इन नये उपाया और क्रातिकारी सुधारो के फलस्वरूप राज्य की आमदनी मे आशातीत वृद्धि हुई। महाराजा तखतसिंह के मुकाबले इस समय राज्य की आय दुगुनी हो गई।

---

1 ' मारवाड की नाप की जाकर 'बीघोडी' (प्रति बीघे के हिसाब से लगान वसूली की प्रथा) बाध दी गई। इससे पहले जो जमीन का लगान नाज के रूप मे लिया जाता था, वह अब स रुपयो के रूप म लिया जाने लगा।"

रेऊ मारवाड का इतिहास भाग २ पृ० ४७६

2 Jodhpur State Report for 1884-85 Page 59-63

3 Jodhpur State Report for 1884-85 Page 62

पुलिस विभाग (Police Department)

सन् १८८१ म पुलिस विभाग को भी नया रूप दिया गया।[1] राज्य म पुलिस विभाग पहले इतना सक्षम नहीं था। न ही अपराधियों को पकडने म विशेष तत्परता और सतर्कता बरती जाती थी। स्वय पुलिस को भी कई प्रकार की असुविधाओं का सामना करना पडता था। यदि कोई अपराधी अपराध करने के पश्चात् किसी जागीरदार, बडे अधिकारी, मदिर मठ या धार्मिक स्थल की शरण ले लेता तो वह गिरफ्तार नहीं किया जा सकता था जिससे अव्यवस्था और अशाति का वातावरण उत्पन्न हो गया था। सरप्रताप ने इस कुप्रथा को बद कर दिया और अपराधी को पकडने के लिए पुलिस को यह अधिकार प्रदान किया कि अपराधी को वह किसी भी जगह पकड सकती है। इस नई व्यवस्था के तहत किसी की शरण या आड म अपराधी बच नहीं सकता था। इसके परिणाम स्वरूप राज्य म पुलिस का प्रभाव बढा एव अपराधी भयभीत हुए।

Pratap Singh set about organization of an efficient force under trained officers of ability, though the department passed through many vicissitudes before the devoted work of Mr. Cocks and his successor, M B Kothewala M B E, brought it to its present high level of efficiency— Under Pratap Singh's direction the various regulations were collected civil and criminal codes were drawn up, and all judicial officers were instructed to act in accordance with them [2]

जोधपुर स्टेट की रिपोर्ट (सन् १८८४-८५)[3] मे पुलिस विभाग के कार्यों का वर्णन इस प्रकार मिलता है—

Mohamad Jabar Khan held the office of Kotwali during the year. The number of civil suits filed in the year under report in the city Kotwali was 563, where as in the previous year the number was 586, showing a decrease of about 23 cases

The following is a description of offences committed during the year with in the Kotwali jurisdiction—

---

1. रेऊ ने पुलिस विभाग की स्थापना का वर्ष १८८५ माना है। विश्वेश्वरनाथ रेऊ मारवाड का इतिहास–भाग २ . पृ०–४६४
2. R B Vanwart : The Life of Lieut-General H H *Sir Pratap Singh* : Page 73
3. Jodhpur State Report for 1984-85 : Page 31

Murder	2
Grevious hurt	2
Theft	100
Receiving and purchasing stolen properly	2
Breach of confinement	2
Illegal Confinement	3
Forgery	8
Abortion	1
Abduction	11
Suicide	5
Miscellaneous offences	184
Total	320

Criminal Justice

Out of total number disposed of during the year, the number disposed of in which conviction was awarded was 142 Number of cases disposed under Razinama was 19, number transfered to other Court was 70, and the number struck of the file was 82, number of cases pending at the close of the years was 20

मिस्टर एम आर कोठेवाला बहुत लम्बे समय तक यहाँ के पुलिस विभाग का अध्यक्ष रहा। उसका सेवाओ के दौरान पुलिस विभाग मे चुस्ती और मुस्तैदी से कार्य किया गया तथा अपराधा म कमी आई। सन् १६२२-२३ म सुमेर फोर्स का पुलिस फोर्स म विलय हो जाने से उसकी सख्या (नफरी) म वृद्धि हुई।[1]

	1921-22	1922-23
Officers	135	135
Rank and file (foot)	1173	1420
Rank (Mounted)	714	912
	2,022	2 467

इस वृद्धि के परिणाम स्वरूप पुलिस विभाग का व्यय भी पिछले वर्ष (१६२१-२२) स बढकर ७ ०१,११६/-रु० हो गया जो गतवर्ष ६,३४,८३६/- रु० ही था। पुलिस विभाग

1 Report on the Administration of the Marwar State for the year 1922-23 P 20

के नियम और उसके अनुशासन की कठोरता से अनुपालना होती। पुलिसकर्मियो को अच्छे कार्य एव बहादुरी तथा वीरता के प्रदर्शन पर प्रोत्साहित किया जाता तथा अनुशासनहीन कर्मचारियो को पदोवनत एव मुअत्तल भी किया जाता था। अफसरो पर भी यही नियम लागू होता। इस प्रकार के उपायो के कारण तथा पुलिस की सुव्यवस्था से हत्या डकैती, चोरी आदि सभी प्रकार के अपराधो म कमी आयी।

सन् १६२२-२३ की ही इस रिपोर्ट मे इस बात का भी उल्लेख मिलता है कि सिटी पुलिस का कार्य भी सन्तोषजनक था। रिपोर्ट मे आगे यह भी कहा गया कि—

The year was one of bustle and activity for the police, more than 34 dacoits were captured, gangs were dispressed and 3 gang cases successfully worked out resulting in the conviction of 25 Koongars, 14 Minas and 4 Rajputs A fourth gang case involving 14 Sansi is sub judice [1]

इस प्रकार पुलिस विभाग के कार्य का पूरा लेखा जोखा भी प्रतिवर्ष रखा जाता था तथा जितने अपराध होते उसकी जाच पडताल की पूरी व्यवस्था की जाती थी। राज्य म पुलिस व्यवस्था पर कुल कितना खर्चा आता था तथा पुलिस चौकिये और आऊट पोस्ट कितनी थी पुलिस कर्मियो की सख्या एव पूरी सक्षिप्त रूपरेखा रिपोर्ट म इस प्रकार दर्शाई गई है—

Statement showing sanctioned strength & cast of police for the year 1922-23 [2]

Inspector General of Police		1
Dy Inspector General of Police		1
Superintendents		8
Assistant Superintendents		
Deputy Superintendent		
Inspectors		21
Sub Inspectors		104
Head Constables	Foot	293
	Mounted	122
Constables	Foot	1127
	Mounted	790
	Total	2 467

Total Cost—7,01,116/-Rs.
Area of the State—35 016 Sq Miles

---

1 Report on the Administration of the Marwar State for the year 1922-23 P 20-22.

2 Administration Report Marwar State year 1922-23 · Apendix No IV.

Population of the State—18,41,642
Number of Police Station—84
Number of Out Posts—104

किशनपुरी ने अपनी पुस्तक "मेमोरिज ऑफ द मारवाड पुलिस" म पुलिस विभाग म सरप्रताप के योगदान का वर्णन करते हुए उसे बहुत ही महत्वपूर्ण बताया है—

'The part played by these Jagir contigents in the control of crime was however insignificant But very valuable police work was done in those days by Maharaja Pratap Singhji Saheb (after wards Lieutenant General His Highness Maharaja of Idar) when he became Prime Minister of Jodhpur Being of a predominantly martial temperament he was unable to tolerate the law less activities of the dacoits, and personally led operations against the predatory minas, who had been carrying on a systematic pillage in the districts of Bali and Desuri "[1]

सन् १९०५ तक इस विभाग की प्रशसा करने योग्य प्रगति नही हो पायी। नियमित पुलिस के केवल १५०० कर्मचारी ही कार्यरत थे। धीरे धीरे इस विभाग ने अपनी कर्मठता और योग्य सेवाओ के कारण राज्य की शान्ति व्यवस्था को सुदृढ करने म महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। इस विभाग को सरदार बहादुर शमशेरसिंह, मिस्टर जी ए कावरा और एम आर कोतवाला जैसे योग्य और कुशल व्यक्तियो का नेतृत्व मिलता रहा और इनके निर्देशन म इस विभाग ने बहुत प्रगति की।

चुंगी विभाग (Customs Department)

यह विभाग सायर महकमा के नाम स जाना जाता था। इस महकमे की दुर्दशा थी। *जागीरदार अपनी सीमा के भीतर मनमाना कर वसूल करते तथा हर गाव म चुगी* ली जाती थी। नाम मात्र की भी व्यापारिक सुविधा नही थी इस कारण राज्य की व्यापारिक दशा बहुत खराब एव शोचनीय थी पूरे राज्य के व्यापार से केवल २ लाख रुपये की ही आय होती थी।[2]

पहले मारवाड के ही एक स्थान से दूसरे स्थान पर माल ले जाने पर चुगी लग जाती थी परन्तु सन् १८८२ मे यह बखेडा समाप्त कर सरहद पर ही चुगी लेकर रसीद देने का प्रबध कर दिया गया। पहले माल पर हासिल के अलावा कुछ अन्य लागें जैसे–मापा दलाली, चुगी, आढत, कोतवाली श्री जी कानूगोई दरवानी और महसूल गल्ला आदि भी लगती थी। इनके अलावा जागीरदार भी अपनी जागीर के गावा म निसार और पैसार के हासिल के साथ अनेक तरह की लागें लिया करते थे परन्तु इस समय से वे सब लागे उठा दी गई।[3]

---

1 Kishan Puri Memories of the Marwar Police Page 7
2 R B Vanwart The Life of Lieut-General—H H Sir Pratapsingh : Page 67
2 रेऊ मारवाड का इतिहास भाग–२ पृ० ४७३

'Hitherto customs dues had been realized in the most haphazard way, Most of the Jagirdars had institued their own rates without the least consultaion with their fellows, so that not only did the state exchequer suffer, but trade was greatly hampered as well

It was now ordained that customs should only be levied at the frontiers of the state, and separate duties for separate districts were abolished these reforms had the happy result of stimulating trade and increasing the customs receipts from two to eleven lekhs in a very short time".[1]

सरप्रताप ने चुंगी की व्यवस्था म सुधार लाने के लिए सन् १८८२ म मिस्टर ह्यूसन नामक अंग्रेज अफसर की सेवाएँ प्राप्त की। ह्यूसन ने इस विभाग म पुरानी प्रचलित प्रथा को समाप्त कर कई नये नये सशोधन किये। राज्य की बाहरी सीमा पर ही केवल चुंगी केन्द्र स्थापित किये जहाँ चुंगी वसूल की जाती तथा राज्य क भीतर विभिन्न स्थानो पर जो चुंगी ली जाती थी उसे समाप्त कर दिया। मिस्टर ह्यूसन बहुत ही योग्य एव परिश्रमी थे। उनके नव सुधारो और प्रयत्नो से कुछ ही समय म राज्य को चुंगी विभाग से २ लाख रुपये के स्थान पर ११ लाख की आय प्राप्त होने लगी और आगे चलकर तो यह राशि २० लाख तक पहुँच गयी।

मिस्टर ह्यूसन जितने परिश्रमी थे उतने ईमानदार भी। स्वय सरप्रताप उनकी ईमानदारी कतव्य निष्ठा एव परिश्रम से बहुत प्रभावित हुए। महाराजकुमार सरदारसिंह के वे कुछ समय तक शिक्षक भी नियुक्त हुए। सन् १८८८ म देहात हो जाने पर उनकी स्मृति म एक 'ह्यूसन अस्पताल' एव एक 'ह्यूसन गर्ल्स स्कूल' बनवाया गया। ह्यूसन महोदय की सेवाओं के सहयोग से प्रतापसिंह ने अपने राज्य म चुंगी की सुव्यवस्था कायम की जिससे राज्य की आय और व्यापार मे वृद्धि हुई।

नमक उत्पादन

महाराजा तखतसिंह के समय साभर झील से प्राप्त होने वाले नमक के सम्बन्ध म ब्रिटिश सरकार स एक समझौता किया गया था किन्तु इससे राज्य को बहुत कम आय होती थी। अत इस असन्तोषप्रद समझौते को समाप्त कर सरप्रताप ने नमक उत्पादन के सम्बन्ध मे दूसरा समझौता किया।[2] इस नये समझौते से राज्य को केवल नमक उत्पादन से १५ लाख की आय होने लगी।

आबकारी विभाग (Excise Department)

राज्य मे शराब बनाने और बेचने की पहले कोई व्यवस्था न थी जहाँ जिसके जी मे

---

1 R B Vanwart The Life of Lieut General H H Sir Pratap Singh Page 67-68

2 यह नया समझौता ८ मई ई० सन् १८७९ को किया गया—रेऊ : मारवाड का इतिहास भाग–२ पृ० ४६९-४७०

आया वहीं भट्टी लगा शराब तैयार कर लेता। किसी प्रकार का नियम अथवा कानून न था। बहुत से ठाकुर और जागीरदार अपने क्षेत्र में जो शराब का कर वसूल करते वह उनके पास ही रहता था। साथ ही वे स्वयं शराब भी तैयार करवाते। इस प्रकार शराब के उत्पादन पर किसी प्रकार का न तो नियंत्रण था और न ही उससे राज्य को आय होती थी। अतः सन् १८८३ में आबकारी विभाग का पुनर्गठन किया गया जिसके सम्बन्ध में वेनवर्ट लिखता है कि—

In 1883 Pratap Singh set about the re-organization of the excise in common with most of the other state departments such regulations as it possessed existed only to be evaded or defied [1]

जोधपुर रियासत को चार भागों में बांटकर प्रत्येक क्षेत्र में एक-एक आबकारी सुपरिन्टेन्डेन्ट (अधिकारी) नियुक्त किया। आबकारी विभाग के नियम और कानून बनाये गये। जहां-तहां शराब बनाने के प्रचलन को कानूनन बन्द कर दिया तथा इसकी अवहेलना करने वालों के लिए कठोर दण्ड का प्रावधान रखा गया। परिणाम स्वरूप कुछ ही समय में आबकारी विभाग से राज्य को प्रतिवर्ष लाखों रुपये की आय होने लगी।

नगरपालिका (Municipal Committee)

जोधपुर नगर की दशा सुधारने तथा इसके सौंदर्यीकरण पर भी सरप्रताप का ध्यान गया। नगर में सफाई, रोशनी आदि की व्यवस्था के लिए पूरा प्रबन्ध किया गया। सन् १८८३ में नगरपालिका की स्थापना की गई। सन् १८८४ में महाराजा भूपालसिंह इसके अध्यक्ष नियुक्त हुये जिन्होंने अपने निजी खर्च से १० हजार रुपये प्रतिवर्ष नगरपालिका को सहायतार्थ देने की मंजूरी दी। मुंशी हरदयालसिंह म्यूनिसिपल कमेटी के मंत्री नियुक्त हुए।

जोधपुर नगर के भीतरी भाग की स्थिति उस समय बहुत बुरी थी। तंग गलियों में कूड़ा करकट व गन्दगी का ढेर पड़ा रहता था। इसलिए नगर की सफाई का पूरा प्रबन्ध किया गया। इसकी व्यवस्था का जिम्मा मुख्य चिकित्सा अधिकारी कर्नल ए. एडम को सौंपा गया।[2] जिन्होंने नगर के विभिन्न भागों में ट्राम वे (Light Railway) की पटरियां बनाकर गंदगी हटाने का प्रबन्ध किया।

The control of the conservancy and sanitation was placed in the hands of the Chief Medical Officer, then Lieutenant-Colonel A Adams, I M S, under whose direction a conservancy light rialway was

---

1 R B Vanwart The Life of Lieut-General H H Sir Pratap Singh, Page 69

2 सन् १८८४ की ३ मई को जोधपुर नगर की सफाई के लिए डाक्टर आर्चिबाल्ड ऐडम्स की निगरानी में म्यूनिसिपलिटी कायम की गई।

रेऊ मारवाड़ का इतिहास भाग–२ पृ० ४७८

constructed for removing the refuge of the city to a discreet distance "[1]

रेल्वे (Railway)

सन् १८८१ मे जयपुर नरेश महाराजा रामसिंह का स्वर्गवास होने पर जोधपुर महाराजा जसवतसिंह एव प्रतापसिंह जब इस अवसर पर शोक प्रकट करने वहा गये तब एडवर्ड ब्रेडफोर्ड ए जी जी [2] से मारवाड म रेल्वे की स्थापना के लिए बातचीत की। रियासत के अधिकारी एव कुछ लोग रेल्वे की बजाय शहर मे ट्रामवे (Tramway) बनाने के पक्षधर थे किन्तु सरप्रताप रेल्वे बनाने के पक्ष मे थे। ट्रामवे से केवल जोधपुर शहर को ही लाभ होता। राज्य के शेष भाग को इससे विशेष लाभ नही होता। अत रेल्वे लाईन बिछाने के लिए कर्नल स्टील से बातचीत हुई एव उन्होने जो एक इजीनियर प्रदान किया उसके नेतृत्व मे सर्वप्रथम मारवाड मे खारची (मारवाड जक्शन) से पाली तक रेल्वे लाईन बनी। उसके इग्लैंड लौट जाने पर मिस्टर होम के दिशानिर्देश मे बहुत ही कम व्यय मे (२० हजार रुपये प्रति मील के हिसाब से) पाली से जोधपुर तक की रेल्वे लाईन बिछाई गई।

सन् १८८५ मे जब मारवाड जक्शन से जोधपुर तक रेल्वे लाईन बिछाने का कार्य पूरा हो गया तो उसके कुछ समय पश्चात् ही वायसराय लार्ड डफरिन का जोधपुर राज्य मे आगमन हुआ। किसी वायसराय की मारवाड (जोधपुर) राज्य मे यह पहली यात्रा थी। राज्य की ओर से वायसराय का भव्य स्वागत किया गया। रेल्वे स्टेशन से पावटा तक जहा उनके ठहरने की व्यवस्था की गयी थी पूरे मार्ग मे दोनो ओर रियासत के जागीरदार पक्तिबद्ध स्वागत के लिए खडे थे। प्रतापसिंह और प्रसिद्ध पोलो खिलाडी ठाकुर हरिसिंह ने वायसराय के अवैतनिक अगरक्षक (A D C) के रूप मे अपनी सेवायें प्रदान की। विभिन्न कार्यक्रमो का आयोजन कर वायसराय का भव्य स्वागत किया गया। लार्ड डफरिन मारवाड की व्यवस्था एव प्रगति से बहुत प्रभावित हुआ और इसके प्रशासन मे प्रतापसिंह की भूमिका की भूरि भूरि प्रशसा की। प्रशासनिक सेवाओ के उपलक्ष्य मे प्रतापसिंह को (K. C. S. I) के सी एस आई की पदवी से सम्मानित किया।

"That the viceroy and Government of India were fully aware of Pratap Singh's responsibility for the administrative progress of Marwar was shown by his receiving the title of K C S I in the course of same year, an honour which he had highly merited "[3]

---

1. R B Vanwart : The Life of Lieut-General. H. H Sir Pratap Singh : Page 72
2. A G G =Agent to the Governor-General.
3. R B Vanwart : The Life of Lieut-General H H. Sir Pratap Singh : Page 74

जब मारवाड़ में मारवाड़ जंक्शन से जोधपुर तक रेल्वे लाईन बन गई तथा उससे रियासत एवं प्रजा को कई प्रकार के लाभ अनुभव होने लगे तो इसके विस्तार की योजना बनाई गई। पचभद्रा ब्रांच का विस्तार किया गया। इसके पश्चात् जोधपुर से भटिण्डा तथा हैदराबाद (सिंध) तक दो लाईनों का और विस्तार किया गया।

Two more highly important branches were constructed one from Jodhpur to Bhatinda, chiefly through Bikaner territory and another from Luni across the Sind desert, abhorred of travellers to Hyderabad (Sind)

Jodhpur was in this way linked with Ajmer Merwara in one direction, and Ahmedabad and Bombay to the west through Marwar Junction, Sind, Karachi and Quetta were all eventually made accessible from Luni and the route to the Punjab was appreciably shortened by the Bhatinda branch [1]

सन् १८८४-८५ की रिपोर्ट में लूनी एक्सटेंसन और जोधपुर एक्सटेंसन का ब्यौरा दिया गया है जिसको यहां उल्लेखित करना समीचीन होगा। इस वर्णन में नवनिर्मित रेल्वे की बिल्डिंग, रेल्वे से सम्बन्धित अन्य आवश्यक सामग्री एवं वस्तुओं का उल्लेख मय व्यय राशि के साथ किया गया है जो इस प्रकार हैं—

Railway Construction

Luni Extension—This section was opened for traffic in June but there were a good many works uncompleted at the time The Guia and Luni casuse ways have been commenced and practically finished during the year, the platelaying was about half finished at the commencement of the year and a good deal of ballasting has been done

The expenditure of Rs 1,26,131-6-10 was made up as follows

	Rs	As	P
Permanent way materials	78,550	5	4
Plate laying	12,452	15	6
Luni Cause way	12,743	5	1
Guia Cause way	9,012	6	3
Ballast	2 550	10	6
Luni Station Goods Shed	1 690	4	10
Miscellaneous including establisment	9 131	7	4
Total	1,26,131	6	10

1 R B Vanwart · The Life of Lieut-General H H Sir Pratap Singh. Page 71

The total expenditure on the extension to date has been Rs 3 12,989-8-5 against an estimated expenditure of Rs 3,84 322

Jodhpur Extension—Construction was commenced in May 1884, and the line was opened in March 1885 The expenditure has been Rs 2 00 596 6-2 as follows—

	Rs	As	P
Survey	923	15	3
Earth work	10,210	8	0
Minor Bridge work	6,969	11	6
Ballast	15,478	2	11
Jojri Cause way	4,669	11	5
Permanent way materials	1,22,224	1	11
Plate laying	12,703	15	3
Station Building	20,490	2	1
Tools & Plant	1,035	1	10
Establishment	4,130	1	3
Supense (recoverable)	1,760	14	9
Rs	2,00 596	6	2

There remains to be paid—

R M Railway bills for rails etc	Rs	49,000
B B & C I Railway bills for rails for Jojri	Rs	1,000
Ballast, about	Rs	2,000
Watering arrangements at Jodhpur	Rs	5,000
Miscellaneous	Rs	1,500
Siding at Tenaora and Salawas	Rs	200
Total	Rs	58,700

The item of Rs 5,000 for watering arrangements at Jodhpur is a heavy one, and was not included in the original estimate as it was intended to run from Luni to Jodhpur and back without watering, but the Luni water has turned salt since last rains, and a new well is now being made near Pali, which so far has been satisfactory this however will necessitate taking water in Jodhpur, which will have to be brought from the Bukht Sagar in pipes, as the water near the station is bad

The total expenditure of the Jodhpur extension to data then has been Rs 2 00,596 6-2, adding Rs 58,700 the estimated remaining

expenditure gives Rs 2,59,296-6-2 at the total cost of the line against the estimate of Rs 2,92,824 [1]

मारवाड मे रेल सुविधा दिन प्रतिदिन लोकप्रिय बनती गयी तथा यह यातायात एव आवागमन के लिए मुख्य साधन का रूप धारण करने लगी। साथ ही इसके उपयोग से राज्य की आय भी होने लगी। सन् १९२२-२३ म कुल कमाई रु० २४,९३,९३७ हुयी जो सन १९२१-२२ मे रु० १८,६६,५७३ थी। इस प्रकार सन १९२१-२२ के मुकाबले राज्य के लाभाश मे ६ ३०% से बढकर ८ ३६% वृद्धि हुई। रेल सुविधा और उसके विस्तार का कार्य भी साथ ही साथ चलता रहा। पीपाड बिलाडा लाइट रल्वे के लिए २५½ मील का रास्ता इसी वर्ष तक तैयार करवा लिया गया जिसके निर्माण के लिए २,९२,९५६ रु० का बजट रखा गया।[2]

इसके अतिरिक्त कुचामन म मार्शलिंग यार्ड, गडरारोड म गुडस् शेड, बाडमेर म लोको शेड, जोधपुर म स्टोर यार्ड फोरमेन्स बगलो २, न्यू जनरल आफिस, सर्वेन्टस क्वार्टर, आफिस एकोमोडेशन, आयन गोदाम, चौकीदारो एव गेटकीपरा के लिए झोपडियें और सामान उतारने के लिए प्लेटफार्म बनवाये गये। मेडता रोड म लोको के लिए १० क्वार्टर, रामसर के यार्ड का नवीनीकरण, मेडता रोड मे एक रेस्ट हाऊम, मकराना को स्टेशन बिल्डिग, बोरावड मे नयी स्टेशन बिल्डिग, पीपाड रोड के रेल्वे स्टेशन का विस्तार, बाडमेर मे लोको क्वाटर्स बोरावड और गच्छीपुरा की सम्मिलित रेल्वे स्टेशन बिल्डिग, गोटन पीपाड रोड के कनवटिग यार्ड एव सूरसागर की पत्थर की खाना की ओर रेल्वे लाईन का निर्माण कार्य इस वर्ष करवाया गया।[3]

सन् १८८६ म जोधपुर और बीकानेर के महाराजाओ ने मिलकर रेल्वे की व्यवस्था व विस्तार का कार्यक्रम बनाया तब से यहा की रेल्वे जोधपुर बीकानेर रेल्वे के नाम से जानी जान लगी। अपने-अपने क्षेत्र मे दोनो राज्य इसकी व्यवस्था करते थे। दोनो रियासतो की सम्मिलित रेल व्यवस्था सन् १९२५ तक चलती रही। रेल व्यवस्था म सरप्रताप का महत्वपूर्ण योगदान रहा और यह उनकी दूरदर्शिता का ही परिणाम था कि उन्हाने राज्य मे रेल सुविधा उपलब्ध करायी इससे राज्य मे आन्तरिक यातायात की यात्रियो को सुविधा हुई साथ ही राज्य की इससे ३० लाख रुपये की प्रतिवर्ष (१९२४-२५) आमदनी होने लगी जिसका उल्लेख वेनवर्ट ने भी किया है—

---

1 Jodhpur State Report for 1884-85 Page 49-50

2 Report on the Administration of the Marwar State for the year 1922-23, P 42-43

3 ,, ,, ,, ,, Appendix No XXI मे सारे निर्माण कार्य एव नवीनीकरण के कार्यों का लागत सहित ब्यौरा है।

Pratap Singh in this matter gave evidence of his power to shake of the conservative, not to say reactionary, train of administrative thought which was so marked a trait among even the most highly educated men of his time in Rajputana, and his farsighted policy has enriched the state by an income which in 1924-25 totalled not less than thirty lakhs of net profit, as well as by the benefits derived from inter communication with other people and places [1]

डाक विभाग

सन् १८८५ मे यहा भारत सरकार के डाक विभाग की स्थापना की गयी। इसके पूर्व रियासत की ओर से निजी डाक सेवा का प्रबन्ध किया जाता था। सन १८५७ मे (महाराजा तखतसिंह के समय) यहा की डाक व्यवस्था बहुत दयनीय थी। हरकारो द्वारा डाक भेजने से समय और खर्च भी अधिक लगता था अत डाक विभाग की स्थापना से यह सारी गडबड दूर हो गयी और डाक की नियमित सेवा से लोग लाभान्वित हुये।

All the pargana Head-quarters have now Imperial postal communications with Jodhpur and the Darbar and all officials of position, including Thanadars are allowed to carry on official correspondence at service rates These arrangements must prove of great value in promoting the improvement of the Administration.[2]

इण्डियन इम्पीरियल पोस्टल सिस्टम यहा लागू किया गया जिसके अन्तर्गत सभी प्रमुख कस्बो मे पोस्ट आफिस खोले गये तथा गावो की डाक अपने निकटस्थ डाक केन्द्र (पोस्ट आफिस) से प्रति सप्ताह वितरित की जाने लगी। इस प्रकार पूरे राज्य मे नियमित डाक सेवा प्रारम्भ की गयी।[3] इसस आम आदमी को डाक की सुविधा उपलब्ध हुई।

मारवाड राज्य की राजधानी मे कोई टेलिग्राफ आफिस नही था अतएव समाचार पोस्ट द्वारा ही भेजे जाते थे। इसलिये सरप्रताप ने जोधपुर को मुख्य रेल्वे की टेलिग्राफिक लाइन से जोडने का भी विचार किया।

---

1. R B Vanwart : The Life of Lieut-Generel H. H Sir Pratap Singh : Page 72
2. Jodhpur State Report for 1884-85 : P. 76 इसमे यह सूची भी दी गई है जिसमे उन राज्याधिकारियो का उल्लेख है जो बिना टिकट लगाये लिफाफे या डाक भेज सकते थे क्योकि उनको बिना टिकट डाक भेजने का अधिकार प्रदान किया गया था।
3. R. B Vanwart : The Life of Lieut-General H H. Sir Pratap Singh : Page 73

उस समय (सन् १८८४-८५) मारवाड में निम्नलिखित स्थानों पर पोस्ट ग्राफिस थे सूची इस प्रकार है—जोधपुर मे मुख्य कार्यालय था इसके अतिरिक्त पाली, समदडी, लूनी, सिवाना, जालोर, पचभद्रा बालोतरा, बाडमेर, फलौदी, पोकरण, शिव म प्रत्येक जगह एक-एक Sub Post Office था।[1]

पी डब्ल्यू डी विभाग (Public Works Department)

इस विभाग की स्थापना के पूर्व मारवाड मे सार्वजनिक निर्माण के कार्य तो होते थे किन्तु उसकी समुचित व्यवस्था न थी। राज्य मे विभिन्न मार्गो की सडकें बनवाने, सिचाई और पानी के लिए तालाब व नहरो का निर्माण तथा भवनो के निर्माण का पूरा ब्यौरा व रेकर्ड व्यवस्थित रूप से रखने के लिए सन् १८८६ मे मिस्टर होम के नेतृत्व म यह विभाग प्रारम्भ हुआ। पी डब्ल्यू डी को अलग विभाग के रूप म स्थापित करने तथा मिस्टर होम जैसे व्यक्ति को इसका विभागाध्यक्ष बनाने म सरप्रताप का महत्वपूर्ण हाथ रहा। पी डब्ल्यू डी का अलग से विभाग बन जाने पर राज्य के विकास कार्यों एव सार्वजनिक हित के कार्यों को नयी गति प्राप्त हुई। जहाँ रियासत की जनता की आवश्यकताओ की पूर्ति और समस्याओ के निदान मे यह विभाग काफी लाभकारी सिद्ध हुआ वही इस विभाग ने जोधपुर नगर के विभिन्न भव्य प्रासाद एव बगलो के डिजाइन तैयार किय। स्वय मिस्टर होम बहुत अच्छे डिजाइनर थे तथा जोधपुर के विभिन्न बगले और मकान तथा रियासत मे पानी के बाध, तालाब और नहरा आदि का निर्माण इन्ही के निर्देशन मे किया गया।

Mr Home who proved a zealous and capable officer, many of the public buildings were designed and built by him though the credit for by far the finest the Mekhmakhas, or State offices, goes to Sir Swinton Jacob, whose artistic and beautiful design is at least equal to that of any building of modern times in Rajputana Home, too started a Public Works Department on a sound basis [2]

मिस्टर होम के पश्चात् ले० कर्नल डी एम स्टूअर्ट के निर्देशन म P W D विभाग के कार्य होते रहे। इस विभाग के अन्तर्गत सडकें, बाध, नहर, स्कूल भवन, अध्यापक क्वार्टर्स, चबूतरे, नदियों के तटबध, तालाबो के तटबध, पुल बाग बगीचो आदि का निर्माण भी होता था इसके लिए सन् १९२२-२३ म ८,६३,७१६ रुपये के बजट का प्रावधान था।[3]

---

1 Jodhpur State Report for the year 1884-85 P 77.

2 R B Vanwart, the Life of the Lieut-General H H Sir Pratap Singh · Page 71

3 Report on the Administration of the Marwar State for the year 1922-23 Page 39

चिकित्सा विभाग (Medical Institutions)

राज्य में चिकित्सा सुविधाएँ उपलब्ध कराने की दिशा में भी ध्यान दिया गया। मारवाड और मालानी क्षेत्र की सभी Medical Institutions चिकित्सा संस्थाएँ सीधे (A Adams M D Medical Officer of the Western Rajputana) ए० एडम्स मुख्य चिकित्सा अधिकारी पश्चिमी राजपूताना, के नेतृत्व में महत्वपूर्ण कार्य कर रही थी।

मारवाड म कुल छ सरकारी अस्पतालो मे रोगियो के रोग निदान की सुविधाएँ उपलब्ध थी। इनडोर और आऊटडोर रोगी जो देखे जाते उनका पूरा ब्यौरा मिलता है। सन् १८८४-८५ म १८१ इनडोर और २३,३३३ आऊटडोर रोगियो को देखा गया। सभी अस्पतालो मे हुए कुल ऑपरेशनो की सख्या–बड़े ऑपरेशन (Major Operation) ८६ तथा छोटे ऑपरेशन (Minor Operation) १७८१ हुए। अधिकांश बडे ऑपरेशन जोधपुर शहर के मुख्य अस्पताल मे किये गये। इस समय अन्य बिमारियों की रोकथाम के अतिरिक्त पाली और सोजत मे फैले हैजे के उपचार की पूर्ण व्यवस्था की गई। इस वर्ष सभी सरकारी अस्पतालो पर ६,६३२ रु० ११ आना ८ पैसे व्यय किये गये जिनसे अस्तपाल म भर्ती रोगियो के भोजन, अग्रेजी दवाइयो (European Medicines), बाजार की दवाइया, फर्टीजैसी, रोशनी, पानी, पट्टिया आदि आवश्यक सामग्री की व्यवस्था की।[1]

ए० एडम्स जो जोधपुर नगर की सफाई समिति के भी अध्यक्ष थे उन्हाने केवल इस नगर को ही नही राज्य के सभी नगरो और बस्तियो मे बसने वाले लोगो को सफाई पर अधिक ध्यान देने के लिये प्रेरित किया जिससे कि बीमारिया कम फैले। महामारियो के प्रकोप से बचने के लिए मुख्य चिकित्साधिकारी के सुझाव और निर्देशानुसार मारवाड और मालानी क्षेत्र में चालू वर्ष (१८८४ ८५) मे १,९६७ रु० ७ आना ६ पैसे की रकम टीके लगवाने पर खर्च की गई। सर्वेक्षण करके यह तथ्य प्राप्त किया कि ९७ गावो के ६६१४ बच्चों के टीके लगवाये गये। इस अभियान मे ९७ ३४% प्रतिशत सफलता हासिल की तथा मारवाड मे टीके लगवाने के प्रति लोगों की रुचि जागृत हुई और इस कार्यक्रम को लोकप्रियता भी मिली।[2]

सन् १९२२-२३ मे मेडिकल विभाग पर १७९,०२९/४/१ रु० व्यय किये गये जिसम टीके (Vaccination) के लिए की गयी २३,९१६/१५/१ रुपये की राशि भी सम्मिलित है। इसके लिए एक सहायक अधीक्षक, ३ इन्सपेक्टर, ४८ वेक्सीनेटर, ४१ सवार चपरासी (Mounted Chaprasies) और २ चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी नियुक्त किये गये।[3]

---

1. Jodhpur State Report for 1884-85 · Page 75-76
2 Jodhpur State Report for 1884-85 Page 75
3 Administrative Report Marwar State for the year 1922-23 . P. 56-58

Rohat. The expenditure amounted Rs. 58,985/- The works of the Military pensions and gratuities continued to be carried on this office and Rs 90,524/- were disbursed on this account.[1]

The Military Forces of the State wer composed of :—

(a) Regular I, Re-organised
1. Sardar Rissala
2. Sardar Infantry
3. Transport Corps.
4. State Band
5 Military Station Hospital

II, Un-organised—Fort Artillery

सरदार रसाला रेजीमेंट की सैनिक सख्या ६६५ थी तथा (सन् १९२२-२३) मे इस पर ६,११,७२७/- रु० व्यय किये गये। **सरदार इन्फेन्ट्री** की सख्या ३६० और वार्षिक व्यय १,५७,०२० रुपये। **ट्रांसपोर्ट कोर्पस्** की सख्या १२७ तथा इस पर वार्षिक व्यय के रूप मे ६७,२१७/–रुपये खर्च किये गये। इस विभाग के पास ५६ गाडिया थी जिसका उपयोग ट्रासपोर्ट के लिए किया जाता। चारे (घास) को इधर-उधर ले जाने तथा राज्य के अन्य कार्य के लिए भी इनका उपयोग किया जाता।

फोर्ट आर्टलरी इस रेजीमेंट की सख्या ३३८ थी तथा इस पर इस वर्ष ७,२,६५४/- रुपये खर्च किये गये। **मिलिट्री स्टेशन हॉस्पिटल** मे भर्ती होने वाले रोगियो की सख्या ३५६ थी तथा उन पर ६२,३६६/– रुपये व्यय किये गये।

मिलिट्री ग्रास फार्मस् डिपार्टमेंट का कट्रोल कर्नल कमान्डेण्ट महाराज शेरसिंह के अधीन था। आठ जोड (घास के मैदान) इस विभाग के अन्तर्गत थे जो बाली, बिसलपुर, खारडी, बाना, गुडाएन्दला, खाड, खारडा और कनवासिया (Kanvasia) मे स्थित थे। इनके अलावा १० और–बिजवा, पालडी, बिलाडा, बिजासनी, हरेरा, (Hariara) मुरडवा, सापूनी, सोनाई, रमणिया और सोढावास ढाणी के जोड भी इस विभाग को सौपे गये।

जोधपुर स्टेट बैण्ड के बैण्डमास्टर स्केवेरा (Sequera) के निधन के पश्चात् E J. नामक नये बैण्डमास्टर को नियुक्त किया। बैण्ड को पुनर्व्यवस्थित किया गया और इस पर १५६०७ रु० खर्च किये गये।[2]

---

1. Report on the Administration of the Marwar State for the year 1922-23 : P. 16
2. Report of the Administration of the Marwar State for the year 1922-23 : Page 16-19.

न्याय व्यवस्था

मारवाड़ में न्याय व्यवस्था को भी नवीन स्वरूप प्रदान किया गया। जनता को शीघ्र और सही न्याय प्राप्त हो सके इसके लिए विशेष प्रबन्ध किये गये तथा अनेक प्रकार की Tribunals अदालतें (न्याय के लिए बनाई गयी समितियां) स्थापित की गईं तथा उनके अधिकार और कर्तव्यों का स्पष्टीकरण किया गया। विभिन्न प्रकार की ट्रिब्यूनल्स में महकमाखास, अपीलेट कोर्ट *(Appellate Court)* कोर्ट ऑफ सरदार, फौजदारी कोर्ट, सिविल कोर्ट, कोतवाली, मुंसिफ कोर्ट तथा परगना के अलग अलग कोर्ट प्रमुख कहे जा सकते हैं।

महकमा खास (Mahkama Khas)

महकमा खास को दूसरे शब्दों में राज्य का सुप्रीम कोर्ट कह सकते हैं। जोधपुर के प्रधानमंत्री (मुसाहिब आला) सर प्रतापसिंह इसके जज (मजिस्ट्रेट) थे। जिनको जोधपुर *महाराजा ने संपूर्ण मारवाड़ राज्य के पूर्ण अधिकार सुपुर्द किये थे।* सरप्रताप इस विभाग का काम एक कौंसिल की मदद से देखते थे। उस कौंसिल में निम्नलिखित सदस्य थे[1]—

१ रावराजा तेजसिंह
२ मेहता विजयसिंह
३ पण्डित शिवनारायण
४ मुंशी हरदयालसिंह

महकमा खास अपने अधीनस्थ राज्य की सभी सहायक अदालतों की कार्यवाही की निगरानी एवं स्वतंत्र रूप से राज्य के प्रशासन में निर्देश दिया करता। सामान्यतया महकमा खास के निम्नलिखित कार्य थे—अपीलेट कोर्ट और जागीरदार कोर्ट के फैसले की अपील की सुनवाई, *राज्य के राजकोष की व्यवस्था, राजाज्ञाएं एवं सूचनाएं प्रेषित करना,* डकैती एवं लूटपाट को समाप्त करना, प्रशासन में नवीन सुधार करना, अपने अधीनस्थ सभी हकूमतों और सहायक अदालतों की रिपोर्ट पर अपने आदेश प्रसारित करना, प्रमुख सजाओं की घोषणा और रेजीडेण्ट के साथ पत्र व्यवहार करना।

महत्वपूर्ण मामलों से सम्बन्धित आदेश महाराजा की स्वीकृति के पश्चात् प्रसारित किये जाते। महाराज प्रतापसिंह की अनुपस्थिति में या तो रावराजा तेजसिंह या मुसाहिब आला का सेक्रेट्री उनके कार्य को देखता। महकमा खास पांच विभागों में बंटा हुआ था—

१ मिलट्री डिपार्टमेंट (सैनिक विभाग)

---

1 Jodhpur State Report for 1984-85 Page 7

२ फाइनेंन्सियल डिपार्टमेंट (आर्थिक विभाग)
३ जुडीशियल डिपार्टमेंट (न्यायिक विभाग)
४ फोरिन डिपार्टमेंट (विदेश विभाग)
५ मिसलेनियस डिपार्टमेंट (विविध विभाग)

महकमाखास जोधपुर मे स्थित था तथा संपूर्ण राज्य के न्यायिक मामलो की अन्तिम सुनवाई का केन्द्र था। सिविल, क्रिमनल और सामान्य सभी केसो की फाइनल अपील की सुनवाई, आजीवन कैद की सजा और मनचाहा जुर्माना करने के अधिकार इस कोर्ट को थे।

अपीलेट कोर्ट (Appellate Court)

वि० स० १९३८ की वैशाख सुद ८ को कविराजा मुरारीदान इस कोर्ट के जज नियुक्त किये गये। इस कोर्ट मे सिविल और क्रिमनल केसो की अन्तिम अपील की जाती। सजा के तौर पर १० वर्ष की कैद तथा मनचाहा जुर्माना (Any Amount) करने के अधिकार इस कोर्ट को प्राप्त थे।

कोर्ट ऑफ सिरदार (Court of Sirdars)

मु शी हरदयालसिंह और जीवानन्द उपाध्याय जज। इस कोर्ट मे उन सारे सिविल और क्रिमनल केसो की अपील की सुनवाई होती जो जागीरदारो से सम्बन्धित होते। क्रिमनल केस की सजा के तौर पर २ वर्ष की सजा एव १००० रु० तक जुर्माना करने का अधिकार इस कोर्ट को था।

फौजदारी कोर्ट (Foujdari Court)

जज-महमूद मखदूम बक्स। इस कोर्ट मे केवल क्रिमनल केसो (फौजदारी केसा) की सुनवाई होती तथा २ वर्ष की कैद और १००० रु० तक के मुकदमे सुनने का अधिकार इस कोर्ट को था।

सिविल कोर्ट (Civil Court)

जज-मेहता अमृतलाल। सिविल कोर्ट म सिविल केस एव सिविल केसो की अपीलो व मुकद्दमो की सुनवाई होती तथा इस कोर्ट को ५,००० रु० तक के अभियोग की सुनवाई का अधिकार था। इस कोर्ट को केवल दीवानी अधिकार प्राप्त थे।

कोतवाली (Kotwali)

जज महमद जब्बार खान। जोधपुर शहर मे कोतवाली के अन्तर्गत सिविल और

क्रिमनल दोनो ही प्रकार के मुकद्दमों की सुनवाई होती। सिविल केसो पर १,००० रु० तक के मुकद्दमा की सुनवाई एव क्रिमनल केसो मे ६ माह तक की कैद और २०० रु० तक जुर्माना करने का अधिकार कोतवाली को प्रदान किया गया था।

मुन्सिफ कोर्ट (Munsiff's Court)

सन् १८८४ की १६ जुलाई को मुन्सिफ कोर्ट की स्थापना की गई। पचोली गगादास को इस कोर्ट का जज नियुक्त किया गया। मुन्सिफ कोर्ट मे केवल सिविल केसो की सुनवाई होती तथा इसे ५०० रु० तक के मुकद्दमे सुनने का अधिकार प्राप्त था।

सुपरडेण्ट कोर्ट (Supdt's Court)

सुपरडेण्ट कोर्टस् केवल दो जगह थे—१ जालोर और साचोर क्षेत्र मे २ सोजत और गोडवाड मे। इनके जज क्रमश पण्डित माधोप्रसाद एव किशोरीलाल थे। पहला कोर्ट जालोर मे तथा दूसरा बाली मे स्थित था। ये कोर्ट अपने क्षेत्र के सिविल और क्रिमनल केसो की सुनवाई करने तथा सिविल केसो मे इनको १,००० रु० तक जुर्माना एव क्रिमनल केसो मे एक वर्ष की कैद तथा ५०० रु० तक जुर्माना करने के अधिकार प्राप्त थे।

हकूमत (Hakumat)

उपर्युक्त कोर्टस् के अतिरिक्त बिलाडा, पाली, परबतसर, पचभदरा, जसवतपुरा, जालोर और जोधपुर (जोधपुर शहर के अतिरिक्त) परगने मे प्रत्येक जगह हकूमत स्थापित कर वहा जज नियुक्त किये। इन हकूमतो मे सिविल और क्रिमनल दोनो ही प्रकार के केसो की सुनवाई होती। सिविल केस के लिए ५०० रुपये तक जुर्माना एव क्रिमनल केस पर २ माह की कैद एव १०० रु० तक जुर्माने के अधिकार प्रत्येक हकूमत को थे।

जागीरदारो के अधिकार (Jagirdar's Powers)

विभिन्न कोर्टस् म तो मुकद्दमे दायर होते ही इसके अतिरिक्त पूरे मारवाड राज्य के प्रमुख जागीरदारो को अपनी जागीर मे क्रिमनल और सिविल दोनो ही प्रकार के केसो की सुनवाई के अधिकार प्रदान किये गये। जागीरदारो को तीन श्रेणियों मे विभाजित कर उनके अधिकार निश्चित किये गये। इन अधिकारो का उपयोग कर वे अपनी जागीर के केसो का निपटारा करते। जागीरदारो की तीन श्रेणिया व उनके अधिकार इस प्रकार थे—

१. प्रथम श्रेणी (1st Grade)

प्रथम श्रेणी के जागीरदार क्रिमनल केस मे ६ माह की सजा एव ३०० रु० तक जुर्माना कर सकते थे। १००० रु० तक के अभियोग की सुनवाई का इनको अधिकार था। पोकरण, आऊवा, आहोर, आसोप, चडावल, कटालिया, रायपुर, निमाज, रास, कुचामन,

रेण, घाणेराव, चाणोद, जावला, मेरवा, खीमसर, बगडी, खेजडला के जागीरदारो को प्रथम श्रेणी के अधिकार प्राप्त थे।

२ द्वितीय श्रेणी (2nd Grade)

द्वितीय श्रेणी के जागीरदारो को क्रिमनल केस मे २ माह की सजा एव १५० रु० तक का जुर्माना करने एव ५०० रु० तक के सिविल मुकद्दमो की सुनवाई का अधिकार था। रोहट, खीवाडा, लाम्बीया, आगेवा, भमलाई, मिडा, बूडसू, डोडियाना, मीठडी, भाद्राजून, लाडनू दागोली, माथिण, कनाना, समदडी, बल्लुन्दा, झाबामण्ड, कल्याणपुर को द्वितीय श्रेणी के अधिकार प्राप्त थे।

३ तृतीय श्रेणी (3rd Grade)

इस श्रेणी के जागीरदारो का क्रिमनल केस मे एक माह की कैद तथा १०० रुपये तक जुर्माना एव ३०० रुपय तक के सिविल दावो की सुनवाई का अधिकार था। हरसोलाव, भैमवाडा, दामपा, बाकरा खुडाला, पालासणी लवेरा, कोटडी बाधावास, कुडकी, बेडा, साण्डराव और राखी को तृतीय श्रेणी के अधिकार प्राप्त थे।[1]

इस प्रकार सर प्रताप के समय न्याय व्यवस्था मारवाड मे कितनी व्यवस्थित थी इसका अन्दाज लगाया जा सकता है। जनता को अपने घर बैठे ही न्याय की सुविधा उपलब्ध थी। जागीरदार, हूकूमत के जज परगने के छोटे-मोटे मुकद्दमे शीघ्र ही निपटा देते थे। असतुष्ट आगे अपील ले सकते थे जिसके लिए पूरी व्यवस्था थी। महकमाखास सुप्रीम कोर्ट था। न्याय के अधिकारो के विकेन्द्रीकरण मे जनता को सस्ता न्याय सुलभ हो सका तथा मुकद्दमो एव अभियोगो की सुनवाई भी शीघ्र करके फैसले दिये जाते। अपराध वृत्ति रोकने के लिए न्यायपालिका के इस स्वरूप ने मारवाड म अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया होगा। न्याय व्यवस्था मे सुधार हेतु उन्होने सन् १८८५ मे ही दीवानी, गवाही, स्टाम्प हलफ, ठगी, डकैती के अभियोग, परगनो के हाकिमो के अधिकार, हाकिमो की परीक्षाओं तथा नायब हाकिमो आदि के कानून बनवा दिये थे।

---

1 Jodhpur State Report for 1884-85 : Page 12-13 पर दी गयी सूची के आधार पर यह श्रेणीकरण किया गया है।

2 रेऊ मारवाड का इतिहास भाग–२ पृ० ४७६

शिक्षा के क्षेत्र में देन

शिक्षा के क्षेत्र मे किये गये प्रयास और उसके विकास के प्रयत्न सरप्रताप की सबसे महत्वपूर्ण देन कही जा सकती है। मारवाड राज्य मे शिक्षा की उन्नति हेतु उन्होने पहल की और सरकार की ओर से जितना सहयोग बन पडा वह तो दिया ही इसके साथ ही जनता की रुचि इस विषय मे जागृत करने का सर्वप्रथम क्रान्तिकारी प्रयास किया। मारवाड की जनता जो अब तक शिक्षा के प्रति उदासीनता का रुख अपनाये थी उसकी तन्द्रा को तोडकर उसम नव चेतना का सचार किया। सर प्रताप पर दयानन्द सरस्वती के विचारो का बहुत प्रभाव पडा और वे समाज सुधार हेतु उद्यत हुए। शिक्षा के प्रचार-प्रसार की आवश्यकता को उन्होने समझा तथा इस लोकोपकारी कार्य को पुनीत कर्त्तव्य की भाति ग्रहण कर, पूरी निष्ठा और लगन से इस दिशा मे अभूतपूर्व कार्य किया।

मारवाड के प्रशासन मे सुधार करने के पश्चात् उन्होंने इस बात की आवश्यकता महसूस की कि राज्य का प्रशासन सुदृढ बने। प्रशासन को स्थायित्व तभी मिलेगा जब लोगो म शिक्षा का प्रचार-प्रसार होगा। वे इस बात को भली भाति जानते थे कि शिक्षा के अभाव मे न तो यहा के लोगो मे जागृति आ सकती है और न ही समाज मे जो नवीन सुधारो की नीव डाली है वह स्थाई बन सकती है। अत राज्य मे शिक्षा की स्थिति को सुधारने मे उन्होंने बहुत अधिक रुचि ही नही ली उसके विकास हेतु तत्परता से जुट गये एव शिक्षा की महत्ता से जनता को अवगत कराया।

आर० बी० वेनवर्ट के शब्दो मे—"Education had always taken a prominent place in his thoughts, and the excedingly backward State in a matter of such importance was patent to all"[1]

सर प्रताप ने जब सन् १८७८ मे जयपुर से जोधपुर आकर यहा प्रधानमत्री का पद सम्भाला तो उन्हे राज्य म शिक्षा की दयनीय स्थिति का ज्ञान हुआ। यहाँ उस समय केवल ५ पाठशालायें थी जिनमे ४०० विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण कर रहे थे। पूरे राज्य मे ५ स्कूलो का होना यह स्पष्ट कर देता है कि यहा शिक्षा की क्या स्थिति थी तथा जन-शिक्षा के प्रति सरकार कितनी उदासीन थी। सरप्रताप ने इस दिशा मे प्रयास कर कुछ ही दिनो में शीघ्र ही इसका विस्तार किया और राज्य मे कुल ११ स्कूलें बनी जिनमे ६०० विद्यार्थी विद्याध्ययन करने लगे।

1. R B Vanwart. The Life of Lieut-General H H. Sir Pratap Singh: Page 74

सन् १८८६ मे सर प्रताप ने यहा 'शिक्षा विभाग' की स्थापना की। शिक्षा विभाग की स्थापना से मारवाड मे शिक्षा के प्रचार व प्रसार को अत्यधिक बल मिला और इस वर्ष तक (१८८६ ई०) राज्य मे कुल २६ स्कूलें स्थापित हो चुकी थी जिनमे २,३०० विद्यार्थी विद्यार्जन कर रहे थे।

सर प्रताप स्वय कोई विशिष्ट शिक्षाविद् या शिक्षाशास्त्री न थे। उन्हे तो विद्याभ्यास का अवसर भी कम ही मिला। वे सामान्य शिक्षा ही प्राप्त कर सके थे। किन्तु शिक्षा के प्रति उनकी बहुत श्रद्धा थी। उनके इसी आदर और प्रेम न राज्य म शिक्षा के विस्तार हेतु उनको प्रेरित किया। उस समय समाज मे मारवाडी भाषा व हिसाब किताब की (पौशालें) पाठशालायें तो बहुत थी किन्तु अग्रेजी भाषा की पढाई हेतु केवल एक ही स्कूल था तथा सरकार की ओर से पढाई की कोई व्यवस्था न थी। अत शिक्षा विभाग की स्थापना कर राज्य मे शिक्षा की समुचित व्यवस्था की। नय स्कूल खोलने तथा छात्रों को अधिक से अधिक शिक्षा की ओर प्रेरित करने के लिए प्रशासन की ओर से हर सभव सहायता दिये जाने की सर प्रताप ने व्यवस्था की।

सर प्रताप ने शिक्षा की महत्ता को तो स्वीकारा ही उसके साथ ही उन्होने युग की माग के अनुरूप शिक्षा प्रणाली को ढाला। अग्रेजी भाषा और उसके माध्यम से नव-शिक्षा प्राप्त कर यहा के लोग आधुनिक युग मे विज्ञान के महत्व को समझ सके। स्कूली शिक्षा के अतिरिक्त उन्होने इसीलिए राज्य मे उच्च शिक्षा और तकनीकी शिक्षा की प्रगति की ओर भी ध्यान दिया। राज्य मे ही नही दूसरे प्रदेशा मे भी शिक्षा और तकनीकी शिक्षा के लिए जोधपुर राज्य ने दिल खोलकर सहायता प्रदान की। महाराजा सुमेरसिंह के समय जब सर प्रताप मारवाड के रीजेंट थे उस समय के एक उदाहरण स यह बात स्पष्ट हो जायेगी कि शिक्षा के लिए उनके हृदय मे कितनी श्रद्धा और प्रेम की भावना थी। ३ फरवरी १९१३ को दरभगा नरेश रावणेश्वर एव पडित मदनमोहन मालवीय 'हिन्दू युनिवर्सिटी' के लिए चदा एकत्र करने आये उस समय जोधपुर की ओर से २ लाख रुपये नकद और चौबीस हजार रुपये सालाना शिल्पकला विज्ञान की शिक्षा (Hardinge Chair of Technology) के लिए देना निश्चित् किया गया।[1]

सन् १८९३ म जोधपुर नगर मे उच्च शिक्षा के लिए 'जसवन्त कॉलेज' की स्थापना की गई। इससे यहा पर 'इलाहाबाद युनिवर्सिटी' की एफ० ए० तक की परिक्षाओ का प्रबन्ध हो गया और सन् १८९६ मे स्थानीय जसवन्त कॉलेज म बी० ए० तक की पढाई का प्रबन्ध हो जाने से जनता को उच्च शिक्षा प्राप्त करने म सुविधा हो गयी।[2]

---

1 रेऊ मारवाड का इतिहास भाग-२ पृ० ५२१

2 रेऊ मारवाड का इतिहास भाग-२ पृ० ४९६

सन् १८८४-८५ की रिपोर्ट से यह ज्ञान होता है कि उस समय मारवाड और मालानी दोनो क्षेत्रो मे कुल मिलाकर केवल ५ स्कूल थे जिनमे से ३ तो जोधपुर शहर में ही स्थित थे। शेष दो पाली मे थे और इनमे विद्यार्थी की औसत उपस्थिति ५३६ थी। ये स्कूल थे—

१. जोधपुर दरबार स्कूल
२ जोधपुर नोबल्स स्कूल
३ जोधपुर हिन्दी ब्राच स्कूल
४ एग्लोवर्नाक्यूलर स्कूल (पाली)
५ हिन्दी ब्राच स्कूल (पाली)

१८८४-८५ मे शिक्षा पर राज्य की ओर से रु० ६,२२५,–८–० खर्च किये गये। इस राशि में से बहुत बडा भाग जोधपुर दरबार स्कूल पर खर्च किया गया। जोधपुर दरबार स्कूल का स्टाफ इस प्रकार था—

१ हेडमास्टर, ८ मास्टर, ३ पर्शियन टीचर, २ संस्कृत अध्यापक, २ हिन्दी अध्यापक।[1]

इस स्कूल मे छात्रो के लिए अंग्रेजी, फारसी, उर्दू, संस्कृत और हिन्दी भाषा के अध्यापन की व्यवस्था थी। सरप्रताप ने राज्य मे पहले से स्थापित स्कूलो को तो सरकारी सहयोग प्रदान किया ही साथ ही नये स्कूल भवनो के लिए राज्य की ओर से महत्वपूर्ण प्रोत्साहन के साथ वित्तीय सहायता भी प्रदान की। जोधपुर शहर में विभिन्न कौमो के लिए अपने पृथक्-पृथक् स्कूल स्थापित करवाने का श्रेय सर प्रताप को ही जाता है। सर प्रताप के प्रोत्साहन व प्रेरणा से ही शहर (जोधपुर) मे कायस्थ, पुष्करणा ब्राह्मण, माली, राजपूत आदि कौमो की अपनी स्कूलें स्थापित हुई।

ई० सन् १८८७ मे 'कायस्थ स्कूल' का उद्घाटन सरप्रताप के हाथो से होने के कारण उसका नाम 'सरप्रताप स्कूल' रखा गया। २९ अगस्त १८९४ को मालियो की स्कूल (सुमेर स्कूल) का उद्घाटन महाराजकुमार सुमेरसिंह ने किया और ५०० रु० की सहायता दी। मार्च १८९७ मे महाराज प्रतापसिहजी चादपोल दरवाजे के बाहर शिववाडी मे किये गये श्रीमाली ब्राह्मणों के उत्सव मे पधारे और उनके जातीय स्कूल के लिए राज्य की तरफ से ५,००० रु० दिये जाने की घोषणा की। अगस्त १८९७ मे प्रतापसिंह ने ओसवालो के स्कूल का निरीक्षण कर उसके लिए ७,००० रुपये राज्य की ओर से और २,००० रु० अपनी तरफ से देने का हुक्म दिया। इसी प्रकार अन्य जातीय स्कूलो को भी राज्य की ओर से सहायता दी गई।[2]

---

1. Jodhpur State Report for 1884-85 : Page 80.
2 रेऊ : मारवाड का इतिहास भाग-२ : पृ० ४९६

राजपूत बालकों की शिक्षा के लिए सर प्रताप ने विशेष ध्यान दिया। मारवाड के सिरदारों के लडकों के लिए तो पहले से यहा नोबल्स स्कूल था ही जहा इन बडे जागीरदारों के लडके विद्याध्ययन करते। यहा की शिक्षा समाप्त करने के बाद वे अजमेर के मेओ कालेज मे उच्च शिक्षा प्राप्त करने जाते। इस स्कूल का खर्चा बहुत ज्यादा था तथा साधारण और गरीब राजपूतों के बच्चे इस महगे स्कूल मे दाखला नही पा सकते थे। इसलिए सर प्रताप ने इस बात की आवश्यकता महसूस की कि साधारण और गरीब राजपूतों के छात्र भी शिक्षा ग्रहण करें इसके लिए उन्होंने 'एलगिन राजपूत स्कूल' नामक नया विद्यालय स्थापित किया। २६ नवम्बर १८९६ को भारत के वायसराय लार्ड ऐलगिन के हाथों से 'एलगिन-राजपूत स्कूल'[1] का उद्घाटन करवाया गया। इसमे मारवाड के गरीब राजपूतों के बालक शिक्षा प्राप्त करने लगे।

८ फरवरी १९१४ को वायसराय लार्ड हार्डिन्ज के हाथों से जोधपुर से तीन कोस पश्चिम मे चौपासनी नामक स्थान मे बने नये 'राजपूत हाई स्कूल' का उद्घाटन करवाया गया। इस भवन के निर्माण मे साढे चार लाख से अधिक रुपये लगे[2] तथा इससे पूर्व दो अन्य जो स्कूलें थी– पाउलेट नोबल्स स्कूल' और 'एलगिन राजपूत स्कूल' इनको एक करके नवीन 'राजपूत हाई स्कूल' की नीव डाली जो अब चौपासनी स्कूल के नाम से जाना जाता है। यह स्कूल मारवाड ही नही सारे राजस्थान भर मे प्रसिद्ध है। राजपूत हाई स्कूल का प्रथम प्रिंसीपल (R B Vanwart) आर० बी० वेनवर्ट था। राजपूत स्कूल मे छात्रों के लिए शिक्षा की नि शुल्क व्यवस्था थी। इस स्कूल के छात्रों को सैनिक शिक्षा भी प्रदान की जाती थी।

इस प्रकार शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिए शहर मे विभिन्न स्कूलो की स्थापना की साथ ही परगनो मे भी पाठशालायें स्थापित की जिन्हे 'परगना पाठशाला' कहा जाता। सरकार की ओर से शिक्षा का ऐसा समुचित प्रबन्ध मारवाड म पहले कभी देखने को न मिला। निजी तौर पर चलाई जाने वाली स्कूलें भी उस समय थी जिन्ह 'खानगी स्कूल' कहा जाता। इन स्कूलों को भी राज्य से सहायता मिलती। सर प्रताप के प्रयास से सन् १९११ तक मारवाड म १ बी० ए० तक कालेज, १ हाई स्कूल, १६ वर्नाक्यूलर मिडल स्कूल, ४४ एग्लो वर्नाक्यूलर स्कूल, १ लडकियो का स्कूल १ राजपूत नोबल्स स्कूल, १ सस्कृत स्कूल, १ नार्मल स्कूल और एक बिजनेस क्लास के अतिरिक्त २५ खानगी स्कूलें बनी। उस

1, The School owed its origin to Sir Pratap, who lost no opportunity of encouraging a desire for education among Rajputs, so that they might fit themselves for high official posts in their own states, instead of having to enlist the help of outsiders

—R B Vanwart : The Life of Lieut-General H H Sir Pratap Singh : Page 110.

2 रेऊ मारवाड का इतिहास भाग-२ पृ० ५२२

समय इस महकमे का सालाना खर्च ७६,६६८ रु० था। मारवाड मे शिक्षा के विकास का यह सिलसिला चलता रहा। अन्यान्य जगहो पर आवश्यकतानुसार पाठशालाओ की स्थापना एव शिक्षा की दिशा मे निरन्तर प्रगति होती रही। सन् १६१८ मे शिक्षा विभाग का सालाना खर्च (प्रतिवर्ष व्यय) १,११,८८१ रुपयो के करीब पहुँच गया।

सन् १६२२-२३ की मारवाड राज्य की रिपोर्ट मे तत्कालीन सरकारी स्कूलो की सख्या दी गयी है तथा राज्य की स्कूलों व सहायता प्राप्त स्कूलो दोनो के विद्यार्थियो की सख्या का भी उल्लेख मिलता है[1]—

1 Arts College, 1 High School, 4 Anglo Vernacular Middle Schools, 14 Anglo Vernacular Upper Primary Schools, 2 Anglo Lower Primary Schools, 54 Vernacular Primary Schools, 1 Girls School, 1 Sanskrit Pathshala and 1 Business Class & 17 Aided Schools

The Total Number of pupils on the rolls of the State Schools was 4,359 & total number of pupils on the rolls of the Aided Schools-2940 The total number of pupils on the roll of the State-Aided School was 7,299

आगे रिपोर्ट मे शिक्षा ग्रहण करने वाले विद्यार्थियो की जाति, उनके पिता या सरक्षक के उद्यम आदि के आधार पर भी वर्गीकरण किया है साथ ही स्कूल के (मिडिल स्कूल तक) छात्रो की सख्या एव परीक्षा परिणाम भी दर्शाये हैं। जसवन्त कॉलेज एग्लो-वर्नाक्यूलर मिडिल स्कूल, अपर प्राइमरी, लोअर प्राइमरी, वर्नाक्यूलर मिडिल और प्राइमरी स्कूल, सस्कृत पाठशाला, ह्यूसन गर्ल्स स्कूल, बिजनेस क्लास और राजपूत स्कूल के छात्रो की सख्या, परीक्षा परिणाम और वार्षिक व्यय का ब्यौरा भी इसमे मिलता है।

पूरे राज्य मे लडकियो के लिए शहर (जोधपुर) मे 'ह्यूसन गर्ल्स स्कूल' नाम का केवल एक विद्यालय ही था जिसका सचालन राज्य द्वारा होता था। 'ह्यूसन गर्ल्स स्कूल' मे पढने वाली लडकियो की सख्या १८० (सन् १६२२-२३ मे) थी। लडकियो को पढाई के अतिरिक्त सिलाई व कशीदाकारी की शिक्षा भी प्राप्त करनी होती थी। इस स्कूल का सालाना खर्च रु० ८,६६१/८/६ (८,६६१ रु०, ८ आने, ३ पैसे) थे।

तकनीकी शिक्षा की भी राज्य मे व्यवस्था के सर प्रताप इच्छुक थे और इसी आशय से उन्होने सन् १८६१ की २६ जुलाई को दरबार हाई स्कूल (जो पहले तलहटी के महलो मे स्थित था) मे तार Telegram के काम की शिक्षा देने के लिए एक कक्षा खुलवाई। बिजनेस क्लास मे छात्रो को शार्टहैड व टाइपिंग की ट्रेनिंग दी जाती थी। इसके अतिरिक्त भू-सर्वेक्षण के लिए भी पटवारियो, अमीनो तथा कामदारी का काम करने वाले

1. Administrative Report Marwar State for the year 1922-23 : P. 58

कामदार, हकूमत या परगनो म जज का कार्य करने वाले अहलकारो, वकीलो आदि के लिए भी परीक्षायें निश्चित् की गई तथा इनको एक निश्चित् अवधि तक अपने अपने विषय की शिक्षा प्राप्त करने के लिए ट्रेनिंग देनी पड़ती थी।

राजपूत स्कूल के छात्रो के लिए घुड़सवारी अनिवार्य थी तथा उन्हें मिलिट्री ट्रेनिंग (सैनिक शिक्षा) भी दी जाती।

इस प्रकार सर प्रताप ने मारवाड मे शिक्षा के प्रचार व प्रसार के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाये। शिक्षा के क्षेत्र म किये गये उनके प्रयास सदा स्मरण किये जायेंगे। उन्होने युगानुरूप शिक्षा की व्यवस्था प्रदान कर मारवाड के लोगो को शिक्षित करने मे जो पहल की उसका परिणाम कालान्तर म बहुत अच्छा रहा। उन्होंने अपने प्रयासो से प्रशासन को व्यवस्थित किया और उसके पश्चात् जो नवीन सुधार किये उसके लिए पहले से ही योग्य एव शिक्षित प्रार्थी तैयार कर दिये। रेल्वे, डाकघर, टेलीफोन, तारघर इत्यादि समाजोपयोगी आवश्यक कार्यों मे इन शिक्षित युवको का बडा सहयोग रहा होगा साथ ही जीविकोपार्जन के लिए तथा अपने भविष्य को बनाने के उन्हे उपयुक्त अवसर प्राप्त हुए।

विविध प्रकार की ट्रेनिंग और विषयगत जानकारी से ही यहाँ के छात्र राज्य की समृद्धि और प्रगति मे सहायक सिद्ध हो सके। सर प्रताप ने स्वभावानुसार तथा अपनी रुचि और योग्यतानुसार छात्रो के लिए शिक्षा की व्यवस्था की। व्यापारिक क्षेत्र मे जाने के लिए व्यापारिक शिक्षा, सैनिक क्षेत्र हेतु सैनिक शिक्षा, तकनीकी कार्यों के लिए तकनीकी शिक्षा की सुविधा यह स्पष्ट सिद्ध कर देती है कि उस समय के छात्र को अपनी योग्यता और रुचि के अनुसार कार्य करने का अवसर सुलभ था और उस अवसर की प्राप्ति हेतु वैसी ही शिक्षा की सुविधा भी उपलब्ध थी जैसी आज है। विविध विषय आज की शिक्षा की एक विशेषता है साथ ही आज हम जिस रोजगारोन्मुख शिक्षा और तकनीकी शिक्षा की आवश्यकता महसूस करते हैं उसको सर प्रताप ने बहुत पहले ही अनुभव कर लिया था।

(1) The number of pupils attending the State institution was distributed as under, according to their castes —

(1)

Cast	Number	Percentage
Brahman	801	18 4
Rajput	248	5 6
Charan	38	8
Mahajan	1060	38 0
Kayasth	183	4 3
Mohammedan	400	9 2
Other Castes	1029	23 7
	4,359	100%

(2) According to the occupation of the Parents or Guardians, their number was as follows —

(2)

Occupation	Number	Percentage
Agriculture	387	8 8
Trade	1706	39 2
Service	1247	28 6
Other Occupations	1019	23 4
	4,359	100%

समाज सुधार के क्षेत्र में योगदान

सर प्रताप कुशल प्रशासक के साथ साथ एक समाज सुधारक भी थे। तत्कालीन समाज मे व्याप्त अन्धविश्वासो, बुराइयो और समाज विरोधी गतिविधियो का निराकरण कर समाज को नयी राह दिखायी। वे भारतीय सस्कृति और उसके आदर्शों का सम्मान करते थे किन्तु साथ ही समाज मे आधुनिक विचारधारा के प्रचार-प्रसार एव अपेक्षित सुधार के पक्षपाती भी थे। सरप्रताप अपने मुल्क और राज्य की जनता मे आधुनिकता का सचार कर उसमे नयी जागृति एव चेतना के स्फुरण से यहाँ के विशृखलित समाज को पुनर्गठित करना चाहते थे, उसमे नव-जीवन का नवोन्मेष देखना चाहते थे। अपनी चाह को उन्होंने कल्पना के रग मे ही रग कर नही त्यागा उसको मूर्त रूप भी प्रदान किया। सामाजिक सुधार की आवश्यकता महसूस हुयी तब उन्होने इस दिशा मे भी श्लाघनीय प्रयास किये। इसके लिए उन्होने जहा समाज मे व्याप्त विसगतियो को दूर करने का भरसक प्रयत्न किया वही नव-पद्धतिया, विज्ञान और टेक्नालॉजी तक को अपनाने मे पहल कर नवीन सुधारवादी कदम उठाये। उनके द्वारा तत्कालीन मारवाड राज्य मे किये गये कतिपय प्रमुख सुधारो का अवलोकन करने से यह बात और भी स्पष्ट हो जायेगी।

प्रशासन मे सुधार

उन दिना मारवाड का प्रशासन दयनीय अवस्था मे था मारवाड के प्रत्येक परगने म चोरी, डकैती का आतक था। इस भय से यदि कोई मनुष्य एक गाव से दूसरे गाव जाता तो उनम से किसी को अपने साथ भोळाऊ (रक्षक) साथ ले जाना पडता भोळाऊ साथ होता तब तो वह जान माल से बच जाता नही तो अवश्य उसकी दुर्दशा होती। जालोर गोडवाड, शिव आदि परगनो मे मीणें, भील और बावरी आदि कौमों के लोग चोरी डकैती का बडा उपद्रव किया करते थे। कुछ राजपूत लोग भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इन उपद्रवकारियो को सहयोग प्रदान करते, कुछ ने तो स्वय ने इस पेशे को अपना लिया था। राज्य की आर्थिक स्थिति डावाडोल थी। न्याय व पुलिस की व्यवस्था के अभाव मे सारा जन जीवन पीडित एव असुरक्षित था।

सर प्रताप को आते ही प्रारम्भ मे ऐसे राज्य की व्यवस्था ठीक करने की चुनौती मिली। उन्होने धैर्य, साहस व बहुत ही निपुणता से राज्य के सारे प्रशासनिक ढाचे मे सुधार किया एव सर्वप्रथम आर्थिक स्थिति को सुधारा। राज्य मे डाकू और जुरायमपेशा लोगों की धरपकड कर शाति स्थापित की। जनता को सस्ता और शीघ्र न्याय प्राप्त हो सके इसकी व्यवस्था की। इस प्रकार प्रशासन म सुधार कर लोगा के हृदय मे पुन उसके प्रभाव को स्थापित किया।

अपराधवृत्ति की रोकथाम

प्रशासनिक सुधार के क्रम मे ही सरकारी अदालतो का पुनर्गठन किया गया और निश्चित कानून कायदे बनाये गये जिससे अपराधी को शरण व अभयदान देने की हानिकारक प्रथा का धीरे-धीरे अन्त हुआ। पूर्व मे होता यह था कि मारवाड मे कोई अपराधी अपराध करके जिस स्थान, मन्दिर या मठ मे जाकर बैठ जाता तो उस स्थान का स्वामी *उसको अपना शरणागत समझ उसकी मदद के लिए तत्पर हो जाता।* अत अपराधी को दण्ड देने मे कठिनाई होती। इसलिए सरप्रताप ने एक ओर तो अध्यादेश (राजाज्ञा) जारी कर ऐसे असामाजिक तत्वो को शरण देने वालो को हतोत्साहित किया और दूसरी ओर अदालतो के प्रबन्ध को सुधारा जिससे जनता को न्याय मिलने मे किसी प्रकार के कष्ट का अनुभव न हो। नये कानून कायदो की पुस्तकों का निर्माण एव मुद्रण करवाया जिससे जनसाधारण को इनका ज्ञान हो सके और वे मर्यादाओ का उल्लघन न करें।

परगना मे वहाँ की जनता के लिए समुचित न्याय व्यवस्था उपलब्ध हो इस आशय से परगनो के हाकिमो को मर्यादाबद्ध अधिकार देकर तदनुसार वही उनके मुकद्दमो का फैसला सुनाने की सुविधा प्रदान की। जागीरदारो की प्रजा की सुविधा के लिए जागीरदारो के तीन दरजे तय किये गये और इनको योग्यतानुसार अधिकार दे रखे थे ताकि वे वहाँ के मुकद्दमों का निपटारा वही कर देते थे। यदि कोई उस फैसले से असतुष्ट होता या यह समझता कि मेरे साथ न्याय नही हुआ है तो वह जोधपुर की अदालतो म अपना मुकद्दमा दायर कर सकता था। जोधपुर मे दीवानी व फौजदारी मामलो की सुनवाई के लिए अलग अलग न्यायालय स्थापित थे। इसके अलावा भी विभिन्न प्रकार के न्यायालय थे जिनमे *उनसे सम्बन्धित विषयो या मामलो पर वे अपने निर्णय* देते जैसे—*महकमाखास,* अपीलेट कोर्ट, कोर्ट ऑफ सरदार, कोतवाली, मुन्सिफ कोर्ट, सुपरडेन्ट कोर्ट आदि। महकमाखास सुप्रीम कोर्ट था। जोधपुर मे फरीको की सुविधा के लिए कचहरी का विशाल भवन बनवाया गया जिसमे राज्य के समस्त महत्वपूर्ण पदाधिकारी एक ही भवन मे एकत्र बैठकर कार्य करते।

इस प्रकार सर प्रताप ने राज्य म न्याय की सुव्यवस्था स्थापित की जिससे राज्य की जनता का न्यायपालिका म विश्वास जागृत हुआ। समाज मे अपराध वृत्ति कम हुई और *लोग अपराधियों से घृणा करने लगे। उनको समाज मे निरादर प्राप्त होता।* सजा या दण्ड कठोर थे पर यह उस युग की आवश्यकता थी। इसके बिना राज्य मे शांति व्यवस्था स्थापित नहीं हो सकती थी। सर प्रताप के प्रयासो से जनता का जब जान माल की सुरक्षा की गारटी मिल गयी व सस्ता न्याय सुलभ हो गया तो वह अमन चैन मे दिन बिताने लगी।

डाकू उन्मूलन

तत्कालीन मारवाड राज्य मे डाकुओ के उत्पात को सर प्रताप ने समाप्त किया तथा इस समस्या से निपटने के लिए उन्होंने स्वय बीड़ा उठाकर सोमाना, बगड़ी और गोडवाड

के डाकुओं के गिरोहों को साफ किया। सरप्रताप ने डाकुओं के साथ केवल सख्त व्यवहार ही नही किया मानवता के नाते उन्होंने डाकुओं को फिर से समाज मे भली प्रकार जीवन व्यतीत करने के लिए भी प्रेरित किया। बरडवा गाव में बाघसिंह के गिरोह के लोगो को पकडने के पश्चात् उनकी अपराध वृत्ति के लिए केवल दण्ड देकर ही नही रह गये। सर प्रताप ने इस समस्या के मूल कारणों को सभवत खोजा और तदनुसार उस अपराध वृत्ति मे और वृद्धि न हो तथा जिनकी आदत पड गयी उनका उससे छुटकारा हो, इसके लिए उन्होंने डाकुओं को जमीन प्रदान कर उन्हे खेती के धन्धे मे लगाने का प्रयास किया। इस प्रयत्न से डाकू और लुटेरो की शक्ति को सृजनात्मक क्षेत्र मे लगाया जिससे उनके अभाव दूर हुए साथ ही समाज मे फिर से शातिपूर्ण ढग से उन्हे जीवन व्यतीत करने के अवसर सुलभ कराये। जो लोग पहले तीर और तलवार लिए लूटमार किया करते थे वे ही कुछ दिन बाद हल और बैल लिए खेतो मे काम करते दिखाई देने लगे।

गुनाह करने वाली जातियो के लोगो के जीवन म सुधार और उन्हे बसाने के लिए विशेष तजवीजें की गई। १८६१ ई० की जनगणना के अनुसार रियासत मे उनकी सख्या ७६ हजार थी। "विभिन्न तजवीजो और प्रयत्नो से उन लोगों को खेती-बाडी मे और नई जमीने आबाद करने तथा मजदूरी आदि के लिए प्रेरित किया गया। फलस्वरूप स्त्रियो और बच्चो को छोडकर २२ हजार आदमी खेती बाडी मे, और ६ हजार नौकरी तथा मजदूरी आदि मे लग गये। समय पाकर शेष लोग भी काम धन्धे म लग जायेंगे उनका सुधार और कारोबार मे लग जाना जातीय निर्माण का काम है। और प्रत्येक सरकार तथा रियासत को उस काम की ओर पूरा ध्यान देना चाहिए उससे राज्य और प्रजा दोना का हित होगा।"[1]

इस प्रकार जुरायम पेशा लोगो को समाज म व्यवस्थित ढग से रहने हेतु अनुकूल वातावरण ही नही प्रशासन की ओर से सुविधाएँ भी प्रदान की गयी। उनम बसी दस्यु-भावना का अन्त कर नागरिकता के गुण पैदा करने का प्रयास किया गया। स्वय सर प्रताप के शब्दो मे—"डाकू जेलो मे रहते-रहते ढीले पड गये तो फिर उन्ह विभिन्न स्थानो पर जमाने देकर बसाया गया ताकि रियासत के सच्चे नागरिक बनकर रह सकें।'[2]

शिक्षा का प्रचार-प्रसार

सर प्रताप स्वय कोई बहुत बडे शिक्षाविद् या उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्ति नही थे परन्तु शिक्षा के प्रति उनका बहुत आदर और प्रेम था। स्वय साधारण शिक्षा ही प्राप्त कर सके थे किन्तु शिक्षा के महत्व और उसकी उपयोगिता को उन्होंने भली प्रकार आक रखा था शायद इसी कारण वे इस क्षेत्र मे महत्वपूर्ण कार्य कर पाये। अपने अनुभव के आधार पर वे इस बात को भली भाति जानते थे कि जब तक राज्य मे शिक्षा का प्रचार-प्रसार न

---

१ सरप्रताप के स्वलिखित जीवन चरित्र से—पृ० १६१
२ सरप्रताप के स्वलिखित जीवन चरित्र से—पृ० ८३

होगा तब तक समाज के लोगो म जागृति नही आ सकती । साथ ही शिक्षा के अभाव मे नवीन सुधार स्थाई नहीं बन पायेंगे इसलिए राज्य मे शिक्षण केन्द्रो की स्थापना पर और उसमे अधिक से अधिक विद्यार्थी अध्ययन करें इस बात पर बल दिया गया ।

उस समय मारवाड मे मारवाडी भाषा व देशी शिक्षा-पद्धति के आधार पर चलने वाली पाठशालाए (पोशाळें) तो थी किन्तु अग्रेजी माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने का एक ही स्कूल जोधपुर शहर मे था । सर प्रताप ने अग्रेजी भाषा के अध्ययन और आधुनिक ढग की शिक्षा की आवश्यकता अनुभव की और उन्होंने इसके लिए व्यवस्था भी की । शिक्षा के प्रतिलोगों मे प्रेम और भावना जागृत करने के लिए सर प्रताप ने प्रशासन की ओर से हर सभव सहयोग प्रदान किया तथा उनके प्रोत्साहन व प्रेरणा से शहर (जोधपुर) की जनता मे तो इतना उत्साह शिक्षा के प्रति पैदा हो गया कि कुछ ही समय मे कायस्थ, पुष्करणा ब्राह्मण, माली राजपूत इत्यादि जातियो की अपनी-अपनी स्कूले स्थापित हो गयी ।

जोधपुर शहर के अतिरिक्त मारवाड के परगनो मे जगह जगह स्कूलें खुलवादी और यहा की जनता को साक्षर एव शिक्षित करने हेतु सुविधाए उपलब्ध करवायी । यही नही यहा उच्च शिक्षा व तकनीकी शिक्षा के केन्द्र भी स्थापित किये जिससे उच्च शिक्षा के लिए छात्रो को अन्य जगह जाने की आवश्यकता नही रही । राज्य के बजट का बहुत बडा भाग शिक्षा पर खर्च किया जाने लगा । मारवाड के जागीरदारा के बालको के लिए 'पॉउलेट नोबल्स स्कूल' था गरीब राजपूतों के छात्रो के लिए 'एलगिन राजपूत स्कूल' बनवाया । सन् १९१४ मे इन दोनों स्कूलो को एक कर वर्तमान चौपासनी विद्यालय भवन मे स्थानान्तरित किया गया । इन छात्रो के लिए शिक्षा मुफ्त थी सारा खर्चा राज्य द्वारा वहन किया जाता था । अन्य स्कूलो को भी राज्य की ओर से अपेक्षित सहायता प्रदान की जाती । इस प्रकार मारवाड मे शिक्षा के प्रचार प्रसार म अद्भुत गति और विकास का श्रेय सर प्रताप को जाता है । शिक्षा के क्षेत्र म उनके अभूतपूर्व योगदान को भुलाया नही जा सकता ।

ईडर के शासक बनने पर उन्होंने पूरे राज्य म नि शुल्क शिक्षा की व्यवस्था की इस प्रकार सभवत वे पहले भारतीय शासक थे जिन्होने अग्रेजी हकूमत के काल म पूरे राज्य मे मुफ्त शिक्षा की व्यवस्था कर एक महत्वपूर्ण कार्य किया । आदिवासी पहाडी क्षेत्र के लोगो के लिए विशेषतौर से शिक्षा का समुचित प्रबन्ध किया ।

स्त्री-शिक्षा

सर प्रताप के समय मे ही राज्य की ओर से 'गर्ल्स स्कूल' की स्थापना हुयी जिसम एकेडेमिक शिक्षा के साथ साथ थियोरिटीकल गृहोपयोगी शिक्षा प्रदान की जाती थी । लडकियो को शिक्षित किया जाना चाहिए सरप्रताप इस पक्ष म तो थे किन्तु भारतीय सस्कृति के परिप्रेक्ष्य मे ही उनकी शिक्षा दीक्षा को उचित मानते थे ।

नारी को यहा के समाज मे प्रचलित सम्मान या आदर देने के वे समर्थक थे किन्तु राजनीति मे या प्रशासन मे उनके हस्तक्षेप को वे पसन्द नही करते थे।

आर्य-समाज से प्रभावित समाज के एक तबके म यह धारणा पायी जाती है कि सर प्रताप विधवा-विवाह के पक्षधर थे। परन्तु तत्कालीन रूढीवादी क्षत्रिय-समाज ने इस विचार को स्वीकार नही किया। यदि सरप्रताप को सामाजिक महत्व के ऐसे कार्यों मे समाज का सहयोग प्राप्त होता तो वे समाज सुधार के क्षेत्र मे स्थाई महत्व के कार्य करने मे सम्भवत और अधिक रूचि लेते।

लगान व्यवस्था

मारवाड म भूमि की पैमायश करवाकर उसकी लगान निश्चित करने का श्रेय भी सर प्रताप को जाता है। इससे पूर्व जागीरदारो और कामदारो के मार्फत अनाज के रूप मे लगान वसूल की जाती थी। इस प्रथा मे किसाना का शोषण होता। ठेकेदार या जागीरदार मनमाना अनाज वसूल करते और 'इजारे' पर गाव के गाव देने की उस समय प्रथा थी। गरीब किसाना पर हो रहे इस अत्याचार और शोषण को समाप्त करने के लिए ही प्रति बीघे के हिसाब से बीघोडी (लगान) नकद रूप म ली जाने लगी और इसके लिए पूरा विभाग रिकार्ड रखने के लिए स्थापित किया। सामाजिक क्षेत्र मे किये गये सुधार कार्यों म सर प्रताप का यह कार्य भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

जनोपयोगी कार्यों का विस्तार

सर प्रताप ने अपने समय मे मारवाड मे कई नवीन सुधार कार्यों के तहत जनोपयोगी कार्य भी करवाये तथा पहले से चले आ रहे कार्यों को पूराकर उनका विस्तार किया। सर्वप्रथम जनता की सुविधा हेतु यातायात की सुविधा के लिए सडक मार्गों का तो विस्तार किया ही एक 'रेल विभाग' अलग से कायम किया। मारवाड मे रेल का व्यापक प्रचार हुआ तथा उस समय की अन्य नेटिव रेल्वे स मारवाड की रेल श्रेष्ठ थी। व्यापार की स्थिति सुधारने के लिए चु गी लेने की दर एव नियम बनाये गये जिससे राज्य मे व्यापार की प्रगति हुयी।

जनता की सुरक्षार्थ 'पुलिस विभाग' की स्थापना, चिकित्सा सुविधा के लिए अस्पताल, समाचार हेतु डाकखाने की व्यवस्था की गयी।[1] इसके अतिरिक्त शहर की सफाई, रोशनी आदि की व्यवस्था के लिए म्युनिसिपल्टी' की स्थापना की गयी। अन्य विभिन्न विभाग भी खोले गय जिनमे—आबकारी, जगलात, इतिहास, रजिस्ट्री, आडिट, आदि मुख्य है। आफिसा एव नहरो का निर्माण भी करवाया गया।

---

1 उस समय मारवाड मे ८६ डाकखाने, २३ अस्पताल स्थापित किये जा चुके थे।

मारवाड मे पानी की कमी सदा से रहती आई है। इस सूखे और रेगिस्तानी इलाके मे पीने के पानी की कठिनाई प्राय रहा करती है। जब कभी दुष्काल पडते हैं तब तो दशा शोचनीय हो जाती है। सर प्रताप ने पीने के पानी की सुविधा एव कृषि हेतु जल का सग्रह दोनोही के लिए प्रयास किया। जोधपुर शहर मे बालसमद बाध और उसकी नहर का कार्य १८९० मे पूरा करवाया गया। कायलाना, गुलाबसागर, फतेहसागर से पानी की सप्लाई की व्यवस्था कर शहर की जनता को पीने का स्वच्छ जल उपलब्ध कराया। बिलाडा के समीप जसवन्त समद या जसवन्तसागर बाध एव उसकी नहर का निर्माण करवाकर उस क्षेत्र को कृषि योग्य बनाया। इसके अतिरिक्त परगना म आवश्यकतानुसार छोटे तालाब बहुत से स्थाना पर खुदवाए गये।

इस प्रकार सर प्रताप ने जनहित मे विविध प्रकार के कार्य किये। उनके समय मे मारवाड मे जनोपयोगी कार्यो का विस्तार अधिक हुआ तथा इसके लिए (हर विभाग हेतु) प्राय अग्रेज अफसरो का सहयोग सर प्रताप को मिला। अपने व्यक्तिगत प्रभाव व सम्पर्क एव मेल-मुलाकात से उन्होंने अग्रेज अफसरो की सेवाए प्राप्त की इससे विभिन्न विभागो मे बहुत ही महत्वपूर्ण एव स्थायी महत्व का कार्य सम्पन्न हुआ। उनके समय मे अधिकतर नये विभाग प्रथम बार मारवाड म स्थापित हुए और कुछ ही समय पश्चात् अपनी उपयोगिता और आवश्यकता के कारण जनहित के ये कार्य काफी लोकप्रिय हो गये तथा जनता को इनसे लाभ प्राप्त होने लगा।

समानता की भावना

सर प्रताप ने समाज म व्याप्त ऊच नीच के भेद-भाव को निर्थक मानकर सारे राज्य की जनता को समान समझा। राज्य परिवार के सदस्य और उच्च अधिकारियो के समान ही दीन दुखियो के प्रति सहृदयता और समता का व्यवहार किया। सर प्रताप ने अमीरो की बजाय गरीबो के दु खदर्द को समझने और उनकी पीडा हरने मे अधिक ध्यान दिया जब भी अवसर मिलता वे उनकी सहायता के लिए सदैव तत्पर रहते। राज्य मे कानून और न्याय की व्यवस्था स्थापित कर सभी के लिए समान अवसर सुलभ कराये। धनवान गरीबो पर जुल्म न ढाये तथा उनका शोषण न कर सके उसके लिए उन्होने प्रशासन को पुनर्गठित किया। राज्य का प्रत्येक नागरिक अपनी योग्यता के आधार पर उपलब्ध सुविधाओ का उपयोग कर सकता था।

शिक्षा का प्रचार-प्रसार करते समय उन्होने प्रत्येक जाति के स्कूलो को राज्य की ओर से सहायता प्रदान की। राज्य के कमजोर और गरीब तबके के उत्थान हेतु प्रयास किया भूमि सुधार, लगान व्यवस्था तथा चु गी प्रणाली मे सुधार कर उन्हे राहत प्रदान की। समान कानून, सस्ता न्याय, एकसी शासन व्यवस्था स्थापित कर सर प्रताप ने समानता को आधारभूत सम्बल प्रदान किया जिससे समाज मे सुख शान्ति और श्री वृद्धि हो सकी।

गरीब राजपूतों के हितैषी

सर प्रताप ने अपने राज्य की समूची जनता की भलाई के लिए समानता के आधार पर कई कार्य किये फिर भी गरीब राजपूतो के लिए उन्होंने विशेष प्रयास किया। गरीब राजपूतो के वे सच्चे हितैषी थे उनका दुःख दर्द दूर करने के लिए उन्होने हर सम्भव कोशिश की। सर प्रताप ने देखा कि अमीर राजपूत और बडे-बडे जागीरदारो के लडको के लिए नोबल्स स्कूल की व्यवस्था है तथा गरीब राजपूतो के लडके धन के अभाव के कारण इस स्कूल मे दाखिला नही पा सकते अत उनके अध्ययन हेतु १८६६ मे 'एलगिन राजपूत स्कूल' की स्थापना की जिसका सारा खर्चा राज्य की ओर से वहन किया जाता था।

वे राजपूतो मे शिक्षा के प्रचार को बल प्रदान करना चाहते थे और जब अवसर आया तब उन्होंने इस दिशा मे प्रयास भी किया और उनको उच्च शिक्षा की सुविधा उपलब्ध करवा कर ऊचे पद हेतु अपने ही राज्य मे अवसर प्रदान किये। वे स्वय इस बात के इच्छुक थे कि यहा के लोग पढ लिखकर योग्य अफसर बने तथा राज्य के कार्य मे अपना सहयोग प्रदान करें जिससे बाहर के लोगो (अन्य राज्यो के) पर निर्भर नही रहना पडे।

गरीब राजपूत समाज के उत्थान हेतु सर प्रताप द्वारा की गई महत्वपूर्ण सेवा को भुलाया नही जा सकता। गरीब राजपूतो के लिए "Endowment fund" इण्डोवमेंट फड की स्थापना की जिसके लिए स्वय अपनी ओर से तथा दरबार की ओर से सहायता राशि प्रदान की। राजपूतों से चन्दा भी लिया जाता इस धन से राजपूतो को कम ब्याज पर ऋण प्राप्त करने की सुविधा प्रदान की। सारा धन राज्य कोष म जमा कराया गया तथा जिसकी राजपूत समाज के लोग कभी भी जाच कर सकते थे। इस फड के लेखे-जोखे का कार्य राज्य कोष द्वारा ही होता।

The endowment fund was to be raised by subscription from Rajputs, headed by the Mahraja himself with a genrous gift of Rs 10,000, a grant -in-aid *of Rs 20,000 was given by the Darbar*

The Capital so raised was to be invested in loans to Rajput landowners at rates of interest more favourable than they could otherwise obtain, the accounts of the endowment fund were to be kept by the state treasury, and would be open to inspection by a committee of Rajput gentlemen [1]

अछूतोद्धार

आर्य-समाज के प्रभाव के कारण सर प्रताप की विचार प्रणाली बहुत परिष्कृत हो

---

1 R. B Vanwart · The Life of Lieut-General H H. Sir Pratap Singh : Page 110

चुकी थी वे जाति भेद मे विश्वास नही करते थे तथा वर्ण व वर्गहीन समाज चाहते जिसमे प्रत्येक मनुष्य को समान अवसर प्रदान हो तथा हर आदमी अपनी योग्यता के अनुसार कार्य कर सके। गरीब राजपूत ही नही समाज के अन्य गरीब एव अछूत समझे जाने वाले लोगो के उत्थान हेतु भी उन्होने प्रयास किया। मारवाड के अछूत एव आदिवासी लोगो को अपराध वृत्ति से छुटकारा दिला काम धन्धे मे लगाया। अछूतोद्धार का सबसे बडा प्रमाण यह है कि ईडर के वे जब के राजा बने तब आदिवासी व पहाडी इलाके मे रहने वाले लोगो के लिए स्कूलें स्थापित की तथा उनके उत्थान हेतु हर सम्भव प्रयास करने से न चूके।

औसर-मौसर

मारवाड मे प्रत्येक जाति मे लोग मौसर (मरणोपरान्त मृत्यु-भोज) किया करते जिसमे व्यर्थ का खर्चा और मात्र दिखावा होता। मरने वाले के बच्चे यदि इतना खर्च करने मे सक्षम नही होते तब भी उन्हे विवश होकर लोक-लाज और समाज के भय से मौसर का आयोजन करना पडता तथा इसके दुष्परिणाम से आजीवन कर्जदार होकर वे दु खी जीवन व्यतीत कर कष्ट भोगते। सर प्रताप ने इस कुप्रथा को समाप्त कर लोगो को इसमे होने वाले दुष्परिणामो से अवगत कराया। उनके प्रयासो से तत्कालीन समय मे यह औसर-मौसर की प्रथा बहुत कम हो गयी।

टीका प्रथा

शादी विवाह मे टीका की प्रथा यहा के समाज मे प्रचलित थी इसको कम करने के लिए भी सरप्रताप ने प्रभावकारी कदम उठाये। बडे-बडे जागीरदारो और ठाकुरो मे बडी रकम के रूप मे टीका देने और लेने का प्रचलन आम बात और सम्मान का प्रतीक बन गई थी अत ये लोग वैभव प्रदर्शन के लिये बहुत बार ऐसे अवसरो पर बडी रकम दिया करते थे। इस कुप्रथा को रोकने और इसको प्रभावहीन बनाने के लिये जागीरदारो की रेख के अनुसार टीके की रकम निश्चित की गयी। निश्चित राशि से न तो टीके के रूप मे कोई अधिक रकम ले सकता था और न ही दे सकता था। इस प्रकार धन के दुरुपयोग व दुष्प्रभाव को कम करने के लिए तथा शादी जैसे अवसरो पर धन सम्पत्ति की अहमियत को कम करने के लिए कारगर उपाय किये और उसमे काफी हद तक सफल भी रहे। आज के युग मे भी यह समस्या ज्वलन्त बनी हुई है तथा कानूनन टीका और दहेज प्रथा अपराध घोषित होने के बावजूद भी समाज के कलक के रूप मे व्याप्त है। इतना ही नही यह धीरे-धीरे अपने प्रभाव से समाज को विनिष्ट करने मे सक्रिय है जिसका जहर लगता है सारे समाज को बे-सुध ही नही मृतप्राय कर देगा।

इस प्रकार समाज को कमजोर एव विश्रृखलित करन वाली औसर-मौसर, जाति-भेद, टीका-प्रथा आदि सामाजिक बुराइयो की रोकथाम के लिए सर प्रताप ने पहल की और समाज के स्वरूप को स्वच्छ एव सगठित करने का प्रयास किया।

समाज को स्वदेशी वस्तुओ और सादगी के लिए प्रेरित करना

सर प्रताप स्वय तो स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग अपने जीवन मे करते ही थे साथ ही सादगी को भी व्यवहारिक रूप मे अपना लिया था। स्वय ने तो इन बातो को अपने जीवन मे ढाला ही परन्तु समाज के अन्य लोगो को भी इस ओर प्रेरित किया। उन्होने सादगी से जीवन जीने एव स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग के महत्व को जनता को समझाया तथा ज्यादा तादाद मे इसे अपनाने की अपील की जिससे देश का उत्पादन बढे एव यहा के लोगो मे राष्ट्रीयता की भावना उत्पन्न हो, राष्ट्रीय उत्पादन से लोगो को स्नेह और प्रेम हो। सादगी से जीवन बीताने को वे इसलिए आगाह करते थे कि बाह्य दीखावा केवल ढोग है व्यक्ति अपना जीवन आनन्द से तभी बिता सकता है जब उसका जीवन सादा हो। स्वय तो खादी (जोधपुर की बनी टुकडी) के कोट पहनते राज्य की सेना की वर्दी के लिए भी उन्होने यही कपडा चुना। इस प्रकार समाज को स्वदेशी वस्तुओ के उपयोग एव सादगी से जीवन बीताने के लिए प्रेरित कर उनके जीवन को सुखमय बनाने का अपनी ओर से पूर्ण प्रयास किया।

मातृ-भाषा को राज भाषा के रूप मे स्थापित करना

स्वदेशी वस्तुओ की भाति वे मातृ भाषा का आदर और सम्मान ही नही करते थे उससे हार्दिक प्रेम भी करते थे। इसीलिए मातृ-भाषा (मारवाडी) के महत्व को स्थापना हेतु उन्होने प्रयास किये। तत्कालीन समय मे कोर्ट कचहरी का सारा कार्य एव राजकार्य उर्दू एव फारसी भाषा मे होता था। सरप्रताप ने इसे निरर्थक समझा और जनता की भाषा मे न्याय प्राप्त हो, उसे अपनी भाषा मे बात कहने का अवसर मिले इसके लिए कोर्ट कचहरी में उर्दू के स्थान पर मारवाडी म फैसले सुनाये जाने लगे तथा सारा कार्य मातृ भाषा मे प्रारम्भ करने के अध्यादेश ही जारी नही किये इसकी क्रियान्विति भी की।[1]

राज्य का कार्य मारवाडी मे किया जाने लगा। इस प्रकार सरप्रताप ने आज हम जिस बात की आवश्यकता महसूस कर रहे हैं उसको १०० वर्ष पूर्व ही परख लिया था तथा मातृ-भाषा को राजभाषा के रूप मे प्रतिष्ठापित कर उसका महत्व स्थापित किया। आज मारवाड छोडकर सम्पूर्ण राजस्थान की एक भाषा 'राजस्थानी' को भी हम सवैधानिक मान्यता दिलाने हेतु वर्षों से हाथ पाव पटक रहे है और इसमे सफल नही हुये हैं जबकि इस मरुधरा के उस अकेले सपूत ने मारवाड राज्य मे मारवाडी (मातृ भाषा) को राज-भाषा के रूप मे पदासीन कर दिया।

---

1 मारवाडी भाषा कानी महाराजा साहिब और मुसाहिब आला (सरप्रतापसिहजी) रो पूरो आग्रह है, क्यू कै उर्दू नै उठाय दफ्तर मे मारवाडी भाषा प्रचलित करी है।

—प० रामकर्ण आसोपा राजस्थानी व्याकरण पृ० ४

सर प्रताप और धार्मिक विचार

मनुष्य को धर्म से सदैव प्रेरणा और प्रोत्साहन प्राप्त होता रहा है। भारतीय समाज मे तो धर्म का एक विशेष महत्व रहा है। यहा के चार पुरुषार्थों (धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष) मे धर्म को सर्वोपरि स्थान दिया गया है। मनुष्य का जब पूरा जीवन-दर्शन धर्म द्वारा प्रभावित होता है तो उसका समाज पर प्रभाव पडना स्वाभाविक ही है तथा उसकी व्यक्तिगत एव सामूहिक प्रवृत्ति, सामाजिक भावना और अन्य गतिविधिया भी धर्म से न्यूनाधिक मात्रा मे प्रभावित होती ही है। ऐसी स्थिति मे समाज का प्रत्येक घटक धर्म से प्रभावित हुये बिना नही रह सकता। यह बात दूसरी है कि वह धर्म के स्वरूप को किन अर्थों मे ग्रहण करता है क्योकि प्रत्येक व्यक्ति की धर्म के प्रति अपनी निजी धारणाए हुआ करती है जिस पर उसके धार्मिक दृष्टिकोण का निर्माण होता है। सरप्रताप पर भी धर्म का प्रभाव पडा और उनकी अपनी धार्मिक मान्यताए थी। सरप्रताप के धार्मिक विचारा के बारे मे चर्चा करने से पूर्व यहा यह उल्लेख करना आवश्यक है कि स्वय सरप्रताप ने अपने धार्मिक दृष्टिकोण के बारे मे विस्तार से कई बाते बताते हुए यह कहा कि 'ये मेरी व्यक्तिगत धारणाए है जिसके लिए सिर्फ मैं अकेला उत्तरदायी हूँ।[1]

प्रारम्भिक अवस्था म सरप्रताप अपना समय नियमित रूप मे पूजा-पाठ के लिए देते थे। रामायण, गीता और भागवत आदि के पठन श्रवण मे उनकी आत्मा को वह सन्तोष और आनन्द प्राप्त नही हुआ जिसकी चाह थी। पुराणो के आख्यानो के सम्बन्ध मे उनका यह विचार था कि इसमे हिन्दू धर्म को सही तस्वीर पेश नही की गयी है। उन्ह वे हिन्दू धर्म के अन्ध युग की उपज मानते थे। उस काल मे प्राचीन वैदिक ज्ञान की सहजता व सरलता के स्थान पर कर्मकाण्ड और बाह्य आडम्बरा से धर्म का सही स्वरूप ओझल हो चुका था। धर्म के स्वरूप मे इस बिगाड के लिए वे ब्राह्मणो को उत्तरदायी ठहराते थे।

ऐसे रुढिग्रस्त हिन्दू धर्म मे न उनकी रुचि थी न आस्था ही पर जब प्राचीन धर्म की छवि सम्मुख आयी तब पुन हिन्दू धर्म के असली स्वरूप मे उनकी श्रद्धा व आस्था जगी। कुछ काल तक अनिश्चय की स्थिति से गुजरते हुए भी जैसे तैसे उनका विश्वास इस धर्म के प्रति केन्द्रित रहा तथा कालान्तर मे उसमे दृढता आई।

अनिश्चय की स्थिति और ऊहापोह की अवस्था मे सरप्रताप दूसरे धर्मों के प्रति भी मुखातिब हुए। उनके ग्रथो का अध्ययन किया और कुछ महत्वपूर्ण जानकारिया भी हासिल की। इस्लाम धर्म की प्रसिद्ध पुस्तक 'कुरान' की आयतो को भी हृदय से सीखने का प्रयास किया। इस अवधि के दौरान मुसलमानो के वास्तविक जीवन (Practical life) का उन पर कुछ प्रभाव पडा किन्तु उनका धर्म (इस्लाम धर्म) भी सरप्रताप को सन्तुष्टी प्रदान करने मे

---

1. R B Vanwart . The Life of Lieut-General H H Sir Pratap Singh : Page 191-196

असमर्थ रहा। इसके बाद वे ईसाई धर्म की ओर बढे। 'बाईबल' को देखा सुना। बाईबल के किस्से और आख्यान उनके मन को आकर्षक लगे परन्तु अन्ततोगत्वा ये किस्से और आख्यान भी उनके मस्तिष्क और हृदय पर प्रभाव डालने मे असमर्थ रहे। इसलिए ईसाई धर्म की धारणा के अनुसार सरप्रताप बाईबल को ईश्वर के आदेश या सदेश (Word of God) के रूप मे स्वीकार नही कर पाये।

इस प्रकार सक्षेप मे यह कहा जा सकता है कि शुरूआत मे जब उन्होंने विभिन्न धर्मों का अध्ययन किया तो किसी से भी उन्हे पूर्ण सतोष प्राप्त नही हो सका। इतना होने के बाद भी किसी धर्म विशेष मे उनकी आस्था उत्पन्न नही हो पाई परन्तु विभिन्न धर्मों के तुलनात्मक अध्ययन के परिणाम स्वरूप उन्होने यह अनुभव कर लिया था कि धर्म का सम्बन्ध आत्मा से है शरीर से उसका सम्बन्ध बहुत ही कम है। यहा प्रचलित विभिन्न धार्मिक सम्प्रदायो मे बाह्य वस्तुओ पर विश्वास करके अपनी-अपनी निजी उपासना विधि को ही धर्म का मुख्य आधार मान लिया गया है। यहा वस्तुओ की समानता को स्वीकार कर लेना ही धर्म या सम्प्रदाय को एक बहुत बडी उपलब्धि समझ लिया जाता है जबकि वास्तविकता यह है कि धर्म का असली स्वरूप तो उनके सच्चे सिद्धान्तो मे तथा उच्च चरित्र एव शुद्ध आत्मा म देखने को मिलेगा।

विभिन्न धर्मों की विभिन्नता एव तर्क-वितर्क के कारण सर प्रताप अनिश्चय की स्थिति म थे। जयपुर प्रवास के दौरान उनके पाव की हड्डी टूटने पर लगातार दो माह तक उन्हे खाट पर ही समय बीताना पडा। इस अवधि के दौरान उन्होने समय काटने की दृष्टि से वेदा को सुनने की इच्छा प्रकट की। जब वेदो को ध्यान पूर्वक सुना तब वे जान पाये कि इसम धर्म का वास्तविक एव पूर्ण स्वरूप दर्शाया गया है। शारीरिक पीडा एव मानसिक अशाति के काल मे उनके हृदय पर वेदो का बहुत प्रभाव पडा तथा जिस मानसिक सघर्ष के कारण वे बेचैन थे उसमे उन्हे कमी ही महसूस नही हुई शाति और आनन्द का भी अनुभव हुआ एव विभिन्न प्रकार की भ्रातियो से छुटकारा मिला। वेदो मे वर्णित ज्ञान के प्रति उनकी सच्ची आस्था जगी तथा यह पाया कि अन्य धर्मों के दूसरे ग्रन्थो मे अच्छा बुरा, सत्य और झूठ इस प्रकार सम्मिश्रित है जिसके परिणाम स्वरूप अनेक प्रकार की भ्रान्तिए पैदा होती हैं।

सर प्रताप जयपुर से जब जोधपुर आ गये थे उस समय स्वामी दयानन्द सरस्वती का यहा (जोधपुर मे) आगमन हुआ। सर प्रताप अपने बडे भाई महाराजा जसवन्तसिह के साथ स्वामी दयानन्द से मिलने गये तब गुरू गम्भीर वाणी के ओज, ब्रह्मचर्य के तेज, विद्वता आदि मे वे (दयानन्द सरस्वती) सर प्रताप को प्राचीन ऋषि-मुनियो की प्रतिमूर्ति से लगे। सक्षिप्त वार्तालाप के दौरान ही सर प्रताप उनसे प्रभावित हो गये। सर प्रताप अपने गुरू के समान उनका आदर सम्मान करन लगे। दयानन्द सरस्वती ने बहुत सी अच्छी बातें उनको सीखायी। जिसका सरप्रताप के भावी जीवन पर बहुत प्रभाव पडा।

कालान्तर मे जब दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज को स्थापना की तो सर प्रताप उसमे सम्मिलित हुए। सर प्रताप की तत्परता के परिणाम स्वरूप ही जोधपुर मे सर्वप्रथम आर्य समाज (शाखा या केन्द्र) की स्थापना हुई। स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा बनाई गई परोपकारिणी सभा के भी वे सम्माननीय सदस्य थे। सर प्रताप का यह विश्वास था कि भारत की प्रगति के लिए आर्य समाज उपयोगी और शक्तिशाली साधन के रूप म महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा। कम समय मे ही आर्य समाज द्वारा जो कार्य एव सुधार किये गये, उन उपलब्धियो के परिणाम स्वरूप उन्हे यह विश्वास बधता था कि देश की तत्कालीन दशा मे सुधार लाने तथा देश के पुनरुत्थान मे इस सस्था का बहुत बडा योगदान रहेगा।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि सर प्रताप की दयानन्द सरस्वती मे अगाध श्रद्धा थी तथा उनके कार्यों को वे देश की बहुत बडी सेवा के रूप मे देखते थे। सर प्रताप का यह मानना था कि भारत के लिए यह बडे सौभाग्य की बात है कि स्वामी दयानन्द जैसे ऋषि उसे आलस्य और तद्रा से जगाने आये तथा उसकी जड़ता को समाप्त कर उसमे जागृति व चेतना पैदा की। भारत के वे बहुत बडे एव सच्चे शुभ-चिन्तक थे जिन्होने जीवन पर्यन्त देश के लिए कार्य किया।

निश्चित रूप से आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती के सम्पर्क से सर प्रताप की जीवनधारा बहुत प्रभावित हुई और उनसे प्रेरणा और निश्चित दिशा प्राप्त हुई। उनके धार्मिक विचार आर्य समाज के दर्शन मे रग गये। आर्य समाज की क्रिया-पद्धति और विचार दर्शन मे उनकी अत्यधिक रुचि ने ही सम्भवत उनको इस बात के लिए प्रेरित किया कि तुर्कों और मुगलो द्वारा जबरन बनाये गये मुसलमानों को जो मूल म हिन्दू धर्म के अनु-यायी थे, उनका शुद्धिकरण कर उन्हे पुन हिन्दू धर्म मे दीक्षित कर लिया जाय।

मारवाड मे ऐसे बलात् धर्म परिवर्तन करने वाले सभी मुसलमानो को फिर से हिन्दू धर्म मे दीक्षित कर लेने की योजना उन्होने बनाई और प्रारम्भिक स्तर पर इस कार्य के लिए सचेष्ट भी हुए किन्तु उस समय उनकी योजना को लोग समझ नही पाये इसे हिन्दू-धर्म के विरुद्ध कार्य माना। सर प्रताप को इस कार्य मे लोगो का सहयोग नही मिल सका। उल्टा घोर विरोध हुआ जिसके परिणाम स्वरूप उन्होने अपनी इस योजना को त्यागना ही उचित समझा। यदि वे अपनी इस योजना को क्रियान्वित करने मे सफल हो जाते तो सम्भवत मारवाड मे साम्प्रदायिकता का दकियानूसी विचार और सघर्ष सदैव के लिए समाप्त हो जाता।

सर प्रताप धर्म मे आडम्बर, अन्ध-विश्वास और ब्राह्मणो के कर्मकाण्ड के विरोधी थे। विस्तृत और व्यापक परिवेश मे उन्होने धर्म का अर्थ ग्रहण किया और सकुचित विचारधारा मे कैद न हुए। समस्त समाज के उत्थान हेतु उन्होने प्रयास किये। धर्म की रक्षार्थ सतर्क व सचेष्ट भी रहे। हिन्दू धर्म को क्षति पहुचाने वाले ईसाई मिशनरियो द्वारा सचालित धर्म परिवर्तन के कृत्य को भी उन्होने बडी कुशलता एव सूझबूझ से रोका। सर प्रताप जिन दिनो

ईडर के शासक थे उस समय उन्होने मारवाड और ईडर राज्यो के सीमावर्ती क्षेत्रो मे ईसाई मिशनरियो के बढते प्रभाव को रोका और उस क्षेत्र के गरीब और आदिवासी लोगो को हिन्दू धर्म से ईसाई धर्म मे परिवर्तित होने से बचाया। ईसाई मिशनरिया गरीब एव आदिवासी लोगो को जिनकी आर्थिक दशा बहुत कमजोर होती उन्हे धन-दौलत एव अन्य सुविधाए (विशेषकर चिकित्सा, शिक्षा, रोजगार आदि) प्रदान कर ईसाई बनने के लिए प्रेरित करती। धर्म परिवर्तन कराने का उनका यह शान्तिपूर्ण एव नियोजित तरीका था। सर प्रताप ने सारी स्थिति का जायजा लेने के बाद, सीमावर्ती क्षेत्र के उन पहाडी इलाके के आदिवासी लोगो को मिशनरियो ने जो सुविधायें प्रदान की थी, उससे दुगुनी सुविधायें उन लोगो को राज्य की ओर से मुहैया कराई। इस प्रकार गरीब आदिवासी एव पहाडी क्षेत्र के लोगो के कल्याण के लिए उन्होंने हर सम्भव प्रयास किये तथा उन्हे अपने ही धर्म मे बने रहने के लिए प्रेरित भी किया। राज्य की सुविधायें उपलब्ध होने पर उन लोगो के अभावग्रस्त जीवन को सहारा मिला तथा उनकी अपने खुद के धर्म मे आस्था बनी रही, उन्हे विश्वास और आत्मबल प्राप्त हुआ।

ऊपर वर्णित कुछ प्रसगो से सर प्रताप के धार्मिक विचारो के बारे मे जो जानकारी हमे हासिल होती है वह रुचिकर तो है ही साथ ही वह उनके धार्मिक दृष्टिकोण को भी उजागर करती है। धर्म सम्बन्धी उनकी कुछ धारणाए तो अनुकरणीय व समाजोपयोगी भी कही जा सकती है। धार्मिक दृष्टिकोण की विशालता, उदारता एव सुकृत्यो की महत्ता के भान ने उनके व्यक्तित्व निर्माण मे तो निसन्देह बहुत बडी भूमिका निभाई है, साथ ही उनकी अनुभव सिद्ध ये बातें हमे भी सम्बल प्रदान करती है।

सर प्रताप की सैनिक सेवाएँ

सैनिक प्रवृत्तियों मे सर प्रताप की प्रारम्भ से ही रुचि रही। बचपन मे वे निडर और अदम्य साहसी थे। उनके इन्ही गुणो ने आगे चलकर उन्हे एक सफल सैनिक के रूप मे ही नही वल्कि एक सफल जनरल के रूप मे प्रतिष्ठित किया। मारवाड और मारवाड से बाहर दोनो ही स्थानो पर इस क्षेत्र मे सर प्रताप की भूमिका बडी महत्वपूर्ण और श्लाघनीय कही जायेगी। सर प्रताप ने अपनी सैनिक योग्यता, दक्षता और प्रतिभा से तत्कालीन समय मे अग्रेज सेनानायको के मध्य अपना सम्माननीय स्थान बना लिया था। मारवाड की सैनिक शक्ति एव विदेशो मे मारवाड के सैनिको के सफल प्रयाण और युद्ध कौशल को उचित निर्देशो से लाभान्वित कर उन्हे गौरव व सम्मान प्रदान कराया और साथ ही स्वय भी गौरवान्वित हुये। सर प्रताप के जीवन मे इन सैनिक प्रवृत्तियो की महत्ती भूमिका रही है तथा उनके व्यक्तित्व निर्माण मे भी इसने महत्वपूर्ण योगदान दिया। अत इस महत्वपूर्ण पक्ष पर अलग से कुछ विचार करना समीचीन होगा।

मारवाड का शासन प्रबन्ध हाथ मे लिया उस समय यहा की बिगडी हुई सैनिक स्थिति को देखकर सर प्रताप ने उसमे सुधार करना अपेक्षित समझा। काबुल मिशन से लौटने के पश्चात् तो उनकी यह हार्दिक इच्छा थी कि 'रेगुलर स्टेट केवलरी' (Regular State Cavalry) की राज्य मे स्थापना की जाय। इससे पूर्व राज्य की स्थाई सेना नही थी यह बात नही किन्तु राज्य की वह स्थाई सेना प्रशिक्षण (Training) के अभाव मे निरर्थक सी थी। अत सरप्रताप ने घुडसवारो को प्रशिक्षण देना प्रारम्भ किया और आनरेरी ले० कर्नल ऑफ केवलरी (Honorary Lieutenant Colonel of Cavalary) के पद पर नियुक्त हुये।

इस पद पर कार्य करते हुये उन्होने केवलरी के सैनिको के प्रशिक्षण पर बहुत ध्यान दिया। मेजर प्रिसप और केप्टिन बीटसन के निर्देश व सहयोग से राज्य की केवलरी को और अधिक सुदृढ व सगठित स्वरूप प्रदान किया। इस प्रकार राज्य मे सर्वप्रथम एक प्रशिक्षित सशक्त केवलरी का निर्माण करने मे सर प्रताप ने महत्ती भूमिका निभायी। उन्ही की प्रेरणा और सद्प्रयासो से कुछ ही समय मे इस फौज की सख्या ७०० के करीब हो गई। जब १२०० सवार इसमे सम्मिलित हो गये तो राज्य की ओर से उन पर ६ लाख के लगभग धन व्यय किया जाने लगा एव इसे जोधपुर लासर (सरदार रिसाला) नाम दिया गया जिसने बाद मे फ्रास और पेलिस्टाइन मे अद्भुत साहस से मुकाबला कर गौरव अर्जित किया।

सर प्रताप ने स्टेट केवलरी को नया स्वरूप प्रदान कर जोधपुर लासर की स्थापना तो की ही साथ ही सैनिक प्रशिक्षण एव राज्य के सैन्य सगठन पर विशेष ध्यान दिया।

प्रतिभासम्पन्न जनरल सर प्रताप ने जातीय आधार पर रेजीमेंटो के निर्माण का सुझाव दिया था तथा इसी आधार पर कालान्तर मे इडियन रेजीमेंटो का चयन एव गठन हुआ। इससे उनकी इस दूरगामी दृष्टि एव भविष्य द्रष्टा स्वरूप का अनुमान लगाया जा सकता है।

Sir Pratap to the pronouncement

In my opinion, it is desirable in Indian regiments to have officers belonging to their respective communities In that case in times of danger the men will have the necessary reliance upon their officers, while the latter will be mindful not only of his personal reputation, but of that of his tribe or community as well

This opinion coming from an Indian officer of Sir Pratap's standing and reputation, is of particular interest at the present time, when the whole question of providing Indian officers of the right type for the close attention of the military authorities [1]

सर प्रताप पहले भारतीय महाराजा थे जो इण्डियन आर्मी के रेग्यूलर ले० जनरल बने। इसके पूर्व देश के अन्य राजा महाराजा भी जनरल बने लेकिन उन्हे केवल मानद उपाधिया प्रदान की जाती थी और वे किसी युद्ध म भाग नही लिया करते थे। इसके विपरीत सर प्रताप ने *कई युद्धो मे भाग लिया और युद्ध के दौरान सैन्य सचालन भी किया।*

मारवाड म नागौर का किला जिस पर जोरावरसिंह ने अधिकार कर लिया उसे खाली करवाने के लिए जो प्रयाण किया गया उसके कमाण्डर सर प्रताप ही थे। सभवत यही उनका पहला कमाण्ड करने का अवसर था। इसके बाद महाराजा जसवतसिंह द्वितीय के समय प्रधानमत्री रहते हुए तथा बाद के वर्षो मे अपने रीजेन्सीकाल म सर प्रताप ने विशेष कर डाकुओ के खिलाफ जो अभियान चलाया उसका नेतृत्व भी स्वय ने ही किया। उनके सचालन की सबस बडी विशेषता यह थी कि वे युक्ति से कार्य अधिक लेते थे। अपने साथ सदा योग्य और विश्वसनीय साथियो को रखते तथा उनका चयन वे बहुत ही सावधानी और परख करने के बाद किया करते। शायद यही उनकी सफलता का राज था तथा जिस किसी अभियान मे भाग लिया उसम सफलता हासिल की, कभी पराजित नही होना पडा। मारवाड म किये गये उनके सैनिक अभियानो खास कर दस्यु विरोधी प्रयासो का वर्णन विस्तार के साथ पिछले अध्याय म कर दिया गया है। अत यहा सरप्रताप ने देश के सम्मान के लिए भारत से बाहर जाकर जिन युद्धो म भाग लिया उनका वर्णन किया जायेगा।

सन् १८७८ मे काबुल मिशन हेतु अपनी सैनिक सेवायें देने को सर प्रताप तत्पर थे और उसके लिए जोधपुर से प्रस्थान भी कर चुके थे किन्तु लाहौर पहुचने पर उन्हें यह कहा

---

1 R B Vanwart The Life of Lieut General H H Sir Pratap Singh · Page 127

गया कि अभी आपकी आवश्यकता जोधपुर (मारवाड राज्य) मे अधिक है। अत वही रहा जाय। उस वक्त सर प्रताप जोधपुर के प्रधानमंत्री (Prime-Minister) बने हो थे। परिणाम स्वरूप वे जोधपुर लौट आये।

दूसरी बार १८६२ मे सर प्रताप ने Black Mountain Expedition ब्लैक माउन्टेन अभियान मे अपनी सेवायें देने का प्रस्ताव अग्रेज सरकार के सम्मुख रखा परन्तु इस बार भी उन्हे युद्ध मे भाग लेने की स्वीकृति नही मिली। ठाकुर हरिसिंह और धौकलसिंह तथा सरदार रिसाला के कुछ लोगो ने इलेवन्थ लासर (11th Lancers) के साथ इस अभियान मे भाग लिया। सर प्रताप को अभियान मे भाग लेने की स्वीकृति प्राप्त नही होने के कारण वे इसमे भाग नही ले पाये परन्तु इससे उनके स्वाभिमान को ठेस लगी। युद्ध उन्मत उस वीर ने जनरल राबर्ट्स 'कमाण्डर इन चीफ' को एक बडा पत्र लिखकर अपना रोष जाहिर करते हुए यह चेतावनी दी कि यदि मुझे युद्ध मे भाग नही लेने दिया जायेगा तो मैं ले० कर्नल (उस समय तक यही उपाधि प्राप्त हुई थी) की जो उपाधि प्राप्त है उसे लौटा दूगा तथा जोधपुर लासर के कमाण्ड से भी स्तीफा दे दूगा।

Sir Pratap worte to General Roberts the Commander in Chief, that if in time of war his services were not accepted, and he was not allowed to take part in actual fighting his title of Lieutenant Colonel of the British Army was merely a nominal one ond it were better if the distinction were taken away, and that he be allowed to resign his command of the Jodhpur Lancers.[1]

उपर्युक्त कथन से यह स्पष्ट हा जाता है कि सर प्रताप कितने वीर, साहसी एव युद्ध मे भाग लेने हेतु उत्सक रहते थे। उनकी उत्सुकता का अन्दाज इस उदाहरण से भी आसानी से लग सकता है कि जब उन्हे मोहम्मद कम्पन (Mohammad Compaign) सत्याग्रह की सूचना मिली तो तुरन्त उन्होंने अपना दावा पेश किया जिसे स्वीकार कर लिया गया और आदेश प्राप्ति के ६ घण्टे के भीतर स्पशल ट्रेन से पेशावर के लिए रवाना हो गय। वहा अपने व्यक्तिगत स्टाफ के साथ गय जिसमे ठाकुर हरिसिंह, धौकलसिंह के अतिरिक्त चुनीदा ३२ घुडसवार भी थ। पन्द्रह दिन के भीतर पेशावर मे शान्ति स्थापित हो गई।

पेशावर से सर प्रताप इग्लैंड चले गये। इग्लैंड से लौटने पर उन्हे जनरल लाक हार्ट का ए०डी०सी० नियुक्त किया गया। जनरल लाक हार्ट को Tirah Expedition (तिरह अभियान) का मुखिया(प्रधान) बनाया गया। इस अभियान मे सर प्रताप की सैनिक सेवाओ तथा सरदार रिसाला के योगदान के सम्बन्ध मे जनरल लाक हार्ट ने बहुत कुछ लिखा हैं तथा इनके महत्वपूर्ण सहयोग की भूरि-भूरि प्रशसा की है।

---

1 R B Vanwart : The Life of Lieut-General H H Sir Pratap Singh : Page 113

General Lockhart, in his dispatch regarding the operations of the Tirah Expeditionary Force from Nov 1, 1897 to Jan 26, 1898, writes ·

"I take this opportunity of expressing my thanks to Lieutenant-Colonel His Highness the Maharaj Dhiraj Sir Pratap Singh G C S I who was attached to me throughout the expedition as extra Aide-de-Camp. This very gallant Rajput noble man was wounded on November 29, and charactersticaly concealed the fact until I discovered it by accident some days after the occurance"

The Sardar Rissala had little opportunity for earning distinction and no real fighting One field troop took part in the Mohammad Expedition, a second was placed on convoy duty between Bara and Landi Kotal, and a third was ordered to Peshawar the rest of the regiment was with the Reserve Brigade at Rawal Pindi

They succeeded, however in creating a favourable impression, and Sir Pratap must have been gratified at the Brigadier-General's opinion "I consider the Jodhpur Rissala to be a first class regiment, its arrangements were excellent, and every one of the men gave proof of smartness as a soldier I believe that the days they spent out of their own country provided them an excellent opportunity for training"

Sir Pratap regretted that the expedition had given him no chance to perform any deed worth mentiouing but the Government of India placed a higher value on his services creating him a Companion of the Order of the Bath, and promoting him to the rank of full Colonel [1]

इस अभियान मे महत्वपूर्ण सैनिक सहयोग देने के उपलक्ष मे जब आगरा म सर प्रताप को सम्मान प्रदान किया गया उस समय लार्ड कर्जन ने कहा—

"Sir Pratap is a brave Rajput Reis and fearless soldier, a lover of sport, a first class gentelman, and one staunchly loyal to British Government whose good example ought to be followed by the youthful princes and Reises in India" [2]

सन् १६०० मे सरप्रताप ने निश्चय किया कि बोक्सर केम्पेन म भारतीय ट्रूप्स भाग लें तथा साथ ही यह सुझाव दिया कि भारतीय सेना म एक रेजीमेट जोधपुर रिसाला की

1 R B Vanwart The Life of Lieut-General H H Sir Pratap Singh · Page 120

2 R B Vanwart The Life of Lieut-General H H Sir Pratap Singh : Page 120

हो। युद्ध भूमि मे सग्राम करने का एक और अवसर खोज रहे थे। उनकी इच्छानुसार उन्हें इस बार चाइना कम्पेन मे भाग लेने की स्वीकृति प्राप्त हो गयी तथा वे कलकत्ता पहुचे वहा से जहाज द्वारा (समुद्री मार्ग से) चीन के लिए प्रस्थान किया। दो ब्रिटिश अफसर मेजर टर्नर और केप्टीन ह्यूज भी उनके साथ थे। Wei-hai-wei नामक चीन के पूर्व निश्चित स्थान पर पहुचने के पश्चात् वहा नदी के किनारे अपनी रेजीमेण्ट के टेन्ट्स लगाये। जनरल रेड General Reid के हाथो इस कम्पेन (अभियान) की कमान थी। रूस, जापान, अमेरिका, फ्रास आदि विभिन्न देशो की रेजीमेण्ट्स इस कम्पेन मे भाग लेने यहा पहुची थी। विभिन्न देशो के सैनिक अफसरो से मेल-मुलाकात का एव उनकी सैन्य शक्ति से परिचित होने का सरप्रताप को अच्छा अवसर प्राप्त हुआ।

चीन के लोग छुट-पुट वारदातें या छोटी-मोटी मुठभेड करते। सगठित होकर योजनाबद्ध ढग से युद्ध करने मे असमर्थ थे। बहुत पहले ही उनकी सारी गतिविधियो को चैक कर लिया गया था। परन्तु मोर्चों पर सावधान रहना आवश्यक था। सबसे बडा खतरा यह था कि चीन के लोग कई स्थानो पर जमीन के नीचे बारूद बिछा देते थे अत: उससे चौकन्ना रहना जरूरी था। यहा सर प्रताप एव जोधपुर रिसाले को केवल एक छोटी लडाई का अवसर मिला परन्तु इस छोटी लडाई मे भी सर प्रताप एव सरदार रिसाला के सैनिको के युद्ध कौशल से वहा एकत्र फ्रास, जर्मनी और जापान की रेजीमेण्ट्स भी बहुत प्रभावित हुयी।

सर प्रताप और सरदार रिसाला शान्ति स्थापना के बाद भी Shan-hai-kwan शान हाई क्वान मे (चीन मे) करीब ७-८ महीने रहे। यहा जनरल निकोल्सन केवलरी इन्सपेक्टिग आफिसर और काउन्ट वाल्डरसी फील्ड मार्शल इन दोनो आफिसरो ने सरदार रिसाले का निरिक्षण किया तथा इस रेजीमेण्ट की Smartness (चुस्ती) की प्रशसा की—

Sir Pratap and the Rissala remained for seven eight months at Shan-hai-kwan, and were inspected by General Nicholson, Cavalry Inspecting Officer, and Count Waldersee, Field-Marshal over all the allied forces. Both of those officers praised the smartness of the regiment.[1]

जब उनकी रेजीमेण्ट को चीन से भारत लौटने के आदेश हुये तो उन्होने कहा कि हमारी रेजीमेण्ट को लौटने की कोई जल्दी नही है। इस प्रकार अलवर और बीकानेर की रेजीमेण्ट्स जो इसी अभियान मे थी उनके लौटने के पश्चात् जोधपुर रेजीमेण्ट स्वदेश लौटी। चीन से सर प्रताप जापान गये और वहा से हागकाग होते हुये भारत लौटे। भारत लौटने पर सर प्रताप का कलकत्ता नगर एव मारवाड मे आने पर जोधपुर नगर म भव्य स्वागत किया गया।

---

1 R B Vanwart : The Life of Lieut-General H. H. Sir Pratap Singh: Page 127

Sir Pratap had a great reception on reaching India. At Calcutta a large number of people, official and un official came down to the ship to welcome him and he received there a congratulatory telegram from the Viceroy, which led him to visit Simla to 'Pay his respects' to Lord Curzon before returning to his native place

At Jodhpur the crowed at the station was so great that it was impossible for the numerous addresses, which had been prepared, to be presented and they had to be postponed until the following day They were justly proud of this son of Marwar, whose courage, unassuming Character, and forceful personality had in the recent campaign brought added lustre to himself and to Marwar [1]

१६१४ का महायुद्ध और सर प्रताप

सन् १६१४ के महायुद्ध मे भाग लेने हेतु भी सर प्रताप ने पहल की और वायसराय को यह निवेदन किया कि उन्हे फ्रास भेजा जाय। शिमला जाकर सर हैरी वाटसन (Sir Harry Watson, Inspector General of the Imperial service troops) को कहा कि मैं अपनी रेजीमेण्ट का नेतृत्व करते हुये युद्ध के मैदान म अपने लोगो के सम्मुख मरना चाहता हू—

He told Sir Harry that he wanted to lead his regiment incharge and to die at the head of his men On being told that there would be no apportunity for a charge in France he replied 'Main mankha banaienge' (I will make an apportunity) [2]

सर प्रताप इस महायुद्ध मे अपन राष्ट्र के सम्मान हेतु सर्वस्व बलिदान करने को तत्पर थे यह उनकी प्रबल कामना थी। आज के युग म युद्ध के नाम स लोग कापते हैं भयभीत होते है। युद्ध को बहुत ही पीडादायक तथा विनाशकारी मानते है इतना ही नही यह असभ्य लोगो का कार्य समझा जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि युद्ध का आज घृणा की दृष्टि से देखा जाता है तथा मानव जाति के लिए इसको विध्वसकारी माना गया है।

युद्ध के प्रति इस नय दृष्टिकोण और विचार के पश्चात् भी आज प्रत्येक देश के लिए युद्ध सबसे बडा खतरा है। युद्ध के भय से आज भी मानव सभ्यता विमुक्त नही हुयी है। प्राचीनकाल की अपेक्षा आज अधिक विध्वसकारी शास्त्रास्त्रो का निर्माण एव घातक प्रक्षेपात्रो का युद्ध मे उपयोग हो रहा है। हर देश सामरिक महत्व को गभीरता से लेता है तथा सुरक्षा के नाम पर प्रत्येक देश को बहुत अधिक मात्रा मे धन-राशि व्यय करनी पडती

1-2 R. B Vanwart : The Life of Lieut-General. H H Sir Pratap Singh : Page 201, 210

है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि युद्ध एक अनिवार्यता है। इसी कारण विश्व मे युद्ध की घटनाएं सदा बनी रही हैं। इस निरन्तर और शाश्वत सत्य को भारतीय मनीषीयो ने बहुत पहले ही परख लिया था और उसके अनुरूप यहा की सामाजिक व्यवस्था कायम कर सुरक्षा का भार क्षत्रियो को सौपा था। सदियो की पारम्परिक शिक्षा-दीक्षा से यह जाति युद्ध-प्रिय जाति के रूप मे उभरी। प्रत्येक क्षत्रिय को अपने कर्त्तव्य का पालन करना आवश्यक हो गया यही नही स्वभाव व प्रकृति से भी क्षत्रिय का जीवन इसी कार्य के निमित्त समर्पित था। युद्ध राजपूत के लिए स्वर्ग के द्वार के रूप मे माना जाता। सर प्रताप जो स्वय एक क्षत्रिय थे उन पर इस क्षत्रिय सस्कृति का प्रभाव पडे बिना कैसे रह सकता था। जिस परिवेश मे वे पनप वहा युद्ध को सर्वोच्च प्राथमिकता और मृत्यु को वरेण्य समझा जाता रहा है इसी कारण हर बार युद्ध मे भाग लेने के लिए उन्होने पहल की। इस महायुद्ध या विश्व युद्ध म राष्ट्र की सुरक्षा एव सम्मान का प्रश्न था अत सर प्रताप ऐसे सुनहरे अवसर से कब वचित रहते क्योकि क्षत्रियोचित वीरत्व प्रदर्शन के ऐसे मौके बार-बार जीवन मे नही आया करते।

जब महायुद्ध म भाग लेने का अवसर प्राप्त हुआ तो सर प्रताप ने ईश्वर को धन्यवाद दिया क्योकि उनकी मनोकामना ईश्वर ने पूर्ण की। वे अक्सर यह कहावत सुनाया करते कि 'शक्कर खोरे को खुदा शक्कर ही देता है' अर्थात् जो जिस वस्तु की कामना करता है या चाह रखता है ईश्वर उसकी चाह पूर्ण करता है।

२९ अगस्त १९१४ को जोधपुर लासर ने महासमर म भाग लेने हेतु प्रस्थान किया। सर प्रताप ने मारवाड के प्रशासन का कार्य भार जो उनके जिम्मे था कर्नल विन्डम (Colnoel Windham) रेजीडेन्ट को सौंप कर स्वय भी १४ सितम्बर १९१४ को रवाना हो गये। जोधपुर के तत्कालीन युवा महाराजा सुमेरसिंह ने भी वायसराय लार्ड हार्डिन्ज को पत्र लिखकर इस युद्ध मे भाग लेने की उत्सुकता प्रकट की। आखिर मे अपने चाचा सर प्रताप के स्टाफ के साथ जान की उन्हें अनुमति मिल गयी।

१६ सितम्बर १९१४ को सर प्रताप एव उनकी शेप रेजीमेंट बम्बई से रवाना हुये। बम्बई छोडने से पूर्व सर प्रताप न जोधपुर लान्सर को फ्रास मे युद्ध के मोर्चे पर भेजे जाने के सम्बन्ध मे ब्रिटिश सम्राट को लिखा। इसमे पूर्व जोधपुर लान्सर को स्वेज नहर की रक्षार्थ नियुक्त किया गया था किन्तु सर प्रताप ने इसे अस्वीकार कर दिया। अन्ततोगत्वा उनकी इच्छानुसार रेजीमेंट को फ्रास भेजा गया। एक फासीसी दुभाषिया तथा ब्रिटिश आफिसर एच एन होल्डन, मेजर ए डी स्ट्रोग तथा केप्टिन ई एल मेक्सवेल अपनी रेजीमेंट सहित सर प्रताप के साथ थे। २४ अक्टूबर को लान्सर को युद्ध सामग्री प्राप्त हुयी मरवीली (Merville) से बीवाउच (Bivouac) पहुचे। यह स्थान फायरिंग लाइन से केवल चार मील की दूरी पर स्थित था। वहा के दृश्य का वर्णन सर प्रताप ने अपने जीवन चरित्र मे किया है उसे केनवर्ट ने इस भाति लिखा है—

Though we were just in the near of the fighting line the sounds of guns and volleys of musketry were so tremendous that sometimes we were unable to hear each other. We had orders to be always redy, and had therefore to keep our men armed and the horses always saddled Working parties used to be sent forward to dig trenches [1]

सर प्रताप सन् १६१८ के प्रारम्भ तक फ्रास मे रहे। इस अवधि मे एक बार सन् १६१५ के अन्त मे महाराजा सुमेरसिंह के विवाहोत्सव मे भाग लेने हेतु भारत आये। स्वय महाराजा सुमेरसिंह मई १६१५ मे फ्रास से जोधपुर लौट चुके थे। सर प्रताप ने अपनी रेजीमेण्ट सहित केमब्री (battle of Cambrai) युद्ध मे भी भाग लिया। २० नवम्बर १६१७ के जनरल बेंग (General Byng) के प्रसिद्ध आक्रमण मे भी वे साथ ही थे जिसमे जर्मन सैनिको से मुठभेड हुयी। इस माह सर प्रताप को G C B बनाया गया तथा अगले माह अधिकारियो ने फ्रास से इण्डियन केवलरी को हटाने का निश्चय किया। उनके प्रस्थान पर जोधपुर लासर को फ्रास मे की गयी सेवाओ के उपलक्ष्य मे सम्मान एव ब्रिटिश सरकार की ओर से धन्यवाद प्रदान किया गया। भारतीय सेना के सम्मान स्वरूप इग्लैंड की महिलाओ द्वारा निर्मित झण्डा और शिल्ड भी सर प्रताप को प्रदान की गयी—

'A flag and shield were prepared on behalf of the women of England for presentation to the Indian Army in recognition of their services to the Empire and they were to given away by the hand of the Dowager Empress Queen Alexandra The honour of receiving the flag and shield on behalf of the Indian Army was conferred on me. (Sir Pratap)

These relics were after wards on the conclusion of the war sent to India when I was invited by H E Lord Chelmsford to Delhi, and they were placed in Viceregal Lodge by my hands with great ceremony befitting the occasion '[2]

जोधपुर लासर दिनाक २८ मार्च १६१८ को मिश्र पहुचे सर प्रताप २८ अप्रेल १६१८ को अपने स्टाफ सहित वहा पहुचे। इस सम्बन्ध मे वे लिखते है—

"Before leaving France the France Republic conferred on me the Order of the Legion of Honour, which I greatfully accepted "[3]

मिश्र मे सर प्रताप और जोधपुर लासर ने बहुत ही शानदार प्रदर्शन कर गौरव अर्जित किया। यह सब सर प्रताप के कुशल नेतृत्व व वफादार साथियो के सहयोग और

---

1 R B Vanwart · The Life of Lieut-General. H H Sir Pratap Singh : Page 202

23· ,, ,, P 208, 210

साहस का परिणाम था। सर प्रताप की युद्ध सम्बन्धी अपनी मौलिक विचारधारा थी तथा नवीन पद्धतियों मे उनका विश्वास कम था। वे प्राय यह उक्ति दोहराया करते कि मुझे प्रोपेगण्डा करने वाले नही लडने वाले व्यक्ति पसन्द हैं—

Such was his spirit He had no use for the modern methods of warfare 'Me not liking propaganda, me fighting men.' was his favourite saying at that time and his idea of fighting was to get on his horse an charge [1]

महाराजा सुमेरसिंह का जब देहान्त हुआ तब सर प्रताप रण-भूमि मे ही थे यह समाचार प्राप्त होते ही वे शीघ्र जोधपुर पहुचे और यहा के रीजेण्ट बने। उनकी अनुपस्थिति मे भी जोधपुर लासर ने अपने युद्ध कौशल से अंग्रेजो को चकित कर दिया। सर प्रताप की अनुपस्थिति मे जोधपुर लासर का नेतृत्व मेजर ठाकुर दलपतसिंह (हरजी के पुत्र) ने किया तथा हाइफा नगर पर भयकर सघर्ष के पश्चात् अधिकार किया। इस विजय को हासिल करने मे यह वीर अपने शौर्य का चमत्कार दिखाकर शहीद हो गया। जोधपुर लासर द्वारा इस अद्भुत एव महत्वपूर्ण विजय पर सर प्रताप एव लासर को अनेकानेक बधाइया प्राप्त हुयी जिसका एक उदाहरण द्रष्टव्य है—

The Jodhpur Lancers covered themselves with glory at Haifa capturing that town, which was strongly fortified and defended at a gallop *Sir Partap* was the recipient of a number of congratulatory letters and telegrams, including one from the Private Secretary to his Majesty on behalf of the King and Queen General Allenby's telegram summarizes this gallant spot :

"Congratulate you on the brilliant exploit of your regiment, the 23rd September took town of Haifa at a gallop, killing many Turks with the lance in the streets of the town and capturing 700 prisoners *Their gallant Colonel*, Thakur Dalpat Singh, fell gloriously at the head of his regiment He was buried with full military honours 'ALLENBY'[2]

इस महायुद्ध मे सर प्रताप ने भाग लेकर वीरता, शौर्य एव अदम्य साहस का परिचय दिया। इस युद्ध सम्बन्धी उनके अपने निजी विचार है जो तत्कालीन परिस्थितियो और घटनाक्रम की तो जानकारी देते ही हैं साथ ही उनकी व्यक्तिगत सूझबूझ एव परिस्थिति

---

1 R B Vanwart : The Life of Lieut-General H H Sir Pratap Singh : Page 214.

2 R. B Vanwart : The Life of Lieut-General H H Sir Pratap Singh : Page 216

विशेष पर उनकी प्रतिक्रिया तथा एक जागरूक चिंतक (राजनैतिक) के पूर्वानुमानो के भी परिचायक हैं—

वे अक्सर कहा करते थे कि यह महासमर महाभारत से भी बढकर था। विश्व के अधिकाश राष्ट्रो ने इसमे भाग लिया। उन्हे इस बात का भी गर्व था कि इस महायुद्ध (Great War) मे छ राठौड मुखियाओ (Six Rathore Chiefs) ने भाग लिया। वे इस बात से भी सहमत थे कि जर्मन लोगो ने इस युद्ध मे अपनी सैनिक तैयारी से सारे विश्व को चकित कर दिया हालाकि इस युद्ध मे उनकी पराजय हो गई और उनको सधि स्वीकार करनी पडी।

सर प्रताप द्वारा समर्थित इग्लैण्ड को इस युद्ध मे विजय हासिल हो गयी उस समय उन्होने यह विचार प्रकट किये कि कैसर (जर्मन चासलर विलियम कैसर) की यह बुद्धिमानी ही थी कि उसने तुरन्त स्वत ही अपने पद का परित्याग कर दिया अन्यथा थोडे समय पश्चात् युद्ध की सधि बर्लिन (जर्मनी की राजधानी) मे होती और उसका देश तहस नहस हो जाता। इस सधि की शर्तों के सम्बन्ध मे उनकी प्रतिक्रिया यह थी कि 'सधि की जो शर्तें है वे मानवीय दृष्टिकोण से उपयुक्त कही जा सकती हैं परन्तु मैं इसे एक राजनैतिक गलती (Polhotical Mistake) मानता हू क्योकि यह बिल्कुल निश्चित है कि जर्मन लोग शान्त नही बैठे रहेगे और कुछ ही दिनो मे इस पराजय का बदला चुकाने का प्रयास करेंगे। बहुत अधिक सभावना यह है कि जर्मनी रूस के साथ अपने मैत्री सबध स्थापित करे।

इस महायुद्ध की समाप्ति के पश्चात् समानता और राष्ट्रीयता की भावना का प्रबल प्रचार-प्रसार हुआ तथा अधिकाश राष्ट्र अपने यहा जनतन्त्र की स्थापना हेतु तत्पर हुये सर प्रताप इसके विपरीत धारणा रखते थे। वे राजतन्त्री व्यवस्था को अच्छा मानते थे क्योकि वे स्वय राजकुल म पैदा हुए और सामन्ती व्यवस्था मे समय व्यतीत करने के कारण इसी मे विश्वास रखते थे। दूसरी प्रमुख बात इस महायुद्ध के परिणाम स्वरूप यह हुई कि पैदल और जल सेना (Land and Sea forces) मे कमी करने का विचार पनपा। शाति स्थापना एव भविष्य मे युद्धो म कमी करने के प्रयास म इस विचार को कई लोगो ने पसन्द किया किन्तु सर प्रताप न तो इस विचार के समर्थक थे और न ही उन्हे यह विचार पसन्द था। उनके विचार से यह भावना भविष्य मे होने वाले युद्धो मे विजय प्राप्ति के अवसरो को सीमित और कम करेगी। इससे युद्ध वर्जन और शाति कायम हो जायेगी इस बात मे *उनका विश्वास नही था। उनका तो यह विश्वास था कि भविष्य मे युद्ध कभी बन्द या* समाप्त नही हो जाने वाले क्योकि राज्य द्वारा मानव की स्वाभाविक प्रवृत्ति को कभी नियत्रित नही किया जा सकता। विश्व के अन्य देशो की अपेक्षा हिन्दुस्तान युद्ध न करने के विचार का बहुत अधिक पोषक और समर्थक रहा है फिर भी इस धरती पर अनेक युद्ध हुए और वह मानव की स्वभावगत युद्ध की प्रवृत्ति को पूर्ण रूप से नियन्त्रित करने मे असफल रहा है।

द्वन्द्व और संघर्ष की भावना हर युग मे रही हैं तथा भविष्य मे भी रहेगी इस सत्यता को अस्वीकार नही किया जा सकता। एक लोकोक्ति प्रचलित है कि- यदि तुम शान्ति चाहते हो तो युद्ध के लिए तैयार रहो (If you wish for peace prepare for war) सर प्रताप इसी सिद्धान्त को स्वीकार करने वाले थे तथा उनका यह मत था कि राष्ट्र की सुरक्षा के लिए व्यवस्थित और नियमित सेना की आवश्यकता होती है और यह सेना बडी सख्या मे रखी जानी चाहिए। क्योकि यदि किसी देश की सैन्य-शक्ति मे कमी कर दी जाती है तो अन्य राष्ट्रो के बीच उस राष्ट्र को अपना नैतिक सदाचार (*Moral*) बनाये रखना कठिन हो जाता है। ऐसी अवस्था मे उस राष्ट्र के दुश्मन उसे कमजोर समझकर आक्रमण करेंगे और निश्चित रूप से उसे क्षति पहुचाने का प्रयास करेंगे।

इस प्रकार सर प्रताप ने एक सच्चे क्षत्रिय वीर की भाँति अपनी मातृ-भूमि (मारवाड राज्य) की सुरक्षा हेतु तो प्रयास किये ही साथ ही अपने राष्ट्र की सुरक्षा और सम्मान के लिए भी वे सदैव तत्पर रहे। प्रथम विश्व युद्ध मे इसी उद्देश्य से उन्होने भाग लिया था तथा अपने अद्‌भुत शौर्य और साहस से अपना व अपनी कौम का ही नही समूचे देश का नाम ऊचा किया। उनकी सैनिक सेवाए इसलिए भी अधिक महत्व रखती है कि वे शासक होते हुए भी सम्मुख युद्ध मे प्रवृत्त हुए ऐसे उदाहरण प्राय कम ही देखने मे आते हैं। सर प्रताप को कुशल सेना नायक और सफल जनरल कहा जा सकता है क्योकि वे केवल शौर्य प्रदर्शन एव युद्ध उन्मादी सैनिक या जनरल ही नही थे युद्ध जन्य स्थितियो म विवेक पूर्ण निर्णय लेन की भी उनमे अद्‌भुत क्षमता थी। अपनी रेजिमेण्ट के सैनिको की बहादुरी पर उन्हे भरोसा था और इसी विश्वास और सहयोग से वे हर मोर्चे पर वीरता का शानदार प्रदर्शन करने मे सफल हो सके। युद्ध सम्बन्धी उनकी कुछ मौलिक विचार धाराए भी रही जो व्यवहारिक पक्ष को अधिक महत्व देती दिखाई पडती हैं।

सर प्रताप का व्यक्तित्व

सर प्रताप बहुआयामी और प्रभावशाली व्यक्तित्व के धनी थे। मूल्याकन करने पर इस बात का प्रमाण एव उनके कार्यों की महत्ता स्पष्ट रूप से आभासित होती है। जयपुर, जोधपुर और ईडर तीन राज्यो मे सर प्रताप को अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने के अवसर मिले जयपुर और ईडर मे तो अल्पकाल तक ही रहे विशेषकर जोधपुर राज्य के लिए दीर्घकाल तक अपनी सेवाए दी और मारवाड की उन्नति के लिए उन्होन उल्लेखनीय कार्य किये। उनके व्यक्तित्व की विशेषताओ को बहुत ही सक्षेप मे इस प्रकार दर्शाया जा सकता है—

कुशल प्रशासक

जिस समय सर प्रताप ने जोधपुर के प्रधानमन्त्री का पद सम्भाला उस समय राज्य की दशा (सभी क्षेत्रो मे) बहुत ही शोचनीय थी। यह सर प्रताप के कुशल प्रशासन का ही परिणाम था कि राज्य मे कानून और न्याय की पुन स्थापना हो सकी तथा राज्य एव प्रशासन को स्थायित्व प्रदान हो सका। ईडर राज्य का प्रशासन जैसा कि पहले बताया गया अल्पकाल के लिए ही उनके हाथो मे रहा परन्तु उस अल्प अवधि मे ही ईडर राज्य मे कई सुधार कर स्थाई महत्व के कार्य सम्पन्न किये। जोधपुर के वे तीन बार रीजेन्ट रहे तथा इस राज्य के प्रशासन मे सर प्रताप की सुदीर्घ सेवाए बहुत ही हितकारी और उपयोगी सिद्ध हुई। उनकी उपलब्धियो के आधार पर कहा जा सकता है कि उनम कुशल प्रशासकीय दृष्टि थी तथा उस समय इस राज्य की प्रभुता एव प्रभावशाली साधन सम्पन्नता मे सर प्रताप का बहुत बडा योगदान रहा।

सफल राजनीतिज्ञ

कुशल प्रशासक के साथ-साथ सर प्रताप एक सफल राजनीतिज्ञ भी थे। तत्कालीन परिस्थितियो मे अंग्रेजो से मित्रता स्थापित कर उनके सहयोग से राज्य की बहुमुखी उन्नति की। यह कदम उनकी राजनैतिक चतुरता का ही द्योतक है। यह उनकी सफल राजनीतिज्ञता का ही परिणाम था कि अपने समय के अन्य भारतीय शासको के मध्य उन्होन महत्वपूर्ण पद एव प्रतिष्ठा प्राप्त की। सफल राजनीतिज्ञ के साथ ही वे कूटनीतिज्ञ भी थे स्वय के जोधपुर के तीन बार रीजेन्ट नियुक्त होने, ईडर का राज्य प्राप्त करने, मालानी को मारवाड मे मिलाने तथा रणजीतसिंह को जामनगर का उत्तराधिकारी घोषित करने जैसे कई कार्य उनकी कूटनीतिज्ञता के परिचायक हैं। इन कार्यों को सर प्रताप जैसा सफल राजनीतिज्ञ ही सम्पन्न कर सकता था।

राजपूत स्कूल चांपासनी के उद्घाटन के अवसर पर
एल एल डो. (केम्ब्रिज) रोब्ज मे सर प्रताप (1914)
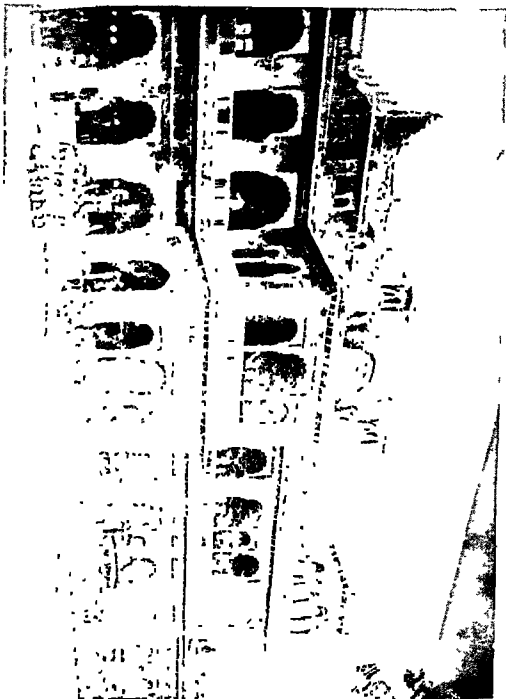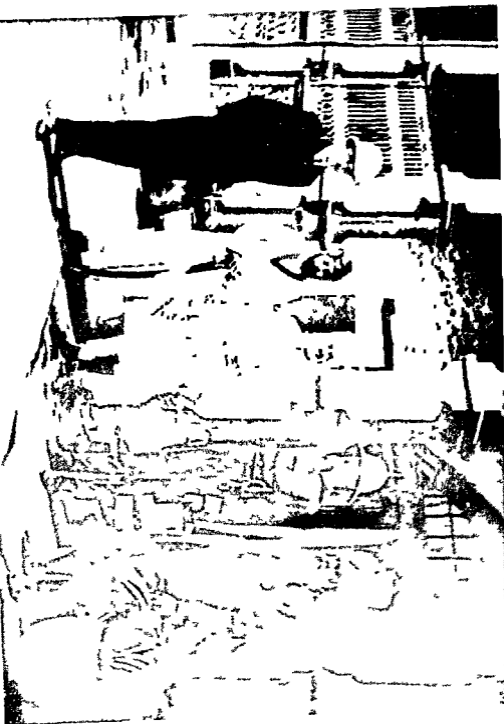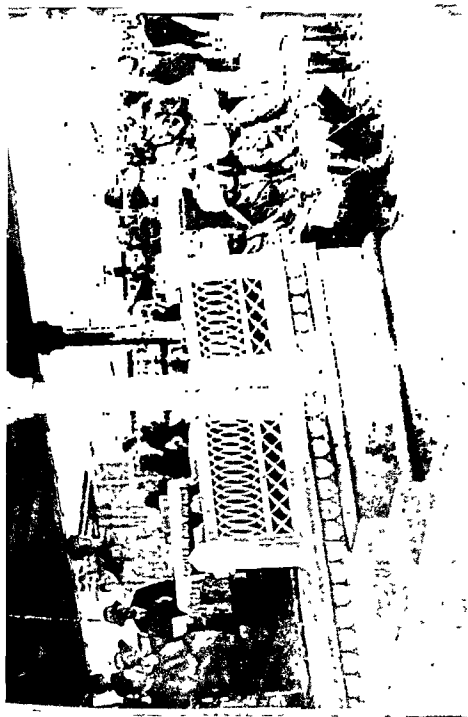
शिकार प्रेमी सर प्रताप, सूअर की शिकार के बाद का चित्र
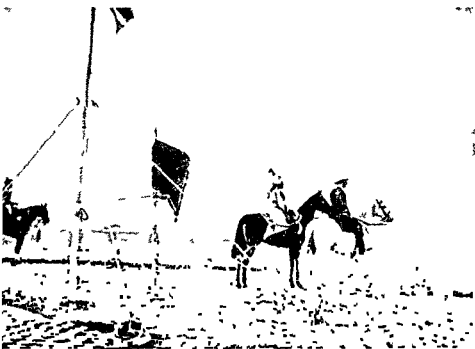
लार्ड हार्डिञ्ज के साथ सर प्रताप
जोधपुर लान्सर्स की परेड सलामी के अवसर पर (1914)
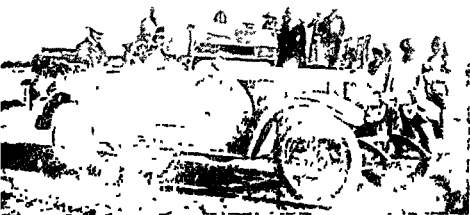
जोधपुर लान्सर्स का निरीक्षण करके लौटते हुए
सर प्रताप एवं लार्ड हार्डिञ्ज (1914)
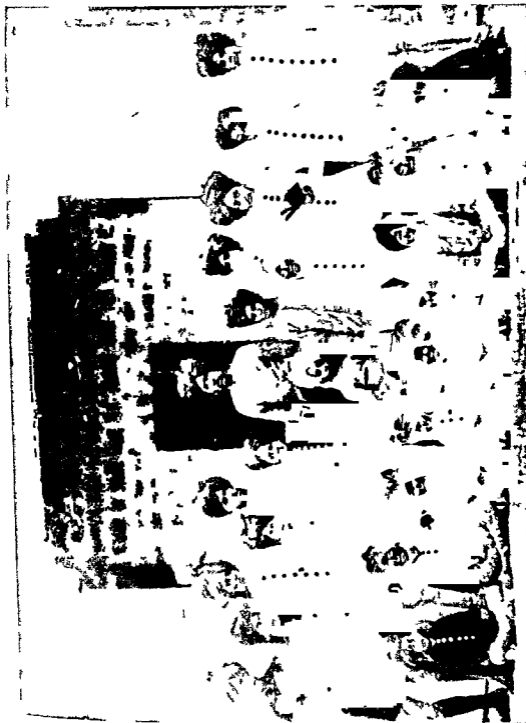
सर प्रताप का बगला, रातानाडा, जोधपुर
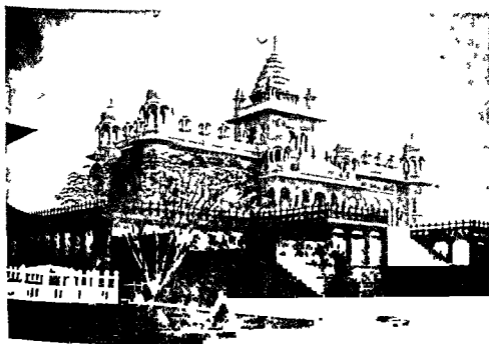
सर प्रताप के समय बन जसवन्त थड का एक दृश्य

सर प्रताप सर डगलस हेग तथा जनरल जाफरी के साथ
मान्ट्रीयुइल जून 17, 1916

सर प्रताप व प्रसिद्ध पालो खिलाडी हरजी युवावस्था म

सफल सेनानायक

इस विषय पर सरप्रताप की सैनिक सेवाएँ नामक अध्याय मे विस्तार से वर्णन किया जा चुका है जिससे यह स्पष्ट जाहिर होता है कि सरप्रताप एक सफल सेनानायक थे और वे अपने समय के श्रेष्ठ ब्रिटिश सेनानायको से किसी प्रकार कम न थे। प्रथम विश्व युद्ध मे उनकी रेजीमेट का उल्लेखनीय योगदान रहा। इतना ही नही सर प्रताप की अनुपस्थिति मे उनकी रेजीमेट ने मेजर दलपतसिंह के नेतृत्व मे भयकर सघर्ष कर हाइफानगर पर गौरवपूर्ण व ऐतिहासिक विजय हासिल की। इन बातो से यह स्पष्ट हो जाता है कि एक सफल जनरल के सारे गुण सर प्रताप मे विद्यमान थे। उनका सैनिक जीवन और सैनिक उपलब्धिया उनके व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषता कही जा सकती है।

अदम्य साहसी एवं वीर

सर प्रताप ने उस कुल मे जन्म लिया था जिस कुल मे सस्कारो के परिणाम स्वरूप साहस और वीरता के गुण बालक मे जन्मजात ही पैदा होते है। क्षत्रिय सस्कृति मे पले प्रतापसिंह मे साहस और वीरता कूट-कूट कर भरी थी और इसका प्रदर्शन उनके द्वारा सम्पन्न हर कार्य मे दृष्टिगोचर होता है चाहे वह बचपन की बालक्रीडा हो, डाकू उन्मूलन हेतु प्रयाण हो, प्रशासनिक क्षेत्र मे नवीन सुधार की बात हो, खेल का मैदान हो चाहे सूअर व शेर की शिकार हो या फिर युद्ध का मैदान हो। हर क्षेत्र मे अदम्य साहस और उद्भट वीरता परिलक्षित होती है। अपने अद्भुत शौर्य, अनुपम साहस और अपूर्व वीरता के बल पर देश-विदेश मे वे यश और सम्मान प्राप्त कर सके।

शिकार प्रेमी

शिकार का शौक सर प्रताप को बचपन से ही था। महाराजा तखतसिंह स्वय शिकार के बहुत शौकीन थे और शिकार तो रईसो की सदा प्रिय वस्तु रही है उसमे निपुणता हासिल करना गौरव की बात समझी जाती रही है। घोडे पर सवार होकर बल्लम (भाले) से वार कर सूअर की शिकार करना उन्हे बेहद पसन्द था और वे इस फन मे माहिर हो गये थे। हिरन, शेर एव बघेरो की शिकार भी उन्होने की। कई बार वे अग्रेज ओहदेदारो के साथ शिकार खेलने जाते, प्रिंस आफ वेल्स के साथ की गयी शेर की शिकार तो उनके जीवन की यादगार घटनाओ मे से एक है जिसका वर्णन विस्तार से दूसरे अध्याय मे किया जा चुका है।

श्रेष्ठ घुड़सवार

घुडसवारी को शरीर के लिए वे बहुत अच्छा व्यायाम समझते थे। राजपूत के लिए तो घोडे का उनकी दृष्टि मे बहुत अधिक महत्व था। घोडे की स्वामीभक्ति एव शक्ति पर उन्हें काफी भरोसा था। घुडसवारी सर प्रताप के जीवन का अग था। नियमित रूप से वे

घुडसवारी किया करते थे।[1] राजकुल मे उत्पन्न हुए बालकों के लिए घुडसवारी सीखने की व्यवस्था बचपन में ही कर दी जाती थी अतः सर प्रताप ने भी बचपन से ही घुडसवारी का अभ्यास प्रारम्भ किया कालान्तर में वे इसमे बहुत ही निपुणता हासिल कर लेते हैं। घुडसवारी कला की सिद्धहस्तता ने उनके सैनिक अभियान, शिकार, पोलो के खेल एवं रेसकोर्स की रेस मे बहुत मदद की तथा उनमे वे अपनी श्रेष्ठता सिद्ध कर सके। घुडसवारी के इस नियमित क्रम को अपने जीवन के अन्तिम दिन तक भी उन्होंने निभाया। घुडसवारी का ऐसा अद्वितीय और अनुपम उदाहरण सर प्रताप जैसे घुडसवार ही प्रस्तुत कर सकते थे।

खेल-प्रेमी

सर प्रताप घुडसवारी के तो अभ्यस्त थे ही अत रेस (घुडदौड) और पोलो मे उनकी अत्यधिक रुचि थी। खेलो के प्रति उनकी उत्सुकता इस बात से आकी जा सकती है कि जुबली रेस में भाग लेने हेतु उन्होंने भूखे (निराहार) रह कर अपना वजन घटाने की कोशिश की। घुडदौड के अतिरिक्त पोलो सर प्रताप का प्रिय खेल रहा। सर प्रताप और बीटसन ने जोधपुर मे सन् १८८६ मे पोलो खेलना प्रारम्भ किया और चार वर्ष पश्चात् १८९३ मे जोधपुर की पोलो टीम जो इण्डियन चेम्पियन रही, उसम सर प्रताप भी एक खिलाडी थे—(१) सर प्रतापसिह (२) ठाकुर धौकलसिह (३) मेजर बीटसन और (४) ठाकुर हरिसिह। उस समय भारत की प्रमुख पोलो की टीमो मे जोधपुर की गणना होती थी। सन् १८९७ मे डायमड जुबली के अवसर पर सर प्रताप इग्लैण्ड गये उस समय वे पहली उस भारतीय पोलो टीम के खिलाडी थे जिसने ब्रिटिश खिलाडियो को उनकी धरती पर चैलेंज दिया। यहाँ यह भी उल्लेख योग्य है कि प्रारम्भ मे सर प्रताप द्वारा प्रशिक्षित उनके पुत्र रावराजा हनवन्तसिह अपने समय मे पोलो के विश्व प्रसिद्ध खिलाडी के रूप मे उभर कर हमारे सामने आये।

दृढ़ संकल्पी

धुन के धनी सर प्रताप अपने दृढ सकल्पी स्वभाव के कारण कई बार असाधारण स्थितियों से गुजरते हुए भी पथ से विचलित नही हो पाये। अपने इस दृढ निश्चयी स्वभाव के परिणाम स्वरूप ही वे कठिन कार्यों को सफलता पूर्वक सम्पादित करने मे कामयाब हो सके। स्वस्थ प्रशासन, डाकू उन्मूलन, सच्ची न्याय-व्यवस्था, शिक्षा का प्रचार-प्रसार, राजकोष की स्थापना, राज्य की स्थाई सेना, रिसाले की स्थापना, लगान व्यवस्था, खालसा भूमि पर सरकारी आधिपत्य, सरकारी कर्मचारियो को नकद वेतन का भुगतान इत्यादि कितने ही कार्यो की क्रियान्विति उनके दृढ सकल्प के कारण ही सभव हो सकी तथा मारवाड के प्रशासन की दुर्दशा मे वे अपेक्षित सुधार ला सके।

मातृभूमि से प्रेम

मातृभूमि के प्रति सर प्रताप का अगाध प्रेम और अटूट श्रद्धा थी। 'जन्म-भूमि स्वर्ग से भी महान है' वे इस सिद्धान्त के सच्चे प्रतिपालक कहे जा सकते हैं। उन्हाने आजीवन मातृभूमि की सेवा की तथा उस पर जब कभी अराजकता, भय और आतंक फैला उसे समाप्त कर सुव्यवस्था, सुरक्षा और शांति स्थापित की। मातृभूमि की सेवार्थ उन्होंने ईडर राज्य के स्वामित्व का भी स्वेच्छा से परित्याग कर दिया। जोधपुर राज्य के तीन बार रीजेण्ट बनकर जन्मभूमि के लिए यथा शक्ति, मति अपनी सेवाए समर्पित की।

स्वदेशी वस्तुओं से लगाव

मातृभूमि के प्रेमी मारवाड के उस सपूत को स्वदेशी वस्तुओ से बेहद लगाव था। देश के राजा-महाराजाओ, रईसो, अफसरो और अंग्रेज पदाधिकारियो के बीच रहते हुए भी सर प्रताप ने स्वदेशी वस्तुओ की अवहेलना नही की। स्वय जोधपुर की खादी (दुकडी) का कोट पहना करते। अपनी सेना के लिए भी वर्दी हेतु यही की बनी हुई खादी को चुना। स्वदेशी वस्तुओ का प्रयोग करने मे वे सदैव गौरव का अनुभव करते साथ ही दूसरे लोगो को भी इसके लिए प्रेरित और प्रोत्साहित करते।

मातृभाषा प्रेमी

मातृभाषा मारवाडी के प्रति उनका आदर और सम्मानभाव था। उनका मातृभाषा के प्रति प्रेम कितना अधिक था उसे इस उदाहरण से आका जा सकता है कि—तत्कालीन समय म कोर्ट और कचहरी म उर्दू और फारसी का प्रयोग हुआ करता था उसके स्थान पर उन्होंने मारवाडी भाषा का प्रयोग प्रारम्भ करवा कर उसके महत्व की पुनर्स्थापना की। उनका यह मातृभाषा प्रेम हमारे लिए आज भी एक अनुकरणीय उदाहरण है।

भारतीय संस्कृति मे गहरी आस्था

भारतीय सस्कृति के आदर्शों, मान्यताओ एव निर्दिष्ट निर्देशो मे उनका विश्वास था। हिन्दू-धर्म मे उनकी आस्था, सामाजिक परम्पराओ मे विश्वास और भारतीय मर्यादाओ मे उनकी गहरी निष्ठा से यह परिलक्षित होता है कि वे भारतीय सस्कृति के परिवेश मे अपने आप को किस प्रकार ढाल चुके थे। पिता, गुरु, अग्रज, अतिथि, वृद्ध और महिलाओ के प्रति आदर्श सामाजिक मर्यादाओ को उन्होंने स्वीकार किया क्योकि इसे वे अच्छा और अनुकरणीय समझते थे। विदेश भ्रमण के पश्चात् स्वय के व्यक्तिगत अनुभवो से उनकी धारणा इस बारे मे और दृढ हो जाती है तथा उनके हृदयपटल पर भारतीय सस्कृति की गहरी छाप सम्पूर्ण गरिमा से अंकित हो जाती है।

नवीन सुधारो के समर्थक

भारतीय सस्कृति और यहा की गौरवपूर्ण परम्परा मे विश्वास रखते हुए भी सर प्रताप ने सामाजिक कुरीतियों, बाह्य आडम्बरो और कुप्रथाओं का विरोध ही नहीं किया उन्हे समाप्त करने का भी प्रयास किया। समाज, धर्म, प्रशासन और राज्य के आर्थिक क्षेत्र म उन्होने नवीन सुधारो को आवश्यक समझा और उन्हे लागू कर हर क्षेत्र मे विकास के अवसर प्रदान किये। उन्होने समाज की जडता को झकझोर कर उसमे चेतना जागृत करने की कोशिश की तथा दकियानूसी रूढियो से उसे छुटकारा दिलाने का प्रयास किया। सर प्रताप द्वारा अपनाये गये कई नवीन सुधारो के फलस्वरूप मारवाड की विभिन्न क्षेत्रो मे उन्नति सम्भव हो सकी।

दूरदर्शी

सर प्रताप एक दूरदर्शी व्यक्ति थे। अपनी दूरदर्शिता के आधार पर उन्होने तत्कालीन परिस्थितियो का गौर से अध्ययन कर समयानुकूल विचार एव क्रियापद्धति से समस्याओ का समाधान किया। हर ऐसे समाधान के पूर्व वे दूरगामी परिणाम को ध्यान मे रखते, शीघ्रता या भावुकता मे कोई निर्णय नही लेते थे। इसलिए उन्होने जो योजनाए बनायी उससे मारवाड की सामाजिक और आर्थिक उन्नति मे आशातीत सफलता प्राप्त हुई।

शिक्षा-प्रेमी

सर प्रताप स्वय कोई बहुत बडे शिक्षाविद् नही थे परन्तु शिक्षा के प्रति उनका गहरा अनुराग था। उन्होने शिक्षा की महत्ता को स्वीकार ही नही किया उसके प्रचार-प्रसार हेतु तहेदिल से कोशिश की। मारवाड में शिक्षा की कमी को दूर करने के लिए विभिन्न शिक्षण सस्थाओ को उदार मन और मुक्त-हस्त से सहायता प्रदान की। समाज के गरीब और पिछडे वर्ग के लोगो की शिक्षा के लिए वे प्रयत्न शील रहे। मारवाड मे गरीब राजपूत छात्रो के लिए राजपूत ऐलगिन स्कूल (चौपासनी स्कूल) की स्थापना तथा ईडर राज्य के आदिवासी एव पहाडी क्षेत्र के गरीब लोगो के लिए शिक्षण सस्थाओ की व्यवस्था की। ईडर मे तो राज्य भर मे निशुल्क शिक्षा की व्यवस्था स्थापित कर शिक्षा के क्षेत्र मे महत्वपूर्ण योगदान दिया।

सादगी प्रिय

राजकुल मे उत्पन्न होने के बावजूद भी सर प्रताप सादगी प्रिय रहे। सीमित व्यक्तिगत आवश्यक्ताओ के सहारे जीवन व्यतीत करने का उनका स्वभाव बचपन से ही था। उन्हे दीखावा या बाह्याडम्बर बिल्कुल पसन्द नही थे। वे सामाजिक आचार-व्यवहार रीति-रिवाज, धार्मिक विधिविधान और अनुष्ठान मे सादगी के हामी थे। इस बात को

उन्होने अपने जीवन मे व्यवहारिक रूप से अपनाया भी। टीका, औसर-मौसर, शादी-विवाह के अवसर पर किये जाने वाले अनावश्यक दीखावे के वे विरोधी थे। उनका रहन-सहन तो सादगी पूर्ण था ही परन्तु उन्होंने तो अपने अन्तिम सस्कार तक को बहुत ही सादे ढग से सम्पन्न करने के निर्देश दिये थे। इस इच्छाभिव्यक्ति से बढकर सादगी और सरलता का दूसरा और क्या उदाहरण हो सकता है।

परिश्रमी

सर प्रताप ने सदा ही श्रम के महत्व को सर्वोपरि समझा एव उद्देश्य प्राप्ति के लिए इसे आवश्यक और महत्वपूर्ण उपकरण माना। ऐश्वर्य और आरामतलबी का जीवन बिताने वालो को वे पशुओ से भी गया बीता समझते थे। अपने परिश्रमी स्वभाव के कारण ही कई प्रकार के दुर्गुण और प्रमाद से वे बचकर रह पाये। इस प्रकार यह कह सकते हैं कि श्रम ने उनके व्यक्तित्व को सवारने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

त्यागी

सर प्रताप परिश्रमी और सादगी-प्रिय तो थे ही साथ ही त्यागी भी थे। उनके त्याग की भावना के कई महत्वपूर्ण उदाहरण हमे देखने को मिलते है। महाराजा तखतसिंह उन्हे जालोर की जागीर देना चाहते थे, जयपुर नरेश रामसिंह ने उन्हें जागीर देने की सोची परन्तु सर प्रताप ने अपनी अनिच्छा जाहिर की। महाराजा जसवन्तसिंह ने भी उन्हे एक लाख का पट्टा प्रदान करना चाहा किन्तु सर प्रताप ने इसे भी अस्वीकार कर दिया क्योकि इस कार्य से रियासत के कमजोर होने की सम्भावना बढ जाती अत केवल निर्वाह के निमित्त ५ हजार रुपए मात्र लेने स्वीकार कर एक आदर्श उपस्थित किया। मातृभूमि (जोधपुर) को जब उनकी सेवाओ की आवश्यकता हुई तो ईडर के शासकीय आकर्षण को भी निसकोच त्याग दिया जो कि उनके त्याग का एक अनूठा उदाहरण है।

गरीबो के सहायक

अति साधन सम्पन्न परिवार मे जन्म लेने के पश्चात् भी सर प्रताप के दिल मे दीन-दुखियों का दर्द समाया हुआ था और गरीबो के प्रति उनकी सहानुभूति थी। उन्हे जब भी अवसर मिलता हर सभव वे उनकी मदद करते। चाहे व्यक्तिगत स्तर पर हो चाहे सरकारी स्तर पर, सदैव गरीवो के दुख दर्द को बाटने और अभावों को दूर करने का उन्होंने प्रयास किया। गरीबो के लिए शिक्षा, चिकित्सा और न्याय की समुचित सुविधाए सरकार की ओर से प्रदान कर सहायता पहुँचायी।

सच्चे मित्र

वे सच्चे मित्र थे तथा अपने मित्र के सुख-दुख मे सदा साथ रहते। मित्रता के भाव की एक घटना यहा उद्धृत की जाती है—सर प्रताप जब वियना मे थे तब उन्हे 'तस्मानिया'

नामक जहाज के डूबने का समाचार मिला जिसमे उनका सारा सामान और तीन लाख से भी अधिक के हीरे जवाहारात शामिल थे। उन्हे इस सामान की अपेक्षा उस जहाज पर सवार अपने मित्र सर एडवर्ड ब्रेडफोर्ड की अधिक चिन्ता थी उन्होंने केप्टिन ब्रुक हेमिल्टन को, जो सामान की चिन्ता मे डूबा था कहा—"रुपयो और वस्तुओ के लिए चिन्ता करने की आवश्यकता नही ये तो पुन प्राप्त की जा सकती है परन्तु मित्र खो जाता है तो उसकी पूर्ति नही होती अत अपने मित्र ब्रेडफोर्ड के बारे मे सोचो।" इस दुर्घटना का समाचार मिलने पर वे तब तक वियना मे ही रुके रहे जब तक उन्हे सर ब्रेडफोर्ड का सुरक्षित स्थान पर पहुँचने का समाचार प्राप्त नही हुआ, उसके बाद वे पेरिस के लिए रवाना हुए। इस प्रकार का था उनका मैत्री भाव। उनके मित्रो मे बहुत से अग्रेज पदाधिकारी थे। खिलाडियो मे हरजी उनके सबसे प्रिय मित्रो मे से एक थे।

इसके अतिरिक्त आत्मविश्वासी, स्वाभिमानी, धैर्यवान, उदार और मानवतावादी दृष्टिकोण इत्यादि कई विशेषताए हमे उनके व्यक्तित्व मे देखने को मिलती हैं जिनका वर्णन यथाप्रसग पिछले अध्यायो मे हो चुका है।

सर प्रताप की व्यक्तित्व सम्बन्धी विशेषताओ पर गौर से विचार करने पर यह प्रतीत होता है कि उनके व्यक्तित्व की सफलता का आधारभूत कारण उनकी कर्मठता, आत्मविश्वास और कुछ कर गुजरने की अदम्य लालसा ही रही है। इसका सबसे बडा उदाहरण यही है कि अपने जीवन के अन्तिम दिन तक वे कार्यशील रहे और अपनी कर्त्तव्य परायण दिनचर्या से विरत नही हुये। ६ सितम्बर सन् १६२२ को जब उनका स्वर्गवास हुआ उस दिन भी वे प्रात जल्दी उठकर नित्यकर्म के पश्चात् घुडसवारी मे गये और लौटने पर जब उनकी तबियत बिगडने लगी तो उन्होने उसी समय समझ लिया कि अब महाप्रयाण का वक्त आ गया है और उन्होने सम्बन्धित व्यक्तियो को पीछे के कार्यों की सार-सभाल देकर शान्तिपूर्वक इस ससार से विदा ली। ऐसी मृत्यु महाप्राण और निष्काम कर्म करने वालो को ही नसीब होती है। उनकी सादगी तथा इस धरती से प्रेम का अतिम उदाहरण—मृत्यु के समय उन्होने यह इच्छा जाहिर की कि मेरा शव अत्यन्त सादे ढग से मेरे बगले के समीप पोलोग्राउण्ड के सामने ही जलाया जाय ताकि घोडो की टापो से उडने वाली इस मातृभूमि की रज मेरी समाधि पर लगती रहे और उनकी इच्छा के अनुसार उनका दाह सस्कार उसी सादगी से और अभूतपूर्व गरिमा के साथ निर्दिष्ट स्थान पर किया गया, जहा आज भी उनका स्मारक बना हुआ है।

सर प्रताप सम्बन्धी रोचक बातें

१. एक शेर एक सार

महाराजा सर प्रतापसिंहजी साहब केवल शूरवीर राजपूत और सरल सिपाही ही नही थे, बल्कि अनुभवी शासक और गम्भीर विवेकी थे। उनकी कई बातें और कथानक शिक्षाप्रद हैं। उनमे से कुछेक अपनी याद के अनुसार लिखना उचित समझता हू[1]

उन्हे यह ख्याल-सा था कि वह फारसी भी जानते है। यह फारसी उन्होने बाल्य-काल मे पढी थी। फलत कभी-कभी कोई शेर कह दिया करते थे। हिन्दी के दोहे भी बहुत याद थे। भाटो और चारणो से राजपूती सम्मान के दोहे सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ करते। निम्न शेर उन्हे बहुत पसन्द था—

हर साल जुलाब हर माह कै।
हर हफ्ता हमाम हर रोज मै।

पुराने हकीम यही कहा करते है कि साल मे एक बार दस्त लेकर पेट की पूरी सफाई कर लेनी चाहिए। इसी प्रकार प्रतिमास कै करके जितना अधिक जहरीला और गन्दा पानी दिल और जिगर के आस-पास जमा हो गया हो, उसे भी निकाल देना चाहिए। शरीर मे वात, पित्त और कफ की अवस्था ठीक रखनी चाहिए। प्रति सप्ताह हमाम मे स्नान करना चाहिए, ताकि चमडी के सब छिद्र खुल जाय। प्रतिदिन "मै" का अर्थ वह शराब पीने से नही लेते थे, बल्कि दिल को ताजगी और प्रसन्नता प्रदान करने वाला शरबत मानते थे यद्यपि वह वृद्धावस्था के कारण व्हिस्की का प्रयोग कर लिया करते थे, तथापि एक या दो पैग। मैंने उन्हे कभी बेहोश नही देखा। देसी सोसायटी मे यह आम अवगुण है, किन्तु उन्हाने अपने को बहुत वश मे रखा हुआ था और बहुत ही दूरदर्शी तथा नियम के पक्के थे इसी कारण ७७ वर्ष की आयु तक जीवित रहे और अन्तिमकाल तक स्वस्थ तथा स्फूर्तिमय रहे। यहा तक कि सवारी भी करते रहे।

२. नसीहत का एक शेर

उन्हे व्यवहारिक अनुभव के आधार पर मनुष्य की बडी परख थी इसलिये वे इस बारे मे कई बार पुराने शायरो के शेर बातचीत मे उद्धृत किया करते थे एक शेर यहा प्रस्तुत है—

---

१. ये सारी रोचक बातें राधाकृष्ण द्वारा लिखित सर प्रताप के स्वलिखित जीवन चरित्र से सकलित की गयी हैं।

सदिया शीराजिया पद विदेह कम जात रा ।
कमजातगर आकल शवद गर्दन जनद उस्ताद रा ॥

अर्थात् ऐ शीराज के सादी, नीच को शिक्षा न दो क्योंकि नीच यदि शिक्षित हो गया तो उस्ताद की ही गर्दन काटने लगेगा ।

३. एक कहावत

एक कहावत और सुनाया करते थे । एक आदमी ने कहा कि दुनिया मे वीर्य का भी प्रभाव होता है । दूसरे ने कहा कि नही सगत का प्रभाव होता है । इस पर यह कहावत वन गई कि—

पिता पर पूत तुखम पर घोडा ।
वहुत नही तो थोडा-थोडा ॥

४. एक दोहे पर एक हजार का इनाम

राजपूतो के विषय मे बहुत दु ख से कहा करते थे कि उन्हे शराब और वेश्यागमन ने नष्ट कर दिया हैं । यही दशा मुगलो की थी । और यही अवस्था अब उनकी हो रही हैं । एक बार एक भाट ने एक सामयिक दोहा कहा और इस एक ही दोहे का इनाम उसे एक हजार रुपया दे दिया । दोहा यह है—

रजपूती रही नही, गयी समुद्रा पार ।
पातरियो के , सेंज गए सरदार ॥

५. घोडा और घुड़सवारी

सच्चे राजपूत और घोडो से बहुत प्यार था । वे यहा तक कहा करते थे कि राजपूत को बनाने वाला घोडा ही है । घोडे की सेवा पिता तुल्य करो फिर घोडा तुम्हारे लिए सब कुछ कर देगा । घोडे के बल पर ही राज लिया जाता है और उसकी रक्षा की जाती है । इसीलिए अग्रेज लोग सवारी सीखने और करने पर बहुत बल देते है । सिविल सर्विस की परीक्षा मे भी घोडे की सवारी एक अनिवार्य विषय रखा गया है । इसकी बाबत मैं एक मनोरजक बात लिखता हूँ । यह उन्होने स्वय मुझे सुनाई थी । उनके पास एक बहुत बढिया देसी घोडी थी । उसकी सवारी तथा शक्ल से वह बहुत खुश थे । एक दिन सवारी किये ही जनाना ड्योढी मे चले गये । युवावस्था थी । उनकी एक रानी शेखावतजी साहबा थी । वह भी पक्की राजपूतनी थी । बहुत हसोड और मजबूत थी । महाराजा प्रतापसिहजी ने कहा कि मैं इस घोडी से बहुत खुश हू और आपसे भी । मैं चाहता हू कि आप मेरी प्यारी घोडी को अपने हाथो मालिश करें । कहते हैं कि रानी साहबा ने भी एक मिनट की देरी न की । बाहें चढा कर ऐसी मालिश की कि महाराजा साहब भी दग रह गये और दोनों खूब हसे । शोक की बात है कि यह रानी साहबा जल्दो परलोक सिधार गई ।

६. इन्सान की परख

मनुष्य की सूरत देखकर ही पता लगा लेते थे कि वह किस रंग-ढग और स्वभाव का है। उनका यह विचार था कि जैसे परमात्मा ने विभिन्न प्रकार के जानवर पैदा किये है, अर्थात् शेर, सूअर, घोडा, लोमडी, बैल, साप, बिच्छू, गधा, कुत्ता आदि उसी प्रकार मनुष्यो मे भी ऐसे ही स्वभाव के लोग होते हैं और यह बात उनकी शक्ल-सूरत तथा क्रियायें एव बातचीत से प्रकट हो जाती है। प्रत्येक मनुष्य को पहले परख लेना चाहिए। फिर उसके साथ यथोचित व्यवहार करना चाहिए। इस सम्बन्ध मे निम्न शेर पढा करते थे—

न हर जन जन अस्त न हर मर्द मर्द,
खुदा पज अगुश्त यक्सा न कर्द।

अर्थात् ना ही प्रत्येक स्त्री स्त्री है, ना ही प्रत्येक आदमी आदमी है। परमात्मा ने पाचो अगुलिया एक सी नही बनाई।

७. स्वदेशी वस्तुओ से प्रेम

स्वदेशी और विशेषकर मारवाड की बनी वस्तुओ से बहुत प्रेम था। रियासत जोधपुर की टुकडी मशहूर है। यह एक प्रकार की खादी है। उसका उपयोग बहुत प्रेम से किया करते थे। जब प्रिंस आफ वेल्स साहब (सन् १४०५-६) मे भारत भ्रमण के लिए पधारे, तो इस टुकडी के छै कोट बनवाये। तीन को लाल रग और तीन को ऊदा रग मे रगाया। लखनऊ की बात है कि एक रात खाने के समय वो लाल कोट पहनकर आ गये। सब अग्रेज साथी हसन लगे और फिर उन्हे समझाने लगे कि इस रग का कोट खाने के समय पहनना ठीक नही। ऐसा न हो कि राजकुमार बुरा माने, लेकिन उन्होने चिन्ता न की और खाने की मेज पर डट गये। राजकुमार उन्ह हमेशा अपने दाहिने बिठाया करते थे। उनका कोट देखकर मुस्कराये। सर प्रतापसिहजी भी बहुत हसोडे थे। मेज पर हाथ पटक कर कहा कि "This is a Jodhpur Tukri coat and I is a Jodhpur man" अर्थात् 'यह जोधपुर की बनी टुकडी का कोट है और मैं जोधपुरी हू।' राजकुमार ने प्रसन्नता से सिर हिलाते हुए कहा कि बिल्कुल ठीक है ऐसा ही होना चाहिए। महाराजा साहब ने झट कह दिया कि मैं तो आपके लिए भी ऐसा ही कोट लाया हू। हा उनम दो रग है। जो चाहे पसन्द करले। राजकुमार ने नीले रग का कोट ले लिया और बहुत हसे और कहा कि मैं भी तो राजपूत हूँ। अवश्य उसे आपके सामने एक दिन पहनू गा। सवत् १६४० मे उन्होंने सब अफसरो तथा अहलकारो को टुकडी के कोट तथा पायजामे आदि पहनकर दफ्तरो और कचहरियो मे जाने की आज्ञा दी और मु शी हरदयालसिहजी के द्वारा इस आज्ञा का अनुपालन करवाते रहे। रिसाले के लिए भी लु गियां तथा साफे नागौर की चद्दर के बनवाये।

८. धुन के पक्के

आप धुन के बहुत पक्के थे। जिस बात का निश्चय करते, उसके लिए पूरा प्रयत्न करते। देशी राजाओ मे केवल यही एक थे जिन्होने दुनिया की मशहूर घुडदौड 'डरबी रेस' को स्वय सवारी करके जीता था। कहा करते थे कि मेरा बोझ अधिक था। इसलिए मैंने सात दिन तक कुछ नही खाया। केवल चाय और दाल का पानी (Soup) ही पीता रहा, किन्तु घोडे को निरन्तर अभ्यास कराते रहे। यह कोई साधारण बात न थी। इस प्रकार उन्होने एक ऐतिहासिक विजय प्राप्त की।

९. शारीरिक दुर्बलता और हिन्दुओ की हीन दशा

हिन्दुओ की दयनीय दशा और गिरावट उन्हे बहुत परेशान रखती थी। उनका अपना ढग सिपाही का-सा था, इसलिए वह उसी दृष्टिकोण से इस मामले पर वाद-विवाद किया करते थे उनकी इच्छा यह थी कि हिन्दू शारीरिक दृष्टि से बहुत मजबूत और हट्टे-कट्टे होने चाहिए। फलत प्रत्यक को फौजी शिक्षा देनी चाहिए। जब ईडर से हिम्मतनगर पधारे तो सब गुजराती अफसरो और अहलकारो को आज्ञा दी कि वे धोती की जगह ब्रिजिश पहन कर दफ्तरो मे आया करें। इसके अतिरिक्त प्रतिदिन सुबह रेसकोर्स मे उपस्थित हो। छोटे-छोटे टट्टूओं पर सवारी भी कराया करते थे। कहते है कि उन दिनो यह लोग घर के लोगो से मिलकर इस प्रकार विदा लेते थे जैसे कोई लम्बी यात्रा अथवा युद्ध पर जाता है। यह सदेह बना रहता था कि आज सही सलामत लौटेंगे भी या नही। ऐसा करने का उनका तात्पर्य यह था कि उन लोगो के दिलो से भय जाता रहे और उनमे जीवन पैदा हो। कुछ समय बाद उन लोगो को भय से छुटकारा मिल गया। शारीरिक उन्नति की बाबत कहा करते थे कि मनुष्य का शरीर चार खम्भो पर स्थिर है पहला ब्रह्मचर्य, दूसरा नीद, तीसरा व्यायाम और चौथा भोजन।

यह बाते उन्हे स्वामी दयानन्दजी ने समझायी थी ब्रह्मचर्य की बाबत कहा करते थ कि यह एक नियम है और गृहस्थियो को भी उसका पालन करना चाहिए। व्यायाम मे कुश्ती और खम्भास्टक को वे बहुत अच्छी समझते थे क्योकि इनसे सब अग सुदृढ होते हैं। महाराजा जसवन्तसिहजी साहब स्वय कुश्ती के शौकीन थे बाल्यकाल मे तीनो भाई परस्पर कुश्ती किया करते थे।

उनकी दृष्टि मे सबसे बढिया व्यायाम घोडे की सवारी थी उससे आदमी का शरीर सुडौल हो जाता है और दम फूलना जाता रहता है। दिल मे ताकत आती है और वीरता की भावनायें भर जाती है। खेलो मे फुटबाल और कबड्डी तथा दौड लगाने या टहलने के भी शौकीन थे।

जापान की प्रशसा करते हुए कहा करते थे कि वहा के लोग प्रत्येक काम दौडकर करते हैं। योरोप के भी लोग बहुत तेज चलते है, लेकिन भारतीयो की चाल से प्रकट हो जाता

है कि आलस और निराशा उनकी नस-नस मे घुसे हुए है। इसी प्रकार नीद, भोजन आदि के बारे मे भी समय की पाबन्दी और सन्तुलन बनाये रखने पर जोर देते थे।

१०. सामाजिक दुर्दशा और उसका निराकरण

हिन्दुओ की सामाजिक दुर्दशा देखकर भी उनका चित्त दुखी हुआ करता था। उनकी चिकित्सा वे अपने ही ढग पर किया करते। सबसे बडा दोष वे छून-छात को समझते थे। यह कहावत "आठ पूरबिया और नौ चूल्हा" बहुधा सुनाया करते थे। वे कहा करते थे कि वेद म तो लिखा है कि तुम मिलकर बैठो, मिलकर खाओ-पीओ और मिलकर सोच-विचार करते हुए आगे बढो।

दीवान कल्याणराव जेठा बख्शी बहुत योग्य दीवान थे। वह काठियावाड के रहने वाले और नागर ब्राह्मण थे। वह जब महल मे आया करते तो एक नौकर के सिर पर पानी की मटकी रखवाकर साथ लाते। जितने समय तक वह महल मे रहते वह व्यक्ति मटकी उठाये खडा रहता। एक दिन महाराजा साहब ने दीवान साहब से कहा कि यह व्यक्ति मटकी लिए खडा रहता है, उसकी जगह आप महल मे किसी साफ मेज पर क्यो नही रखवा देते? दीवान साहब ने कहा कि ऐसा करने से पानी पीने योग्य नही रहेगा। महाराजा साहब ने ठाकरडे की मैली पगडी की ओर सकेत करते हुए कहा कि आश्चर्य है कि इस पगडी से तो जिसमे सभवत जुए भी हो, यह मटकी अशुद्ध नही होती, लेकिन मेरे महल मे सैकडो रुपये की लागत की और बिल्कुल साफ मेज पर रखते ही वह अपवित्र हो जाती है। फिर हसकर बोले कि यदि मैं उसे बाहर से हाथ लगा दू तो उसका बाहरी भाग ही अपवित्र होगा या भीतर का पानी भी। इस उक्ति का उत्तर दीवान साहब न दे सके।

इस आधार पर आप कहा करते थे कि सर्व साधारण की यदि गिरावट हुई है तो ब्राह्मणो की ही गिरावट के कारण और गिरना तो था ही, क्योकि जैसा अध्यापक हो, वैसा ही शिष्य भी होगा। ब्राह्मण तो हमारे गुरू थे। जब उन्होने अपने स्वार्थ के लिए वेद विरुद्ध नई नई बातें बनाकर हम लोगो को कुमार्ग पर चलाना शुरू किया, तो हमको तो गड्‌ मे पडना ही था। खुले शब्दो मे कहा करते थे कि ब्राह्मणो ने अन्य सब जातियो के लोगो को क्लोरोफार्म दे रखा है। जब तक उसका प्रभाव दूर न होगा, तब तक कोई सुधार नही हो सकता। जब तक हम बदर की भाति नाचना नही छोडेंगे और उस नकेल को तोडेंगे नही, तब तक हमारी सामाजिक स्वतन्त्रता और सुधार की लतायें नही पनप सकती। इसी प्रकार आदमी की एक महत्वपूर्ण कमजोरी पर भी उनका बडा स्पष्ट मत था कि आदमी चाहे कितनी ही अकड फू दिखाये किन्तु वास्तव मे स्त्रियो के ही दास होते हैं। वे उनकी मुट्ठी मे से निकल नही सकते। बहुत से बुरे रीति-रिवाज इसलिये दूर नही होने कि आदमी इस विषय म स्त्रियो को अपने पीछे नही चला सकते और समय पडने पर उल्टे उनके पीछे हो लेते है। स्त्रिया शोर मचाती हैं कि मनुष्यों ने उनकी स्वतन्त्रता छीन रखी है, लेकिन सोचा जाय तो मनुष्यो ने केवल शारीरिक स्वतन्त्रता पर बधन डाला होगा किन्तु

स्त्रियों ने तो मनुष्यों की मस्तिष्क सम्बन्धी स्वतन्त्रता भी छीन रखी है। ब्राह्मणों अर्थात् 'लेने वाले देवताओं' ने मनुष्यों की कुन्जी वश में कर ली हैं और उनके द्वारा भारत के सारे अधिवासियों पर ताला लगाया गया है। भारत का सच्चा सुधारक वही होगा, जो यह ताले तोड फेंके और ताले लगाने वालों को सीधी राह पर लगा दें।

११ शादी विवाह मे सादगी

उनके एक लडकी थी जिसका विवाह उन्होंने अपने सिद्धातो के अनुसार ही किया। किसी बडी रियासत मे उनका विवाह हो, इस विचार को उन्होंने मन मे न आने दिया। वे कहते थे कि अपने से बडे दर्जे की जगह मे लडकी देने का अन्त मे यही परिणाम होता है कि उसका जीवन दु खमय हो जाय। अपने से छोटे दर्जे के जागीरदार को और विशेष कर अपनी रियासत में दे देने से बहुत सुख होता है। इससे बुराईया उत्पन्न होने की सभावना जाती रहती है। उन्होंने ब्याह भी साधारण रीति-रिवाज से कराया। किसी प्रकार की धूम-धाम नही की गई। लेकिन ब्याह के पश्चात् आजीवन उन्हे ५००) रु० मासिक भेजते रहे।

१२. समानता की भावना

दयानन्द एग्लोवैदिक कालेज, लाहौर की आधार शिला रखन के लिए सन् १६०५ मे लाहौर पधारे। रविवार आया तो सत्सग मे शामिल होने का विचार प्रकट किया। कालेज वालो ने एक बहुत बढिया आराम कुर्सी उनके लिए एक कोने मे रख दी। जब आप पधारे तो सबके कहने पर भी कुर्सी पर नही बैठे बल्कि सर्व साधारण के साथ दरी पर बैठ गये। आपने यह भी कहा कि परमात्मा के दरबार म हम सब समान है। आर्य समाज हो और फिर ऐसी बात कर, यह ठीक नही। यह सुनकर सब चुप से हो गये।

१३. युक्ति और चातुर्य के धनी

ईडर की गद्दी लेते समय उन्होंने बहुत अच्छे ढग से युक्तिया उपस्थित की। महाराजा जगतसिंह का दावा बहुत जोर का था और दीवान कल्याणराय भी उनके लिए पूरी कोशिश करते रहे। उनकी युक्ति यह थी कि जब महाराजा तख्तसिंहजी साहब अहमद नगर से जोधपुर पधार गये तो उनके वश का ईडर पर कोई अधिकार नही रह जाता। फलत राज्य उन्हे मिलना चाहिये।

महाराजा प्रतापसिंह की युक्ति थी कि महाराजा तखतसिंहजी के जोधपुर पधारे जाने से महाराजा जसवन्तसिंहजी को छोडकर अन्य बेटो का अधिकार नही छीना जा सकता। यदि उनका किसी और रियासत पर अधिकार हो सकता हो, तो वह जोधपुर मे अपने उत्तराधिकार का अधिकार छोडकर दूसरी रियासत मे जा सकता है। यदि ऐसा सभव न होता तो महाराजा तख्तसिंहजी अहमदनगर से जोधपुर कैसे जा सकते थे ? उन्होंने अपनी

पुरानी अवस्था स्पष्ट करके बताया कि अधिकार महाराजा गम्भीरसिंह का था परन्तु वे नाबालिक थे और उनकी माजी साहबा ने जोधपुर का राज्याधिकार लेने से इन्कार कर दिया था। अत उस समय जोधपुर मे अशांति और कौतुहल मचा हुआ था। सरदारो का भी तूफान था, इसलिए वे डरती थी कि यदि उनके पुत्र को जोधपुर जाना पड गया तो उनके प्राण भय मे है। इसलिए उन्होने अधिकार छोड दिया। महाराजा तखतसिंहजी जो दूसरे दर्जे पर थे, उन्हे जोधपुर का राज्याधिकारी बनाया गया।

इन बातो मे प्रकट हो गया कि जोधपुर और ईडर के वर्तमान कुल खून के सम्बन्ध से एक-दूसरे के अति निकट है और उचितावस्था मे गद्दी पर आ सकते है। महाराजा प्रतापसिंह की यह युक्ति तो गवर्नमेंट ने मजूर कर ली परन्तु उनके सामने एक और समस्या उत्पन्न हो गई। महाराजा सर प्रतापसिंहजी से महाराजा जोरावरसिंहजी उम्र मे बडे थे। उनके बडे पुत्र महाराजा फतहसिंह ने भी इसी कारण अभियोग चला रखा था। प्रकट रूप मे उनका अभियोग महाराजा प्रतापसिंहजी की अपनी दलील के अनुसार चला था, पर उत्तर मे महाराजा साहब ने यह युक्ति उपस्थित की कि महाराजा जोरावरसिंहजी ने अपने पिता के विरुद्ध साजिश और विद्रोह किया था और हिन्दू धर्म-शास्त्रो मे ऐसा करने वाला राजगद्दी पर बैठने से वचित हो जाता है। फलत बहुत वाद-विवाद के बाद यह युक्ति मान ली गई। यह बात मैंने इसलिए लिखी है कि महाराजा प्रतापसिंहजी आवश्यकता पड जाने पर डटकर युक्तियें पेश कर सकते थे और वाद-विवाद करके सफलता भी प्राप्त कर लेते थे।

१४ अंग्रेजी की दुविधा और हस्ताक्षर

यह तो सब जानते थे कि महाराजा साहब अग्रेजी नही जानते थे। अपने ढग की टूटी फूटी अग्रेजी बोलकर अपना तात्पर्य समझा दिया करते थे। लिखने मे तो केवल बहुत कठिनाई से उन्होने अपने दस्तखत करने सीखे थे। उसमे उनके दिल पर यह बात अकित थी कि उनके नाम म एक टी (T) आती है जिसे काटना जरूरी है और एक आई (I) आती है, जिस पर बिन्दु लगाना आवश्यक है। श्री राधाकृष्ण लिखत है कि एक बार ऐसा हुआ कि उन्हें एक चिट्ठी लिखकर लाने की आज्ञा दी, किन्तु जब वे दस्तखत कराने गये तब सर प्रताप एक अग्रेज से बातें कर रहे थे और वे जल्दी-जल्दी म ठीक दस्तखत न कर सके। उन्हें टी और आई का ध्यान न रह सका और रुककर देखने लगे कि टी और आई कहा है। तब राधाकृष्ण उनकी कठिनाई को भाप गये। अपनी कलम से टी को कुछ ऊचा करके आई को भी स्पष्ट कर दिया। इस पर सर प्रताप मुस्कराये और और झट टी को काट दिया और आई पर बिन्दु लगा दिया। फिर राधाकृष्ण की ओर सकेत करके कहा—"शाबाश, गुड बाय।"

१५. प्रत्येक पग आगे की ओर

राजपूत लडको को सरक्षण जीवन भर देते रहे। इधर-उधर से लडके इकट्ठे करके उन्हे सवारी सिखलाते। खाना, कपडा अपने पास से दिया करते। समय पडने पर उनका

चन्दा अपने पास से देकर रिसाले मे भरती करवा देते अथवा कोई और अवसर उनकी नौकरी या उन्नति का होता तो उन्हे दिला देते। परिवार-रक्षक, जाति-रक्षक और उदार चित तथा पुराने ढग के पक्के राजपूत थे। उन्होने लाखो रुपये राजपूतो पर और करोडो रुपये सर्वसाधारण की उन्नति के लिए खर्च किये। दिन भर चलने-फिरते काम किया करते। उनके सामने यही आदर्श था कि हर बात मे कुछ सुधार और उन्नति हो। प्रत्येक पग आगे की ओर उठे, पीछे को नही।

१६ आदमी जैसा चाहे वैसा बन सकता है

राधाकृष्ण[1] से सर प्रताप कहा करते थे कि तुम पढे लिखे हो और मैं गुणा हुआ हू। हम दोनो मिलकर एक आदमी बनते हैं लेकिन जो स्वय पढा भी हो और गुणा भी हो तो वह अकेला ही पूर्ण मनुष्य है। परमात्मा ने दो हाथ दिये हैं, एक से कलम पकडनी चाहिये और दूसरे से तलवार। मस्तिष्क और आखे दी हैं सोचकर और देखकर प्रत्येक काम करना चाहिये। उसके बाद जिह्वा अथवा हाथ को काम करने देना चाहिये। मनुष्य के तीन दर्जे हैं—घोडा, बैल, और गदहा। आदमी जैसा चाहे वैसा बन सकता है।

१७. विष और अमृत

सरलता और तप का जीवन बिताने को ही ऊचा आदर्श समझते थे। ऐश्वर्य और आरामतलबी का जीवन बीताने वालो को तो पशुओ से भी गया बीता समझते थे। कहा करते थे कि ऐसे लोग तो एक प्रकार से दण्ड भोगने के लिए दुनिया मे आये हैं। जो आदमी नित्य परिश्रम करके रोटी नही खाता, वह हराम की रोटी खाता है और दोषी है। हराम की रोटी खाने से शरीर म विष उत्पन्न होता है और हलाल की रोटी से अमृत।

१८. निःशुल्क शिक्षा के प्रथम अधिष्ठाता

वे मारवाडी, हिन्दी और साधारण उर्दू जानते थे लेकिन इस बात का बहुत शौक था कि दूसरे लोग खूब विद्या अर्जन करें। उन्होने जोधपुर म विद्या प्रचार के लिए बहुत सा *काम किया, यह बात हर कोई जानता है किन्तु इस बात को लिखने की विशेष आवश्यक्ता* है कि रियासत ईडर मे उन्हाने शिक्षा विस्तार की विशेष कोशिश की। शिक्षा विभाग अग्रेजी सरकार के अधीन था किन्तु उनके यत्न से सन् १६०६ मे रियासत को सौंप दिया गया। महाराजा साहब ने उसी बरस अपने जन्म दिन के अवसर पर रियासत भर मे नि शुल्क शिक्षा कर दी। राधाकृष्ण लिखते हैं कि जहा तक मेरा ख्याल है, वे सबसे पहले महाराजा थे, जिन्हाने अपनी रियासत मे नि शुल्क शिक्षा का श्रीगणेश किया। राजपूतो के लिए एक अलग से स्कूल खोला। उसमे गावो से लाकर लडके दाखल किये गये। उनकी किताबा, खाने-पीने और कपडो का खर्च वे अपने ही जेब से देते रहे।

---

1 राधाकृष्ण ने ही सर प्रताप के जीवन चरित्र को (लिपिबद्ध) सम्पादित किया।

१९. शिक्षा प्राप्ति सबका अधिकार

एक बात जो उस समय उन्ही के वश की थी, वह यह थी कि उन्होंने एक ब्राह्मण, एक राजपूत, एक पटेल और एक भील को पजाब मे शिक्षा के लिए भेजा। वहा उन्होने मेट्रिक परीक्षा पास की। इससे यह प्रमाणित करना चाहते थे कि प्रत्येक जाति के व्यक्ति शिक्षा प्राप्ति मे सफल हो सकते हैं, बशर्ते कि उन्हे सब प्रकार की सुविधायें हो। दूसरी बात यह कि राजा का कर्त्तव्य है कि वह सब जातियों की शिक्षा के लिए पूरा प्रयत्न करें। जोधपुर मे भी उन्होने प्रत्येक जाति के लिए स्कूल जारी किये थे। उदाहरणार्थ–राजपूतो, पुष्कर्णों, ओसवालो, पचोलियो, मालियो और मुसलमानो के लिए।

२०. धर्म शुद्धि के क्रांतिकारी विचार

सर प्रताप शुद्धि के पक्षपाती थे। उनका विचार था कि जिन लोगों के पूर्वजो को लोभ या आतक से मुसलमान बनाया गया था, उन्हें पुन हिन्दू बना लेने मे कोई दोष नही और मलकाने राजपूतो को जो मुसलमान हो जाने पर हिन्दू रीति-रिवाजो का किसी सीमा तक पालन करते हैं शीघ्र ही शुद्ध करके राजपूतो मे शामिल कर लेना चाहिए। प्रत्येक जाति अपनी सख्या बढाना चाहती है, फिर राजपूतों को भी अपना सगठन करके अपनी सामाजिक और नैतिक उन्नति के लिए कोशिश करनी चाहिये। एक अवसर पर १५ लाख मुसलमान राजपूतों को शुद्धि का उन्होने निश्चय कर लिया था किन्तु कुछेक पुराने ढर्रे के रईसो ने बाधा उपस्थित की। इस बात पर वह हमेशा ही दु ख प्रकट किया करते।

२१. शिक्षा का एक व्यवहारिक पक्ष

स्कूली शिक्षा मे वह तोते की तरह किताबें रटने के सर्वथा विरुद्ध थे। इस बात को बहुत चाहते थे कि प्रत्येक छात्र साहसी और चुस्त हो और खेल-कूद मे आगे बढने का शौकीन हो। कोई न कोई काम करना सीखे ताकि आवश्यकता पडने पर रोटी कमा सके। इसके साथ ही वह चाहते थे कि लडके रोने की आदत न सीखे। भले ही उन पर आपत्ति आ पडे या उन्हे बुरी तरह पीटा जाय। कई बार उन्होने यह विचार प्रकट किया कि लडको को कभी-कभी पीटा जाय और देखा जाय कि वह रोते हैं या नहीं। जो रोते हो उनसे यह आदत दूर कराई जाय। वह तो उस लडके से प्रसन्न होते थे, जो बहुत पीटने पर भी सी न करे और न ही आसू बहाये।

विशेष-परिच्छेद

लेखक ओंकारसिंह, आई०ए०एस० (सेवा नि०)

महाराजा सर प्रतापसिंहजी विषयक कुछ महत्वपूर्ण तथ्य

'The history of mankind is the history of its great men, to find out these, clean the dirt from them, and place them on their proper pedestal"
—Carlyle

(मानव जाति का इतिहास उसके महान् पुरुषों का इतिहास है, उनका पता लगाने के लिए उनके मैल को साफ करिये, और उन्हें उनके उच्च स्थान पर स्थापित कीजिये)

महाराजा सर प्रतापसिंह नि सन्देह एक महान् पुरुष थे। आज के बदले हुए समय और परिवर्तित परिस्थितियों में सर प्रताप के व्यक्तित्व और कृतित्व के महत्व को समझना और उनका मूल्यांकन करना वास्तव में कठिन है। परन्तु उस काल की परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में और उस समय के दृष्टिकोण से उनके व्यक्तित्व एवं उपलब्धियों को आंकने से ही उनकी महानता का पता चल सकता है। सर प्रताप अपने समय के कितने महत्वपूर्ण व महान् व्यक्ति थे इसका अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि उनके देहावसान के पश्चात् शीघ्र ही भारत के तत्कालीन कमाण्डर-इन-चीफ की अध्यक्षता में एक समिति सर प्रताप का स्थाई स्मारक बनाने के उद्देश्य से गठित की गई। इस समिति के परिपत्र दिनांक १७-१०-१९२३ में अंकित किया गया था—"सर प्रताप एक अद्वितीय सैनिक, प्रशासक एवं खिलाडी थे और उनका नाम न केवल भारत अपितु इंग्लैण्ड के घर-घर में जाना जाता है। उनकी महान् कीर्ति शायद ही कभी क्षीण होगी, परन्तु आने वाली पीढ़ियों को उनके उच्च सिद्धान्तों एवं महान् कृत्यों से अवगत कराने के लिए उनकी स्मृति को स्थाई रखने हेतु स्मारक बनाना भी अत्यन्त आवश्यक है।" इस समिति को उस समय सर प्रताप के स्मारक हेतु चन्दे से ६६,६५५)रु० प्राप्त हुए जो आजकल के एक करोड रुपयों से कम नहीं थे। इस समिति ने सर प्रताप का जीवन-चरित्र श्री आर० बी० वेनवर्ट द्वारा लिखाया जो १९२६ में आक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस से प्रकाशित हुआ।

मैं १९३९-१९४० में जब दसवी कक्षा में पढ़ता था तो अंग्रेजी भाषा की एक पूरक पुस्तक "आधुनिक भारत के सात महापुरुष" हमारे पाठ्यक्रम में थी। इसमें जमशेदजी जीजीवॉय टाटा, सर सलारजंग, महान्, गणितज्ञ रामानुज, जगदीशचन्द्र बोस, महात्मा गांधी आदि के साथ सर प्रताप का भी जीवन चरित्र था। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि सर प्रताप अपने समय की किन महान् विभूतियों के समकक्ष थे।

प्रथम महायुद्ध में जोधपुर लान्सर्स ने पैलेस्टीन के हाइफा नगर में तुर्कों से हाइफा का किला फतह करने में अद्वितीय वीरता का प्रदर्शन करके अपने आपको गौरवमण्डित किया था। उस समय के सेनाध्यक्ष कर्नल हारवे सी०आई०बी०ओ०, एम०सी० ने सर प्रताप की मृत्यु के बहुत दिनों पश्चात् यह कहा था—"मुझे उनसे (सर प्रताप) बढ़कर अच्छे भारतीय से मिलन का गौरव प्राप्त नहीं हुआ है। वे अत्यन्त राजभक्त, अनुपम वीर, अद्वितीय खिलाड़ी और सही अर्थों में सज्जन पुरुष थे।"

मैं सर प्रताप के विषय में स्वयं जीवन-चरित्र लिखने का विचार कई वर्षों से कर रहा था। कुछ ही समय पूर्व राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी द्वारा एक जीवन-चरित्र तैयार करने की घोषणा हुई तो मैंने यह उचित समझा कि अब जीवन-चरित्र न लिखकर मैं कुछ ऐसे महत्वपूर्ण तथ्य, शोध संस्थान द्वारा रचित पुस्तक के परिशिष्ट के रूप में लिखूं, जिससे कि सरप्रताप के व्यक्तित्व एवं कृतित्व सम्बन्धी कुछ विशेष जानकारी मिल सके। इस बात से शोध संस्थान के निदेशक ने सहमति प्रकट की।

यहाँ मैं कुछ महत्वपूर्ण तथ्यों को संक्षिप्त रूप में तथा विशेषतः उन आलोचनाओं के प्रतिवाद हेतु लिखना आवश्यक समझता हूं जिनके द्वारा विभिन्न व्यक्तियों ने सर प्रताप की छवि को समय-समय पर धूमिल करने के कुत्सित प्रयास किये हैं। उन आलोचनाओं का यदि प्रतिवाद नहीं किया गया तो 'मौनम् सम्मति लक्षणम्' के सिद्धान्तानुसार इन आलोचनाओं को कहीं सत्य न मान लिया जाय। भविष्य में भी सर प्रताप के विरुद्ध आधारहीन आलोचनाएँ हो सकती हैं, अतः इन तथ्यों द्वारा मैं भावी पीढ़ियों के लिए भी प्रेरणा-स्वरूप कुछ अंकित करना चाहता हूँ जिससे आलोचकों को और भी विस्तृत तथा समुचित उत्तर दिया जा सके।

स्वामी दयानन्द को जोधपुर में विष दिया जाना ?

कई लेखकों और विशेषतः कई आर्य समाजी लेखकों ने यह प्रचार किया है कि आर्य-समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द को जोधपुर में प्राणघातक विष दिया गया था, तथा यह विष महाराजा जसवन्तसिंहजी की एक रखैल नन्हीजान ने स्वामीजी के रसोइए से मिलकर दिलवाया था। कई लेखक अपनी बहक में यहां तक कह गये हैं कि स्वामीजी को विष एक सुनियोजित योजना के अनुसार दिया गया और इसमें अंग्रेजों का तथा सर प्रताप का हाथ था। इस तरह का अनर्गल आरोप कई लेखकों ने लगाया है और यह आरोप अब भी समय-समय पर पुस्तकों और लेखों में प्रकट होता रहा है। इस विषय पर अंग्रेजी के दैनिक "हिन्दुस्तान टाईम्स" के ख्यातनामा सपादक खुशवतसिंह ने भी (हिन्दुस्तान टाईम्स-२६ अक्टूबर १९८०) कलम चलाई थी। उनके लेख के प्रतिवाद में मैंने एक लेख लिखा था, परन्तु उपरोक्त सम्पादक ने वह लेख प्रकाशित नहीं किया। शायद इसलिए कि लेख के प्रकाशन से उनका ज्ञान व विद्वता सतही तथा थोथे प्रमाणित होते। इसी प्रकार भारत में सबसे अधिक बिक्री का दावा करने वाली पत्रिकाए 'मनोहर कहानियां' तथा

'नूतन कहानियां' ने भी उपरोक्त आरोप को बढा-चढा कर प्रकाशित किया है। इन पत्रिकाओ के सम्पादकों को भी मैंने प्रतिवाद स्वरूप लेख भेजे, परन्तु उनमे भी लेख को प्रकाशित करने का साहस नही था। केन्द्र सरकार के वर्तमान गृह-सचिव श्री टी०एन० चतुर्वेदी ने भी एक लेख मे स्वामी दयानन्द की मृत्यु का कारण उन्हे जोधपुर मे विष देना ही बताया है।

जोधपुर राजघराने तथा सर प्रताप पर स्वामी दयानन्द को विष देने या दिलाने का दोषारोपण कर आर्य समाज के लेखकों ने न केवल अनुत्तरदायित्व अपितु कृतघ्नता का भी परिचय दिया है। आर्य-समाज को जो प्रोत्साहन व समर्थन सर प्रताप तथा उनके कारण जोधपुर राज्य द्वारा मिला इतना समस्त देश मे कही पर भी न मिला। सर प्रताप व महाराजा जसवन्तसिह स्वय आर्य-समाज के सदस्य बने। राज्य मे आर्य-समाज को लगभग राज्यधर्म का स्थान दे दिया गया और उसके सिद्धान्तो को कार्यरूप दिया गया। राज्य मे मृत्युभोज बन्द कर दिया गया, मन्दिरो पर व्यर्थ के खर्चों पर रोक लगा दी गई तथा उर्दू के स्थान पर हिन्दी को शिक्षा व प्रशासन की भाषा बना दिया गया। आर्य-समाज के उपदेशको को राज्य के व्यय से धर्म-प्रचार हेतु राज्य के कोने-कोने मे भेजा जाता तथा उनके दौरो के कार्यक्रम राजपत्र मे अग्रिम प्रकाशित किये जाते। आर्य-समाज को ऐसी प्रतिष्ठा और मान्यता अन्यत्र कही भी प्राप्त नही हुई।

गहन अध्ययन व अनुसन्धान के परिणाम स्वरूप स्वामी दयानन्द को विष देने का तथ्य ही सदेहास्पद प्रतीत होता है और जोधपुर मे विष दिये जाने अथवा उनकी मृत्यु विष के कारण होना भी सदिग्ध प्रमाणित हो जाता है।

१ यदि स्वामीजी जैसे प्रसिद्ध व विद्वान् धर्माचार्य को विष दिया जाता तो इसकी गूज सारे देश मे फैलती और स्थान-स्थान पर न केवल विरोध प्रकट होता, परन्तु दगे भी होते। परन्तु ऐसा कुछ नही हुआ।

२ जिन लोगो ने स्वामीजी को विष देने की कथा का सृजन किया है उनके कथानको मे अनेको अश असत्य, अर्धसत्य और विरोधाभास युक्त है।

३ उदाहरण स्वरूप, स्वामीजी को विष देने वाले ब्राह्मण रसोइए के भिन्न-भिन्न नाम विभिन्न चरित्र लेखको ने अकित किए हैं। किसी ने रसोइए का नाम जगन्नाथ बताया है, तो किसी ने बल्देव, तो किसी ने कलुवा। इस प्रकार लगभग दस भिन्न-भिन्न नाम बताये गये है।

४ किसी भी लेखक ने यह दर्शाने का कष्ट नही किया है कि स्वामीजी को यदि विष दिया गया था तो इस विषय की शिकायत पुलिस मे अथवा अन्य स्थान पर क्यो नही की गई। अधिकाश लेखको ने यह लिखा है कि स्वय स्वामीजी को विष लेने का तुरन्त पता चल गया था परन्तु उन्होने रसोइये को रुपये देकर चुपचाप चले जाने के लिए कह दिया था। इस कहानी का कोई आधार नही है और यह कपोल कल्पित प्रतीत

होती है। स्वामीजी को जोधपुर राज्य के अतिथि के रूप मे ठहराया गया था और उनके साथ आए बीसियो शिष्यों के अतिरिक्त चारण नवलदान की देखरेख मे राजकीय सुरक्षा का प्रबन्ध भी था। क्या यह सम्भव है कि इतने व्यक्तियो के बीच में से तथा कडे सुरक्षा प्रबन्ध के होते हुए भी कोई व्यक्ति चुपचाप भाग सकता है। फिर क्या किसी भी रसोइए या अन्य व्यक्ति का स्वामीजी जैसे महान् व्यक्ति को जोधपुर मे विष देने का साहस हो सकता था विशेषत जबकि उसे महाराजा सर प्रताप जैसे कठोर प्रशासक का कोपभाजन बनना पडता और मृत्युदण्ड भुगतना पडता। विष देने वाले व्यक्ति के लिए उस समय के जोधपुर मे कदापि उचित स्थान नही हो सकता था।

५ सभी लेखक यह मानते है कि स्वामीजी का उपचार राज्य द्वारा शीघ्रताशीघ्र करवाया गया और पहले तो डाक्टर अलीमर्दान खां और उसके पश्चात् पश्चिमी राजस्थान के अधीक्षक सर्जन डाक्टर एडम्ज द्वारा उपचार किया गया। इन दोनो डाक्टरो ने अथवा अन्य किसी ने भी उस समय स्वामीजी के विषपान की शका व्यक्त नही की थी।

६ स्वामीजी तथाकथित विषपान (२९-९-१८८३) के पश्चात् एक माह तक जीवित रहे। डाक्टर एडम्ज की राय से उन्हे राज्य की ओर से माउन्ट आबू भिजवाया गया, जहा की यात्रा उन्होने पालकी तथा रेल द्वारा की। आबू से स्वामीजी अजमेर आए जहा उनका देहान्त दिनाक ३०-१०-१८८३ को हुआ। विषपान के पश्चात् क्या स्वामीजी द्वारा इतने दिन जीवित रहना व यात्रा की कठिनाइयो को सहन करना सभव था?

७ कई आर्य-समाजी लेखको ने इस बात को माना हैं कि आबू मे स्वामीजी कुछ समय के लिए स्वस्थ हो गये थे। यह समझ मे नही आता जब उनका इलाज विष के उपचार के लिए नही हुआ था तो वे स्वस्थ कैसे हो गये? उस काल म आर्य समाज का सबसे प्रमुख अग्रेजी मासिक पत्र 'दि आर्य' लाहौर से प्रकाशित होता था। स्वामीजी के देहावसान के पश्चात् उपरोक्त मासिक पत्र का जो सम्पादकीय लेख प्रकाशित हुआ वह उल्लेखनीय है। उपरोक्त लेख का अविकल हिन्दी अनुवाद निम्न प्रकार है—

स्वामी दयानन्द सरस्वती

"उनका देहावसान हो गया है और इसका गहन दु ख भारत के सभी पत्रो मे प्रकट किया है। दिनाक २६ सितम्बर को स्वामी दयानन्द सरस्वती को जुकाम (Catarrh) हो गया था और दिनाक २९ सितम्बर से उनके पेट मे फोडे हुए। उन्हे उल्टियाँ भी हुई परन्तु इससे पीडा कम नही हुई। उन्होंने दिनाक ३० सितम्बर को पानी से उबाली गई अजवाईन भी ली जिससे उन्हे कुछ दस्त लगे। दिनाक १५ अक्टूबर को स्वामीजी की बीमारी के समाचार हिजहाइनैस महाराजा जोधपुर के पास पहुँचे तो उन्होंने डाक्टर अलीमर्दानखा को स्वामीजी का उपचार करने के आदेश दिए।"

"दिनाक ३ अक्टूबर तक उपचार की गति धीमी रही, परन्तु दिनाक ४ अक्टूबर को पूरी मात्रा दी गई जिससे रोग और भी बढ गया। उन्हे लगातार दस्त होते रहे। उनके सुदृढ शरीर मे कमजोरी आ गई। उनके मुह पर फोडे उभर आए और मुह तथा गले मे फोडो के कारण वे आसानी से बातचीत भी नही कर सकते थे। उन्हे विस्तर से उठने और करवटें बदलने मे भी कई लोगो की सहायता लेनी पडती थी। दिनाक १६ अक्टूबर तक डाक्टर अलीमर्दानखा का इलाज जारी रहा और उसी दौरान डाक्टर सूर्यमल की सलाह भी ली जाती थी। कोई उपचार सफल नही हुआ और उल्टे हिचकी की बीमारी भी हो गई। इस पर डाक्टर एड्म्ज की सलाह ली गई और उन्होंने आबोहवा बदलने हेतु स्वामीजी को आबू पहाड पर ले जाने की सलाह दी। महाराजा जोधपुर ने स्वामीजी को इस हालत म आबू भेजने से इन्कार कर दिया। परन्तु जब स्वामीजी ने आग्रह किया कि उन्हें पहाड पर भेज दिया जाय तो महाराजा को यह आग्रह स्वीकार करना पडा।"

"महाराजा ने स्वामीजी को दो हजार रुपये भेट दिये, जो स्वामीजी ने उसी समय बम्बई आर्य समाज को भेज दिये। कई शाही तम्बू, ६ घुडसवार, प्रहरी, बत्तीस कहार व पालकी-बरदार तथा कई दरबारी स्वामीजी के साथ भेजे गये, और स्वामीजी के प्रति आदर हेतु महाराजा भी स्वामीजी की पालकी के साथ दो सौ कदम तक पैदल गये। महाराजा ने यह भी विज्ञापन प्रकाशित कराया कि जो डाक्टर स्वामी का इलाज कर देगा उसे दो हजार रुपये का इनाम दिया जायेगा।"

"जब स्वामीजी आबू पहुँचे तो एक पजाबी सज्जन डाक्टर लक्ष्मणदास न उनका इलाज शुरु किया। यह इलाज सफल रहा और स्वामीजी की हिचकिया व दस्तें बन्द हो गई। फिर स्वामीजी ने अजमेर जाने का विचार प्रकट किया। इसे बिना किसी आपत्ति के मान लिया गया। अपने को सफल पाकर डाक्टर लक्ष्मणदास स्वामीजी का इलाज उस समय तक जारी रखना चाहते थे जब तक कि स्वामीजी पूर्णत निरोग न हो जायें। परन्तु डाक्टर लक्ष्मणदास को एक दिन भी आबू नही ठहरने दिया गया। उसने इस्तीफा दिया, परन्तु उसे मन्जूर नही किया गया। इसलिए उसे माउन्ट आबू से बाध्य होकर जाना पडा। लेकिन जान स पहले स्वामीजी से निवेदन किया कि वे अजमेर आ जायें। इस निवेदन को स्वामीजी ने स्वीकार नही किया। पर स्वामीजी के शिष्य व सेवक डाक्टर लक्ष्मण दास के इलाज से सन्तुष्ट होकर, स्वामीजी की इच्छा के विरुद्ध उन्हे अजमेर ले आए, जहा पर उनका रोग श्रेष्ठ उपचार व साधनो के बावजूद भी बढ गया। और अन्त म उनका देहावसान दिनाक ३० अक्टूबर १८८३ को हो गया।"

"अपन देहावसान के एक घण्टे पहले स्वामीजी ने अपने आपको विस्तर पर बैठा दिया और घोषणा की कि वे बीमारी से पूर्णतया मुक्त है। इस बैठी हुई मुद्रा मे वे ध्यानावस्थित हो गये और ईश्वर की आराधना करने लगे। थोडी देर बाद विस्तर पर लेट गये और उपस्थित लोगो को बाहर जाने को कहा, जिससे कि उनका दिमाग इधर-उधर न जाये। फिर वे ईश्वर की प्रार्थना हिन्दी मे गाने लगे। उसके बाद उन्होंने कुछ वैदिक मन्त्र बोले

अपने हाथ फैलाए और फिर श्रद्धा से हाथ जोडकर ईश्वर का मनन किया, दायी करवट ली और ऐहिक शरीर का त्याग कर दिया।"

"उनकी मृत्यु ५९ वर्ष की उम्र मे हुई। वे अन्तिम समय तक होश मे थे। उनके मृतक शरीर को गेरुआ वस्त्र मे लपेटा गया। लकडी का चबूतरा बनाया गया जिसके सभी ओर ध्वजायें व केले के पत्ते लगाये गये। स्वामीजी की शवयात्रा मे बगाली, हिन्दुस्तानी मारवाडी थे और वे वैदिक मन्त्रो का उच्चारण कर रहे थे। दो मन चन्दन की लकडी, ८ मन साधारण लकडी, ४ मन घी और अढाई सेर कपूर दाह-क्रिया मे प्रयोग किया गया।"

उपरोक्त सम्पादकीय मे स्वामीजी को विष देने का कही भी उल्लेख नही हैं। इसके विपरीत स्वामीजी की बीमारी को स्पष्टत कोराइजा (जुकाम अथवा अतिसार) बताया गया है। यदि स्वामीजी को विष दिया गया होता तो उपरोक्त सम्पादकीय आग उगलता और जोधपुर और वहा के राजपरिवार तथा विशेषत सर प्रताप के विरुद्ध न मालूम कितना विषवमन करता। परन्तु सम्पादकीय म जोधपुर के महाराजा और उन द्वारा स्वामीजी को दी गई सम्मानपूर्वक विदाई की प्रशसा की गई है। इस लेख से यह भी पता चलता है कि महाराजा जसवन्तसिहजी ने स्वामीजी को वह सम्मान दिया जो उनकी बराबरी के राजाओं को भी नसीब नही होता था। महाराजा ने दो हजार रुपये का इनाम भी सफल उपचार करने वाले के हेतु घोषित किया। इस राशि का आज के भाव मे मूल्य दो लाख रुपये के बराबर है। इस सम्पादकीय मे स्पष्ट हो जाता है कि जोधपुर राजघराने ने (सर प्रताप की प्रेरणा से) स्वामीजी को अद्वितीय आदर व सम्मान दिया तथा उनके इलाज के लिए कोई कसर उठा नही रखी।

स्वामीजी के देहावसान के समय जोधपुर मे तत्कालीन राजपूताने के एक प्रतिष्ठित विद्वान् बारहठ कृष्णसिहजी सौदा (प्रसिद्ध क्रातिकारी केसरीसिहजी बारहठ, कोटा के पिता) भी उपस्थित थे। ये स्वामीजी के परमभक्त थे तथा स्वामीजी के उपदेश चित्तौड एव उदयपुर मे सुन चुके थे। उन्हाने स्वामीजी के देहावसान के कुछ समय पश्चात् ही एक ग्रथ "राजपूताने का अपूर्व इतिहास" के नाम से लिखना प्रारम्भ किया। वह ग्रन्थ अभी तक अप्रकाशित है। इसम कई ऐसे तथ्य दिये गये है जो अब तक किसी पुस्तक या लेख मे प्रकट नही हुए है। बारहठजी ने दयानन्दजी के देहावसान के विषय मे जो उल्लेख किया है वह निम्न प्रकार है—

"स्वामी दयानन्दजी ने सात महीने तक उदयपुर मे रहकर पहले तो शास्त्रार्थ और फिर उपदेश किया पश्चात् अपने बाद अपने कायम मुकाम एक सभा मुकर्रर करके महाराणा सज्जनसिह को सभापति बनाकर सभा का नाम "परोपकारणी" रखा जिसमे और भी कई एक मैम्बर मुकर्रर किए। इसके साथ ही दयानन्द सरस्वती ने अपना वसीयतनामा (नियम-पत्र) बनाया जिसमे लिखा कि मेरे देहान्त के बाद मेरे स्थानापन्न किसी को नही बनाया जाये। यह परोपकारणी सभा ही मेरे स्थानापन्न रहकर वेदविद्या

पढ़ाना व अनाथा की पालना करना, अच्छे सत्यवक्ता विद्वानों को उपदेशक रखकर वेद मत का प्रचार कराना आदि परोपकारी कार्य करावें। इन नियमों के पालन का कुछ भार महाराणा सज्जनसिंह पर छोड़कर स्वामी दयानन्द फागुन महीने में उदयपुर से साहपुरे गये और राजाधिराज नाहरसिंह को उपदेश दिया। फिर जोधपुर गये वहा कई व्याख्यान दिये और महाराजा जसवन्तसिंह को उत्तम उपदेश दिये, परन्तु महाराजा के मर्जीदान मुसलमानों के और नन्ही रण्डी के सबब महाराजा पर स्वामी दयानन्द के उपदेशों ने असर नहीं किया। परन्तु महाराजा जसवन्तसिंह के छोटे भाई महाराजा प्रतापसिंह ने इनके उपदेशों से बहुत लाभ उठाया। जोधपुर के ब्राह्मणों ने एकत्रित होकर शास्त्रार्थ करना चाहा। परन्तु इन बेचारे निरक्षरों की क्या ताकत थी जो उनके आगे ठहर सकते। आखिरकार जोधपुर के स्वार्थी ब्राह्मणों ने इनके रसोइदार को मिलाकर स्वामी दयानन्द सरस्वती को जहर दिलाया। इससे सख्त बीमार होकर इलाज कराने को जोधपुर से आबू गये परन्तु वहा ज्यादा ठहरना न होकर अजमेर आए, जहा पर सम्वत् १९८० कार्तिक वद अमावस्या मंगलवार (दीपमालिका) के दिन अजमेर में इनका देहान्त हो गया। डाक्टरों ने इनको 'निमूनिया' अर्थात् फैफड़ा की बीमारी होना जाहिर किया। इससे जहर होने बाबत हम अपनी राय जाहिर नही कर सकते। परन्तु इतना अवश्य कहते हैं कि इस सन्यासी अद्वितीय पण्डित का इतना जल्दी देहान्त हो जाना भारतवर्ष के निवासी भारतीयों का हत-भाग्य था। इनकी विद्वता के कारण ईसाई पादरी परास्त होकर आर्य लोगों को ईसाई बनाने मे निराश हो गये थे और स्वार्थी ब्राह्मणों की फैलाई हुई ब्रह्मजाल भी टूटकर पाखण्डियों का पाखण्ड टूटने पर आ गया था। इसी तरह गोकलये गुसाई, रामस्नेही आदि लोग इनसे परास्त होकर अपना दम गिनने लगे थे। इनकी अपूर्व विद्वता तो अनेक बनाए हुए ग्रंथों से सिद्ध हो सकती है। परन्तु इनकी हाजिर जबाबी इस ग्रंथकर्ता 'बारहठ किसनसिंह' ने देखी है जिसके आगे किसी शास्त्रार्थ करने वाले का टिकना असम्भव था।"

उपरोक्त उद्धरण (जिसकी फोटोस्टेट कापी मेरे पास है) से दो महत्वपूर्ण तथ्य प्रकट होते हैं। एक तो यह कि स्वामीजी को विष यदि दिया गया तो महाराजा की किसी रखैल ने न दिलाकर स्थानीय ब्राह्मणों ने उनके रसोइये से मिलकर दिलाया था। दूसरा तथ्य यह है कि स्वामीजी की मृत्यु निमूनिया से हुई। स्वामीजी के जोधपुर प्रवास के एक वर्ष पश्चात् ही वहा पर कानोता(जोधपुर) के ठाकुर अमरसिंह रहने लगे थे। वे समयान्तर मे जयपुर राज्य के सेनाध्यक्ष बने। जोधपुर मे वे महाराजा सर प्रताप के सरक्षण एव अभिभावकत्व मे रहते थे और सदा अपनी डायरी लिखते थे। यह डायरी विश्व की सबसे बडी (८४ जिल्दें) डायरियों मे गिनी जाती है। इस डायरी में भी स्वामी दयानन्दजी को विष देने का कही भी उल्लेख नही है। इस डायरी के अश गत ८-९ वर्ष से लगातार जयपुर की दैनिक 'राजस्थानी पत्रिका' मे धारावाहिक रूप से प्रकाशित हो रहे है। इस डायरी के लेखक ने सर प्रताप की निराधार आलोचनाएँ भी की है और यदि जोधपुर मे सर प्रताप के प्रशासन काल मे स्वामी दयानन्द जैसी महान् विभूति को विष दिया जाता तो डायरी का लेखक इस तथ्य का अवश्य उल्लेख करता। लेखक ने स्वामीजी के चित्तौड व उदयपुर

प्रवास का तथा अपने पिता नारायणसिंह का स्वामीजी से वाद-विवाद का उल्लेख किया है। यदि बाद मे जोधपुर मे विष देने की घटना हुई होती तो इसका भी उल्लेख किया जाता।

शारदा एक्ट के ख्यातनामा प्रस्तावक (बाद मे दीवान बहादुर) श्री हरविलासजी शारदा भारत के प्रमुख आर्य समाजियो मे से रहे है। वे स्वामीजी द्वारा स्थापित परोपकारिणी सभा के प्रधानमन्त्री भी रहे। वे अजमेर के निवासी थे और स्वामीजी के देहावसान के समय वहा थे। उन्होने अंग्रेजी मे 'स्वामी दयानन्द का जीवन चरित्र' लिखा है। इसमे उन्होने स्वामीजी को जोधपुर मे विष देने अथवा स्वामीजी की मृत्यु विषपान के कारण होने का कही भी उल्लेख नही किया है। यदि स्वामीजी को विष दिया जाता अथवा उनकी मृत्यु विष से होती तो शारदाजी जैसे प्रकाण्ड विद्वान् और कट्टर आर्यसमाजी इसका उल्लेख अवश्य करते। शारदाजी ने अपनी पुस्तक मे स्वामीजी को अनूपशहर (उत्तरप्रदेश) मे एक ब्राह्मण द्वारा पान मे विष दिये जाने का उल्लेख अवश्य किया है। यदि जोधपुर मे विष दिया गया होता तो इसका उल्लेख भी वे अवश्य करते। स्वामी दयानन्द का आधुनिकतम जीवन चरित्र आस्ट्रेलिया की नैशनल युनिवर्सिटी, कैनबरा के प्रोफेसर जे०ई०टी० जोर्डन्स ने लिखा है। यह पुस्तक उनके द्वारा भारत मे पाच वर्षों तक किये गये अनुसधान का परिणाम है। इस पुस्तक के विद्वान् लेखक ने स्वामीजी को विष देने की घटना को अविश्वसनीय माना है और लिखा है कि आर्य समाज का एक वर्ग स्वामीजी को शहीद दर्शाने की आकाक्षा से इस घटना को अनावश्यक रूप से उजागर करता है। उपरोक्त पुस्तक की प्रशसा कई आर्य समाजी विद्वानो ने की है।

स्वामीजी को विष देने का कोई कारण भी होना चाहिये था। नन्हीजान ने विष दिया तो किस कारण से? कई आर्यसमाजी लेखक तो लिखते हैं कि स्वामीजी ने नन्ही जान का घोर अपमान किया था, जिससे वह प्रतिशोध लेना चाहती थी। लेखको ने कहा है कि एक बार स्वामीजी जोधपुर के राजमहल मे अचानक ही चले गये और वहा महाराजा जसवन्तसिंह को नन्हीजान के साथ बैठा देखकर कहा कि "एक सिंह का कुतिया से सम्बन्ध रखना लज्जा की बात है।" कई लेखको ने कहा है कि यह बात स्वामीजी ने एक पत्र मे लिखकर महाराजा को भेजी थी। अन्य लेखको ने लिखा है कि एक बार स्वामीजी जोधपुर के राजमहल मे अचानक गये तो पाया कि महाराजा स्वय नन्ही जान की पालकी के कधा देकर उसे रनवास मे पहुँचाने जा रहे थे। इस अवसर पर स्वामीजी ने महाराजा को उपरोक्त ताडना दी। ये सभी कहानिया विरोधाभास युक्त है और लेखको के उर्वरक मस्तिष्क की उपज हैं। यह आसानी से नही माना जा सकता है कि स्वामीजी बिना पूर्व सूचना के ही जोधपुर राजमहल के अन्दर चले गये। यह भी नही माना जा सकता कि महाराजा को स्वामीजी के आने के पूर्व सूचना किसी भी स्रोत से नही मिल पायी। यह भी मानने योग्य नही है कि नन्ही जान की पालकी को महाराजा द्वारा स्वय कन्धा दिया गया था, जबकि इस कार्य के लिए सैकडो पालकी बरदार उपस्थित रहते थे। फिर जोधपुर के राजमहल के

मरदाने भाग से जनाना भाग जुड़ा हुआ है जिसमे जाने के लिए पालकी की आवश्यकता ही नही हो सकती ।

कई आर्य-समाजी लेखको ने स्वय माना है कि स्वामीजी कभी जोधपुर के राज-महलो मे गये ही नही । स्वामीजी द्वारा जिस पत्र के भेजे जाने की कहानी लिखी गई है, वह पत्र कही भी किसी को देखने को आज तक नही मिला । इन सभी बातो मे एक ही अनिवार्य निष्कर्ष निकलता है कि लेखको ने पूर्वाग्रहो से ग्रसित होकर अपनी कल्पना के आधार पर ये कथायें सृजित कर ली हैं ।

फिर अधिकाश लेखको ने महाराजा की जिस मुसलमान रखैल नन्हीजान का उल्लेख किया है वह स्वामीजी के जोधपुर प्रवास के समय वहा पर थी ही नही । उसे सर प्रताप के कुशल प्रयत्नो से जोधपुर से निकाला जा चुका था और उसका स्थान एक हिन्दू "नैनी भगतण" ने ले लिया था । यह हिन्दू रखैल एक शालीन, समझदार एव धार्मिक प्रवृत्ति की स्त्री थी । इसका बनाया हुआ एक विशाल मन्दिर 'नैनीजी का मन्दिर" जोधपुर (उदय मन्दिर) म आज भी स्थित है । इसके परिवार के लिये बनाया हुआ बगला "भगत की कोठी" के नाम से जाना जाता था जो अब एक रेल्वे स्टेशन का भी नाम हो गया है । इस नैनी ने अपनी सारी जायदाद एव मदिर मृत्यु से पहले राज्य का समर्पित कर दिये थे । ऐसी धार्मिक स्त्री द्वारा स्वामीजी को विष देने का न तो कोई कारण था न इसका कोई प्रमाण ही ।

अग्रेजो द्वारा स्वामीजी को विष देने के षडयन्त्र की कथा भी बिल्कुल निराधार है । स्वामीजी ने कभी भी राजनीति मे भाग नही लिया और न वे कभी अग्रेजो के विरुद्ध ही बोले । अग्रेज तो स्वय आर्य समाज के सिद्धातो के प्रशसक थे । आर्य समाजी लेखको ने स्वामीजी को एक क्रातिकारी देश भक्त का रूप देने के लिए कई कथाएँ गढ डाली । कइयो ने तो यहा तक लिख दिया कि सन् १८५७ का सैनिक विद्रोह (गदर) भी स्वामीजी की प्रेरणा से हुआ था और नानाजो पेशवा तथा तात्या टोपे स्वामीजी से दिल्ली मे कई बार मिले और उन्हे स्वामीजी ने विप्लव के लिए उकसाया । यह एक ऐतिहासिक तथ्य माना गया है ।क नानाजी पेशवा की सैनिक विद्रोह मे रुचि नही थी और उन्हे बाध्य होकर कानपुर के विद्रोही सैनिको से सहयोग करना पडा था ।

दु ख का विषय है कि सत्य के महान् पुजारी एव पुनर्संस्थापक स्वामी दयानन्द के अनुयायियो ने स्वामीजी का जीवन-चरित्र लिखते समय सच्चाई की स्थान स्थान पर घोर उपेक्षा की है । 'सत्यार्थ प्रकाश' के महान् लेखक का चरित्र असत्य तथ्यो के समावेश से उन्ही के अनुयायियो द्वारा लिखा जाना निश्चिय ही विडम्बना एव दुर्भाग्य की बात है ।

स्वामीजी को विष देने सम्बन्धी विवाद का निराकरण अन्तिम रूप से राजाधिराज माहर्रासहजी शाहपुरा ने कर दिया था । उन्होने १९२५ मे स्वामीजी की जन्म शताब्दी के अवसर पर आर्य समाज द्वारा मथुरा मे आयोजित विशाल समारोह मे अपने अध्यक्षीय

भाषण मे कहा था कि स्वामीजी को विष देने की बात निरी कल्पना है। उन्होंने यह भी कहा था कि जो रसोइया जोधपुर मे स्वामीजी के साथ था वह उन्ही के द्वारा शाहपुरा से भेजा गया धौंध मिश्र था। राजाधिराज अपने समय के सर्वाधिक प्रतिष्ठित आर्य-समाजी रहे हैं और महाराणा सज्जनसिंह के पश्चात् वे ही स्वामीजी द्वारा स्थापित परोपकारिणी सभा के अध्यक्ष चुने गये थे। उनके उपरोक्त कथन के पश्चात् स्वामीजी को विष देने सबधी विवाद सदा के लिए शात हो जाना चाहिए था। परन्तु अब भी आर्यसमाजी तथा अन्य लेखक विष पान की घटना तथा उसमे जोधपुर राजघराने एव सर प्रताप का हाथ होने की कथा को बार-बार उछालते रहते हैं। कुछ आर्यसमाजी विद्वान अब इस बात को मानने हेतु बाध्य हुए हैं कि स्वामीजी को विष देने की कथा का कोई आधार नही है और स्वामीजी को एक महान् शहीद चित्रित करने की भावना से प्रेरित होकर ही इस कथा की रचना की गई है।

दु ख का विषय है कि आर्य-समाज के कई लेखकों ने स्वामीजी की विषपान की कथा पर कलम चलाते समय समस्त मारवाड निवासियो का अपमान करने का भी दु साहस किया है। कई लेखकों ने लिखा है कि जब स्वामीजी शाहपुरा से जोधपुर जाने लगे तो उनके अनेक अनुयायी आर्य समाजियो ने उनसे यह निवेदन किया कि—"आप उस असभ्य प्रदेश मे मत जाइए। वहाँ के मनुष्य गवार और कठोर प्रकृति के हैं और वहाँ आपको हानि पहुँचाई जा सकती हैं।" स्वामीजी के मुह से यह उत्तर दिलवाया गया कि "मैं जोधपुर अवश्य जाऊगा चाहे ऐसा करने मे मुझे प्राणो की भी बलि देनी पडे।"

इस प्रकार के सवाद नि सन्देह स्वामीजी की प्रतिष्ठा को बढ़ाने के लिए कल्पना के आधार पर गुम्फित किए गए है। इस तरह की अनर्गल बातें लिखते समय नि सन्देह लेखकों की बुद्धि उत्तर दे चुकी थी और वे भूल गये थे कि मारवाड-प्रदेश ,हिन्दू-सस्कृति, सभ्यता एव शिष्टाचार का सर्वश्रेष्ठ स्थान रहा है और जो सम्मान एव प्रतिष्ठा स्वामीजी व आर्य-समाज को यहा मिली वैसी किसी भी अन्य प्रदेश मे नही मिली।

स्वामीजी के एक चरित्र-लेखक ने अपनी बहक मे यहा तक लिख डाला—"मारवाड के कई प्रतिष्ठित व्यक्ति अपनी पुत्रियो का विवाह मुसलमानों से कर दिया करते थे। यह प्रथा महर्षि के काल मे जारी थी इससे उन हिन्दू नारियो का धर्मपरिवर्तन तो होता ही था साथ ही उससे हिन्दू वर्ग का जातीय पतन भी होता था। महर्षि ने ऐसे हिन्दुओ को बडे कठोर शब्दो मे फटकारा और प्रतिज्ञा ली कि आइन्दा ऐसा नहीं करेंगे। इस तरह महर्षि के प्रयास से कई ललनाओ का उद्धार हो गया।" यह कहने की आवश्यकता नही कि लेखक का यह कथन सरासर झूठा और मन गढन्त है।

उपरोक्त उदाहरणो से पता चलता है कि किस प्रकार अनुत्तरदायी लेखकगण अपने चरित्र नायक की छवि को सुधारने हेतु अन्य लोगो की छवि को विकृत करने के हीन कर्म से सकोच नही करते। कई आर्य-समाजी लेखको ने सर प्रताप के विरुद्ध स्पष्टत दुर्भावना से प्रेरित होकर लिखा है। स्वामी दयानन्द के देहावसान के पश्चात् आर्य-समाज मे कई तरह

की दलबन्दियां उभर कर आई थी। एक दल मासाहारियो का बन गया था तो दूसरा शाकाहारियो का बन गया। एक दल आधुनिक शिक्षा-पद्धति के अग्रेजी कॉलेज—"दयानद एग्लो वैदिक (डी ए वी कॉलेज) के नाम से शिक्षा सस्थाएं स्थापित करने के पक्ष म था तो दूसरा प्राचीन पद्धति के अनुसार गुरुकुल स्थापित करने के पक्ष मे था। लाला लाजपतराय तथा महाराजा सर प्रताप मांसाहार को वर्जित नही मानते थे। सर प्रताप ने जैसा कि उन्होने अपने आत्मचरित्र मे लिखा है, स्वामी दयानन्दजी से भी मांसाहार की अनुमति ले ली थी। वे आधुनिक पद्धति की अग्रेजी शिक्षा के भी पक्षपाती थे। शाकाहारी व गुरुकुल के पक्षपाती आर्य-समाजी लोगो ने सर प्रताप के विरुद्ध बहुत कीचड उछाला। परन्तु इससे उनकी स्वय की प्रतिष्ठा को ही आघात पहुँचा। सर प्रताप की प्रतिष्ठा आर्य जगत मे उच्चतम बनी रही। इसका एक प्रमाण यह है कि सन् १८०५ मे लाहौर के प्रसिद्ध डी ए वी कॉलेज के शिलान्यास हेतु उन्हे ही आमन्त्रित किया गया। इस कॉलेज के सस्थापक और आर्य-समाज के शीर्षस्थ नेता लाला हसराज सर प्रताप से घनिष्ठता रखते थे और कुछ वर्षो पश्चात् उनसे मिलने हेतु ईडर भी गये थे।

सर प्रताप के अग्रेजो से सम्बन्ध

सर प्रताप के विरुद्ध एक बात प्राय कही जाती है कि वे अग्रेजो के खुशामदी थे। इस प्रकार के लाछन ओरो ने तो मौखिक रूप से लगाये हैं, लेकिन कानोता के अमरसिंह ने अपनी डायरी मे भी यह आरोप बार-बार दोहराया है। यहां यह अकित करना अप्रासगिक न होगा कि अमरसिंह की डायरी अपने आप मे एक अनोखी कृति है परन्तु उसमे लिखी हुई सभी बातो को हम बिना छानबीन किये स्वीकार नही कर सकते। इस डायरी मे अनेक तथ्य पक्षपातपूर्ण, एकपक्षीय व दुर्भावनापूर्ण है, अत उसमे से हमे भूसा अलग करके धान को छाटने का कष्ट करना पडेगा। अमरसिंह ने सर प्रताप के विषय मे कई निराधार बातें लिखी है और इन बातो को लोग सही मान सकते है क्योकि अमरसिंह सर प्रताप के कृपापात्रो मे रहे थे। अभी तक यह डायरी प्रकाशित नही हुई है, परन्तु उसके कुछ अश पिछले ८-९ वर्षों से 'राजस्थान पत्रिका' मे धारावाहिक रूप से प्रकाशित होते रहे हैं। सर प्रताप विषयक प्रकाशित होने वाले इन असत्य तथ्यो के प्रति यदि मौन रहा जाता है या उनका प्रतिवाद नही किया जाता है तो यह तो यह एक प्रकार की स्वीकारोक्ति समझी जावेगी। इस विषय मे मैं अपने एक लेख को जो 'राजस्थान पत्रिका' के रविवारीय अक (दिनाक २२ मई, १९८३) मे प्रकाशित हुआ था अविकल रूप से उद्धृत करना समीचीन समझता हूँ—

"सर प्रताप बनाम अमरसिंह"

"राजस्थान पत्रिका के स्तम्भ "नगर परिक्रमा" मे स्वर्गीय जनरल अमरसिंह (काणोता) की जो डायरी "नागरिक" के नाम से धारावाहिक प्रकाशित की जा रही है वह कई अर्थो मे एक अनुपम कृति है। परन्तु इसमे अमरसिंह ने अपने परिवार के हितैषी, सरक्षक

एव स्वय के अभिभावक महाराजा सर प्रतापसिंह के प्रति न्याय नही किया है। प्रारम्भ मे तो अमरसिंह ने कई वर्षो तक सर प्रताप की मुक्तकठ से प्रशसा की है, किन्तु बाद के वर्षों मे अपनी डायरी मे सर प्रताप की छवि को बिगाडने का अप्रशसनीय कृत्य किया है। इससे स्वय अमरसिंह की छवि ही कलुषित हुई है। सर प्रताप मारवाड (जोधपुर) के महाराजा जसवन्तसिंह के लघु भ्राता थे। कालान्तर मे वे स्वय ईडर राज्य के शासक बन गये परन्तु मारवाड के हित मे अपने भतीजे दौलतसिंह को जोधपुर से गोद लेकर ईडर की गद्दी पर बैठा दिया और स्वय मारवाड की सेवा मे लगे रहे। वे महाराजा सरदारसिंह सुमेरसिंह और उम्मेदसिंह की नाबालगी एव अन्य समय मे रीजेन्सी कौंसिल के अध्यक्ष एव रीजेन्ट के रूप मे कार्य करते रहे। उनकी और अमरसिंह के परिवार की कोई बराबरी नही थी। अमरसिंह के दादा जोरावरसिंह मारवाड के पीलवा ग्राम के साधारण राजपूत थे। उन्होने तथा उनके भाइयो, फतहसिंह व शम्भुसिंह ने अपनी योग्यता से जयपुर नरेश महाराजा रामसिंह की कृपा प्राप्त की और जागीरे (काणोता, नायला, गौनेर-साथा) भी पाई। सर प्रताप और अमरसिंह के परिवार की हैसियत मे महान अन्तर होते हुए भी सर प्रताप ने काणोता के नारायणसिंह चापावत को अपना मित्र बनाया तथा उन्हे हमेशा बराबरी का सम्मान दिया। उनके पुत्र अमरसिंह (डायरी लेखक) को अपने पुत्र की भाति सरक्षण एव प्रशिक्षण देकर इस योग्य बना दिया कि वे अन्ततोगत्वा जयपुर राज्य की सेना के सेनाध्यक्ष बने तथा जयपुर के सरदारो मे एक विशिष्ट स्थान बना पाये। यह सरप्रताप की ही कृपा का परिणाम था। दु ख का विषय है कि अमरसिंह एक ओर तो सर प्रताप की कृपा का पूर्ण लाभ उठाते रहे और दूसरी ओर अपने कृपालु सरक्षक की निराधार निंदा से अपनी डायरी के पृष्ठ चुपचाप काले करते रहे।"

"सर प्रताप ने अमरसिंह को जोधपुर मे अपने पास रखा तथा जोधपुर रिसाले म रिसालदार का पद दिया। अमरसिंह का विवाह भी सर प्रताप (सरकार) ने करवाया। उस विवाह मे सर प्रताप अमरसिंह के पिता के स्थान पर रहे। जयपुर से अमरसिंह के पिता, दादा अथवा परिवार के किसी अन्य सदस्य को (सिवाय अमरसिंह के छोटे भाई शिवनाथसिंह के, जो उन दिनो जोधपुर मे ही थे) नही बुलाया गया। जब सर प्रताप चीन के बॉक्सर युद्ध म जोधपुर रिसाले को लेकर गये तो अमरसिंह को भी अपना ए०डी०सी० बनाकर ले गये। *स्वय अमरसिंह ने अपनी डायरी मे स्थान-स्थान पर लिखा है कि उन्होने जो कुछ योग्यता* एव अनुभव प्राप्त किया वह सरकार (सर प्रताप) की कृपा का ही परिणाम था।"

"अमरसिंह ने सर प्रताप की आलोचना मे जो कुछ लिखा है उसका विस्तृत विश्लेषण व उत्तर सक्षेप मे देना सम्भव नही है, इसके लिए तो एक पूरी पुस्तक की आवश्यकता है। फिर भी मैं कुछ तथ्य प्रस्तुत करना चाहूगा जिससे कि सर प्रताप के जीवन को सही परिप्रेक्ष्य मे देख सकें और सही दृष्टिकोण म आक सकें।"

"सर प्रताप एक युग पुरुष थे। उन्हें औपचारिक शिक्षा नाममात्र की ही मिली थी। वे हिन्दी भी ठीक तरह से लिख-पढ नही सकते थे, परन्तु वे एक विलक्षण प्रतिभा व साहस

व धनी थे। जिस योग्यता से उन्होंने मारवाड के चार राजाओं के राज्यकाल में तथा ईडर राज्य मे सुदृढ एव उन्नत शासन की स्थापना की उसका उदाहरण अन्यत्र पाना कठिन है। उनको पग-पग पर सघर्षों का सामना करना पडा। सर प्रताप अनेकानेक कठिनाइयो से टक्कर लेकर अपने महान् उद्देश्यों की पूर्ति करने में सफल हुए।"

"उनके पिता महाराजा तख्तसिंह एव बडे भाई महाराज कुमार जसवन्तसिंह मे जब मनमुटाव चरम सीमा पर पहुँच गया तो वे मारवाड त्यागकर चुपचाप जयपुर म आ गये। वहाँ उनके बहनोई महाराजा रामसिंह ने उनका स्वागत किया। सर प्रताप को बारह वर्ष जयपुर मे व्यतीत करने पडे। बाद म अपने बडे भाई महाराजा जसवन्तसिंह के शासनकाल मे उन्हे कई शक्तिशाली तत्वो से टक्कर लेनी पडी। महाराजा अपनी रखैल नन्हीजान एव उसके रिश्तेदार फैयाजुल्ला खा (दीवान) के चगुल में थे। उन दोनो के चगुल से महराजा को निकालना सर प्रताप के ही बलबूते का काम था। फिर उन्हे राज्य के मुसद्दिया एव जागीरदारा के विरोध का भी सामना करना पडा। उन्होंने समाज सुधार के उद्देश्य से स्वामी दयानन्द सरस्वती को आमत्रित किया एव उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाज के सिद्धातो को क्रियान्वित किया। इससे परम्परावादी सामन्त, मुसद्दी एव पण्डित लोग सर प्रताप के विरोधी हो गये।"

"उन्हे फिर महाराजा सरदारसिंह के राज्यकाल मे स्वय महाराजा तथा सर सुखदेव प्रसाद जैसे घाघ के कुचक्रो से सघर्ष करना पडा। लगभग ऐसी ही हालत महाराजा सुमेरसिंह के समय म भी रही, परन्तु सर प्रताप की अटूट निष्ठा एव भक्ति मारवाड के प्रति थी और उसी के कारण उन्होंने किसी की भी परवाह किये बिना अपने अदम्य साहस एव योग्यता के बल पर राज्य मे सुदृढ शासन की स्थापना की। अनेकानक सुधार करके आधुनिकीकरण का ऐसा अभियान चलाया जिसने जोधपुर राज्य को भारत के अग्रणी राज्या की श्रेणी मे ला खडा किया। कानून व व्यवस्था की स्थापना, डाकुओ एव लुटेरो की सफाई, राजस्व, जकात, जगलात एव सेना आदि विभागो मे अभूतपूर्व सुधार किये। राज्य म रेल लाइनो का जाल बिछा दिया। बालसमद, प्रतापसागर (कायलाना) और जसवन्तसागर (पिचियाक) जैसे बाधो का निर्माण किया। अनेक शिक्षण सस्थायें स्थापित की। पुरुषो और महिलाओ के लिए बडे अस्पताला की स्थापना की। राज्य के विभिन्न विभागो से भ्रष्टाचार का उन्मूलन किया। पोलो के खेल को न केवल जोधपुर अपितु अन्य भारतीय राज्या म भी उन्नति के शिखर पर पहुँचा दिया तथा जोधपुर की टीम विश्व की सर्वश्रेष्ठ पोलो टीम मानी गई। जोधपुर म अनेक इमारते बनवायी और एक नई स्थापत्य कला को जन्म दिया। जोधपुर का ससार प्रसिद्ध कोट एव ब्रीचिस सर प्रताप की ही देन हैं। जिन विपरीत परिस्थितियो एव सघर्षो मे सर प्रताप ने मारवाड एव उसकी जनता की सेवा की वह अपने आप म अद्वितीय है। इस समस्त सेवा के बदले सर प्रताप ने मारवाड राज्य मे छोटी सी जागीर भी नही ली।"

"अमरसिंह ने जिन विन्दुओ पर सर प्रताप की आलोचना की है वे अत्यन्त साधारण कोटि के हैं। उनमे से एक विशिष्ट विन्दु दृष्टिगोचर होता है और वह यह है कि सर प्रताप अग्रेजों की खुशामद करते थे। इस आलोचना के उत्तर मे हमे देश, काल, पात्रो एव ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को दृष्टिगत रखना होगा। अग्रेजो के प्रति आस्था एव मुसलमानो के विरुद्ध दुराव सर प्रताप को अपने पिता महाराजा तखतसिंह से धरोहर मे मिला था। उन्ही महाराजा के समय मे १८५७ का गदर हुआ था और उन्होंने यथाशक्ति अग्रेजा का पक्ष लिया था। उनका मानना था कि भारत के हित मे मुगल शासन का अन्त होना चाहिए। उनकी धारणा थी कि अग्रेजो का शासन मुसलमानो के शासन से कई अर्थों मे भारत के लिए अधिक हितकारी होगा। सर प्रताप ने अपने पिता के इस तर्क और विचारधारा का अनुगमन किया। फिर मारवाड राज्य के एक वडे भाग ऊमरकोट (जो हिन्दू-वहुल होते हुए भी अब पाकिस्तान मे रह गया है) को सन् १८१३ मे सिंध के टालपुरा मुसलमानो ने दवा लिया था और इस कारण मारवाड और मुसलमानो के सम्बन्ध अच्छे नही थे। इसके अतिरिक्त अपने भाई जसवन्तसिंह के शासनकाल मे फैयाजुल्ला खा एव नन्हीजान द्वारा प्रेरित मुस्लिम प्रभाव से सर प्रताप का व्यथित होना स्वाभाविक था। विरोधी मुसद्दियो, सामतो एव सर सुखदेव प्रसाद जैसे कुचक्रियो से सघर्ष करने के लिए सर प्रताप के लिए अग्रेजो की सहायता लेना अनिवार्य हो गया। अपने सभी विरोधियो के मुकावले उन्हे अग्रेजो मे अधिक सच्चाई, योग्यता तथा सदाशयता दृष्टिगोचर होती थी। यदि हम उपरोक्त पृष्ठभूमि मे सर प्रताप के अग्रेजो से सम्बन्धो को आके तो इसी परिणाम पर पहुँचेंगे कि उन्होने देश व काल की परिस्थितियो मे अग्रेजो से अच्छे सम्बन्ध स्थापित करके अपने, अपने स्वामी तथा मारवाड राज्य की जनता का महान् हित किया था।"

"इस सन्दर्भ मे यह भी कहना आवश्यक है कि सर प्रताप अग्रेजा के अन्धभक्त नही थे। वे स्वदेशी के सरक्षक थे। स्वय हाथ की वनी मारोठ व जालोर की वनी टुकडी का कपडा पहनते थे तथा अन्य लोगो को भी इस तरह का कपडा पहनने को वाध्य करते थे। यह सव उन्होने उस समय किया जब कि महात्मा गाधी व उनके स्वदेशी आन्दोलन का आविर्भाव भारतीय राजनीति मे नही हुआ था। इस दृष्टि से सर प्रताप भारत मे स्वदेशी आन्दोलन के अग्रदूतो मे से एक थे। आर्य धर्म व उसकी परम्पराओ को सर प्रताप पूर्णतया मानते थे और सच्चे भारतीय की भांति सम्मान से जीना चाहते थे।"

"वे स्वय एक नरेश थे, परन्तु उनके कठोर परिश्रम का मुकावला साधारण व्यक्ति भी नही कर सकता था। वे अधिकाशत जमीन पर ही कम्वल विछाकर सो जाते थे। उनकी वीरता की अनेक कथायें हैं।"

"अगर परिस्थिति वश अग्रेजो से अच्छे सम्बन्ध स्थापित करना खुशामद थी तो स्वय अमरसिंह भी इस दोष से मुक्त नही थे। अपने लिए जयपुर मे नौकरी प्राप्त करने तथा जब्त किये हुए अपने गावो को वापस लेने के लिए अमरसिंह ने जयपुर के रेजीडेंट व अन्य अग्रेज अधिकारियो की खूव खुशामद की। उनकी स्वय की डायरी से पता चलता है कि किस

प्रकार वे बार-बार सर चार्ल्स क्लीवलैण्ड, कर्नल पैटरसन, ग्लासी, मेन, कुकसन, कैवेन्ट्री, ब्लैंकिनसोप, कोलम, पोट, रेनाल्ड इत्यादि अंग्रेजो के बगलो के चक्कर लगाते थे और उन्हें बार बार काणोता में चाय एव खाने के लिए निमन्त्रित करते थे। अंग्रेजो के लिए शिकारो का प्रबन्ध करते थे।"

"यहा यह अंकित करना अप्रासगिक नही होगा कि सर प्रताप कभी सस्ती लोकप्रियता के चक्कर मे नही पडे। एक कठोर प्रशासक व सिद्धान्तो के धनी व्यक्ति के लिए लोकप्रिय होना अत्यन्त दुष्कर है। उसे निहित स्वार्थों वाले तथा अवसरवादी लोगो को अप्रसन्न करना ही पडता है। ऐसा किये बिना वह कोई स्थायी उपलब्धि प्राप्त नही कर सकता। सर प्रताप ने अपने उद्देश्यो की पूर्ति के लिए लोकप्रियता को तिलाजलि दे दी थी। यह अपने आप मे एक महान त्याग था। सर प्रताप के महान् गुणो और उपलब्धियो की पृष्ठभूमि मे अमरसिंह द्वारा आलोचित तथ्य नगण्य लगते है। किसी भी महापुरुष का जीवन आधारहीन, एकपक्षीय तथा पूर्वाग्रहो से ग्रसित आलोचना द्वारा धूमिल करना शोभाजनक नही कहा जा सकता।"

"अमरसिंह की डायरी को सूक्ष्म दृष्टि से पढने से एक बात का पता चलता है कि अमरसिंह ने सर प्रताप की निन्दा तब से अधिक करनी प्रारम्भ की जब से सर प्रताप ने मारवाड मे "मौरूस ए-आला" का कानून बनाकर जागीरदारो की जागीरो को जब्त करना शुरू किया। जागीरदारो के दु खो का रोना अमरसिंह की डायरी मे भरा पडा है। जागीरदारो के पक्ष मे लिखते समय वे स्वय अपने महाराजा (जयपुर) की भी स्थान-स्थान पर निंदा करने से नही चूकते है।"

"सर प्रताप के महान् व्यक्तित्व व कृतित्व के विषय मे बहुत कुछ लिखा जा सकता है। उनकी अमूल्य सेवाओ और उपलब्धियो को नजर अदाज करके उनकी छोटी-मोटी मानवीय कमजोरियो को वृहत् रूप देकर अमरसिंह ने अपने हितैषी व सरक्षक के प्रति सदाशयता का परिचय नहीं दिया है। इस प्रसग मे मैं अमरसिंह की ही डायरी से एक उद्धरण देना चाहूगा। एक दिन की डायरी (राजस्थान पत्रिका के १८ नवम्बर, १९८१ के अक मे प्रकाशित) मे वे लिखते हैं—

"सरकार (सर प्रताप) अपने मर्जीदानो के मामले म निश्चय ही अभागे हैं। हालाकि इन मर्जीदानो मे से हरेक पहले तो अच्छा रहा पर अन्त मे सभी का वही हाल हुआ जो फर्स्ट रेजीमेट के इस कमाण्डर का।"

"इन 'सभी' मे अमरसिंह को भी सम्मिलित करना अनुचित नही होगा।"

"अमरसिंह इम्पीरियल कैडेट कोर की सेवा से निवृत होकर जब से जयपुर आये तब से वे प्राय प्रतिदिन किसी न किसी अंग्रेज अधिकारी के बगले के चक्कर लगाते थे। यह तथ्य उनकी डायरी के प्रकाशित अशो से भलीभाति प्रगट होता है। जब वे स्वय अपनी स्वार्थ-सिद्धि हेतु विभिन्न अंग्रेज अधिकारियो की खुशामद म प्रतिदिन लगे रहे हैं तो किस

मुह से सर प्रताप सरीखी राजनीतिक हस्तियो पर अंग्रेजो का खुशामद होने का लाछन लगाते है।"

सर प्रताप अथवा किसी भी महान् पुरुष के विरुद्ध जब निराधार आलोचनाएँ होती हैं तो यह देखना अनिवार्य हो जाता है कि लेखको की भावनाए तथा उनके उद्देश्य क्या रहे होगे। उदाहरण के लिए हम अमरसिह काणोता को ही लेते है जिनकी कि डायरी प्रारम्भ मे सर प्रताप की प्रशसा से भरी पडी है परन्तु बाद के दिनो मे अनर्गल आलोचनाओ से भी पूरित हैं। इन आलोचनाओ के कई कारण हो सकते हैं। एक तो अमरसिह सर प्रताप के अन्य कृपापात्र हरजी से अप्रसन्न व ईर्षालु थे। हो सकता है कि सर प्रताप की कृपा हरजी पर अधिक रही हो, परन्तु इस कारण से सर प्रताप की व्यर्थ आलोचना करना उचित अथवा न्यायसगत नही कहा जा सकता। सर प्रताप ने जागीरदारो के कार्यकलापो और आकाक्षाओ पर बडे अकुश लगाये थे और राज्य हित मे 'मौरूस-ए-आला' कानून बनाया जिससे जागीरदारो की भावनाओ को आघात पहुँचना स्वाभाविक था। अमरसिह भी एक जागीरदार होने के नाते जागीरदारो के विरुद्ध बनाये गये किसी भी कानून अथवा उनके हितो के विरुद्ध लागू/प्रसारित किसी भी राजाज्ञा के विरुद्ध थे। यह बात उनकी डायरी मे स्थान-स्थान पर व्यक्त हुए उनके विचारों से स्पष्ट प्रकट होती है। उन्हे सदा यह डर रहता था कि जोधपुर की भाति कही जयपुर म भी जागीरदारो के विरुद्ध राज्य की ओर से कठोरता नही बरती जावे। फिर कोई भी कठोर अनुशासन वाला व्यक्ति, चाहे वह स्वय उसका पिता ही क्यो न हो मन ही मन अप्रसन्न रहता है। अमरसिह ने यह अप्रसन्नता सर प्रताप के जीवन-काल मे खुले रूप से प्रगट नही की, अन्यथा उन पर घोर कृतघ्नता का लाछन लग जाता परन्तु उन्होने अपनी डायरी म यह अप्रसन्नता कई स्थानो पर प्रगट की है। जैसे कि अंग्रेजी की कहावत है—'Familiarity breeds contempt' घनिष्टता घृणा को जन्म देती है। अमरसिह सर प्रताप के अत्यधिक निकट रहे थे अत उनकी दृष्टि में सर प्रताप एक बुरे व्यक्ति हो गये। अंग्रेजी मे एक और कहावत है—'No man is a hero to his valet' कोई भी व्यक्ति अपने निजी नौकर की दृष्टि मे महान् सूरमा नही होता।

अमरसिह की डायरी का प्रारम्भिक भाग बडे सयमित रूप से लिखा गया है। शायद इसका कारण यह हो कि उनके शिक्षक राजस्थान के तत्कालीन विद्वानो मे से एक रामनाथजी रतनू थे। जो कि डायरी की जाच किया करते थे और उस पर अपनी टिप्पणिया लिखा करते थे। बाद के दिनो म रामनाथजी की जाच का भी डर नही रहा न अमरसिह को सरप्रताप से किसी लाभ की आशा रही, और अमरसिह के मस्तिष्क मे सर प्रताप के विरुद्ध कई प्रकार के द्वेष भी उत्पन्न हो गये। इन कारणो से उनकी आलोचना का स्तर भी गिरता गया। उदाहरण के रूप मे अमरसिह ने एक स्थान पर सर प्रताप को जोधपुर की बरडी का लम्बा कोट पहने देखकर उनका मजाक उडाया है। एक अन्य स्थान पर उन्होंने इस बात पर रोष प्रकट किया है कि सर प्रताप को वायसराय के दरबार मे भारत के बडी रियासतो के राजाओ के समकक्ष स्थान क्यो मिल गया और क्यो राजा लोग उनके विरुद्ध आपत्ति नहीं उठाते। जब १९२२ म जयपुर के महाराजा माधोसिहजी का देहावसान

हुआ तो अमरसिंह को डर लगा कि कहीं सर प्रताप जयपुर के रीजेन्ट होकर नहीं आ जायें। इस विषय में उन्होंने सर प्रताप के विरुद्ध जयपुर में प्रचार भी किया। सर प्रताप के विरुद्ध अमरसिंह की दुर्भावना इस सीमा तक पहुँच गई कि जिस दीवान छाजूराम को सर प्रताप ने जोधपुर से निकलवाया था उसका सर प्रताप की ही रियासत ईडर में दीवान बनाने के लिए महाराजकुमार दौलतसिंहजी से षडयन्त्र किया। इस षडयन्त्र मे उन्हें सफलता नही मिली, परन्तु इससे उनकी सर प्रताप के प्रति दुर्भावना स्पष्ट प्रकट होती है। एक स्थान पर उन्होंने सर प्रताप को 'सनकी' बताया है तो दूसरे स्थान पर उन्हें 'इस बुढ्ढे को' आदि अनादर-सूचक शब्दों से सम्बोधित करके अपनी हीन भावना का परिचय भी दिया है। अमरसिंह सर प्रताप के देहावसान के पश्चात् उनके प्रमुख विरोधी प० सर सुखदेवप्रसाद से मिले और पडितजी को प्रसन्न करने के लिए यह शिकायत की कि सर प्रताप का जो जीवन चरित्र (आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस द्वारा) प्रकाशित हुआ उसमें सर प्रताप की केवल प्रशसा ही की गई है और बुराइया नही लिखी गई हैं।

अमरसिंह के इन कार्यकलापो से उनकी मनोवृत्ति और सर प्रताप के प्रति दुर्भावना स्पष्टत प्रकट होती है। ऐसे लेखक सर प्रताप की जो भी आलोचना करते हैं उसे नि-सन्देह शका और अविश्वास की दृष्टि से देखा जाएगा। अमरसिंह के विषय में, बडे दु ख के साथ लिखना पडता है कि उन्होंने डायरी में जो लिखा वह यह जानते हुए लिखा कि यह डायरी कभी प्रकाशित होगी। उन्होंने इस बात के स्पष्ट सकेत डायरी में स्थान-स्थान पर दिये हैं अत उसके कई तथ्य स्वाभाविकता से परे व पूर्व नियोजित है। वस्तुत उन्होंने डायरी प्रकाशिक करने के उद्देश्य से ही लिखी थी। उस समय उन्होंने यह नही सोचा कि अपने सरक्षक और हितैषी सर प्रताप की तुच्छ आलोचनाएँ करने से सर प्रताप से भी अधिक उनकी स्वय की छवि धूमिल व कलुषित होगी।

इस सन्दर्भ मे यहाँ पुन ख्यातनामा अंग्रेजी लेखक कारलाइल का एक उद्धरण देना प्रासगिक होगा—

"No sadder proof can be given by a man of his own littleness than disbelief in Greatmen "

"कोई भी व्यक्ति अपनी तुच्छता का इससे अधिक निकृष्ट प्रमाण नही दे सकता कि वह महान् व्यक्तियो के प्रति अविश्वास प्रकट करे।"

सर प्रताप और हरजी

सर प्रताप के विरुद्ध एक आलोचना यह की जाती है (जो अमरसिंह की डायरी मे विशेषत मिलती है) कि उन्होंने हरजी नामक नवलगढ से आये हुए दरोगे को अपना

दरोगा था। जाखण के वयोवृद्ध कैप्टन अचलसिंहजी भाटी ने मुझे यह बताया था कि हरजी टकणेत (शेखावत) राजपूत था और अनाथ अवस्था में नवलगढ ठिकाने में पाला-पोसा गया तथा जब नवलगढ की बाईजी का विवाह सर प्रताप से हुआ तो उसे बाईजी के साथ जोधपुर भेज दिया गया। यहाँ पर उसने अपनी योग्यता व परिश्रम से घुड़सवारी में ऐसी दक्षता प्राप्त करली जिससे कि सर प्रताप का उस पर प्रसन्न होना अवश्यम्भावी हो गया। ज्यो-ज्यो हरजी घुड़सवारी और पोलो मे सफलता की सीढ़िया पर चढ़ता गया और जोधपुर का नाम ऊचा करता गया त्यो-त्यो उस पर सर प्रताप की कृपा बढ़ती गई। वस्तुत उसमें कुछ (घुड़सवारी व पोलो) ऐसे विलक्षण गुण थे जो किसी गुणग्राही राजा का मन जीत सकते थे। वह न केवल एक महान् पोलो खिलाडी था परन्तु अद्वितीय वीर भी था। उसने अपनी वीरता का परिचय चीन के बॉक्सर युद्ध के दौरान दिया था। उसके छोटे पुत्र दलपतसिंह ने जोधपुर लांसर्स की 'बी' स्क्वाड्रन की कमाण्ड करते हुए हाइफा (फिलस्तीन) के किले को तुर्कों से फतह करके मारवाड का नाम ऊचा किया था। किले पर जब धावा बोला गया तो वह अपनी स्क्वाड्रन के सबसे आगे था तथा किले की खाई पर बने पुल को पार करते समय शत्रु-दल की गोलियों की बौछार से आहत होकर गिर पडा। जब पीछे जाने वाले सैनिकों ने अपने घोडो को रोका तो उसने कहा-"घोडो को मेरे शरीर के ऊपर से ले जाओ! रुको मत, किले को फतह करो!" उसके आहत शरीर को रौंदते हुए सैकडो घोडे निकले और किले को फतह करके उस पर जोधपुर के झण्डे को फहराया। इस अद्वितीय वीरता के कारण दलपतसिंह को मरणोपरान्त मिलिट्री क्रॉस प्रदान किया गया। दलपतसिंह के इस वीरोत्सर्ग के कारण ही उनके भाई जगतसिंह को देवली की जागीर 'मूण्डकटी' में दी गई।

हरजी पोलो का कितना महान् खिलाडी था इस बात का उल्लेख कर्नल एच डी डिलायली सी बी, डी एस ओ ने अपनी पुस्तक 'Polo in India' (भारत में पोलो) (प्रकाशित १९०७) में किया है। १८८५ में पटियाला टीम से हुये एक मैच का वर्णन करते हुए डिलायली ने लिखा है—

"Jodhpur team comprised of the two finest players I have played against either in England or in India Hirji Singh (Harji) and Dhokal Singh may not have been so good individually as Heera-Singh of Patiala, but in a team their knowledge of the team and the reliability with which they always played sound Polo, placed team in front of even so renowned performer as Heera Singh Of the three, I would place Hirji Singh (Harji) as the best player I have ever seen ....Being quite an extra-ordinary horseman, no player could get the advantage of him, and few you could get on equal terms Add to this, very powerful hitting, and an eye which seems to form part of the inheritance of these Rathore Rajputs, and the result can only be by a magnificent Polo player."

उपरोक्त उद्धरण का सार यह है कि "मैंने कही भी हरजी से बढकर पोलो खिलाडी नही देखा" (उपरोक्त उद्धरण मे हरजी को राठौड गलतफहमी से लिखा गया है–शायद इसलिये कि वह राठौड राज्य की टीम मे खेलता था) हरजी के विषय मे एक दोहा उन दिनो मारवाड मे प्रसिद्ध था जो निम्न प्रकार है—

नगर नगर जी जोयलौ, मुरधर भरजी माय।
अस चढणौ हरजी जिसौ, नरजी दूजौ नाय॥

नगर का विकास तथा स्थापत्यकला को देन

सर प्रताप ने मारवाड तथा उसकी राजधानी जोधपुर के सवर्द्धन एव विकास के लिये इतने कार्य किये कि जिससे उनका कायापलट ही हो गया। जोधपुर नगर की सफाई की व्यवस्था के लिये एक छोटी रेलगाडी लगाई गई जिसे "मैलागाडी" कहते थे और यह जोधपुर के राजस्थान राज्य मे विलीन होने तक चलती थी। इस प्रकार की रेल व्यवस्था समस्त भारत मे पहले पहल जोधपुर मे ही थी। जोधपुर शहर की चार दीवारी के बाहर सर प्रताप ने दूर-दूर तक बगले बनवाकर नगर को विस्तृत बना दिया। अच्छी सडकें और स्थान-स्थान पर भव्य भवन बनवाकर नगर की शोभा को कई गुना बढा दिया।

वे चुन-चुन कर अच्छे अग्रेज लाए और उनके द्वारा ऐसे विशाल एव सुन्दर भवन बनवाये जिनकी स्थापत्यकला मे पूर्व एव पश्चिम की स्थापत्यकलाओ का अनुपम सम्मिश्रण था। स्टेट इन्जीनियर 'होम' के परामर्श एव मार्गदर्शन से कई राजकीय भव्य भवन बनवाये गये। राजकीय इन्जीनियर 'जी जे ओब्रीन' ने राजपूत नोबल्स स्कूल चौपासनी का डिजाइन बनाया। यह स्कूल जो उसके उत्तराधिकारी 'मिस्टर सी स्कलटन' के समय मे बनकर पूरा हुआ, स्थापत्यकला का एक अनोखा नमूना है। जयपुर के स्टेट इन्जीनियर मिस्टर (बाद मे सर) स्विटन जैकब को बुलाकर राज्य के मुख्य सचिवालय (महकमा खास) के भवन का डिजाइन तैयार करवाया। इसके अनुसार जो भवन तैयार हुआ उसकी स्थापत्यकला का आज भी कोई भवन सानी नही। बगलो के डिजाइन सर प्रताप की स्वय की प्रेरणा से बनाये गये थे। इन बगलो मे नीचे तो घोडो के अस्तबल होते थे और ऊपर निवास स्थान होता था जिसमे जनाने भाग मे पर्दे की भी व्यवस्था होती थी। उन बगलो मे सुन्दरता के अतिरिक्त उपादेयता का विशेष ध्यान रखा गया था। बगलो के स्वामी अपने घोडो की आसानी से देख-रेख कर सकते थे तथा कम स्थान मे अधिक उपयोगी भवन भी बन जाता था। इस प्रकार के बगलो मे बीच मे गैलरी और दोनो तरफ घोडो के ठाणो की पक्तिया होती थी। इस प्रकार के बगले अब भी जोधपुर मे देखे जा सकते हैं (यद्यपि अब उनके नीचे के अस्तबलो को कमरो मे बदल दिया गया है)। सरदार क्लब के पास रावराजा तेजसिहजी, रावराजा सवाईसिहजी, रामसिहजी रावणा, महाराज रतनसिहजी (भोपालगढ), ठा दलपतसिहजी रोहट, (जो बगला बाद म रावराजा अभयसिहजी को प्राप्त हुआ) ठाकुर धोकलसिह गोराऊ, महाराज शेरसिहजी, फतजी का बगला (जो बाद मे रावराजा सगतसिहजी को प्राप्त हुआ और जहाँ आजकल 'सर प्रताप' कालोनी बसी है)

आदि बगले आज भी विद्यमान है और वे सर प्रताप द्वारा प्रेरित स्थापत्यकला के जीवन्त प्रमाण हैं।

सर प्रताप से सम्बन्धित कुछ उल्लेखनीय तथ्य तथा रोचक प्रसंग

सर प्रताप का ननिहाल ठिकाना धमोतर (प्रतापगढ) था। उनके मामा ठा गम्भीरसिंहजी महाराजा तख्तसिंहजी के साथ ही अहमदनगर (गुजरात) से आये थे और उन्हे मालाक्टारी मे जोधपुर के पास झालामण्ड गाव जागीर मे मिला था।

× × ×

सर प्रताप के पाच विवाह हुए थे। चार रानिया भटियाणी थी–एक जैसलमेर की दो जाखण की और एक ओसिया की। उनकी एक रानी नवलगढ की थी जिनका विवाह जयपुर नरेश महाराजा रामसिंहजी के माध्यम से हुआ था। महाराजा रामसिंहजी चन्द्रावतो के भाणजे थे और उनकी एक मौसी नवलगढ मे ब्याही थी। ठाकुर मोहनसिंहजी नवलगढ की दो पुत्रियो म से एक पुत्री नन्दकवरबाईजी तो महाराजा जसवन्तसिंह को ब्याही गई तथा दूसरी बख्तावरकवर सर प्रताप को ब्याही गई। ये दोनो विवाह एक ही साथ जयपुर म चन्द्रावतो की हवेली (जौहरी बाजार के पास) मे सन् १८७१ मे हुए थे। विवाह के पश्चात् राणी शेखावतजी स्वय घुडसवारी मे दक्ष हो गई थी और प्रात अन्धेरे-अन्धेरे उठकर न केवल घुडसवारी करती थी बल्कि घोडो की मालिश भी करती थी। शेखावतजी न अपने देहावसान से पहले यह इच्छा प्रकट की कि उनकी छत्री रेस कोर्स के पास बनाई जाय जिससे कि दौडते हुए घोडो की धूल उनकी छत्री पर हमेशा पडती रहे। यह छत्री अब भी विद्यमान है।

× × ×

सर प्रताप का पहला और दूसरा विवाह जाखण हुआ था। तीसरा विवाह ओसिया, चौथा जैसलमेर और पाचवा नवलगढ हुआ था। सर प्रताप के तीन पडदायते (पासवानें) थी–रूपजोत, हरकराय और मीमराय। ये तीनो दरोगा जाति की थी। सर प्रताप के चार रावराजा हुए नरपतसिंह, सगतसिंह, अभयसिंह और हनूतसिंह। मीमराय से एक लडकी हुई जो जयपुर के लालजी कानसिंह को ब्याही गई।

× × ×

जोधपुर मे सर प्रताप की राणी भटियाणीजी (ओसिया की) चतुर एव दयालु महारानी थी वे हमेशा सर प्रताप के क्रोध को शात करने का प्रयत्न करती थी। उन्होने कई बडे और छोटे लोगो को सर प्रताप के कोप से बचाया था। वे चौपासनी के नाबालिग लडको को छुट्टियो में सरकार के बगले पर बडे प्यार व दुलार से रखती थी। उनमे से एक ने अपनी वृद्धावस्था मे मुझे बताया कि भटियाणी साहिबा बच्चो का इतना ध्यान रखती

थी कि वो सर्दियों मे रात को कई बार स्वय उठकर बच्चो की खिसकी हुई रजाइयो को वापिस औढाती थी तथा सारी गर्मियो मे रात को उठकर बच्चो को बार-बार पानी पिलाती थी। बच्चे बगले के बाग मे ऊधम मचाते तथा फल-पौधे तोडते और सरकार को आता देखकर भाग जाते। जब सरकार बच्चो पर नाराज होकर उनको पीटने दौडते तो भटियाणी साहिबा दासियो को भेजकर सरकार को बगले मे बुलाती और उन्हे प्रताडना देती कि– 'इन बच्चो के माता-पिता नही हैं और इस उम्र मे बच्चे नटखट नही होगे तो कब होगे ये बच्चे आपके हैं–आप इन पर दया-दृष्टि रखिये।"

× × ×

सर प्रताप ने सम्वत् १९४१ मे यह राज्य आदेश प्रसारित किया कि राज्य के सब कर्मचारी देशी गाढा (खादी रेजा) कपडा पहनकर कार्यालयों मे जाया करें। खादी के लाभ और विदेशी वस्तुओं की हानिया दर्शाने के लिए आपने सम्वत् १९४५ मे प ठाकुर प्रसाद (आर्योपदेशक) से 'भारत रक्षा' नाम की पुस्तक भी प्रकाशित करवाई।

× × ×

सम्वत् १९४६ मे सर प्रताप ने राज्य के खर्चे से आर्य-समाज के एक प्रमुख उपदेशक स्वामी भास्करानन्द को इगलैड, अमेरिका आदि देशो मे आर्य धर्म के प्रचारार्थ भेजा।

× × ×

जयपुर मे पोलो का खेल सर प्रताप ने ही प्रारम्भ किया था।

× × ×

जोधपुर राज्य को इस बात का श्रेय प्राप्त है कि वहाँ भारत मे सबसे पहले राजभाषा के रूप मे हिन्दी प्रतिष्ठापित की गई। यह श्रेय सर प्रताप के कारण ही प्राप्त हुआ। सर प्रताप ने न केवल हिन्दी बल्कि न्यायालयो मे मारवाडी भाषा को प्रयोग मे लाने के आदेश जारी किये। उनकी मान्यता थी मातृ-भाषा का उपयोग राजकीय कार्यालयो मे सामान्य जनता के हित मे था। जिस भाषा को जनता नही समझती उसमे राज-कार्य होने और न्यायालयो द्वारा निर्णय दिये जाने से जनता को कई प्रकार के कष्ट उठाने पडते थे।

× × ×

सर प्रताप की बहुमुखी प्रतिभा का एक प्रमाण है उनके द्वारा आविष्कृत विश्व-प्रसिद्ध 'जोधपुरी कोट और ब्रीचिस'। जोधपुर का बद गले का कोट सर प्रताप की भारतीय सस्कृति को अनुपम देन है। यह लिखते हुए गौरव का अनुभव होता है कि यह कोट आज भारत की राष्ट्रीय पौशाक का एक अग बन गया है।

सर प्रताप ने नई दिल्ली के नियोजक सर लूटियन्स को जोधपुर बुलाकर नगर नियोजन के कार्य में सलाह ली थी और राजपूत स्कूल चौपासनी का नियोजन व भवनों के डिजाइन बनाये थे। सर लूटियन्स ने चौपासनी के भवनों के डिजाइनों की बडी प्रशंसा की थी।

× × ×

कलकत्ता में 'जोधपुर पार्क' नामक एक प्रमुख स्थान है। लोगों को पता ही नहीं है कि इस स्थान का नाम 'जोधपुर पार्क' क्यों पड़ा? तथ्य यह है कि सरकार जब जोधपुर लासर्स को चीन के युद्ध में ले गये और जब युद्ध से वापिस लौटे तो लासर्स ने जिस स्थान पर पडाव किया उस स्थान का नाम सदा के लिए 'जोधपुर पार्क' हो गया।

× × ×

सन् १८९३ में जोधपुर की टीम न राष्ट्रीय पोलो चैम्पियनशिप जीती जिसमें सर प्रताप स्वयं खेले थे तथा अन्य खिलाडी थे–धौकलसिंह(गौराऊ), हरजी और मेजर बीट्सन।

× × ×

ब्रिटेन के विश्व विख्यात प्रधान मन्त्री विंस्टन चर्चिल जब भारतीय सेना में लेफ्टीनेन्ट थे तो एक बार बैंगलोर से मेरठ पोलो खेलने जाते समय अपनी टीम के साथ जोधपुर भी रुके और जोधपुर की टीम के साथ पोलो खेला। यहाँ पर वे सर प्रताप के बंगले में फिसल कर गिर पडे और उन्हे चोट आई थी।

× × ×

सर प्रताप के अंग्रेजों से सम्बन्ध

सर प्रताप अंग्रेजो के कई गुणों के कायल थे और उन्होंने चुन-चुन कर योग्य अंग्रेजो को जोधपुर राज्य में महत्वपूर्ण पदो पर नियुक्त किया। उन अंग्रेजो ने जो कार्य राज्य में किये वे सब प्रकार से अद्वितीय थे। उदाहरण के रूप में कर्नल एडम्ज द्वारा उन्होंने राज्य की स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सेवाओं का आधुनिक चिकित्सा पद्धति के आधार पर पुनर्गठन किया। स्टेट इन्जीनियर्स ग्रोड्रीन, स्केल्टन एवं होम द्वारा सडकों व भव्य भवनों और बडे-बडे बाधो का ही नहीं अपितु जोधपुर रेल्वे का निर्माण भी करवाया। मि० ह्यूशन के द्वारा राहदारी, जकात के विभागो का पुनर्गठन करवा कर राज्य की आमदनी बढवाई। मि० ड्रैक्ब्रॉकमैन द्वारा राजस्व बन्दोबस्त करवाकर राज्य के कृषकों का हित किया तथा राज्य की आय में भी वृद्धि की। सेना में भी मेजर टर्नर तथा मेजर बीट्सन आदि के द्वारा ऐसा आधुनिकीकरण किया जिसकी बराबरी भारत के अन्य राज्य नहीं कर सके। अंग्रेजो की नियुक्तियां हो जाने से राज्य के सामंतों एवं मुसद्दियों के षडयन्त्रों व मनमानियों

का भी अन्त हो गया। इन्ही बुराइयो से जोधपुर राज्य पीढियो से पीडित था और इसका कुपरिणाम जनसाधारण को भुगतना पडता था। राज्य की न्याय व्यवस्था मे भी अग्रेजी कानूनो की क्रियान्विति करके जनता को न्याय सुलभ करवाया गया।

अग्रेजो से अच्छे सम्बन्ध स्थापित करके ही सर प्रताप ने न केवल मालानी का परगना मारवाड मे पुन मिलाया अपितु ईडर का राज्य भी प्राप्त किया जो अपने आप मे एक अनोखी उपलब्धि थी। उनके अग्रेजो से अच्छे सम्बन्ध होने के कारण ही जयपुर के महाराजा माधोसिह के यहा सर प्रताप की पूछ हुई थी। महाराजा माधोसिह के कोई औरस पुत्र नही था और जयपुर की गद्दी के दो ठिकाने-ईसरदा एव झिलाय दावेदार थे। महाराजा माधोसिह ईसरदा के कु वर मोरमुकटसिह (बाद मे मानसिह) को गोद लेना चाहते थे। झिलाय के गोरधनसिह का पक्ष बीकानेर के प्रभावशाली महाराजा सर गगासिह ले रहे थे। महाराजा बीकानेर के भी अग्रेजो से अच्छे सम्बन्ध थे अत महाराजा माधोसिह के लिये सर प्रताप की सहायता लेना अनिवार्य हो गया। सर प्रताप ने यह सहायता दी और इस शर्त के साथ कि गोद लिये जाने वाले महाराकुमार मानसिह का विवाह जोधपुर के महाराज सरदारसिह की पुत्री से होगा। महाराजा माधोसिह को यह शर्त माननी पडी। इस प्रकार के कई प्रत्यक्ष, परोक्ष तथा दूरगामी लाभ जोधपुर व उसके राजघराने को सर प्रताप अग्रेजो से अच्छे सम्बन्ध स्थापित करके ही दे पाये।

परन्तु सर प्रताप अग्रेजो के अधानुयायी नही थे। वे बोलचाल, वेषभूषा और रीति रिवाजो मे परम्परावादी थे। वे पर्दा प्रथा के सदा हिमायती बने रहे और नीची खापो म विवाह सम्बन्ध करने के पक्षपाती नही थे। वे मारवाड के राजपूतो के खून को शुद्ध बनाये रखना चाहते थे। यदि वे अग्रेजो के अन्धानुयायी होते तो आर्यसमाज जैसी विशुद्ध आर्य-सस्था के सदस्य न बनकर बगाल से प्रचालित ब्रह्म-समाज, जो अग्रेजो के निकटतम रहने वाली हिन्दू सस्था थी, के सदस्य हो जाते। यह उल्लेखनीय है कि सर प्रताप कई बार कलकत्ता गये परन्तु वहा उन्होने कभी भी ब्रह्मसमाजियो से सम्पर्क स्थापित नही किया यद्यपि उन दिनो ब्रह्मसमाज म कई शीर्षस्थ नेता विद्यमान थे। महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर, द्विजेन्द्र नाथ ठाकुर, केशवचन्द्र सेन हेमचन्द्र चक्रवर्ती, गौरीचरणदत्त, रमेशचन्द्रदत्त जैसे प्रतिष्ठित नेता उन दिनो कलकत्ता मे ही थे परन्तु सर प्रताप ने कभी उनसे सम्पर्क स्थापित नही किया। उन दिनो आडियार (मद्रास) से प्रचलित थियोसोफिकल सोसाइटी की भी बडी धूम थी, परन्तु पश्चिमी सभ्यता से प्रभावित इस सस्था से भी सर प्रताप दूर रहे।

महाराणा फतहसिह द्वारा सर प्रताप से मार्गदर्शन

यह पहले ही इगित किया जा चुका है कि सर प्रताप ने कोई औपचारिक शिक्षा प्राप्त नही की थी। परन्तु अपनी विलक्षण बुद्धि से तत्कालीन राजपूताने म अपना एक विशिष्ट स्थान बना लिया था। उनकी स्वय की रियासत तो ईडर (गुजरात) मे थी और

वे जोधपुर के केवल रीजेन्ट या मुसाहिब-ए आला ही थे परन्तु उनके बुद्धिबल एव प्रभाव के कारण सभी राजा लोग उनसे सलाह लेते थे। यहा तक कि उदयपुर के महाराणा फतेहसिंहजी जी अपनी बुद्धिमता और साहस के कारण समस्त भारत के राजाओ मे अग्रणी समझे जाते थे, भी सर प्रताप से सलाह लेते थे। जब महाराजकुमार सरदारसिंहजी की सगाई महाराणा फतेहसिहजी की पुत्री किशोरकु वर बाईजो से पक्की हो गई तब तो महाराणा फतेहसिह सर प्रताप को अपना निकटतम मानने लगे और इन दोनो मे पत्र व्यवहार का क्रम भी बढता गया।

उस काल मे दोनो राजघरानो के मध्य उदयपुर के बारहठ किशनसिंहजी सदेश लाते ले जाते थे। किशनसिंहजी के माध्यम से महाराणा साहब ने कई समस्याओ के विषय मे सर प्रताप के पास एक प्रश्नो की सूची भेजी जिनके उत्तर सर प्रताप ने किशनसिहजी के माध्यम से ही भिजवाये। इनका उल्लेख बारहठ किशनसिंहजी ने अपनी अप्रकाशित पुस्तक 'राजपुताना के अपूर्व इतिहास' मे किया है। ये प्रश्नोत्तर, जिनकी भाषा किशनसिंहजी की ही है, आद्योपान्त उद्धृत किये जा रहे हैं—

प्रश्न–१ "मेवाड का रेजीडेन्ट माइल्स (Miles) मिजाज का जिद्दी व कानो का कच्चा है जो पन्नालाल मेहता के कहने पर लग जाता है, जिसने रियासत का बडा नुकसान किया व किये जाता है जिसका बन्दोबस्त करना चाहिये।"

उत्तर–"दो साल बाद माइल्स को पिनसन हो जावेगी इसलिए लडना ठीक नही। अकलमन्दी से इन दो साल को निकाल देना चाहिये इसके लिए मैं खुद आबू जाकर कर्नल ट्रेवर को वाक्फि करू गा और उदयपुर आकर माइल्स को भी समझाऊगा।"

प्रश्न–२ "एजेंटो को खुश रखना मुश्किल है पहले इनकी राय से काम करें तो रियासत के फायदे की कभी राय नही देते और बिना पूछे करते है तो उस काम को चलने नही देते इसका क्या करें ? कितने ही मामलों मे राय देकर बदल जाते हैं।"

उत्तर–"इनको खुश रखना जरूरी बात है। सभी एजेंट एक से नही आते है इसलिए जैसा एजेंट आवे वैसा ढग रखना चाहिए। जिस काम म एजेंट की राय अपने मफीद हो उसमें उनकी खानगी तहहरीर ले लिया करें फिर वो बदल नही सकेगा और जिसम उनकी राय न हो उस काम को कुछ अर्सा के लिए बन्द कर दिया करें फिर मौका आवे तब अपनी मन्शा माफिक कर लेवें।"

प्रश्न–३ "गवर्नमेट की दस्तदाजी रियासतो मे दिन-दिन बढती जाती है जिसको रोकना जरूरी है। कई नये कायदे जारी करके तामील कराते है जो कैसे करें जैसे–(१) भोमिया को रियासत से जमीन दिलाते हैं। (२) मवेशियो के रजिस्टरो का काम बहुत बढा दिया है। (३) कंतसाली की किताबो का काम बढा दिया। (४) भेड बकरो वगैरा का महसूल माफ कराते हैं। (५) रियासती नौकरो से इन्कम टैक्स मागते है। (६) बास

लकडी जो छावनी जावे उसका महसूल नही देते। (७) आबकारी कायदे मे अजमेरा की हद से आगे ५ मील तक शराब की दुकान रियासत से उठवा दी और आप खुद सरहद पर रखते हैं। (८) रियासत के जन्म कैदी आगरा मे हैं जिनकी खुराक हमसे मागते है।"

उत्तर–"दस्तदाजी बढने का मुझे खुद को ख्याल है मगर लडकर रोकने मे हानि है। अक्लमन्दी से रोकना चाहिये। इसका इलाज आपकी एकता ही है। (१) इसमे रियासत व राज का फायदा ही है क्योंकि अपने को रियासत मिलती है और रियासत भी अपनी ही रियाया के साथ है। (२) यह भी अपने ही फायदे की बात है। (३) यह काम भी रियासत के फायदे का है। (४) यहा महसूल लिया जाता है आप भी यहाँ की नजीर दे कर ले लेवें। (५) यह बेजा है जिसका मैं खुद उज्र करूगा। (६) यहाँ महसूल लेते हैं वहा भी लेवें। (७) इसमें हमने भी धोखा खाया है, अपनी दुकाने सरहद से नही हटवानी थी। (८) यह छोटी बात है जिसके लिये बहस करना शोभा नही देगा, हम भी खुराक भेजते हैं।"

प्रश्न–४ "गवर्नमेंट की पोलिसी है कि रईस के खैरख्वाहो को कमजोर करना व बदख्वाहो को ताकतवर बनाना। इसमे रियासतो का बडा नुकसान है।"

उत्तर–"इसका इलाज अपने हाथ मे है कि खैरख्वाहो को बडी-बडी इज्जतें बढाना उनको नेक इमानदार मुन्सिफ मशहूर करना और बदख्वाहो की इज्जतें घटाना व बेईमानी बताकर बदनाम करना वगैरा ढग इक्तियार करना चाहिए।"

प्रश्न–५ "रियासत के वजीर को रईस का बदख्वाह बना कर एजेंट उसके मददगार हो जाते हैं और वो बेईमान होने पर भी उसे नेक बता कर लायक रईस को नालायक ठहराते है और फिर सरकारी दस्तदाजी बढाते है।"

उत्तर–"रईस को चाहिए कि राज मे दो पार्टी बनावे जिनको आपस मे लडाते रहे और आप खुद खैरख्वाहो की मदद करके एजेंट से उनका रसूक बढावे। खैरख्वाहो को एजेंट के पास जाने से कभी न रोको। इनका एजेंट के पास जितना जाना बढेगा उतना ही बदख्वाहो का जोर कम पडेगा।"

प्रश्न–६ "रईसो को खानगी मे दबा-दबा कर अंग्रेजो को रियासतो मे नौकर कराते है और उनके जरिये गवर्नमेंट की दस्तदाजी बढाते है।"

उत्तर–"इसका इलाज रईसो की आपसी एकता है जो बढानी चाहिये जब सब मिल कर इसको रोकेंगे तभी रूकेगा।"

प्रश्न–७, "गवर्नमेंट की मशा रईसों से दीवानी फौजदारी छीनने की है अगर इसका पहले बन्दोबस्त नही किया तो जैसे अवध के तालुक्दार है उसी माफिक राजपूताने के रईस भी हो जावेंगे।"

उत्तर–"यह ख्याल आपका बहुत दूरदर्शी का है। मुझे भी इसका बहुत ख्याल है। गवर्नमेंट की यह पोलिसी रईसो की एकता से ही रुक सकती है इसलिए आप कुल रईसा से एकता बढाने की कोशिश करें। इस काम मे मैं सबसे आगे होने को तैयार हूँ।"

प्रश्न–८ "रियासत मे खजाना नही रहने देने और रियासत की ताकत खजाने से ही है।"

उत्तर–"नकद रुपये तो हकीकत मे नही रहने देंगे इसलिए सोना चांदी का जेवर करा करके खजाने मे डाल देना चाहिए जिसे बिका नहीं सकेंगे। यदि बेचने की कहें तो जवाब दे सकते हैं कि जेवर बेचने मे राज की वदनामी है।"

प्रश्न–९ "अंग्रेजी हरेक काम मे रईसो से चन्दा लिया जाता है जिसमे रईस एजेन्टा को खुश रखने को एक से बढ़कर दूसरा ज्यादा दे देते हैं जिससे चन्दे की तादाद बढ जाती है।"

उत्तर–"इसका रोकना रईसो के हाथ मे हैं जब गवर्नमेंट से चन्दा की तहरीर आवे तो रईस खानगी मे तहरीरें करके सब एक तय करलें कि इससे ज्यादा नहीं देना चाहिए फिर उससे ज्यादा कोई नही दे या जिस चन्दे के लिए इन्कार करना वाजिब समझे तो सब रियासतो से एक साथ इन्कार भेज देना चाहिए इसमे भी नही दवा सकेंगे।"

प्रश्न–१०. "हम हमारे मातहत ठिकानो म जाते हैं तो एजेन्ट एतराज करते हैं कि आपके पधारने से ठिकाने तवाह होते हैं और उमरावो की मन्शा पहले से खराब है जिनको इतना सहारा मिलने से वे हकूमत मानने मे सरकसी करते हैं। इस ढग को देखते ताज्जुब नही कि एजेन्ट रईसो के खानगी मामलो मे भी दस्तदाजी करें।"

उत्तर–"इस सिलसिले को बन्द नही करना चाहिए मगर गवर्नमेंट जैसी रईसो से पॉलिसी रखती है इसी तरह रईसो को अपने मातहतो के साथ रखना चाहिए यानि कभी दबे कभी दबावें, कभी गर्म कभी नरम बने रहें और शनै शनै हकूमत बढावें जो मातहतो को नागवार नही गुजरे। एक दम जिद करना या तेजी करना ठीक नहीं रहता।"

प्रश्न–११ "रईसो को दवाने का उम्दा जरिया सरकार अंग्रेजो के हाथ मे उमराव ही है और अब इनमे स्वामिभक्ति नही रही इसलिए पहले वे ही रियासतें विगाडेंगी कि जिसमे जागीरदार ज्यादा और बडी जागीर वाले हैं क्योकि अब ये स्वतन्त्र बनने की कोशिश मे हैं जिसकी नजीर जयपुर शेखावटी जिला मौजूद है इसलिए हमारी राय मे छोटे जागीरदारो को सहायता देकर बडो की ताकत कम करनी चाहिए।"

उत्तर–"जागीरदारो को लिखा-पढा कर साइस्ता बनाना चाहिये जिससे उनको स्वामिभक्ति का ज्ञान हो और ये खुद मतलवी हैं इसम फूट पटकना सहज है। इनमे आपसी एक्ता नही बढने दें मगर बडे उमरावो की ताकत तोडना नामुनासिब है क्योकि इनसे रियासतो व कुल मुल्क की ताकत है। शेखावटी को जयपुर वाले बेजा दबाते हैं इससे ये स्वतन्त्र होना चाहते हैं इसमे जयपुर का ही कसूर है शेखावटी का कुछ नही।"

प्रश्न–१२ 'जयपुर ने अपनी हकूमत हकूकों का ख्याल छोडकर गवर्नमेंट के वाजिब गैर-वाजिब कुल हुक्मो की तामील बिना उजर करना शु... [illegible]

दे दे व खर्च कर कर के गवर्नमेंट को खुश रखना शुरू किया जो खुद डूबेगी व औरो को भी डूबावेगी।"

उत्तर–"जयपुर महाराजा माधोसिहजी खुद तो किसी लायक नही है और प्रधान बाबू कांतिचन्द्र है जो गवर्नमेंट को इस तरह खुश नही रखे तो निकाल दिया जावे इससे ये तरीका जारी हो रहा है मगर इसका कोई इलाज नही क्योकि महाराजा न तो अपनी एकता मे शामिल होने लायक है और न उनको कुछ कहने का जी चाहता है।"

प्रश्न–१३ "जयपुर और आपसे नाइतफाकी हुई जिसमे किसका कसूर है और अब भी इत्तफाक हो सकता है या नही।"

उत्तर–"इसमे शुरू से कसूर तो हमारा ही है मगर जयपुर महाराजा की एकता से लाभ के एवज मे हानि है क्योकि एजेन्ट को खुश रखने के लिए यह कुल हाल उसको कह देंगे।"

प्रश्न–१४ "कोई सूरत ऐसी निकाली जावे कि जिसमे हर साल राजपूताना के पांच सात रईस इकट्ठे होकर मिल लिया करें और अपनी हानि लाभ की बातो पर बहस बाद एक राय कायम कर फिर उनको अमल मे लावें इसमे सिर्फ गद्दी पर बैठने व शामिल जीमने का तकरार होने का खयाल है जिसको तरकीब से मिटावें।"

उत्तर–"रईसो का मिलना बहुत जरूरी है मगर यह गवर्नमेंट की पॉलिसी के खिलाफ है जो मिलने नही देंगे इसलिये मिलने वास्ते कौमी कायदा जारी किया जावे जिसे गवर्नमेंट रोक नही सके यानि शादी-गमी और कु वर के जन्म पर एक रईस के यहाँ दूसरे रईस के जाने का रिवाज डालें और गद्दी की नशिस्त का रिवाज बन्द करके कुर्सियो का दरबार जारी करें जिसमे बैठक का झगडा मिट जावेगा और खाना खाने का परहेज बडे रईसों को छोड देना चाहिये। राजपूत सब एक है जिनमे शामिल खाने का परहेज बेजा हैं। इस शामिल खाने से छोटे रईस बडे रईसो की एकता मे शरीक भी हो सकेंगे।"

प्रश्न १५ "पोसिदा तौर पर एक लायक आदमी को नौकर रख कर एजेन्टो की बेजा दस्तदाजी को रोकने का उपाय किया जाय। वो शख्श इनकी बेजा दस्तदाजी को पत्रो मे छपावें व ऐसे मामलो को पार्लियामेंट तक पहुचता रहे इसमे रुपयो की जो जरूरत हो वे कुल रईस दे मगर जाहिर न हो।"

उत्तर–"यह बात तो उमदा है मगर खतरा बहुत है क्योकि यह हाल एजेन्टो को मालूम हुए बिना नही रहेगा उसमे इसका फायदा नही उठा सकें जिसके पहले एजेण्ट रियासत को बर्गला कर बलवा शुरू करा देंगे और रईसो की ऐसी हालत कर देंगे कि जिसमे ऐसे खयाल पैदा हो न कर सकें इसके अलावा ऐसा भरोसा का आदमी मिलना भी मुश्किल है जो गवर्नमेंट से मिलावट न रख कर रईसो का मददगार बना रहे। इसको सोचना चाहिए रुपये खर्च करने को तो मैं तैयार हूँ।"

प्रश्न–१६ "राजपूतों की कौम के लिए 'वाल्टरकृत राजपुत्र हितकारिणी स
होकर शादी, गमी के कायदे जारी किये हैं। इनको इससे आगे न बढावें वरना इस
असर रईसों पर भी पडेगा और खानगी मामलो म अंग्रेजी दस्तदाजी शुरू होवेगी।"

उत्तर–"जैसी आपकी राय है वैसा ही किया जावेगा मगर अब तक जितने का
जारी हुए हैं उनका पूरा वर्ताव कराया जावे और ब्राह्मण, महाजन वगैरा कौमो मे
इसका वर्ताव किया जावे। यह बात आम के फायदे की है।"

प्रश्न–१७ "आपके यहाँ की दुरुस्ती सिर्फ आपके शरीर से ही है बाद रहना मुश्कि
है और महाराजकुमार की ठीक तालीम कराई है इस पर पीछे कोई दुरुस्ती का भर
रखना वेजा है देखो बूदी रावराजा रामसिंहजी ने उनके कुवर की कैसी तालीम कराई
मगर अब उसने सब डुबोदी। इसलिये पिछले सुधार पर निगाह देनी चाहिए।"

उत्तर–"मुझे तो मेरी उम्र का भी पूरा भरोसा नही है। ताजुब नही मेरी वक्त
ही जोधपुर म अफ्तरी बढ जावे। महाराणा सा० का फरमाना बडी दूरदर्शी का है। ह
वक्त मे बूदी रावराजा रघुवीरसिंह बडे बुरे हैं उन्होने सब डुबोदी और रही सही फिर
देंगे मगर मुझे पिछले सुधार के लिए राणाजी जो हुक्म देवें उसको तामील के
तैयार हूँ।"

प्रश्न–१८ "उदयपुर म जागीरदारो की चाकरी का तसफिया नही हुवा है।
१६०७ मे गावो की आमद करार दी गई थी जिससे अब दुगनी तिगुनी आमद होती
मगर छटूद चाकरी हाल पैदायश माफिक नही देते और महाराणा भीमसिंहजी के वक्त
कौल-नामे को आगे करते हैं मगर वो दबाव से किया गया था जिसका अमल वर
नही हुआ।"

उत्तर–"इस काम को छेडने का यह मौका नही है जब कभी एजेन्ट आपकी राय
आवे और वो आपका दोस्त व मददगार बन जावे तब इस काम को छेडे। इस वक्त
सबको तसल्ली दे कर अमन से माइल्स सा० के बकाया दो वर्ष को निकालें इसी मे आ
फायदा है।"

प्रश्न–१६ "मेवाड मे हजारों भील, मेणें, लुटेरे आबाद हैं जहा पर कुछ न
वारदातें हो ही जाती हैं जिसमे एजेन्ट दस्तदाजी बढाये जाता है और अब मिसन वाल
भीलों को ईसाई बनाने की कोशिश की है जो रियासत के लिए खतरा की है जिसका
किया जावे।"

उत्तर–"भील मीणो की दुरस्ती आर्य-समाज के जरिये उमदा हो सक्ती है।
ईसाई होते बच जावेंगे और चोरी धाडा वगैरा जुर्म भी कम होगा। इन भील मीण
रियासत की बडी ताकत है जिनको जंगी कार्रवाई से कभी कमजोर नहीं करना चाहि

प्रश्न–२० "उदयपुर से अंग्रेज सरकार को दो लाख रु० खिराज देते हैं और खैरवाडा भील कोर्प्स का खर्च जुदा दिया जाता है। उधर मेरवाडा का जिला छ लाख रुपये बाबत लेकर बारह साल बाद छोडने का इकरार किया था जो हमेशा के लिये हजम कर गये और अब फिर सरहद को फौज मागते है जो कैसे दी जावे।"

उत्तर–"इससे ज्यादा बोझ रियासत नही उठा सकती मगर सरहद बचाव को फौज देने से बिल्कुल इन्कार करना भी अच्छा नही इसलिये यह अर्ज करना चाहिए कि हिन्दोस्तान के बचाव की जरूरत पडेगी तब मैं और मेरी फौज सरकारी मदद को तैयार हैं इस पर एजेन्ट लोग ठण्डे पड़ जावेंगे वरना दबाने की कोशिश करेंगे।"

प्रश्न–२१ "यहा के उमराव सरदार गुस्ताख हो रहे है हुक्म नही मानते और जुर्म करने पर भी जुर्माना देने से इन्कार करते हैं।

उत्तर–"इसकी दुरुस्ती एजेन्ट से मेल रखने पर हो सकती है यह खोरगी एजेन्टा के इशारे से ही पैदा होती है यहा भी पहले ऐसा ही था मगर एजेन्ट को मददगार बना कर हमने सब दुरुस्ती कर ली। आप भी इसी तरह से करें।"

प्रश्न–२२ "मेहता पन्नालाल ने बेईमानी व बदख्वाही पर कमर बाध रखी है। लाखो रुपये खाता और रिश्तेदारो को खिलाता है खाली रिश्वत ही नही बल्कि गबन करता है और मैं उसे रोकने की कोशिश करू तो एजेन्टो को रिश्वत देकर या रियासत मे एजेन्टो की दस्तदाजी बढा कर अपना मददगार बना लेता है और मुझसे एजेंट से नाइत्तफाकी करा मेरी हुकूमत बिगाड जाता है व खालसे को हानि कर उमरावो को लाभ पहुँचाता है इससे सब सरदार उसके मददगार हैं।"

उत्तर–"इसमे पन्नालाल को मौकूफ करके दूसरे को काम सौंपने म तो एजेंट जरूर नाराज होकर रोक देवेगा मगर महकमा खास के लिए एक कौंसिल तय कर देवें जिसमें दो उमराव आपके भरोसे के लोगों को मेबर बनावे। पन्नालाल को शरीक रखने को एजेंट सिफारिश करें तो उसे भी शरीक कर देवें। इतने मेबरो के रूबरू एक पन्नालाल क्या कर सकेगा। अगर कौंसिल करने मे एजेंट आपको रोकेगा तो मैं खुद आबू जाकर बडा सा० से मन्जूर करा दूगा। कौंसिल को कोई बुरा नही कह सकता।"

प्रश्न–२३ "मिस्टर विगेट को नेक समझ कर नौकर रखा था मगर बेईमानी करके पन्नालाल से मिल गया जिसको निकालना चाहिये।"

उत्तर–"दो वर्ष के लिए इसको गवर्नमेट से मागा है तो इस मियाद तक रखना चाहिए अभी पीछा इन्कार करना ठीक नही।"

प्रश्न–२४ "देलवाडे राजा जालमसिंह को जबरन पीछा इख्तियार दिलात है।"

उत्तर–"एजेंट की जिद बेजा है मगर छोटी बात के लिये आप भी ज्यादा नही खीचे, दे देवें।"

प्रश्न–२५ "सेठ जवाहरलाल साढा पाच लाख रुपया खा गया जिसकी एजेंट ने मदद कर रखी है और मेलकार्ट का हर्जाना हमारे जिम्मे डालता है।"

उत्तर–"मेलकार्ट के मामले मे तो आप एजेट का कहना मान लेवें। बाकी रुपये सेठ के नाम हवेली, बावडी वगैरा जायदाद जब्त करके ले लेवें चाहे कैद करे वो आपकी रइयत है।"

प्रश्न–२६ "एजेंट गवर्नर जनरल राजपूताना कर्नल ट्रेवर रिश्वत लेते हैं या नही और लेते हैं तो किस की मारफत।"

उत्तर–"हमारे तो रिश्वत देने का काम नही पडा मगर सुना है कि आबू पर एक फारसी सौदागर है उसका नाम 'फामजी' है उसकी मारफत लेत है। हमारे मारवाड के सरदारो ने उसकी मारफत रिश्वत दी है।"

इस फहरिस्त के सवाल जवाब खतम होने के बाद एक याददास्त महाराज प्रतापसिह ने खुद लिखवाकर मुझसे कहा कि आप मेरी तरफ से महाराणा सा० की नजर कर दें। नक्ल—

"१ ऐसा उपाय करे कि जिसमे अपने मुल्क की रकम मुल्क मे ही रहे बाहर नही जावें और अपने मुल्क की चीज तिजारत के तौर पर बाहर भेजें जिससे बाहर के रुपये अपने मुल्क मे आवें।

२ फौज मे अपने ही मुल्क के राजपूत भरती करें या ज्यादा जरूरत हो तो भील-मीणा वगैरहो को भरती करें मगर मुसलमानो को रियासती फौज म हर्गिज नही रखें।

३ एकान्त मे एजेन्ट से मेल करके जाहिरा अपना रोब जमावें। उस खुशामद को तो कोई नही देखता और रोब को दुनिया जानती है जिससे हजारो फायदे हैं। यह इख्तियार करें।

४ हमारे उमराव और अमलदार भी बडे गुस्ताख थे मगर खानगी मे एजेन्ट से राय लेकर मददगार बनाया और सबको ऐसा दुरुस्त किया जो मेरे नाम से धूजते है। मैंने मेरा नाम निकाल लिया और अब धीरे-धीरे एजेन्ट की दस्तदाजी को भी कम कर दूगा। यही तरज आप भी इख्तियार करें।

५ राजपूताना के रईसो मे एकता धीरे-धीरे फैलेगी मगर इस वक्त कोई रईस लायक नही है इसलिए एकता का सिलसिला उदयपुर और जोधपुर से शुरू किया जावे। जो कोई नई बात पेश आवे या नया कायदा जारी होवे या गवर्नमेंट की बेजा दस्तदाजी रोकी जावे तो इन मामला मे पहले खानगी में दोनो रियासतो की एक राय करके फिर जवाब दिया जावे या काम किया जावे। ऐसी कार्यवाही को भुगताने को दोनो तरफ

भरोसे के आदमी से होना चाहिए। हमारी तरफ से तो कविराज मुरारदानजी हैं वहा की तरफ से तै करके मुझे इत्तला देवें।

६ महाराणाजी सा० व हमारे महाराजा सा० का हर साल एक दफा मिलन शिकार के बहाने से हो जाया करे जिसमे काम की कुछ बातें तै हो जावें।

७ इस बात का दोनो तरफ खयाल रहे कि साथ मे ज्यादा लोग नही लाया करें।

८ अब इन दोनो रियासतो मे आमद रफत ज्यादा रहेगा इसलिए यह कायदा जारी किया जावे। खुद रईस व महाराजकुमार इन दो के सिवाय किसी को खिलत वगैरा नही दिया करें और एक दूसरी जगह का भला आदमी आया जाया करे तो पहली दफे मे उसे दस्तूर माफिक खिलत दे दिया करें जिसमे खानगी दस्तूर जारी रहे। मगर वो ही शख्श दुबारा आवे तो उस वक्त कुछ नही दिया करें।

९ राजपूताने के सिवाय गायकवाड, हुलकर, सिंधिया से भी एकता पैदा करें क्योकि ये रियासतें एकता पैदा करने लायक हैं और इनकी एकता से लाभ हो सक्ता है।

१० चित्तौड से उदयपुर तक रेल जरूर बनवावें इसमे कई फायदे हैं।"

उपरोक्त पत्र-व्यवहार मे सर प्रताप द्वारा दिये गये उत्तरो से उनकी विलक्षण बुद्धिमत्ता, दूरदर्शिता, हिन्दुत्व-प्रेम, राजनैतिक दक्षता आदि अनेक गुण उजागर होते हैं। यदि कोई व्यक्ति सर प्रताप के पूरे जीवन चरित्र को नही पढे और केवल उपरोक्त प्रश्नोत्तरो को ही देखे तो भी वह सर प्रताप की अनोखी सूझ बूझ और उनके वर्चस्व का कायल हुए बिना नही रह सक्ता।

सर प्रताप सम्बन्धी कुछ कविताएँ

सर प्रताप के सम्बन्ध मे उस समय के अनेक कवियो ने फुटकर कविताएँ लिखी थी। उन कविताओ के नमूने प्रस्तुत है—

जे जाया रण-भजणा, इण सू भली अहूत[1]।
जणज्यो रजपूताणिया, पातल जिसा सपूत॥
मुख भाया, अजस[2] सयण, आया सिध अवसाण।
पितु मनसा पूराविया, ज्या जाया धिन जाण॥

—जैतदानजी मथाणिया

१ नि संतान   २. गर्व।

तू जायो तखतेश रँ, दिन दरसायो धन्न।
वीरा रस छायो बदन, (थारो) तुकमा छायो तन्न।।

—अज्ञात

पातल री वग[1] ऊपडी, अजड[2] झडी मझ आट।
वडी वडी बप वीर री, घडी वीर रस घाट।।

—किशोरदानजी लीलावास

हेम उछाळत हाथ, बहै उजाडा वाणिया।
सीहा वकरी साथ, पाया भूप प्रतापसी।।

—महादानजी वाणसूर-पारळाऊ

हिन्दुआ माय हमेस, तो सिरखा होता नृपत।
दुनिया मे ओ देस, पती कहातो पातला।।

मरता जद मा-बाप, जेवर घर विकता जमी।
औसर[3] मेट अमाप, पाळी मुरधर पातला।।

खडी न कोई खाय, पडी न को बांधे पलै।
आल्यो दुनिया आय, पाछो सत जुग पातला।।

भूला रजवट भूप, इण कळजुग अधार मे।
राजा सूरज रूप, प्रगट हुवो तू पातला।।

ढळ रजपूती ढाळ, जळ ज्यू नीची जावती।
भुज धारा भूपाळ, जे पाळ न होता पातला।।

महिपत[4] छोड मिजाज, धन दे दे राखे धरा।
रजपूती सू राज, पायो आज प्रतापसी।।

—फतहकरणजी उज्जवल, ऊजळा

जुगतीदानजी देथा (बोरूदा) की प्रताप पच्चीसी के दोहे (जो इस पुस्तक के अन्त मे उद्धृत है) बडे लोकप्रिय हुए थे। उस समय कई कवियों ने जो या तो जुगतीदानजी से ईर्ष्या रखते थे अथवा सर प्रताप के सुधारों से मतभेद रखते थे, भी कुछ दोहे रचे थे। इन कवियों में प्रमुख थे भोपालदानजी मथाणिया। उन्होंने जुगतीदानजी के दोहो की अन्तिम झड "पातल रो परताप" का प्रयोग कर कई दोहे बनाये, जो तथ्य की बजाय, काव्य की श्रेष्ठता के कारण लोकप्रिय हुए। यथा—

---

१ घोडे की बाग। २ तलवार। ३ मृत्यु भोज। ४ राजा।

मोसर[1] बद मुरधर किया, अधक विचारी आप।
भूत हुया भरम्या फिरै, (ओ) पातल रो परताप॥

गाडा भर मारो गिडक, आडा फिर-फिर आप।
ऐ धोया नह ऊतरे, (ए) पता चीकणा पाप॥

ऊमरदानजी लाळस ने जुगतीदानजी पर कटाक्ष किया है—

अधकोटा[2] फीटा[3] अरथ, मिटळी[4] कविता म्याप।
'जुगतो' कवि बाजै जको, पातल रो परताप॥

---

१ मृत्यु भोज। २ अधूरे। ३ निम्न स्तर के। ४ गई बीती।

कवियों की वाणी में सर प्रताप

कवित्त

—कविराजा मुरारिदान कृत*

नाम रिसपत को मिटायौ है रियासत सौं,
साफ इसाफ होत सत औ असत को ।
चोर बटमारे जे दुखारे दुनियाँ के तिन्है,
मार के निकारे ते पठाये दिगअत को ।
नद तखतेस के प्रतापी प्रतापसिंघ,
फिरै फरमान ताहू रौब यौ अनत को ।
सवलन घार उर सबर नमायौ सीस,
जबर जमायौ राज राजा जसवन्त को ॥१॥

राजपुत्र सस्त्रन सो जीवी ही वनिये विधि,
जुध भिक्षा ही मे मुख्य रह्यौ जस छाय कै ।
तिनही मे ठौर ठौर जाहर राठौर वस,
ताको तै चढाई अति आव भले भायकै ।
रग है प्रताप सो वढायौ है प्रताप तेतौ,
जग माझ परावधी वीरन मे जायकै ।
छत्रिन सौं वन्दन के जोग तखतेस नन्द,
लन्दस सौ आयौ जरनेल पद पायकै ॥२॥

आमन्त्रन विना रन मारने को जान मन्त्र,
सझिके स्वतन्त्रता सौं वीर रस वढिकै ।
जन्मतौ प्रताप जो न जोधपुर करतो को,
जीरन उधार रजपूती अग्र वढिकै ।
आज लौं गयो न सिंधु पार विन रामचन्द्र,
जग काज भनत मुरार सत्य पढिकै ।

---

* यह आसिया जाति का चारण कवि था। प्रसिद्ध ग्रन्थ 'जसवन्त जसो-भूषण' की रचना की। इसे कई गाव जागीर मे मिले हुए थे तथा जोधपुर राज्य मे सम्मानपूर्ण स्थान प्राप्त था।

ठौर ठौर कहत राठौर रन बके ताहि,
कोन्ही कोर गुनी दृढ चीन पर चढिकै ॥३॥

दोहा— ग्रोखाणा ग्रादू इळा, रण वका राठौड ।
पतसाहा परतीत दी, मरदा पातल मौड ॥

प्रताप पचीसो

कवि जुक्तिदान कृत*

ग्राहक सुजस गुमान रै, मान तखत मजबूत ।
जसवन्त सू छोटो जठै, सुत परताप सपूत ॥

— सवैया —

देखिजिसी दरसाई दुहान मे, कोई सी वात न भाषी कचीसी ।
लोभ कछु नहि धारली ध्यान मे, ग्रादत ग्रापकी जोम ग्रचीसी ।
होस हमारेहि के ग्रनुसार, श्रकार[1] की शोभा सफाई सचीसी ।
कान पसाव कृपा कर कीजे, पढे कवि जुक्त प्रताप पचीसी ॥

—दोहा—

जल दुमार जोधाण मे, सदा रहत सताप ।
नळ सू जळ मोकळ नगर, पातल रो परताप ॥१॥

तलवा सू लुटता लिवे, मेट करी मा बाप ।
कासीदी कोसा मुजब, पातल रो परताप ॥२॥

खत ऊना मे खावता, ग्राजिवका ग्रमाप ।
हैस्यत मुरघर मे हुई, पाताल रो परताप ॥३॥

राजी विध विध राखिया, ग्रगरेजा ने ग्राप ।
माल्हाणी पाछी मिळी, पातल रो परताप ॥४॥

म्लेछा रा बेडा मिटै, पूरविया रा पाप ।
रजपूता लडका रखै, पातल रो परताप ॥५॥

छत्री चराता छाळिया, ग्रस रस चढ ले ग्राप ।
मोहरा रा बट्टण मिलै, पातल रो परताप ॥६॥

---

* बोरून्दा ग्राम निवासी देथा चारण

१ सर प्रतापसिंह

सडका चोखफ व्ही मघर, काटा पत्थर काप ।
वगिया सह वैठा फिरै, पातल रो परताप ।।७।।

कहडी बणी कचेडिया, तार रेल तुरताप ।
वाग पावटे वण रह्यो, पातल रो परताप ।।८।।

गघ नासका री गई, सहर रहे नित साफ ।
हीडकिया स्वाम न हुवे, पातल रो परताप ।।९।।

मन्त्र तन्त्र छाया मिंदर, सौ विघ रा सताप ।
मुरघर मे लागा मिटण, पातल रो परताप ।।१०।।

दढ पोला घुडदौड मे, साव जना सू साफ ।
भट एडीकप जीत ले, पातल रो परताप ।।११।।

पी दारु परवाग्ता, घान न मिळतो घाप ।
ठेको व्हैता ठीक व्ही, पातल रो परताप ।।१२।।

जोवो किनिया जलमता, मार देत मा-वाप ।
परणावे राघड प्रसिघ, पातल रो परताप ।।१३।।

सूघा री सुणता नही, मोडा री अणमाप ।
मिटगी सरब हिमायतो, पातल रो परताप ।।१४।।

लोग जमाता लूटता, अफड फितूर अमाप ।
मिटगा घाडा मुलक मे, पातल रो परताप ।।१५।।

वाता सू ईलम बिना, उमरायता अणमाप ।
खाजी सारा खूटगा, पातल रो परताप ।।१६।।

कदर न ठोठा री करे, घिन गुणिया घणयाप ।
पढै सरब ही जोघपुर, पातल रो परताप ।।१७।।

जोवौ सुत जसवत रो, इलम पढै अणमाप ।
सुघरे है सिरदार सी, पातल रो परताप ।।१८।।

लला कोटडी लूटती, ओदहा ले ले आप ।
तरफदारिया तूटगी, पातल रो परताप ।।१९।।

देता दुख सव देस ने, मरजीदान अमाप ।
गिरै मिटी बेगार री, पातल रो परताप ।।२०।।

हसते साहिव हाम रे, नन्दी लूणी नाप ।
जसवतसर बधियो जबर, पातल रो परताप ।।२१।।

खरच फजूली खोवता, मुलमुल वघकी माप ।
काठा पहरे कापडा, पातल रो परताप ।।२२।।

मोसर शादी मायने, बादोबद बिगडाप ।
ऐ रोळा लागा उठण, पातल रो परताप ।।२३।।

जुळता सिर चीठा जुवा, केस वृथा सहकाप ।
रीत श्राद मूछा रखी, पातल रो परताप ।।२४।।

कवता गीता मे किती, घरता घसका धाप ।
कूड तजे साची कहा, पातल रो परताप ।।२५।।

उगणीसै श्रड्चास इघ, घर मिगसर सुघ घ्यान ।
पच्चीसी परताप री, दाखी जुगती दान ।।

सोरठा

कविवर फतहकरण* उज्ज्वल कृत

चारण कुळ म्हे चीत, माथे किणरे माडता ।
भूपत तोसी भीत, पावत नह जो पातला ।।१।।

अस नर मोती श्रेम, मुरघर मे मिळता नही ।
जोघा जौहरी जेम, प्रगटत नह जो पाताला ।।२।।

लिये न दाम लिगार, दूजानै लाखा दियै ।
आयो कोई अवतार, पाळण मुरघर पातला ।।३।।

हूँ नर रसना हेक, थारा गुण लाखा थिया ।
वरणा जथा विवेक, पावन जस थारो पता ।।४।।

ओसर नसा अकाज, मिट सगळा सपत मिळी ।
मुरघर मे महाराज, प्रगट्यो मनू प्रतापसी ।।५।।

मेल तलब अमराव, लोका रा घर लूटता ।
ओ मेटे अन्याव, पाळी मुरघर पातला ।।६।।

मुसदी कर चीमाह, नूतो घर घर नाखता ।
मेटी दुख सीमाह, पाळी मुरघर पातला ।।७।।

कळजुग ग्रीष्म काळ, जळ रजपूती जाळतो ।
मिळतो नह घन माल, पुळ इण माय प्रतापसी ।।८।।

---

* यह गाव ऊजळा (तहसील फलौदी) का जागीरदार था ।

रजपूती जळ राह, जिका रसातळ जावती।
वरणतो नह वाराह, पुळ इण माय प्रतापसी ॥६॥

लोपे केता लोक, जाती गगा धार ज्या।
रजपूती सिर रोक, शकर हुवो प्रतापसी ॥१०॥

यूरपिया कर यार, जाती रजपूती जठे।
जुध जीते जोधार, पाछी लायो पातला ॥११॥

रजपूती नै रोय, बैठा जुग बीताविया।
हमैं घनतर होय, पगा हलाई पातला ॥१२॥

किता न आई कूप, किता गमाई बेकदर।
भुजा कमाई भूप, पाई धरा प्रतापसी ॥१३॥

केवळ पूजण काज, बड पीपल भूपत विया।
मलयज ज्या महाराज, पायो तनै प्रतापसी ॥१४॥

करै न को पर काज, हस मोर सारस महिप।
अेक हमायू आज, पायो तने प्रतापसी ॥१५॥

हिम गिर खोर हराम, गरभ जिका कुण गाळती।
जो सूरज कठ जाम, तू प्रताप तपतो नही ॥१६॥

अेकल करण अहार, दतावल ज्या दूसरा।
पळ भर पाळण हार, प्रगट्यो सिंघ प्रतापसी ॥१७॥

अै लोहा सम आज, दोहा होता देश मे।
मिळतो नह महाराज, पारस भूप प्रतापसी ॥१८॥

अमरा जिसा अनेक, दूजाई भूपति दिपै।
है दुनिया मे हेक, तू परब्रह्म प्रतापसी ॥१६॥

दोहे–सोरठे

बणसूर महादान* कृत

हेम उछाळत हाथ, वहै उजाडा वाणिया।
सीहा बकरी साथ, पाया भूप प्रताप

करवै भूठी कीत, क्यू अन भूपारी क
रजवट हदी रीत, पेखी भुजा प्रताप

* यह कवि गाव पारलाऊ का पाटवी जागीरदार था।

नित प्रत दरसण नेम, वा मन वछत व्है अवस ।
जाहर कलव्रछ जेम, पेख्यो भूप प्रतापसी ।।३।।

करसण करत कळाप, वा रजवट मग आणिया ।
मुरधर रो मा-बाप, साचो भूप प्रतासी ।।४।।

के नृप करै सिकार, अतभय जुत छिप ओदिया ।
वाघा मुख वाकार, तू मारै परतापसी ।।५।।

खेटावै गिर खेळ, हाकल मुखा हटावणो ।
रुक बाघा सू रोळ, तू हिज करै परतापसी ।।६।।

वाघा नै वतलाय, आता थाहर ऊपरा ।
डाकर कर डकराय, पाडै कुण तो विण पता ।।७।।

अळधा सू आवेह, काळ रूप बण केहरी ।
जिण साम्हो जावेह, तू हिज वतळावै पता ।।८।।

नाहर आगळ न्हासता, सुणता वाता साफ ।
भाळचो नाहर भागतो, तो आगळ परताप ।।९।।

है नह को हिन्दवाण मे, समवण तो समराथ ।
पाळग सजन प्रतापसी, पणधर साचौ पाथ ।।१०।।

कुण सबळा निबळा कवण, सारा हेकण सार ।
पेखाई नृप पातलै, वासत जुग री वार ।।११।।

करण भोज विक्रम किसू , वण तिण हूत विसेस ।
तखत सुतण परतापसी, दत्त रण सुधरण देस ।।१२।।

कमधज रजवट रो किलो, दरसायो दुनियाण ।
तूझ भुजा परतापसी, है बाजी हिन्दवाण ।।१३।।

धारा मुख[1] समहर धसण, वहै अरोडो वीर ।
आठ विलायत आखियो, धिन प्रताप रिणधीर ।।१४।।

करण द्रोण भीसम करा, दान वीर उपदेस ।
अै तीनू गुण आप मे, सोहे सुत तखतेस ।।१५।।

सोह नृपा व्है सक, तो देख्या परतापसी ।
वेइमाना री वंक, तै हिज मेटी तखतसुत ।।१६।।

सुणियो काना साफ, पारस किणी न पेखियो ।
पण परतख मा बाप, पारस रूप परतापसी ।।१७।।

---

१ तलवार की धार के सामने ।

मुल्क का रखवाला

– तरज बजरंगी –

कलिया नारायणसिंह* कृत

हिन्दी लिपि का आधार, अर्जी उर्दू की दे फार
मरुभाषा से है प्यार, मन मतवाला यह ढग निराला
कहे क्या अजब श्यान शौकतवाला
करके युक्ति से प्रचार, दिया करजा सब उतार
किया मुरधर का उद्धार, आला-आला मुसाहिब आला
चाहिए ऐसा मुल्क का रखवाला ।

कवित्त इकतीसो

भाद्राजून राजा देवीसिंह कृत

तोड पुवियन तमाम, रख रिमाले बीच
सवारी सिखाय उच्च ओहदे दिलातो को ।
बनाय स्कूल राजपूत कुल बोर्डिंग
पढ़ाय भरपूर इल्म विद्या को बढातो को ।
राजपूत कौम जो गिरी थी गिर उन्नति तें
पकड के बाह ताको शिखर पै चढातो को ।
कहै 'देवसिंह' 'सरप्रताप' जो न हुतो
हमें पथ कुमार्ग से सुमार्ग चलातो को ।

गीत चीन रै जुध रौ

आसिया चारण पाबूदान† कृत

रहो ठहती विमाण गैण रचतो वणाव रभा,
लूर लै जोगणी अपे करती अलाप ।
मिलतो वृटेन सेना चीण री विलात माथै,
पमगा पाचसो हूत हालियौ प्रताप ॥१॥
अफूलत थई फूला चोसरा वणावे परी,
धणी दिना जोस रा चोमटो गीत गात ।
भाला अोघ मवता सनम्यौ भूरै लोक भेळो,
भिडज्जा तासडा हूता जसा हरो भ्रात ॥२॥

---

* यह जोधपुर का निवासी था ।
† यह गांव भांडियावास (परगना बाडमेर) का निवासी था ।

निरखँ ऊपरा घणी वारगना भूल नाचै,
दोडे आगे जोगणी सवायें वेग दूड ।
कठट्टियो महाराजा जोधनेर पतो काको,
ओसेल अहासा हूत खाथा कडाजूड ।।३।।
घणा दिना हूत पूर अछरा उमही घणी,
हले आद चोसटी पूरवा काज हाम ।
प्रळै रूप जाडा दळा सू क आयो पतै,
चीण रै पातसा हूत करेबा सग्राम ।।४।।

सांदू राघोदान* कृत सोरठे

सोहा मानै सक, लीहा हुकम न लोपवै ।
बाका काढे वक, पाधर किया प्रतापसी ।।१।।

मूके नाहर मार, सूके मद सू डाहळा ।
फेरे कुण फुरमाण[१], पाछा तूर्क प्रतापसी ।।२।।

रच लेती केइ रग, मुरधर कर वैता मता ।
ढावी एकरण ढग, प्रथवी बाहिज तै पता ।।३।।

दोहा— फिरै चद रवि रथ फिरै, अरु ग्रह फिरै अनेक
प्रथमी फिरै प्रतापसी, हुकम फिरै नह नेक ।।४।।

महाराजा करनल सर प्रतापसिंघजी साहिबां री झमाल

चारठ किशोरदान‡ कृत

सुरसत गणपत दै सुमत, आखर सरस अलाप ।
गढपत्ती गाऊँ गुणा, पर चाडा[२] परताप ।
पर चाडा परताप, इङ्कल धर आगलो ।
मालहै फौजा माय, अबीह अचागलो ।
वरसा सितरां वीर, दुरग्गी दूसरो ।
असमर फास उवेळ, रूखाळौ रूस रो ।।१।।

---

* यह सादू जाति का चारण गांव मिरगेसर (परगना बाली) का निवासी था ।

१ फरमान, आदेश

‡ यह गाव गोळावस (परगना जोधपुर) का निवासी था ।

२ दूसरो की रक्षा ।

तखत भूप मुरधर तखत, वरा तखत धर धीस ।
पायौ सुतन प्रतापसी, स्याम समप्पण सीस ।
स्याम समप्पण सीस, महा प्रण मडियौ ।
डारण वह केवार, खळा दळ खडियौ ।
मुरधर रतन अमोल, सूरा गुर सार रौ ।
अँजसै भारत आज, भळण जुध भार रौ ॥२॥

स्याम धरम्मी स्यामरा, वाज सुहड वरम ।
वे छत्रो भल ऊपना, आरज वश अनम ।
आरज वश अनम, गयदा गौडणा ।
पह मातै पीठाण, झिलम निज्झोडणा ।
एक अनेका सीस, निग्रोठा नक्खणा ।
भिडिया भीम, भुजाट, रजव्वट रक्खणा ॥३॥

ज्या हूता मानै जगत, चलण सपूताचार ।
परखडा जस पामणा, ज्या भामणा[1] हजार ।
ज्या भामणा हजार, लियै लज लगरा ।
भड आया जुध भार, रचण उछरग रा ।
वीफरिया वबरैल, अवक्की वाण रा ।
वधव धूहड वीर, धणी जोधाण रा ॥४॥

बावन जुध जीतौ वहस, पह कारण पतसाह ।
डारण कदे न डाहियौ, निज तन गजन सनाह ।
निज तन गजन सनाह, सनेह दिलीसरै ।
रहियौ आगळियार, वसू किम वीसरै ।
तिण नो गरु प्रताप, विभाकर वस रौ ।
धाणै धल्लणहार, घैसाहार घस रौ ॥५॥

क्वीन[2] श्रीविक्टोरिया, इङ्गल हिन्द अधीस ।
प्रसन रही प्रताप सू, अमित सदा अवनीस ।
अमित सदा अवनीस, सुग्रह समापिया ।
आरज घर उपटव, अखर आलापिया ।
वरमा कावल वीर, महाजुध मडिया ।
अर भग्गा अलँगाण, आथाण उछडिया ॥६॥

---

१ बन्हिहारी । २ बशीन, महारानी ।

रहचण काबल नह रही, घर काबल खग धार ।
काबल कर सक्कै किलम, उर थक्का बलवार[1] ।
उर थक्का बलवार, विढण क्यूं बीसरै ।
लग्गा लोह लकीर, नमन्ता नीसरै ।
वाव फरूक्कै वेढ, वळे नह वापरै ।
पाणा चढिया किलम, जिके परताप रै ।।७।।

धुजा फरक्की धूहडा, वहरक्की गजबोह ।
वसू थरक्का कावली, मुरधर छक्की मोह ।
मुरधर छक्की मोह, पाण परताप रै ।
ओछडगा आथाण, खळी वळ खापरै ।
ज्यारा सोवन थाळ, भलाई वज्जिया ।
पातल जनम पखैत, सुभारैत सज्जिया ।।८।।

इङ्गल फौजा उपरै हुकम चलावण हार ।
पता विना नह पेखिया, भारत भू भरतार ।
भारत भू भरतार, रजब्बट रजणौ ।
अवतरियौ नर अेक, गनीमा गजणौ ।
घर काबल खग धार, किलम्मा कढ्ढिया ।
नामा इन्द दुङद, नखत धू नढ्ढिया ।।९।।

हाजर कीधा साहरै, कदमा पकड किलम्म ।
पातल रै तन ओपिया, तुकमा रूप खतम्म ।
तुकमा रूप खतम्म, फतै रा फब्बिया ।
देखता उर दभ, अरदा दब्बिया ।
विह सतौ निज वदन, वीरा रसवेस रौ ।
दीपायौ हद दौर, मुरधर देस रौ ।।१०।।

सीहा थाहर सीहरु, हुवा न इचरज होण ।
काम पता कमधज्जरा, सुणण ललच्चै श्रोण ।
सुणण ललच्चै श्रोण, अबीढा आखरा ।
सुपहा सोह मढत, छतीसू साखरा ।
पाळौ स्याम धरम, इसी विध भूपता ।
बलिहारी सौ वार, हुवा जिण नर हुया ।।११।।

---

[1] उपद्रवी ।

करडा वरमा कावली, उर बरडा अहँकार ।
वार न लागी नमावता, त्या हदी तरवार ।
त्या हदी तरवार, पगा पतसाह रै ।
लदन धगई लाय, निखल नर नाह रै ।
श्री महाराणी साह, निपट सनमानियौ ।
उरस लगौ उतमग, वीर अहवानियौ ॥१२॥

चीरण उदगळ चेतयौ, दळ सझ गयौ दुबाह ।
फरक फलूहा फावियौ, आरण कियौ उछाह ।
आरण कियौ उछाह, वीरातन वढ्ढियौ ।
मारू लोह मराट, चमू सझ चढ्ढियौ ।
आरण मझ अखडेत, उडडा ओरिया ॥
झिलमा वीजळ झाट, निराट निभ्होरियो ॥१३॥

सहू विलायत एकसथ, एकै इङ्गल ईस ।
पतौ कमघ सेनाघपत, आगळ फौज अधीस ।
आगळ फौज अधीस, कूत भळकावतौ ।
तुररौ सिर जरतार, निहग नचावतौ ॥
नट वट्टा ज्यू निपट, झिलै वळ झपतौ ।
वण जोधौ असवार, चील फण चपतौ ॥१४॥

वगसर भग्गा चेढ तज, सुण वग्गा नीसाण ।
ताप उनग्गा तेग री, अर डग्गा आराण ।
अर डग्गा आराण, कठोरव कुजरा ।
पूजै कुण पीठाण, प्रपोता पुजरा ।
दरियावादा दौर, झिलै नह डूबळा ।
भग्गा भवस समीत, भिडता भूवळा ॥१५॥

एडवर्ड सप्तम इळा, पाळणहार प्रवीत ।
पातलरा भुज पूजिया, ज्यूं दुरगै अगजीत ।
ज्यू दुरगै अगजीत, मुरधर माझळी ।
आहव आहव अग्ग वणायौ भुजबळी ।
सपर पता कर सार, इळा इगळेसरैं ।
हमस हलावणहार, सहायक देसरै ॥१६॥

तन तुकमां तरवार तस, मन मुघ स्याम घरम ।
पूरत सदा प्रतापरा, वस छतीस बरम ।

वस छतीस वरम, गनीमा गाळणौ ।
श्राभाळी ग्रघपती, भली ग्रढ भाळणौ ।
जारज पचम जोध, ढिलोवै ढूकडौ ।
श्राठू पहर ग्रबीह, खेडेचौ रहै खडौ ।।१७।।

जग विलग्गौ जरमना, इगळ हूत ग्रचाण ।
ग्रगरेजा ग्राराधिया, घूहड दुहू जोधाण ।
घूहड दुहू जोधाण, सुमेर सुरेस सौ ।
सुपह महपति साथ, रिमा उर रेस सौ ।
समहर हरक सवाय, वुलाय बहादुरा ।
ऊभलिया ग्राराण, तरस्से चढ तुरा ।।१८।।

नृप सुमेर पातल निडर, ग्रर घर करण उद्यान ।
तोयघ तरळ तरग तिर, गा लदन गहवान ।
गा लदन गहवान, सुभट्टा सारखा ।
साहण लीघा साथ परक्खे पारखा ।
खीची ग्रहिया खाग गुमन ग्ररि गजणौ ।
राव बहादुर रूक, भवस्सा भजणौ ।।१६।।

इग्रोखै ग्राथाण रौ, सँभरियौ साखेत ।
खित पुड घड सिर खू द रै, हरक समप्पण हेत ।
हरक समप्पण हैत दळा मभ दीपतौ ।
पणधारी रजपूत जरमना जीपतौ ।
डारण नाहर डाण ठवन्तौ ठाहरा ।
फुरलतौ ग्ररि फौज तसा घिन ताहरा ।।२०।।

भड दूजा भारथ रा, धुर खचण बळ घू न ।
सुत सिरदार सुमेर रौ, चलै उजाळण चू न ।
चले उजाळण चू न महाभड मारका ।
ग्राखडिया ग्रखडैत, सरम गढ सारका ।
खग धारा खरहड, गनीमा गेरणा ।
तोपा सिर तोखार घणे बळ घेरणा ।।२१।।

परसे इगळ पातसा, मारू पतं सुमेर ।
कारण जुद्ध कडच्छिया, ग्रै डारण ग्रासेर ।
ग्रै डारण ग्रासेर, हरोला हल्लिया ।
एक भूसण सिणगार, उदद्ध उर्भाल्लया ।

रखवाळा राठौड, धरा यूरोप री ।
पेखी यह ससार, परावध कोप री ।।२२।।

रूस फ्रास मझ रच्चिया, जरमन हूता जुद्ध ।
पडियाँ जाए पराळ मे, कए मगळ कर क्रुद्ध ।
कए मगळ कर क्रुद्ध, प्रझाळा प्रस्सरी ।
धूहडिया खग धार, विनाए वहस्सरी ।
जरमनी जोधार मिटावै मारका ।
ज्यू वादीगर वाग अछत्ता आरखा ।।२३।।

झाळा माळा झळहळै, रिडै वहाळा रत्त ।
समहर जुडै सुमेर रा, भड खाटएा प्रभत्त ।
भड खाटए प्रभत्त, सकोहा साफळै ।
लै जरमन परलोक, रहच्चे राफळै ।
एक घाव दोय टूक, वटक्का अग रा ।
खळकै लोही खाळ, प्रनाळ पतग रा ।।२४।।

तूटै सिर घड तडफडै, जळ तुच्छै मछ जाए ।
सेल दुसारा नीसरै, केता सह केकाए ।
केता सह केकाए, अटै रत ऊवकै ।
घट अतर कढ घाव, हजारा हूवकै ।
माटा पूट मजीठ, कसू बा कढ्ढिया ।
चौडे सूता खेत, सुरग रग चढ्ढिया ।।२५।।

के घड पडिया तडफडै, घाय बडबडै घाए ।
रुड रडवडै अत रुळै, वळवळ चडै विवाए ।
वळवळ चडै विवाए, उमाहै अच्छरा ।
प्रेत भखै पळ पिंड, प्रगट दुहुँ पच्छरा ।
वाळ फरुकै वाय, जुहारा जग रा ।
वदावै जै वेढ, अरी निज अग रा ।।२६।।

जुडलग[1] घाट जिनेउआ, ऊतारै अरि अग ।
पूँतारै पातल सुपह, राठोडा उछरग ।
राठोडा उछरग, धएी निज धीरपै ।
हुवै सुहड हमगीर, परठ सिर सेसपै ।

---

१ तलवार ।

घर तोमर खग धार, पमगा पाछटै ।
आचगळा अखडैत, असमर आछटै ।।२७।।

काळीहदा कळसरी, कमधा भडा कहाव ।
साहमा भाला सचरै, पाछा धरै न पाव ।
पाछा धरै न पाव, बगं रिण बावळा ।
तोपा सिर दै तौर, उडड उतावळा ।
दहलै ज्या जमदूत, मुहड गढ सारता ।
मुरधरिया मरजाद, भळण जुध भारका ।।२८।।

यू लीधी आराण री, सुभडा भचक सवाय ।
जरमन दळा निझोडिया, जग प्रवाडा जाय ।
जग प्रवाडा जाय, बिरद बोलविया ।
असपत सीख उदार, थिरा सुख थाविया ।
मुरधर नाह सुमेर, मुरद्धर माझळी ।
जुड आया जाधाण, रचाई रग रळी ।।२९।।

पातल भूप पधारिया, अरक वश आदीत ।
परणावे जोधाण पन, निज कृत हुवा नचीत ।
निज कृत हुआ नचीत, सुभाव सुरेस रौ ।
ईडर पत अरडीग, दिपाऊ देस रौ ।
साहसाह समी धूहड पग धारियो ।
पाछो वीर प्रताप प्रखड पधारियो ।।३०।।

स्याम धरम समहर समै, पाळणहार प्रवीत ।
वीर सिधायो व्रद्ध वै, निज पति करण नचीत ।
निज पति करण नचीत, पूतौ सद प्रीत सू ।
नदन गौ नरनाथ, नरेसा नीत सू ।
राठोडा कुळ रीत, प्रथा क्यू पालटै ।
मु हगी स्याम धरम, सभायौ सिर सटै ।।३१।।

आगळ धर यूरोप री घोर पतौ छत्र धार ।
साहसाह सराहियौ, जोधौ जैत जुवार ।
जोधौ जैत जुवार, विभाकर वश रौ ।
धारक स्याम धरम, अछेह आहस रौ ।
सीहा हदै सीह छराळा ऊछरै ।
घालै गायदा घाव मेळ कर मूछरै ।।३२।।

पातल घर यूरोप रो, माल्है आप मरद्द ।
सुपह छतीसू ई वश रौ, जोधौ रूप जरद्द ।
जोधौ रूप जरद्द, जरमना जाळसी ।
भारत वरस भुवाळ, नदन पत नाळसी ।
अडग स्याम ध्रम एम, रखीजै रावता ।
जावै नह जस जेण, जमी पुड जावता ।।३३।।

उपजै खपै अनेक इळ, राजा धनी गरीव ।
पातल ज्यौं खाटै प्रसिध, नरा प्रमाण नसीव ।
नरा प्रमाण नसीव, प्रथमी पेखसी ।
दुनिया दुल्लभ देह, धरी भळ देखसी ।
वरप सितरचौ वीर, अजे जुध आफळै ।
अजसै मुरधर आज, पता जस प्रगळै ।।३४।।

चौथे आश्रम जुध चढण, सुजस वढण ससार ।
पुन आगळै प्रताप नै, जुडिया जैत जुआर ।
जुडिया जैत जुआर, इता अब एकठा ।
माण विहूणा होय, मलै क्र मन मठा ।
नरा लोक निज नाम, उपार्या ऊजळौ ।
आभ लगौ अधपत्त, फतै कर साफळौ ।।३५।।

नीत काज इगळ नृपत, सझियौ जुध सैमान ।
बेलजियम औसरविया, थिरा उबारण थान ।
थिरा उबारण थान, जुलम जरमन्न रै ।
ऊभा ठह अखडैत, आधार अवन्न रै ।
अरी जीत अवस्स, धरम पख धारियौ ।
सरणाई साधार, विरद विसतारियौ ।।३६।।

जारज पचम जीतसी, विलियम जासी बीत ।
पातल जग जस पावसी, इळ थावसी अभीत ।
इळ थावसी अभीत, विरद बोलावसी ।
अधपत घर अजमेर, अचीतौ आवसी ।
वाता सामधरम, तणी रह जावसी ।
गुणियन गीता गला, घणा ही गावसी ।।३७।।

कुळ कमधा अन नृप कुळा, पडो साह पहचाण ।
सिर घर काज दिलीस रै करणहार कुरबाण ।

करणहार कुरबाण, अनमा नामरण ।
भारत वरस सदैव, भला लै भामरण ।
राठाडा कुळ रीत, अवनी अजसै ।
वसुधा ज्यारै पाण, निरम्भै व्है वसै ॥३८॥

जोधाणो वीकाण जग महाराज इळ मज्झ ।
सच्चै पख दुहु सज्भिया, गाहिडमल्ल गरज्ज ।
गाहिडमल्ल गरज्ज, अडीखम ऊठिया ।
राडीगारा राड, रिणमल रूठिया ।
नृप सुमेर गगेव, प्रभत्ता पावसी ।
थिर जस इगळथान, कमध कहावसी ॥३९॥

निखळलोळावास गाम निज, कमधा कवी किशोर ।
सवत गुणी तेहोत्तरै, तवियौ जस नृप तोर ।
तवियौ जस नृप तोर, प्रथीप प्रताप री ।
निसचल रहसी नाम, जगत जस जाप री ।
बारठ चारण वश, काती सुध चवथ री ।
मार तणी झमाळ, इळा मझ अवतरी ॥४०॥

दोहा

अवव धू गिर मेर इळ, सूरज सोम समद ।
पातल जस केशव पढै, कायम इतै कमद ।

॥ इति सवत् १९७३ रा कातिक सुद ४ ॥

पुरोहित केसरीसिंह* कृत दोहे

रकम खजाने न रहे, जमा बीस लख जाण ।
काम नृपत सुप्रत कियो, पातल नै पैछाण ॥१॥
करजो सारो काट नै, जमा खजाने जोड ।
श्रीपत मुरधर री अबै कीनी अधक करोड ॥२॥

सोरठा

घाडा चोरी घाप, उदगळ कई ऊठता ।
तन धन परजा ताप, वीर प्रताप मिटाविया ॥३॥

---

* *यह ठिकाना तिवरी (परगना जोधपुर) का छुटभाई था ।*

मैंणा बागी मार, कई मेवासा कट्टिया ।
तै परजा नी तार, धिन्न तोय पातल धणी ।।४।।

दोहा

भाजघडा भाजी भिडा, ओघा अमल अमाप ।
थापे उथप सटपट थकी, तिका पतै परताप ।।५।।

राजस काज सुधारणौ, समझ धरम दृढ श्याम ।
तन सुख जाणै त्रण पतौ, करण भूप सिध काम ।।६।।

पुत्र धरम पाळचौ पतै, जेम राम जग जाण ।
अेमनगर ईडर अधिक, आट व्याज मे आण ।।७।।

पुत्र कनक धर प्राण रो, रख्यो लोभ नह राज ।
परम लगन है पातलै, मरण साम रै काज ।।८।।

हरष सजन जन है पतो, सर सत्रव उर साल ।
व्रद्ध पितामह वीर वर, वस राठवर ढाल ।।९।।

होवे पातल हरष हद, सुणलै जे सग्राम ।
नडी नडी नाचै निपट, करण वीरता काम ।।१०।।

सुध भाद्रव तेरस तिथी, जग गुणियासी जाण ।
सोमवार स्रग वासनै, पातल कियौ प्रयाण ।।११।।

पाळण दृढता त्याग पण, सह ग्या पातल साथ ।
आज प्रथी सू ऊठगी, भीपमवाळी बात ।।१२।।

वलि बावन नै बगस दी, राम विभीपण राज ।
पातल सुरग पधारता, कुण सारै अै काज ।।१३।।

पतो मोद थो भूपला, पाण सिंधु नृप पाज ।
राजपुताना राजरी, आगळ भागी आज ।।१४।।

अजस नृप उर आणता, पतै भूप रै पाण ।
सर छनिध तपतो सदा, भयो असत वो भाण ।।१५।।

कदर देसिया कुण करै, विना पातले वीर ।
स्वर्ग गमन उर असह सर, धरा केम आ धीर ।।१६।।

वीर धीर खिम्या वडो, अत ही चित उदार ।
कर गुण सारा एकठा, लेग्यो सर पी लार ।।१७।।

सोरठा

कैरव पृथ्वी काज, केई भूप कट मट मरे ।
तिका पृथी मर ताज, त्यागी उण तत्पर पते ।।१८।।

करणहार कुरबाण, अनमा नामणा ।
भारत वरस सदैव, भला लै भामणा ।
राठोडा कुळ रीत, अवनी अजसै ।
वसुधा ज्यारै पाण, निरभ्भै व्है वसै ।।३८।।

जोधाणो वीकाण जग महाराज इळ मज्झ ।
सच्चै पख दुहु सज्झिया, गाहिडमल्ल गरज्ज ।
गाहिडमल्ल गरज्ज, अडीखम ऊठिया ।
राडीगारा राड, रिणमल रूठिया ।
नृप सुमेर गगेव, प्रभत्ता पावसी ।
थिर जस इगळथान, कमध कहावसी ।।३६।।

निखळलोळावास गाम निज, कमधा कवी किशोर ।
सवत गुणी तेहोत्तरै, तवियौ जस नृप तोर ।
तवियौ जस नृप तोर, प्रथीप प्रताप रौ ।
निसचल रहसी नाम, जगत जस जाप रौ ।
बारठ चारण वश, काती सुध चवथ रौ ।
मारू तणी झमाळ, इळा मझ अवतरी ।।४०।।

दोहा

अवव धू गिर मेर इळ, सूरज सोम समद ।
पातल जस केशव पढै, कायम इतै कमद ।

।। इति सवत् १९७३ रा कार्तिक सुद ४ ।।

पुरोहित केसरीसिंह* कृत दोहे

रकम खजाने न रहे, जमा बीस लख जाण ।
काम नृपत सुप्रत कियौ, पातल नै पैछाण ।।१।।
करजो सारो काट नै, जमा खजाने जोड ।
औपत मुरधर री अबै कीनी अधक करोड ।।२।।

सोरठा

धाडा चोरी धाप, उदगळ कई ऊठता ।
तन धन परजा ताप, वीर प्रताप मिटाविया ।।३।।

---

* यह ठिकाना तिंवरी (परगना जोधपुर) का छुटभाई था ।

मैणा वागी मार, कई मेवासा कट्टिया ।
तै परजा री तार, धिन तोय पातल धणी ॥४॥

दोहा

भाजघडा भाजी भिडा, औघा अमल अमाप ।
थापे उथप सटपट थकी, तिका पतै परताप ॥५॥

राजस काज सुधारणौ, समझ धरम द्रढ श्याम ।
तन सुख जाणें त्रण पतौ, करण भूप सिघ काम ॥६॥

पुन धरम पाळची पतै, जेम राम जग जाण ।
अेमनगर ईडर अधिक, आट व्याज मे आण ॥७॥

पुत्र कनक घर प्राण रो, रख्यो लोभ नह राज ।
परम लगन है पातलै, मरण साम रै काज ॥८॥

हरप सजन जन है पतो, सर सत्रव उर साल ।
व्रद्ध पितामह वीर वर, वस राठवर ढाल ॥९॥

होवे पातल हरप हद, सुणलै जे सग्राम ।
नडो नडी नाचै निपट, करण वीरता काम ॥१०॥

सुध भाद्रव तेरस तिथी, जग गुणियासी जाण ।
सोमवार सग वासनै, पातल कियौ प्रयाण ॥११॥

पाळण व्रढता त्याग पण, सह ग्या पातल साथ ।
आज प्रथी सू ऊठगी, भीपमवाळी वात ॥१२॥

वलि वावन नै वगस दी, राम विभीपण राज ।
पातल सुरग पधारता, कुण सारै अ काज ॥१३॥

पतो मोद थो भूपता, पाण सिंधु नृप पाज ।
राजपुताना राजरी, आगळ भागी आज ॥१४॥

अजस नृप उर आणता, पतै भूप रै पाण ।
सर छत्रिय तपतो सदा, भयो असत वो भाण ॥१५॥

कदर देसिया कुण करै, विना पातनै वीर ।
स्वर्ग गमन उर असह सर, धरा केम आ धीर ॥१६॥

वीर धीर खिम्या वडो, अत ही चित उदार ।
कर गुण सारा एकठा, नेग्यो सर पी लार ॥१७॥

सारठा

कैरव पृथ्वी काज, केई भूप कट कट मरे ।
तिका पृथी मर ताज, त्यागी उण तत्पर पतै ॥१८॥

रैत सुधारण राज, कइ रस्ता जारी किया।
करण भला बहुकाज, पलक न भूला पातलो ॥१६॥
ऐसा भूप अनेक, प्रसघ महीपत पेखिया।
अद्भुत नामी अेक, पौथो सुरगा पातलो ॥२०॥

दोहा

विघना व्रद्ध विसारगी, खूब करी नह खात।
सर पी जैसे वीर री, रची साथरी मौत ॥२१॥
विघना रच्यौ न वीर वर, अधिक पतै सू और।
कुण मारे गजे कवण, तिको भूप इण तौर ॥२२॥
सर पारथ हण नह सकै, जेम पतै खग झाट।
सर सेज्या भीमस सयन, अरु पचास दिन आठ ॥२३॥
राम निछत्री कर दई, गज न सक्यो गगेव।
पलटण रचना पातले, देख सुधारी देव ॥२४॥
रह्यौ न पल भर साथरे, पातल रचना पेख।
धिनो धिन्न ईडर धणी, रखी रेख पर मेख ॥२५॥

बारहठ जैतदान* कृत दोहे

श्री प्रताप साचौ सुजस, आछौ मुख उच्चार।
मन राचौ इह स्यामध्रम, सह वाचौ ससार ॥१॥
श्री प्रताप भेटत समय, सोउ जस रटत सुनाय।
वह कछु चुन किय इक्कठे, प्रगटे आग्या पाय ॥२॥
श्री महाराज उमेदसिंह, श्री सुमेर सिरदार।
लखी नको नाबालगी, इण प्रताप आधार ॥३॥
अकारादि क्रमतै यहै, फिर आग्या फुरमाय।
कर लिख ल्यु हि हाजर करे, श्रवन प्रताप सुनाय ॥४॥
अरध धरन मत्थे उरध, पहर फतै फरमान।
ते दिल्ली थप्पे पतै, निज हत्थे नीशान ॥५॥
अवरा न सुख आपरौ, वो सुख मानै आप।
वानै इण धारण वहै, ते छानै न प्रताप ॥६॥

---

* यह मथाणिया ग्राम का निवासी था तथा जोधपुर महाराजा का आश्रित कवि था। इसने अकारादिक्रम से अनेक दोहे लिखे हैं।

अह पातल छक उफ्फणँ, नयणों रग मजीठ ।
दीयण ठरै न एक दिन, पमगा ठरै न पीठ ।।७।।
अपणी अपणी वार पर, तन घर जाय तमाम ।
पण वीरत दत युत पता, रहत अमर जग नाम ।।८।।
अवरा उपमा आपरी, आप न उपमा और ।
सबगुण पातल तो समा, घणबो होहु बहोर ।।९।।
आरभण सुत तिण असुभ, करण कहै जे कोय ।
पण निरद्रूसण निज पता, समभणहार न सोय ।।१०।।
अ दरसण धिन आपरा, सबै हरण सताप ।
सत मूरत असरण सरण, पर दुख हरण प्रताप ।।११।।
अतर ठिकाणै कुण इसो, जस वाखाणै जास ।
तूं हिज पहचाणे पता, कविता तणँ प्रकास ।।१२।।
अलख गती गभीर उर, कहत न सक्कत कोय ।
तिथि तज तारीखा त्युं ही, हिय घट वधण न होय ।।१३।।

नीसांणी सर प्रतापसिंघजी री

—आसिया मोडजी[1] कृत

उज्जळ हस आरोहणी सारद सिमराणू,
जैं अह रचै न विराजमान धवळ गिर जाणू ।
काना उज्जळ कासमीर कुडळ भळकाणू,
आभूखण सह उजळा जवाहर जडाणू ।।१।।
उज्जळ अवर ओढणे राका सिसराणू,
वीणा उज्जळ वाजती कर मझ ग्रहाणू ।
उज्जळ अक्खर आप मो बाणी वरदाणू,
तौ भूपत तखतेस का परताप वखाणू ।।२।।
तखत पाट जसवत नृप कुळ चाव वडाई,
तेरै सरखा रौ तिलक ओठम पतसाई ।
इद्र विभै इळ ऊपरै राजै राजाई,
वडा बळेठी पहलवान बलवान सिपाई ।।३।।
चतुरगी फौजा चढै जुध जीत कराई,
सीमाडा सकै सको लै कवण लडाई ।

---

१ यह गाव भाडियावास का निवासी था । पाबू प्रकास इसरी प्रसिद्ध कृति है । इस नीसाणी छन्द की रचना वि.स १९५२ मे हुई ।

जेठ भाग्ग सरखो जसो सिर छत्र मडाई,
केहर रूप किसोर है भड पातल भाई ॥४॥
रुक बहादर राड मे भुज आभ लगाई,
हिंद विलायत हेकडो तू वीर कहाई।
एके पातल ऊजळा छत्रपत साराई,
एकै चदै ऊजळा नव लाख लखाई ॥५॥

भ्रूह विलग्गै वकडी सिस बीज समीसर,
महपत अजसै मुरघरा जोघाण गिरव्वर।
पातल सू अजसै प्रथी नव कोट नरा नर,
काळ भयकर केविया सवियाह सुरातर ॥६॥

तेज वडै तखतेसरा है हिंद दिवाकर,
तूज सराह न को तुलै बेराह बराबर।
देख खळा उर ताप ह्वै अजसै सैगा उर,
वीरत भलपरग वीटियौ परताप बहादुर ॥७॥

आवघ विध असवारगी वदै फिरगाणै,
सेल तरगा कर वार सह जुड खेलरग जाणै।
वीरम पाल अगै हुआ कुळ तूझ कहाणै,
कुत हथा कमधेस का बेराह वखाणै ॥८॥

पातल पमग परेट मे चहुँ फेर चढाणै,
चक्र बधै सिस सूर कै जिम आव्रत जाणै।
गोलाकार अलात गत पूरब पिछमाणै
उलट पलट अस आव मे जिस चकरी जाणै ॥९॥

भालागीरी भेद मे वळ साह वखाणै,
सेलहथा तखतेस सुत हिंदू तुरकाणै।
राजा रावळ राव राण जग सारा जाणै,
आज प्रताप प्रताप इळ वड वार वखाणै ॥१०॥

दस अवतार दसी दिशा होता राखस हरण,
पूजीजै चवदै भवरग है सिव दस हैकरग।
तम नासै खट खडका है द्वादस अहमरग,
वरस जत्री जग व्यापती तेरै मासा तरग ॥११॥

वरतै चवदै भवरग वस विद्या चवधै वरग,
प्रगट गतागत जगत पुड पनरै तिय है परग।
रयगायर गोडा रचै सिस सोळ कळा सुरग,
गुज्जर घर अरबीम गरगै परगना सतर परग ॥१२॥

सुणिया अठारह पुराण जग धरम जणोजण,
विखं पच तज जग वघत उगणी से गुण उण ।
विसवा वीस नरेस वीर पिंडे उज्जळ पण,
मानहरो हेकज मरद वेराह सिरोमण ।।१३।।

ससतर हय फेरण सिलह कर लीध वडे कण,
फुरती विलद दुवाह फिर निर नाह सहस फण ।
राज भार रच्या रयत जुध विद्या भूपण,
दान ग्यान सनमान दिढ निस आप निवेडण ।।१४।।

वे अण च्यार अठार भार है नह सम हेकण,
ऊडापण सामद्र अधिक अवर ऊचा पण ।
वुध वल साहस वीरता समता न अवर सुण,
हेक हेक सुर हेकडो परताप जिसो कुण ।।१५।।

'इति"

प्रताप प्रशसा

—कवि ऊमरदान कृत

दोहा

मुरघर मे पातल मरद, इक्को रतन अमोल ।
लोका ने तो लादसी, मरिया पाछै मोल ।।१।।

ओळखियो पातल अवस, सिरे धर्म इक साम ।
आप बुराई ले अखिल, करै भलाई काम ।।२।।

वै मारै तारै किता, रसा जिको रजपूत ।
कहे 'कपूत' 'कपूत' कुल, समजो जिको सपूत ।।३।।

तपे सूर परतापसिंह, सब कूकै ससार ।
आथमिया सू ओळखे, उण विन घोर अधार ।।४।।

सूतो लख ससार सब, पातल सू पुल जाय ।
मरण दशा मे मद्द रे, जीव न नेडो जाय ।।५।।

केहर टळ जावे कठे, तन सू ओळो ताक ।
हावे सामो हुलसणो, है सूवर हुसनाक ।।६।।

कलमे इव पातल कमध, करे काम किलकार ।
मन मे आछो समज ले, सव रोवो ससार ।।७।।

नर नाहर कमधजनिडर, है छल बल हुसियार ।
काम कोई पातल करे है कुण रोकण हार ।।८।।

जेठ भाण सरखो जसो सिर छत्र मडाई,
केहर रूप किसोर है भड पातल भाई ॥४॥
रुक बहादर राड मे भुज आभ लगाई,
हिंद विलायत हेकडो तू वीर कहाई।
एकै पातल ऊजळा छत्रपत साराई,
एकै चदं ऊजळा नव लाख लखाई ॥५॥

भ्रूह विलगं वकडी सिस वीज समीसर,
महपत अजसं मुरधरा जोधाण गिरव्वर।
पातल सू अजसं प्रथी नव कोट नरा नर,
काळ भयकर केविया सेवियाह सुरातर ॥६॥

तेज वडै तखतेसरा है हिंद दिवाकर,
तूज सराह न को तुलै बेराह बराबर।
देख खळा उर ताप ह्वै अजसं सैणा उर,
वीरत भलपण वीटियौ परताप बहादुर ॥७॥

आवध विध असवारगी वदै फिरगाणै,
सेल तणा कर वार सह जुड खेलण जाणै।
वीरम पाल अगं हुआ कुळ तूझ कहाणै,
कुत हथा कमधेस का बेराह वखाणै ॥८॥

पातल पमग परेट मे चहूँ फेर चढाणै,
चक्र बधै सिस सूर कै जिम आव्रत जाणै।
गोलाकार अलात गत पूरब पिछमाणै
उलट पलट अस आव मे जिस चकरी जाणै ॥९॥

भालागीरी भेद मे बळ साह वखाणै,
सेलहथा तखतेस सुत हिंदू तुरकाणै।
राजा रावळ राव राण जग सारा जाणै,
आज प्रताप प्रताप इळ वड वार वखाणै ॥१०॥

दस अवतार दसी दिशा होता राखस हण,
पूजीजै चवदै भवण है सिव दस हैकण।
तम नासै खट खडका है द्वादस अहमण,
वरस जत्री जग व्यापती तेरै मासा तण ॥११॥

वरतै चवदै भवण वस विद्या चवधै वण,
प्रगट गतागत जगत पुड पनरै तिथ है पण।
रयणायर गोडा रचै सिस सोळ कळा सुण,
[illegible] ॥१२॥

सुणिया ग्रठारह पुराण जग धरम जणोजण,
विखै पच तज जग वधत उगणी से गुण उण ।
विसवा वीस नरेस वीर पिंडे उज्जळ पण,
मानहरो हेकज मरद वेराह सिरोमण ।।१३।।

ससतर हय फेरण सिलह कर लीध वडै कण,
फुरती विलद दुवाह फिर निर नाह सहस फण ।
राज भार रच्या रयत जुध विद्या भूपण,
दान ग्यान सनमान दिढ निस ग्राप निवेडण ।।१४।।

वे त्रण च्यार ग्रठार भार है नह सम हेकण,
ऊडापण सामद्र ग्रधिक ग्रवर ऊचा पण ।
वुध वल साहस वीरता समता न ग्रवर सुण,
हेक हेक सुर हेकडो परताप जिसो कुण ।।१५।।

'इति"

प्रताप प्रशसा

—कवि ऊमरदान कृत

दोहा

मुरधर मे पातल मरद, इक्को रतन ग्रमोल ।
लोका ने तो लादसी, मरिया पाछै मोल ।।१।।

ग्रोळखियो पातल ग्रवस, सिरे धर्म इक साम ।
ग्राप बुराई ले ग्रखिल, करै भलाई काम ।।२।।

वै मारै तारै किता, रसा जिको रजपूत ।
कहे 'कपूत' 'कपून' कुल, समजा जिको सपूत ।।३।।

तपे सूर परतापसिंह, सव कूकै ससार ।
ग्राथमिया सू ग्रोळखे, उण विन घोर ग्रधार ।।४।।

सूतो लख ससार सव, पातल सू पुल जाय ।
मरण दशा मे मइद रे, जीव न नेडो जाय ।।५।।

केहर टळ जावे कठे, तन सू ग्रोळो ताक ।
हावे सामो हुलसणो, है सूवर हुसनाक ।।६।।

कलमे इव पातल कमध, करे काम किलकार ।
मन मे ग्राद्धो समज ले, सव रोवो ससार ।।७।।

नर नाहर कमधजनिडर, है छल वल हुसियार ।
काम कोई पातल करे है कुण रोकण हार ।।८।।

पातल ओळखले पुरुप, निरभय करत निहाल ।
झटपट घोडा झोक दे, कूकत रहे कगाल ।।६।।

ओछी वुध रा आदमी, इणने लखे न एक ।
पातल जिसडो पातलौ, नेकी मे है नेक ।।१०।।

घट पातळ उबजो घणो, रण थमणा राठोड ।
थे मरिया सू थाहरी, ठाली रहसी ठोड ।।१०।।

थिरा सरव हूँ थाकगो, निजर निहार निहार ।
पातल थारा गुण प्रगठ, है कुण धारण हार ।।११।।

साचो तू तू सूरवो, तू दाता दै त्याग ।
पौहुमी मे पातळ प्रसिन्न, खळा बिडारण खाग ।।१३।।

सारी वाता समझणो, सारी वाता सुद्ध ।
जाहर अपिया जाचणो, पातल घिनो प्रबुद्ध ।।१४।।

धिनो धिनो आखे धरा, धिनो सुधारयो धाम ।
हुव इळ मे धिन धिन हुवो, कीना धिन धिन काम ।।१५।।

सूरा धीरा सा पुरुप, अण भगी अनुमान ।
आप जिसा हा आपरे, दोळा मरजीदान ।।१६।।

बदा कने तो बद बसे, नेका पासे नेक ।
मन तो सारीसा मिले, आ लोकोक्ती एक ।।१७।।

जस पातळ रो जगत मे, ओ भरियो अणपार ।
नीपण निज पावे नही, पोथी लिखिया पार ।।१८।।

दूहा मे दरसावियो, पढ पढ जस परताप ।
साचो जस कावणा सुणो आप सिरीसा आप ।।१६।।

बणियो रहो पातल बपू, आ ऊमर आसीस ।
इणरी बीसी हे अबे, बणिया दोहा बीस ।।२०।।

कवित्त

भ्रात सखा माताते सनेह को भडार भरयो,
तात को रिझाया त्योही आनन्द अघायो तू ।
ख्वास पासवान कृपापात्र भृत्य राष्ट्र भर,
सुघर सुचाल सभ्य सबको सुहायो तू ।
काहूको न बुरो कीनो दान सन्मान दीनो,
लोभ को न पथ लीनो, धर्म रुख धायो तू ।
शोभा किस्तूरी जैसी दूर-दूर फैली देस,
हाजर हजूर हिय भूरि मन भायो तू ।।१।।

सीख्यो अश्व विद्या को परिक्षा नर खूब सीख्यो,
सीख्यो हेत विद्या सावचेती सुद्ध सीख्यो तू ।
सीख्यो बकी पाठसाला आला एक डकी सीख्यो,
सीख्यो दाव भाला त्यो विलाला जुद्ध सीख्यो तू ।
दान देन सीख्यो आन राखन को सीख्यो दिव्य,
सीख्यो थान ज्ञान ध्यान मान सुद्ध सीख्यो तू ।
साहस शरीर सीख्यो नीर छीर प्रीति सीख्यो,
सीख्यो धीर रीति बड वीर बुद्धी सीख्यो तू ।।२।।

देह साथ छाया जैसे कर्म साथ काया देखो,
माया साथ उद्यम के शम्भू महामाई के ।
ध्यान साथ सिद्धी जैसे ज्ञान साथ रिद्धी गेह,
नीति साथ निद्ध नव शेष रघुराई के ।
बुद्धी एकदन्त वन्त वन्त सन्त गुरु मन्त्र जैसे,
मारु कन्त वास जसवन्त बाग राईके ।
जालन्धर चाह ठेल वाह तू प्रताप वीर,
दुर्लभ दुवाह मेल भयो साथ भाई के ।।३।।

सोप्यो राजधानी भार सार सरकार सोप्यो,
चाराचर करन विचार सोप्यो सूरा को ।
देन सोप्यो लैन सोप्यो चैन औ प्रचैन सोप्यो,
सैन सुख सोप्यो स्वामी रैन दिन रुका को ।
समुख प्रमुख राज काज सब सोंप्यो साज,
सुख को समाज सोप्यो देख दुख दूरा को ।
न्याय निरधार सोप्यो वारपार वार सोप्यो,
सब को सुधार सोप्यो भाग भरपूरा को ।।४।।

आछो इन्तजाम कीनो लाख मुख वाह लोनो,
दोन सुख दीना लोही पीनो खूब लुच्चो को ।
घट के घमडी के अफडी ऊठ डडो लागे,
नीचे किये नीचो को अनीचे किये ऊचो को ।
उडगे उचगे वके लफगे चगे मार्ग लागे,
अभागे सभागे भये टोर दीने टुच्चा को ।
प्रबल प्रमाथी श्रीप्रताप मस्थ हाथी जेम,
नाथ सब ही के नाथी साथ भयो सुच्चो को ।।५।।

आळस न राख्यो अग निरालस चाल्यो नेक,
काळस न लागी काय सालस सफाई तें ।

सावचेतो राखो साचो वाचा ना सम्हाई कहु,
राचो कुलरीति परतीति प्रगटाई तैं।
मूरख मलीन महा हरामी हरामखोर,
चोर चाम चोर चाह चाहना न चाहो तैं।
काई जो रजाई की हटाई सुखदाई भूरि,
भव्य भव्य भाई भव्य दिव्य दरसाई तैं ।।६।।

कुल रजपूत मजबूत करतार कीनो,
रग मजबूत मजबूत रजपूती मे।
चाल मजबूत ढग ढाळ मजबूत कीने,
भाल मजबूत मजबूत भयो भूती मे।
तौर मजबूत मजबूत दौर भूमो तल,
गौर मजबूत मजबूत करतूती मे।
सिर मजबूत तैसे घर मजबूत शुद्ध,
मन मजबूत मजबूत मजबूती मे ।।७।।

ओघ उरझायो मुरझायो ताकू सार सार,
नाही मुरझायो मौज सुन्दर मचायो तैं।
गुनी गुन गायो जस छायो या जहान बीच,
चार को उधार चाह्यो रहस रचायो तैं।
खैर को न चून खायो मैर को भरयो उमायो,
पातल पुजायो जसवन्त को जचायो तैं।
मारवार पायो सुख, दुख को हटायो दायो,
उर उमगायो राज जबर जमायो तैं ।।८।।

रोकी तैं कुरीति रीति सुरीति को झोकी साथ,
ताकत त्रिलोकी एसो मत अवगाह्यो तैं।
सत्यासत्य सारासार नित्यानित्य वारापार,
हिताहित धार हिय दोसन को दाह्यो तैं।
नसा को कियो ते नास रसा को कियो न रास,
दसातैं जियां उदास चित्त सुद्ध चाह्यो तैं।
पीछे पछतायो एसो काम न उपायो एक,
[illegible] [illegible] स्वामी धर्म को सराह्यो ते ।।९।।